❀ श्रीगौरांगविदुर्जयतिः ❀

श्रीगौरभक्तामृत लहरी

श्रीचैतन्य डोबा (हालिशहर) निवासी
श्रील किशोरीदास बाबाजी महाराज विरचित

प्रकाशक

श्रीलक्ष्मीनारायणदास
श्रीविष्णुप्रियागौरांग आश्रम
वनखण्डी महादेव के निकट
श्रीराधाकुण्ड (मथुरा)
+91 9897457066, 7895028887

सह सम्पादक

श्रीगौरगोपालदास
श्रीराधाकुण्ड (मथुरा)
+91 7895028887

प्रकाशन तिथि : मार्च, वर्ष २०२५

NAVRANG OFFSET PRINTERS

A Complete Printing & Book Binding etc.
9975787982

TYPIST & GRAPHICS DESIGNER

Brijbhoosan Pathak 8881982106, 8630192318

भूमिका

प्रेमावतार श्रीश्रीनिताईगौरचन्द्र की असीम अनुकम्पा से यह "श्रीगौरभक्तामृत लहरी" नामक ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। इसके रचयिता श्रीचैतन्य डोबा (हालिशहर), बंगाल निवासी श्रील किशोरीदास बाबाजी महाराज हैं।

आपने इसकी रचना खृष्टाब्द सन् १९९८ में की है। इसमें श्रीगौरांग महाप्रभु के अनुयायी भक्तवृन्द की पावन जीवनी लिखी हुई है। यह सुललित बंगला भाषा के मनोहारी पयारों में रचित है। इस ग्रंथ के कुछ जीवन चरित्रों को हिन्दी भाषी लोगों के लिये हिन्दी में रूपान्तरित किया है। जिससे कि सभी इसका पठन-श्रवण व गायन कर सकें।

इस ग्रंथ के माध्यम से हिन्दी भाषी लोगों को श्रीगौरांग महाप्रभु के प्रिय पार्षदों की जीवन गाथा श्रवण का आनन्द तो मिलेगा, साथ ही ग्रंथकार श्रीकिशोरीदास बाबाजी महाराज से भी हिन्दी भाषी जन परिचित हो सकेंगे।

श्रीकिशोरीदास बाबाजी एक विशिष्ट गौड़ीय ग्रंथ सेवक थे। आपने अपने जीवनकाल में लगभग १५० ग्रंथों का प्रकाशन किया है और सदा सर्वदा आप लुप्त ग्रंथों का अनुसंधान कर प्रकाशन की चेष्टा करते रहे। आपका अवदान वैष्णव समाज में चिर स्मरणीय रहेगा।

सभी भक्तवृन्दों से यह प्रार्थना करता हूँ कि इस ग्रंथ का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करें और श्रीगौरांग महाप्रभु के प्रियभक्तों की पावन जीवनी का प्रचार कर अपने जीवन को धन्य करें।

-लक्ष्मीनारायणदास

१. श्रील मधुसूदनदास बाबाजी

जय जय गौरहरि पतितेर बन्धु।
जय जय नित्यानन्द गौरप्रेम सिन्धु।।
जय जय सीतानाथ कुबेरनन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादिगण।।
सूर्यकुण्डेर सिद्धबाबा मधुसूदनदास।
नित्य सिद्ध प्रेममूर्ति अद्‌भुत प्रकाश।।१।।

भावसार– हे पतितों के बन्धु गौरहरि! प्रेमसिन्धु नित्यानन्द सीतानाथ एवं गदाधर श्रीवासादि की जय हो! जय हो! श्रील मधुसूदनदास बाबाजी की जय हो!।।१।।

आपनि श्रीमती यारे कृपा संचारिल।
अचिन्त्य महिमा ताँर जगते घोषिल।।
कुलीन ब्राह्मण कुले लभिया जनम।
नवीन वयसे हैल वैराग्य उद्‌गम।।
शिशुकाल हैते कृष्ण गाढ़ अनुराग।
दुइ चक्षु रक्त वर्ण प्रेमाकुल भाव।।२।।

भावसार– आपका ब्राह्मण कुल में जन्म होकर बाल्यकाल में ही वैराग्य हुआ।।२।।

अनिच्छा सत्वेओ पिता–माता विभक्ति।
सेई रात्रे गृह त्यजि वृन्दावने गेल।।
वासर घर हैते तेंह कैल पलायन।
लोक परिचय भये रहये गोपन।।
लोकालये हैते दूर रहे अनुक्षण।
अनेक समय अनाहारे करये यापन।।३।।

भावसार– भक्ति की अनुकूलता न होने के कारण रात्रि में गृह त्याग करके वृन्दावन आये। आप लोग परिचय के भय से गुप्त रहने लगे; खाने–पीने की भी अपेक्षा न

रही।।३।।

वने जंगले यमुनार तटे सदा वास।
प्रेम अनुराग चित्ते करे हा हुताश।।
आपनार दीक्षा लागि करये चिन्तन।
किरुपे कोथाय करि मन्त्रेर ग्रहण।।
केशीतीर्थे वसि तेंह करये चिन्तन।
हेनकाले एल तथा एक महाजन।।४।।

भावसार– कभी वन, जंगल और कभी यमुना तट पर रहते हुये हा राधे! हा राधे! पुकारते और दीक्षा के लिये बहुत ही चिन्ता करते किस–से दीक्षा लूँ? मेरा उद्धार कैसे होगा? कि तभी उस जगह एक महाजन पधारे।।४।।

यमुनाय स्नान लागि कैल आगम।
ताँहारे हेरिया डाकि वलये वचन।।
यमुनाय स्नान करि कर आगमन।
एवे तोरे दीक्षा मंत्र करिव अर्पण।।५।।

भावसार– उन्होंने यमुना में स्नान कर इन्हें दुःखी देखकर बुलाया और कहा यमुना में स्नान करके आओ मैं तुम्हें दीक्षा–मंत्र दान करूँगा।।५।।

वारता शुनिया तेंह प्रेमाकुल मन।
आपनार भाग्य बहु करे प्रसंशन।।
हर्ष भरे स्नान सारि कैल आगमन।
दशाक्षर मन्त्र कर्णे करिल अर्पण।।
मन्त्र लाभ करि तेंह आविष्ट हइल।
सेईकाले मन्त्रदाता अन्तर्हित हैल।।६।।

भावसार– कृपा–वाणी सुनकर वे प्रेम से आकुल मन हुये और राधारानी की कृपा एवं अपने भाग्य की प्रशंसा करने लगे। दीक्षा दान कर वह महात्मा अन्तर्हित हो गये।।६।।

केवा तिनि किवा तार हय परिचय।
जिज्ञासिते नाहि तार हइल समय।।
प्रकृतिस्थ हया मन्त्र जपे अनुक्षण।
भ्रमिते भ्रमिते मानस गंगाय आगमन।।
सिद्ध कृष्णदास बाबार वन्दिल चरण।
शरण लइया पदे करे निवेदन।।७।।

भावसार– ओहो! यह कौन अयाचक कृपा करने आये? ऐसा विचार कर नैनों से नीर बहाते हुए दशाक्षर मंत्र का जप करने लगे। जपते–जपते आप मानस गंगा में आये और सिद्ध कृष्णदास बाबा के चरणों में निवेदन किया।।७।।

अज्ञान बालक मुइं किछुइ ना जानि।
कृपा करि भजन रीति शिखाह आपनि।।
दिव्य तेज भाव ताँर करिया दर्शन।
स्वपनेह परिचय बाबा जिज्ञासे तखन।।
तेंह गृह भाग्यावधि सकलि कहिल।
शुनि सिद्ध बाबा तारे कहिते लागिल।।८।।

भावसार– हे महाराज जी! मैं अज्ञान बालक हूँ, मुझे आप भजन की रीति सिखाइये। बाबा इनका दिव्य स्वरूप देखकर इन्हें सिद्ध बाबा कहने लगे।।८।।

सम्बन्धानुगा हय राग मार्गेर भजन।
सत् सम्प्रदाय मन्त्र करह ग्रहण।।
पुनः दीक्षा लाभेर तव नाहि प्रयोजन।
अतएव मोर द्वारे ना हय शिक्षण।।
शुनिया हताशे तेंह करये क्रन्दन।।९।।

भावसार– हे भक्त! सम्बन्धानुगा मार्ग ही राग–मार्ग का भजन है। अतः सत् सम्प्रदाय से मंत्र ग्रहण करो; तुमको पुनः दीक्षा की आवश्यकता नहीं है। किन्तु मेरे द्वारा ही

तुम्हारी शिक्षा संभव नहीं। यह सुनकर बाबा हा हुताश और क्रन्दन करने लगे।।९।।

रोदन हेरिया बाबार दया उपजिल।
काम्यवनेर बाबा स्थाने ताँरे पाठाइल।।
कहे काम्यवने तुमि करह गमन।
सर्व वेत्ता तेंह तोमा करिवे मोचन।।
सम्बन्ध निर्णय आर गुरु परिचय।
सर्व निरूपिया तोमा पुरावे आशय।।१०।।

भावसार– इनका रुदन सुनकर बाबा के सरल हृदय में दया आई और इन्हें काम्यवन बाबा के पास भेज दिया और कहा वे तुम्हारी सभी आशायें पूर्ण करेंगे।।१०।।

तवे तेंह काम्यवने करिल गमन।
सिद्ध बाबार पदे पड़ि करे निवेदन।।
सर्वविद सिद्ध बाबा करये चिन्तन।
भविष्यते उपधर्म ना हय सृजन।।
तवे सम्बोधिया बाबा वलये वचन।
मम चित्त अगोचर तोमार घटन।।११।।

भावसार– तब ये काम्यवन गये और सिद्ध बाबा के चरणों में गिर गये। सर्वज्ञ सिद्ध बाबा ने विचार किया जैसे भविष्य में कोई उपधर्म का सृजन न हो; तो उन्हें बोले– मेरे चित्त में तुम्हारा प्रसंग दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है।।११।।

दीक्षा लंघन तोमार उचित ना हय।
ए अवस्थाय रागानुगा भजन ना हय।।
एकान्ते वसिया तुमि कर हरिनाम।
महाप्रभु प्यारी तोमार करिवे विधान।।
अथवा येमते तोमार मन्त्रेर ग्रहण।
सेईभावे हवे तव वाञ्छित पूराण।।१२।।

भावसार– गुरु बदलने से उचित नहीं होता है और रागानुगा प्रणाली बिना भी भजन नहीं होता है। अब तुम एकांत में बैठकर हरिनाम करो। हरिनाम प्रिय महाप्रभु एवं वृन्दावनेश्वरी करूणामयी राधारानी तुम्हारा समाधान करेंगी।।१२।।

शुनि मधुसूदन बाबा विषम हइल।
कान्दिते कान्दिते राधाकुण्ड तीरे एल।।
निभृते वसिया मने करेन विचार।
यदि भजनेते मोर ना हय अधिकार।।
तवे एइ देहे मोर कोन प्रयोजन।
कुण्डजले झाँप दिया छाड़िव जीवन।।१३।।

भावसार– यह सुन मधुसूदनबाबा संकट में पड़ गये और रोते–रोते राधाकुण्ड तट पर आये। अब मेरा भजन पर यदि अधिकार नहीं है तो मेरा इस देह को रखने का भी कोई प्रयोजन नहीं है। मैं जल में डूबकर प्राण त्याग दूँगा।।१३।।

अन्य रात्रे एइ देहे निर्वाण करिव।
भजन अयोग्य देह कि लागि राखिव।।
एत चिन्ति गिरिधारी गलेते वान्धिल।
अर्थ रात्रे श्रीकुण्डेर जले झाँप दिल।।
क्रमशः अतल जले पड़िल यखन।
तखनइ घटिल एक विचित्र घटन।।१४।।

भावसार– ऐसा विचार कर गिरिराज शिला गले में बाँधकर आधी रात को श्रीकुण्ड के जल में कूद पड़े और जब तल में जा पड़े तब एक विचित्र घटना हुई।।१४।।

केह येन गला हैते शिला भासाइल।
तालपत्र हस्ते दिया तीरे निक्षेपिल।।

क्षणपरे दिनमणि हइल प्रकाश।
प्राण नाहि गेल देखि करे हाहुताश।।
ताल पत्र खानि पाञा हैल हर्षमन।
ताहालञा गोवर्धने कैल आगमन।।१५।।

भावसार– मानो किसी ने गले से गिरिराज जी को छुड़ा दिया और ताल पत्र हस्त में देकर उनको ऊपर उठा दिया। कुछ समय बाद ही दिन हो आया; प्राण नहीं गया यह देख बाबा हाथ में ताल पत्र देखकर हर्षित मन गोवर्धन आये।।१५।।

वन्दि सिद्ध बाबा पद सवे निवेदिल।
तवे सिद्ध बाबा काम्यवने पाठाइल।।
पत्र विषयक किछु ना कैल वर्णन।
आज्ञा पाञा मधुसूदन बाबार गमन।।
काम्यवने सिद्ध बाबार समीपे पौंछिल।
तालपत्र हेरि बाबा ताहाके कहिल।।१६।।

भावसार– आकर उन्होंने सिद्ध बाबा के चरणों की वन्दना की। सिद्ध बाबा ने उन्हें काम्य वन भेजा और पत्र के विषय में कुछ नहीं बोला। काम्यवन के सिद्ध बाबा ने ताल पत्र देखकर उन्हें इसप्रकार कहा।।१६।।

प्रियाजीर यथेष्ट कृपा तोमार ऊपर।
हइल अव्यक्त वस्तु तोमार गोचर।।
परम अव्यक्त याहा पेयेछ एखन।
बर्हिजगतेर ताहा बुझव केमन।।
पुनः श्रीकुण्डेते तुमि करह गमन।
प्यारीरे डाकिले हवे अभीष्ट पूरण।।१७।।

भावसार– तुम पर प्रियाजी के विशेष कृपा हुई है। गुप्त तत्त्व तुम्हारे सामने प्रकट हुआ; किन्तु बाह्य जगत में

इस पत्र को समझना कठिन है। पुनः राधाकुण्ड में जाओ और राधारानी के चरणों में निवेदन करने से करूणामयी राधारानी तुम्हारा अभीष्ट पूर्ण करेंगी।।१७।।

परम करूणामयी वृन्दावनेश्वरी।
अवश्य पुरावे आशा कृपा दृष्टि करि।।
सिद्ध बाबा वाक्ये तेंह श्रीकुण्डे आसिला।
आकुल हइया प्रेमे डाकिते लागिला।।
सेई रात्रिते प्रियाजी दिल दरशन।
बाबारे डाकिया कहे सस्नेह वचन।।१८।।

भावसार– चूंकि परम करूणामयी वृन्दावनेश्वरी तुम पर अवश्य कृपा दृष्टि करेंगी। बाबा आकर आकुल होकर राधारानी को पुकारने लगे। स्वामिनी ने दर्शन देकर कहा।।१८।।

सूर्यकुण्डे वासकरि करह भजन।
तथाये पाइवे तुमि आमार सेवन।।
येई मन्त्र दीक्षा तुमि करिले ग्रहण।
सेई मन्त्र कारो तुमि ना कर अर्पण।।
आमि याहा दिलाम ताहा करिओ गोपन।
एत कहि राधारानी हैल अदर्शन।।१९।।

भावसार– तुम सूर्यकुण्ड में वास करके वहीं भजन करो। वहाँ तुम मेरी कृपा को पाओगे; जिस मंत्र को तुमने पाया है, उसको किसी के सामने प्रकाश न करना। इतना कहकर राधारानी अप्रकट हो गयीं।।१९।।

सूर्यकुण्डे रहि बाबा करये भजन।
निरवधि प्रेमार्णवे करे विचरण।।
पाछेते आसिया बहु भजन शिक्षा कैल।
बहु वेशाश्रय कैल दीक्षा नाहि दिल।।

एकदा प्रियाजी स्वप्ने बाबा के कहिल।
परम विचित्र ताहा जगते घोषिल।।२०।।

भावसार– राधारानी की कृपा से सूर्यकुण्ड में भजन करने से बाबा सदा प्रेम राज्य में विचरण करने लगे। एकबार राधारानी उन्हें स्वप्न देकर अति विचित्र कथा बोलीं।।२०।।

सूर्यकुण्डेर येइ घाटे तुमि कर स्नान।
एकशिला रहे जले कण्ठमान स्थान।।
दुइ भग्निर केयूर अंगदादि अलंकार।
स्नान काले राखिताम उपरे ताहार।।
पाथर गलिते हञा चिह्निनत हइल।
ताहा आनि पूजा कर तोमारे कहिल।।२१।।

भावसार– सूर्यकुण्ड के जिस घाट पर तुम स्नान करते हो, वहाँ एक शिला जल में डूबी हुई है जिस पर स्नान करते समय मैं और मेरी बहिन अनंग आभूषण आदि रखकर स्नान करती थीं। उस शिला को उठाकर स्थापित करो; जो भी इसकी पूजा करेगा मनवाञ्छित फल पायेगा।।२१।।

स्वप्नादेश पाञा बाबा पुलकित मन।
जलेते डुबिया पाथर उठाल तखन।।
दुइ आडाई मन हवे सेइ शिलाखानि।
बुकेते धरिया बाबा तुलेन आपनि।।
पुष्प माल्यवत बाबा तीरेते तुलिल।
हेरिया सकल लोक मोहित हइल।।२२।।

भावसार– स्वप्न में आदेश पाकर पुलकित होकर जल में डूबकर उन्होंने उस शिला को उठाया व भारी शिला उठाने पर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गये।।२२।।

अद्यापि ओ भाग्यवान करे दरशन।
सिद्ध बाबार प्रेमगुण अद्‌भुत कथन।।

होली खेला दिने बाबा प्रेमाकुल मन।
वर्षानेर पथे छुटे नहे बाह्य मन।।
फाल्गुनी शुक्ला नवमी तिथिर अपरान्हे।
शुक्लवस्त्र परि बाबा चलये आपने।।२३।।

भावसार– आज भी भाग्यवान् लोग दर्शन व पूजा करके धन्य होते हैं। एकबार होली के दिन बाबा बरसाने की ओर दौड़ते जा रहे हैं वे सादा वस्त्र पहने हुए हैं।।२३।।

कुटीर हैते द्रुत पदे करिया गमन।
बोम्बार समीपे गिये पड़ये तखन।।
गोरक्ष गोयारिया यत शिशुगण।
कौतुहलाक्रान्त हञा करे आगमन।।
चोखे जल मुखेर लालाय भुमि कर्दमाक्त।
मुखे येन झरे देखि सवे चमकित।।२४।।

भावसार– आप द्रुत गति से जा रहे हैं, नहर के पास गिर पड़े। गोप बालक बाबा को इसप्रकार अवस्था में देखकर आश्चर्य चकित हुये।।२४।।

होलि युद्ध अनुभवे घन दीर्घस्वास।
सात्विक विकार ताँर देहेते प्रकाश।।
एइ भावे संध्या वधि करिया यापन।
हुंकार करिया बाबा उठये तखन।।
सादा वस्त्र खानि ताँर रक्त वर्ण हैल।
विचित्र बाबार गुण जगते व्यापिल।।२५।।

भावसार– बाबा होली लीला के मानसी चिंतन में दीर्घ श्वास छोड़ रहे हैं। इसप्रकार संध्या पर्यन्त रहे और हुंकार करके उठे। बाबा के सादे वस्त्र रंग से लाल हो गये। बाबा की ऐसी विचित्र लीला जगत में प्रसिद्ध हो गई।।२५।।

प्रतिवर्ष होलीकाले हेन भावोदय।

बुझय रसिक भक्त बाबार आशय।।
शेष राते कुण्डतीरे करिये कीर्तन।
विश्वम्भर गौरचन्द्र वले अनुक्षण।।
वृषभानु नन्दिनी राधे एइत कीर्तन।
लोक गतागते करे कुटीरे गमन।।२६।।

भावसार– उन्हें प्रतिवर्ष ही होली के समय ऐसे भाव का उदय होता। रसिकजन बाबा की इन लीलाओं को समझ जाते। एकदिन कुण्ड के तट पर शेष रात्रि में वे जय विश्वम्भर गौरचन्द्र, जय वृषभानु नन्दिनी राधे ऐसा कीर्तन कर रहे थे और लोक (प्रसिद्धि) भय से आप कुटीर में आये।।२६।।

प्रातःकाल कुटीरेते करये भजन।
वैष्णव लागि कुटीर एक करि स्थापन।।
माधुकरी करि करे जीवन धारण।
दिवानिशि भजनावेशे करये यापन।।
वृद्ध काले बाबार एक घटना घटिल।
धर्म पत्नी देखिते ताँरे तथाय पौंछिल।।२७।।

भावसार– आप प्रातःकाल कुटीर में भजन कर रहे थे और माधुकुरी करके जीवन–यापन कर रहे थे। दिन–रात भजन के आवेश में थे। वृद्धकाल में उनकी धर्मपत्नी उन्हें खोजते हुये वहाँ आईं।।२७।।

अग्रेते शुनिया बाबा गोवर्धने गेल।
धर्मपत्नी आसि तथा वारता शुनिल।।
तेंह गोवर्धने गेले बाबा ये चलिला।
हेनमते चार पाँच स्थाने ते घुरिला।।
तवे यदि बाबार नाहि पाइल दरशन।
हृदये चिन्तिया देशे करिल गमन।।२८।।

भावसार– बाबा गोवर्धन गये हैं सुनकर वे भी वहाँ गईं। बाबा का दर्शन न पाकर वे निराश हो कर लौट गईं।।२८।।

बाबार सुख चिन्ति तेंह देशेते चलिल।
स्वच्छन्द भजन कर एइ एइत कहिल।।
एकदा बाबार पदे एक क्षत हैल।
प्रतिकार नाहि भावि हृदये चिन्तिल।।
देह त्याग संकल्प तवे करिया ग्रहण।
नेकडा जड़ाञा पदे करिल गमन।।२९।।

भावसार– बाबा का भजन में कोई बाधा न हो। वे स्वछन्द भजन करें ऐसा चिन्तन करके वे वहाँ से चली गईं। इधर बाबा के चरणों में एक बहुत बड़ा घाव हो गया। ठीक न होते देख बाबा ने चिन्ता किया कि अब देह नहीं रखूँगा। घाव पर कपड़ा बाँधकर वे कुटीर से बाहर चले गये।।२९।।

अति कष्टे कुटीर होते वाहिर हइल।
कोन एक वने गिया पड़िया रहिल।।
चतुर्दिके वैष्णवगण करें अन्वेषण।
विषन्न हइल सबे ना पाञा दर्शन।।
एदिकेते सिद्ध बाबा पड़ि रहे वने।
व्याधि ह्रास नाहि हेरि कान्दे अनुक्षणे।।३०।।

भावसार– बाबा कष्टपूर्वक चलते–चलते एक जगह वन में आकर लेट गये। वैष्णव गण उन्हें खोजने लगे। इध ार रोग न ठीक होता देख बाबा विलाप करने लगे।।३०।।

श्रीराधिका नाम धरि डाके अनुक्षण।
प्रतिक्षा करये निज मृत्युर कारण।।
हेनमते दुइ दिन करये यापन।
एकबिन्दु जल ना करिल ग्रहण।।

निरवेते नाम करि करये क्रन्दन।
पाछे केह सेइ शब्द करये श्रवण।।३१।।

भावसार– वे राधे–राधे पुकार कर अपनी मृत्यु को बुलाते हुये रो रहे हैं। उन्होंने दो दिन से जल भी ग्रहण नहीं किया है। उन्होंने पीछे से कुछ सुना।।३१।।

हेरिया बाबार दशा प्रियाजी दुःख मन।
ब्रज किशोरीर रूपे दिल दरशन।।
रूटि जल हस्ते लञा सम्मुखे आसिल।
बाबाय सम्बोधिये तवे कहिते लागिल।।
दुइ दिन तुमि नाहि करिले गमन।
ते कारने करि मुइ तोमा अन्वेषण।।३२।।

भावसार– वे ब्रजलाली के रूप में राधारानी ही थीं। बाबा की दशा देख वे दुःखी हुईं। रोटी और जल हाथ में लेकर बाबा से बोलीं– बाबा! तुम दो दिन से रोटी लेने नहीं आये। इसीलिये मैं तुम्हें खोजती–खोजती यहाँ चली आई।।३२।।

मधुकुरीते तुमि ना करि गमन।
कि कारणे हेथा पड़ि रयेछ एमन।।
माता पाठाइल रूटि करह भोजन।
शुनि सिद्ध बाबा हैल सचकित मन।।
ब्रजवासी कन्या ज्ञाने ताहाके चिनिल।
ये वाड़ीर कन्या तेंह ताहाओ बुझिल।।३३।।

भावसार– बाबा! माधुकुरी में नहीं आये और यहाँ क्यों पड़े हुये हो? 'रोटी पाओ'– सुनकर बाबा चकित हो उठे।।३३।।

सेइ अनुभवे बाबा प्रणय कोप कैल।
किञ्चित् परिहास स्वरे कहिते लागिल।।

कि कारने हेथा तुमि कैल आगमन।
एखाने रयेछि आमि जानिले केमन।।
कन्या कहे सब जानि करह भोजन।
काज आछे एवे मुइ करिव गमन।।३४।।

भावसार– बृजवासिनी लाली कष्ट करके आईं बाबा ने कुछ रोष प्रकट किया। फिर हँसते हुये बोले– लाली! यहाँ क्यों चली आई? मैं यहाँ हूँ ये तुमने कैसे जाना? बाबा जल्दी रोटी पाओ मुझे काम है घर में जल्दी जाऊँगी।।३४।।

बाबा कहे लञा याह आमि ना खाइव।
बालिका कहये आमि ताहा ना शुनिव।।
सम्मुखे खावाते माता वलिल वचन।
कि कारने तुमि नाहि करिवे भोजन।।
आराम व्याराम सर्व देहेते घटय।
शरीर छाड़िले भजन पूर्ण नहि हय।।३५।।

भावसार– बाबा बोले– न खाऊँगा ले जा। लाली बोली– मैं न सुनूँगी, मैया ने सामने खवाने की बोली है। दुःख–सुख तो देह का धर्म है, बाबा शरीर छोड़ने से तो भजन पूर्ण नहीं होगा।।३५।।

बालिकार मिष्ट वाक्य करिया श्रवण।
ताहार प्रदेय द्रव्य करिल भोजन।।
तिन उपवासे बाबा सकलि खाइल।
बालिकार प्रति तवे कहिते लागिल।।
पुनः कभु हेथा नाहि कर आगमन।
शुनि मृदु हासि तेंह करिल गमन।।३६।।

भावसार– लाली की मधुर वाणी सुनकर बाबा ने रोटी पायीं और लाली के प्रति कहने लगे– लाली! फिर यहाँ न अइञो। लाली सुनकर हँसती हुई चली गईं।।३६।।

कतक्षण परे बाबा सुस्थिर हइल।
पाये ज्वाला नाहि बूझि नेकाडा खसाल।।
क्षत ना हेरिया मने सन्देह जन्मिल।
धीरे-धीरे उठि ग्राम मध्ये प्रवेशिल।।
ये वाड़ीर कन्या बाबा करिल चिन्तन।
सेई ब्रजवासी धरे पौंछिल तखन।।३७।।

भावसार- लाली के रोटी पा कर बाबा स्वस्थ हो गये। अब धीरे-धीरे गाँव में आये और उस लाली के घर में पहुँचे।।३७।।

ब्रजमायी स्थाने बाबा जिज्ञासा करिल।
श्वसुरालयेते कन्या तेंह ये कहिल।।
बाबा कहे कतदिन करिल गमन।
तेंह कहे तिन मास हइवे एखन।।
शुनि किछु ना कहिया कुटीरे चलिल।
घटिना पाठाल मायी अन्तरे बूझिल।।३८।।

भावसार- ब्रजमैया से बाबा ने जिज्ञासा की तो वे बोलीं- लाली तो ससुराल में है। फिर बाबा ने पूछा- कब गई? मैया बोलीं- बाबा तीन महीने हो गये। कुछ न कहकर बाबा चले आये व घटना का रहस्य मैया ने जान लिया।

कान्दिते कान्दिते बाबा कुटिरे आसिल।
गोपन करिलेओ ताहा प्रकाश पाइल।।
तदवधि सिद्ध नाम सर्वत्र व्यापिल।
बाबार विचित्र गुण जगत जानिल।।
बहु वैष्णव आसि करे भजन शिक्षण।
एकदा वैष्णव एक जिज्ञासे वचन।।३९।।

भावसार- राधारानी की करूणा का विचार कर बाबा रोते-रोते कुटीर में आये। यह गुप्त बात प्रकाश में आ गई।

तब से बाबा का नाम सिद्ध बाबा हो गया और बहुत सारे वैष्णव जन उनसे शिक्षा लेने लग गये। एक वैष्णव ने आकर जिज्ञासा की।।३६।।

योगपीठ तत्त्व तेंइ बुझिते ना पारि।
भाल भावे बुझाइयाँ देह कृपा करि।।
तवे तारे बुझाते बाबा आरम्भ करिल।
बुझाते बुझाते भावे आविष्ट हइल।।
अन्तर्दशा प्राप्ति हेरि वैष्णवेर गण।
चेतन कराइते आरम्भिल संकीर्तन।।४०।।

भावसार- बाबा! मैं योगपीठ नहीं समझ पा रहा हूँ कृपा करके मुझे समझा दीजिये। बाबा ने करूणा पूर्वक सिखाना शुरू किया। बोलते-बोलते बाबा भाव में आविष्ट हो गये। बाबा की अन्तर्दशा देखकर वैष्णवों ने संकीर्तन प्रारम्भ किया।।४०।।

किन्तु बाबार आर ना हइल चेतन।
अपरान्ह देह छाड़ि करिल गमन।।
अग्रहायणी शुक्लाष्टमीते अन्तर्धान।
बाबार समाधि स्थान आजि विद्यमान।।
अद्यापि विरहोत्सव अनुष्ठित हय।
स्मरिया बाबार गुण सवे धन्य हय।।४१।।

भावसार- किन्तु बाबा को चेतना न आई, अपरान्ह काल देखकर बाबा ने देह त्याग किया। अग्रहायणी शुक्ला अष्टमी में अन्तर्ध्यान हुये थे। आज भी बाबा की समाधि वहाँ पर है और वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। बाबा के गुण कहते-कहते ब्रजवासी धन्य हो उठते थे।।४१।।

बाबार अन्तर्धान वाक्य अन्य मत हय।
ब्रजवासी विहारीदास ये वाक्य कहय।।

कार्तिकेर मास बाबार पाठे वाञ्छा हैल।
शुनि ब्रजवासी सब उत्फुल्ल हइल।।
कहे बांग्लाय बाबा करह पठन।
पाछे ब्रजबुली भाषाय करह कथन।।४२।।

भावसार– बाबा अन्तर्ध्यान लीला इसप्रकार है कि ब्रजवासी बिहारीदास के अनुसार कार्तिक मास में बाबा को पाठ करने की इच्छा हुई। सुनकर सभी ब्रजवासी उत्फुल्ल हो उठे और बोले बाबा पहले आप बांग्ला में सुनाइये फिर आप ब्रजभाषा में सुनाएगा।।४२।।

रासपञ्चाध्याये बाबा करये पठन।
शुनिते आसये यत ब्रजवासीगण।।
जनैक डोमेर छेले करे आगमन।
तारे हेरि नाना कथा बले सर्वजन।।
पाठ शेष दिने एक विचित्र घटिल।
बाबा कोले डोमसुत उठिया बसिल।।४३।।

भावसार– बाबा रासपंचाध्यायी का पाठ कर रहे थे और सभी ब्रजवासी जन सुन रहे थे। इधर एक डोम जाति का बालक आया। उसे देख सभी लोग नाना प्रकार की बातें करने लगे। पाठ के अंतिम दिन में एक विचित्र घटना घटी। बाबा की गोद में वह डोम जाति का बालक आकर बैठ गया।।४३।।

बाबा कोले वसि पाठ करये श्रवण।
क्षण परे बाबा प्रति जिज्ञासे वचन।।
रास करि कृष्ण कथा करिल विश्राम।
संकेते किवा सेवा कुंजे कहत विधान।।
डोमसुत हेन वाक्य वलिल यखन।
अमनि डोमेर शब्द हइल तखन।।४४।।

भावसार– वह बाबा की गोद में बैठकर पाठ श्रवण कर रहा था। उस बालक ने थोड़ी देर बाद में जिज्ञासा की कि– बाबा रास करके कृष्ण ने कहाँ विश्राम किया? संकेतवन या सेवाकुंज में बताइये।।४४।।

बाबार ब्रह्म रन्धन भेदि प्राण वाहिरिल।
बाबार दिव्य भाव वलि सकले बुझिल।।
क्षणमध्ये सिद्ध बाबा ढ़लिया पड़िल।
सेई स्थाने सिद्ध बाबा समाधि दर्शन हइल।।
भाग्यवान हरि करये कृतार्थ जीवन।
सिद्ध बाबार प्रेमगुण अपूर्व कथन।।४५।।

भावसार– बालक का गूढ़ कथा सुनकर बाबा भावाविष्ट हो उठे और उन्होंने ब्रह्मरन्ध्र से प्राण बाहर कर दिये। उसी स्थान पर बाबा का समाधि की गई। भाग्यवान जन दर्शन करके धन्य होते हैं।।४५।।

सिद्ध बाबार प्रेमगुण अपूर्व कथन।
श्रीमती करिल यारे कृपा प्रदर्शन।।
रागमार्ग साधनेर सम्वल ये धन।
श्रीगुरु प्रणाली ताहा करिल अर्पण।।
भजन करिया बहुजने शिक्षा दिल।
भजन वैराग्य निष्ठा जगते जानाल।।४६।।

भावसार– सिद्ध बाबा की प्रेम की महिमा अद्‌भुत थी। राधारानी ने जिन पर स्वयं कृपा की और रागमार्ग के भजन का कृपा आदेश किया और गुरु प्रणाली अर्पित की। बाबा ने भी भजन सिद्ध करके बहुत जनों को शिक्षा देकर धन्य किया। वे तीव्र वैरागी थे। उनके प्रति जगत निष्ठा करने लगा।।४६।।

श्रीगुरु प्रणालीर यत महिमा कथन।

सिद्ध बाबा द्वारे व्यक्त हैल त्रिभुवन।।
जय मधुसूदन बाबा पतित पावन।
श्रीमतीर सेवा प्राप्ति कराह शिक्षण।।
सिद्ध बाबार प्रेमगुण हृदये चिन्तिया।
'किशोरी' वन्दये पद काकुति करिया।।४७।।

भावसार– गुरु प्रणाली की महिमा बाबा के द्वारा त्रिभुवन में व्यक्त हो गई। हे मधुसूदन बाबा! आप पतित पावन हैं। हमें भी राधारानी की श्रीचरणों की सेवा की शिक्षा देकर हमें धन्य करें। सिद्ध बाबा का प्रेम पूर्ण चिन्ता करते हुये किशोरीदास उनके श्रीचरणों में वन्दना करता है।।४७।।

२. श्रीकृष्णप्रसाद दास बाबाजी

जय जय विश्वम्भर प्रभु द्विजमणि।
जय जय नित्यानन्द गौर प्रेमधनि।।
जय जय श्रीअद्वैत कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
मदनमोहन ठौरेर नित्यानन्द दास।
परम अद्‌भुत याँर महिमा प्रकाश।।१।

भावसार– हे द्विजमणि विश्वम्भर प्रभु! आपकी जय हो! गौरप्रेम धन की धनी श्रीनित्यानन्द प्रभु! आपकी जय हो। श्रीकुबेरनन्दन अद्वैताचार्य प्रभु! आपकी जय हो। श्रीगदाधर श्रीवासादि गौरभक्त गण! आपकी जय हो। मदनमोहन ठौर के नित्यानन्ददास की अद्‌भुत महिमा थी।।१।।

ताँहार भेकेर शिष्य श्रीकृष्ण प्रसाद।
शुनिले याहार गुण घुचे अवसाद।।
श्रीगुरु चरणे ताँर दृढ़मति रय।
गुरु वाक्य पालनेते सुदृढ़ आशय।।
गुरु पाशे कर पोडे कर निवेदन।

उपदेश कर मोरे किवा आचरण।।२।।

भावसार– उनके वेष शिष्य श्रीकृष्णप्रसाद दास जिनकी महिमा सुनकर मन का दुःख चला जाता है। श्रीगुरु चरणों में उनकी दृढ़ मति थी। वे सुदृढ़ होकर गुरु आज्ञा का पालन करते थे। उन्होंने बाबा से जिज्ञासा की कि– भजन का उपदेश करें।।२।।

गुरु कहे मूर्ख तुमि नाहि शास्त्र ज्ञान।
शास्त्र पाठ आलोचनाय नहि तव स्थान।।
महत् सेवा किछु तुमि करह एखन।
इहाते हइवे तव वाञ्छित पूरण।।
गुरु वाक्ये कहे तेंह सदैन्य वचन।
आज्ञा करुन कोथा मुइं करिव गमन।।३।।

भावसार– श्रीगुरुदेव ने कहा– तुम मूर्ख हो, शास्त्र ज्ञान तो नहीं है, तुम संत सेवा करो। इसी से तुम्हारी वांछा पूर्ण होगी। सुनकर वे बोले– गुरुदेव! आज्ञा करें मैं कहाँ जाऊँ?।।३।।

शुनि बाबा कहे तुमि करह गमन।
गल्लूजी महाराज सब करिया यतन।।
गोपाल भट्टेर सेवा श्रीराधारमण।
ताँहार सेवक तेंह प्रेमिक सुजन।।
ताँहार समीपे रहि करह सेवन।
सर्वार्थ हइवे सिद्ध पावे प्रेमधन।।४।।

भावसार– सुनकर बाबा बोले– तुम गल्लूजी महाराज जो गोपालभट्ट के श्रीराधारमण की सेवा में नियोजित हैं वे प्रेमिक जन हैं उनके पास जाकर उनकी सेवा करो। जिससे तुमको प्रेमधन प्राप्त हो जायेगा।।४।।

शुनिया आनन्दे तेंह करिल गमन।

चरणे पड़िया कैल आत्म निवेदन।।
सविनये गुरु आज्ञा सकलि कहिल।
काय मने ताँर सेवा करिते लागिल।।
दास दासी पशु-पक्षी परिवार यत।
सेवक रूपे सकलेर सबे अविरत।।५।।

भावसार- आज्ञा पाकर कृष्णदास आनन्दित हो उठे और आज्ञानुसार गल्लूजी महाराज के पास आकर उनकी काय मन से सेवा करने लगे। यहाँ तक कि वे उनके दास-दासियों की और पशु-पक्षियों की-भी सेवा करने लगे।।५।।

जप भजनेर ताँर समय ना हइत।
दाण्डाइया दशवार स्मरण करित।।
विश वत्सर एइतारे करिल सेवन।
तवे गल्लूजी महाराज हैल अदर्शन।।
गल्लूजीर अन्तर्धाने सेवा समापन।
अन्यत्रे याइते तवे करिलेन मन।।६।।

भावसार- बाबा महाराज को जप व भजन का भी समय नहीं मिलता केवल खड़े होकर ही दस बार मंत्र स्मरण कर लेते। बीस वर्षों तक उन्होंने इसी प्रकार सेवा की। जब गल्लूजी महाराज अप्रकट हुए तो सेवा समाप्त की और अन्यत्र जाने का मन किया।।६।।

रास घेराय गोपाल मन्दिरे रहिल।
दुइतिन वर्ष तथा यापन करिल।।
माधुकरी करि करे जीवन धारण।
ताहार भजन कार्ये अपूर्व नियम।।
आठ दश सेर वजनेर कन्था खानि।
वाम करवे चापि वान्धि चलेन आपनि।।७।।

भावसार- वे रास घेरा में गोपाल मन्दिर में जा

रुके, दो–तीन वर्षों तक वहाँ रुके। माधुकुरी करके अपना जीवन–यापन करते। उनके भजन–कार्य का अपूर्व नियम था कि आठ–दस सेर वजन का कंथा बांयी कोख में दबाकर चलते।।७।।

छिन्न विच्छिन्न कान्थाय कोन कक्षेते चापिया।
पथेते चलये बाबा भूमि लोटाइया।।
पाछे पथे केह तार पदरज लय।
ते कारणे सदा तेंह हेन आचरय।।
तदवधि गुदडी बाबा नाम हैल तार।
पाछें गोवर्धनेर गमन हइल ताहार।।८।।

भावसार– छिन्न–विच्छन्न कंथा कोख में दबाकर भूमि में घसीटते हुए चलते ताकि कोई उनके पीछे की चरणरज न ले; इसीकारण उनका नाम गूदड़ी बाबा पड़ गया। बाद में वे गोवर्धन गये।।८।।

गोविन्द कुण्डेर पाशे पुछरीते रहे।
बहु दिन रहि तथा काम्यवने चले।।
वैष्णव देखिले करे साष्टांग प्रणाम।
यावत् ना उठे वैष्णव रहये शयान।।
एमत कृष्ण प्रसाद बाबार महिमा।
गुरुनिष्ठा भक्तिनिष्ठा साधनेर सीमा।।९।।

भावसार– और गोविन्द कुण्ड के पास पूँछरी में आकर रहे। बहुत दिन रहने के बाद आप काम्यवन पधारे। वैष्णव को देखते मात्र ही दण्डवत् प्रणाम करते और तब तक वे नहीं उठते। जब तक दूसरा वैष्णव दण्डवत से माथा न उठा लेता। इसप्रकार कृष्णदास बाबा की गुरुभक्ति निष्ठा थी।।९।।

श्रीगुरु वैष्णव रति भजननिष्ठ मन।

'किशोरी' वन्दये ताँर अभय चरण।।१०।।

भावसार– किशोरी (ग्रंथकार) आपकी गुरु वैष्णव रति और भजन निष्ठ मन देखकर वन्दना करता है।।१०।।

३. सिद्ध श्रील बलरामदास बाबाजी

झाड़ू मण्डल, वृन्दावन

जय जय विश्वम्भर जीवेर जीवन।
जय जय नित्यानन्द पतित पावन।।
जय जय श्रीअद्वैत गौर प्रियजन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
गोवर्धनेर सिद्ध बाबा श्रीकृष्णदास।
गौर प्रेममय मूर्ति अद्‌भुत प्रकाश।।१।।

भावसार– भक्तों के जीवनधन विश्वम्भर आपकी जय हो! पतितों को पावन करने वाले नित्यानन्द आपकी जय हो! गौरभक्तों के प्यारे श्रीअद्वैतचन्द्र आपकी जय हो! हे गदाधर श्रीवासादि भक्तगण आपकी जय हो! गोवर्धन के सिद्ध बाबा कृष्णदास गौरप्रेममय मूर्त्ति थे।।१।।

याहार प्रसादे ब्रजे रागेर भजन।
गुटिका रचिया कीर्ति करिल स्थापन।।
ताँर शिष्य बलरामदास महाशय।
वैराग्येर प्रतिमूर्ति सुदृढ़ आशय।।
चल्लिश वर्श वयसे दीक्षा ग्रहण कैल।
बाबार प्रसादे अल्प संस्कृत पड़िल।।२।।

भावसार– उन्हीं के कृपाप्रसाद से ब्रज में रागानुगा भजन गुटिका की स्थापना हुई। उनके शिष्य ये बलरामदासजी परम वैराग्य की मूर्त्ति थे। उन्होंने चालीस वर्ष की उम्र में

दीक्षा लेकर कुछ संस्कृत भी सीखी।।२।।

स्वहस्ते भागवत तेंह करिया लिखन।
सिद्ध बाबार करे लञा करिल अर्पण।।
वृन्दावने झाडुमण्डलेते कैल वास।
निरवधि लीलास्मरे करे हा हुताश।।
गौरनाम प्रेमगुणे मुग्ध प्राणमन।
सदाचार वैराग्ये ताँर दृष्टि अनुक्षण।।३।।

भावसार– उन्होंने अपने हाथों से श्रीमद्भागवत लिखकर सिद्ध बाबा के करकमल में अर्पण की और वृन्दावन स्थित झाडू मण्डल में वास किया। आप नित्य लीला स्मरण करके और राधारानी के विरह में रोते और गौरनाम प्रेम में तो आपका मन मुग्ध हो जाता। सदाचार और वैराग्य में आपकी सदा दृष्टि रहती।।३।।

बाबार वैराग्य चेष्टा अद्भुत कथन।
स्वप्नेओ स्त्रीमुख नाहि करये दर्शन।।
श्रीमन्दिर दर्शन यवे करये गमन।
स्त्रीगण हटाय यत सेवकेर गण।।
आँखिते बाँधिया वस्त्र करये गमन।
अपूर्व महिमा बाबार अद्भुत कथन।।४।।

भावसार– बाबा के वैराग्य की कथा अद्भुत थी। स्वप्न में भी स्त्री मुख का कभी दर्शन नहीं करते। श्रीमन्दिर दर्शन के लिये जब जाते तो अगर स्त्रियाँ सामने रहतीं तो उनके सेवक उन्हें हटा देते। बाबा आँखों पर पट्टी बाँधकर ही चलते। इसप्रकार बाबा की अद्भुत महिमा थी।।४।।

वृद्ध वयसेओ बाबा चोखे वस्त्र बाँधे।
यष्ठि हस्ते लञा पथे चले धीरे धीरे।।
श्रीराधारमण सेवक श्रीमधुसूदन।

बाबार चरित्र तेंह जाने विलक्षण।।
युवक वयसे यवे गोस्वामी आछिल।
एकदा बलराम बाबा दर्शने आसिल।।५।।

भावसार– वृद्धावस्था में भी बाबा आँखों पर वस्त्र बाँधते और लाठी लेकर धीरे–धीरे चलते। श्रीराधारमण के सेवक मधुसूदन बाबा का विलक्षण चरित्र जानते। युवावस्था में भी जब ये गोस्वामी आये तो एकदिन बलरामबाबा उनके दर्शन करने आये।।५।।

मन्दिर द्वारेते तेंह वसिया आछिल।
चक्षु वद्ध बाबाय हेरि आपने पूछिल।।
अभिवादन करि तेंह जिज्ञासे वचन।
वार्द्धक्य वयसे केन हेन आचरण।।
तदुत्तरे सिद्ध बाबा बलेन वचन।
वैरागीर निषिद्ध सदा स्त्रीमुख दर्शन।।६।।

भावसार– मन्दिर द्वार पर वे बैठे थे बाबा की आँखें मूंदी हुई थीं। उन्होंने उनका अभिवादन करके उनसे जिज्ञासा की कि– "वृद्धावस्था में इस तरह से कठोर आचरण क्यों?" उसके उत्तर में बाबा बोले– "वैरागी का स्त्री मुखदर्शन निषेध है"।।६।।

हाड़ मांस रक्त देहे थाके यतक्षण।
ततदिन कामवृत्ति करे जागरण।।
ते कारणे साधु सदा रहे सावधान।
वैरागीर धर्म एइ विज्ञेर विधान।।
हेनमते सिद्ध बाबार वैराग्य लक्षण।
बहुजन आसि करे भजन शिक्षण।।७।।

भावसार– हाड़–मास और रक्त देह में जब तक रहते हैं, तब तक कामवृति का जागरण करते हैं। इसीलिये साधु

को सावधान रहना चाहिये। यही वैरागी का धर्म है, जिसका बाबा ने स्वयं पालन भी किया। बहुत जन इसप्रकार से भजन शिक्षा लेकर धन्य हुये।।७।।

एकदा जगदानन्द दास कैल आगमन।
स्कन्धे उपवीत हेरि वलेन तखन।।
भेक लञा ब्रजधामे करह भजन।
जाति अभिमान तव ना गेल एखन।।
शुनि मात्र तेंह यमुनाय समर्पिल।
बाबार समीपे एले आशीष करिल।।८।।

भावसार– एकबार जगदानन्द दास आया उसके स्कन्ध में जनेउ देखकर बोले– "वेष देकर ब्रजधाम में भजन करते हो तो भी तुम्हारा जाति अभिमान नहीं गया।" सुनने मात्र से जगदानन्द दास ने जमुना में जनेउ समर्पण किया और बाबा के पास जब आये बाबा ने बहुत आशीर्वाद दिया।।८।।

से कालेते ब्रजधामे आछिल नियम।
नगर कीर्तन पूर्वे जानाय सर्व जन।।
संकीर्तन ध्वनि बाबा करिले श्रवण।
एमनि सात्विक भाव देहेते उद्‌गम।।
बलराम बाबा गुण विचित्र कथन।
सुधी कण्ठे निरवधि करिछे नर्तन।।९।।

भावसार– उस समय ब्रज में नियम था नगर–कीर्तन जहाँ होता उसकी सबको सूचना दी जाती। संकीर्तन ध्वनि सुनते ही बाबा के देह में सात्त्विक भाव उदित होता। बलरामदास बाबा के विचित्र गुण थे। भक्तगण उसे कण्ठ में धारण करके सदा उनकी महिमा गाते।।९।।

एकदा नीलमणि प्रभु महोत्सव कैल।
बाबार समीपे दुइ पारस पाठाल।।

सर्वकाल प्रभुपादेर आछये नियम।
महोत्सव कैले पारस करेन प्रेरण।।
एकबार कलिकाला हते किछु भक्त एल।
महोत्सव हैले तथा पारस पाठाल।।१०।।

भावसार– एकबार नीलमणि प्रभु ने एक महोत्सव किया और बाबा के पास दो पारस भेजे। सदा ही प्रभुपाद का नियम था। महोत्सव होता तो बाबा के पास पारस भेजते। एकबार कलकत्ता से बहुत सारे भक्त आये। महोत्सव होने पर बाबा के पास पारस भेजा।।१०।।

सर्वकाल आछे तथा सुदृढ़ नियम।
बाबाके जानाय प्रसाद करये रक्षण।।
सेदिन ओ सेवकगण बाबाय जानाल।
निर्दिष्ट स्थानेते लञा यतने व्यापिल।।
कुटीर अभ्यन्तरे शिखाय करिल रक्षण।
कतक्षणे बाबा दृष्टि कैल आरोपण।।११।।

भावसार– सदा एक सुदीर्घ नियम था कि बाबा को जानकारी देकर प्रसाद रखा जाता है। उस दिन भी सेवकों ने बाबा को बताया और स्थान विशेष पर प्रसाद रखा। कुटीर के अन्दर उसको ढ़ककर रखा। कुछ समय के बाद बाबा की दृष्टि वहाँ पर पड़ी।।११।।

ससम्माने बाबा यदि दृष्टिपात कैल।
टप टप करि रक्त पड़िते लागिल।।
झुलिर निम्नदेशे ताजा रक्त देखिया।
सेवकगण पाठाय तवे आज्ञा दिया।।
सेवकगणे नीलमणि प्रभु पाशे गेल।
वार्ता पाञा शीघ्र प्रभु बाबा पाशे एल।।१२।।

भावसार– बाबा ने महाप्रसाद को मन ही मन में

प्रणाम किया। उसी समय उसमें से टपटप करके खून गिरने लगा फिर झोली के नीचे ताजा खून देखकर सेवकों को भेजकर नीलमणि प्रभु को बुलवाया। संवाद पाकर प्रभु शीघ्र आये।।१२।।

प्रभु हेरि सिद्ध बाबा दण्डवत् कैल।
ससम्माने धीरे धीरे कहिते लागिल।।
शुका रूखा मोटा रूटि आमार भोजन।
मोर सर्व नाशे तोमा कोन प्रयोजन।।
तोमा दत्त प्रसादे ताजा रक्त दरशन।
हेरि प्रभुपाद हैल सविस्मय मन।।१३।।

भावसार- प्रभु को देखकर सिद्ध बाबा ने उनको दण्डवत किया और सम्मान पूर्वक धीरे-धीरे बोलने लगे। सूखा-रूखा-मोटा रोटी मेरा आहार है। मेरा सर्वनाश करने में आपका क्या प्रयोजन सिद्ध होगा? तुम्हारे द्वारा भेजे प्रसाद में मैंने ताजा खून देखा। प्रभुपाद ने भी देखकर विस्मित हुये।।१३।।

चित्ते अनुसंधान करि गृहे आगमन।
कलिकातार भक्तगणे जिज्ञासे वचन।।
वैश्यावृत्ति अर्थे द्वारा महोत्सव दिल।
शुनिया गोस्वामिपाद संधान पाइल।।
सिद्ध बाबार गुण उपलब्धि हृदे कैल।
एथा सेवक द्वारे बाबा स्थान लेपाइल।।१४।।

भावसार- हृदय में विचार करते हुये प्रभुपाद घर आये और कलकत्ता के भक्तों से जिज्ञासा की कि- "जाना गया वैश्यावृत्ति के अर्थ से महोत्सव हुआ था" सुनकर गोस्वामिपाद जान गये कि बाबा की दिव्य दृष्टि है और इधर सेवक द्वारा बाबा ने स्थान ले पाया।।१४।।

रक्ताक्त प्रसाद पत्रे दूरे फेलाइल।
गोमय जलेते स्थान संस्कार कैल।।
यमुनार तटे झाडुमण्डले विलास।
प्रत्यह भागवत पाठे पूर्ण सवार आश।।
ब्रजेर वैष्णवगण करे आगमन।
ब्रजमायीगण आये करिते श्रवण।।१५।।

भावसार– खून से सने प्रसाद के पत्र को दूर फिकवाया और गोबर जल से जगह शुद्ध किया। यमुना के तट पर झाडूमण्डल की ऐसी महिमा थी कि बाबा का भगवत पाठ सुनकर सभी की इच्छायें पूर्ण हो जाती थीं। ब्रज के वैष्णव गण आके सुनते ब्रजमातायें भी आकर पाठ सुनतीं।।१५।।

एकदा व्यासासने बाबा करये पठन।
एक युवती पाने दृष्टि पड़िल तखन।।
सेकाले गात्र वसन स्खलित हइल।
दर्शने बाबार चित्ते चाञ्चल्य घटिल।।
तत्क्षणात् भागवते बाबा डोर समर्पिल।
ग्रंथ बन्द करि सवा कहिते लागिल।।१६।।

भावसार– एकबार व्यास आसन पर बैठकर बाबा पाठ कर रहे थे। उसी समय बाबा की दृष्टि एक युवती पर पड़ी। उस समय युवती का वस्त्र गिर गया। दर्शन से बाबा के चित्त में चांचल्य हुआ। तत्क्षणात् उन्होंने भागवत पाठ को विश्राम दिया और सबसे कहने लगे।।१६।।

अश्रुपूर्ण लोचने कहे कातर वचन।
शुनह वैष्णवगण करिया यतन।।
सवे सिद्ध ज्ञाने मोरे करह सम्मान।
सिद्ध नहेक मुइ पाषण्डीर प्रधान।।
यमुनार तटे वसि करि व्यासासन।
नारी अंग हेरि मोर काम उद्दीपन।।१७।।

भावसार– नैनों से आँसु बहाते हुए कातर वचन बोले– हे वैष्णवगण ध्यान देकर सुनिये, आप सब मुझे तो सिद्ध ज्ञान करके सम्मान देते हो, मैं सिद्ध नहीं प्रधान पाखण्डी हूँ। यमुना के तट पर बैठकर व्यास आसन पर बैठकर नारी अंग देखकर मेरे हृदय में काम का उद्दीपन हुआ।।१७।।

मोर सम महापापी नाहि त्रिभुवन।
पापिष्ठ जीवन मुइ धरि अकारण।।
हेनमते सिद्ध बाबा बहु खेद कैल।
प्राण ना राखिव वलि संकल्प करिल।।
सवार सम्मुखे यमुनाय झाँप दिव।
ए पाप पराणेर प्रायश्चित्त कराव।।१८।।

भावसार– मेरे जैसा पापी त्रिभुवन में नहीं है। अब इस पापी शरीर को मैं अकारण ही धारण किये हुये हूँ। इस प्रकार बाबा ने बहुत खेद किया और मन में प्रण किया कि अब जीवन नहीं रखूँगा। इससे मेरे पाप का प्रायश्चित होगा।।१८।।

समवेत वैष्णवगण करिया श्रवण।
संकल्प त्यजिते बाबाय करे निवेदन।।
तथापि बाबार मन निवृत्त ना हैल।
शुनिया वैष्णवगण पुनः निवेदिल।।
स्थिर हउन सिद्ध बाबा करि निवेदन।
चित्त चाञ्चलेर अवश्य आछये कारण।।१९।।

भावसार– वैष्णव गण ने जब सुना कि बाबा शरीर छोड़ देंगे तो उन्होंने प्रार्थना की– बाबा! आप ऐसा न करें। फिर भी बाबा अपनी बात पर अड़िग रहे।

यह सुनकर वैष्णव गण पुनः बोले– स्थिर हों बाबा! चित्त चाञ्चल्य का कोई कारण है।।१९।।

कोथाय करिले आज प्रसाद ग्रहण।
बाबा कहे श्रीगोविन्द मन्दिरे ग्रहण।।
शुनि तिन मूर्ति वैष्णव मन्दिरे चलिल।
वारता शुनिया पुनः बाबा पाशे एल।।
बंगदेशी माई एक महोत्सव दिल।
ताँर स्थाने प्रश्न करि संधान पाइल।।२०।।

भावसार– आज आपने प्रसाद कहाँ ग्रहण किया। बाबा ने कहा– श्रीगोविन्द मन्दिर में, यह सुनकर भक्तगण मन्दिर में गये वहाँ खोज की और बाबा के पास आये। वहाँ एक बंगदेशी वासी माता ने महोत्सव दिया था। उनसे जिज्ञासा मिली।।२०।।

पाप पथे एइ अर्थ करिल अर्जन।
सेई अर्थे महोत्सव कैल आयोजन।।
शुनिया वैष्णव त्रय अन्तरे बूझिल।
द्रव्येर प्रभाव एइ यथार्थ देखिल।।
पापार्जित अर्थे भोग कैल निवेदन।
से प्रसाद ग्रहणे बाबार ए भाव उद्‌गम।।२१।।

भावसार– उन्होंने आकर बाबा से बताया पाप के अर्थ से धन अर्जित कर महोत्सव किया। यह सुनकर वैष्ण ाव रहस्य को समझ गये और अनर्थ के धन के प्रभाव से यह हुआ जाना। पाप से अर्जित अर्थ से जब भोग लगा उस प्रसाद के ग्रहण करने से बाबा को यह भाव हुआ।।२१।।

तवे ताँरा बाबा पाशे सब निवेदिल।
शुनिया अन्तरे बाबा विस्मित हइल।।
तदवधि बाबा एक करिल नियम।
महोत्सवे प्रसाद आर ना करे ग्रहण।।
विषयीर अन्न खेले मलिन हय मन।
ताते कभु नाहि हय गौरांग भजन।।२२।।

भावसार– तब उन्होंने बाबा के पास आकर सब बताया। यह सुनकर बाबा विस्मय हुए और तब बाबा ने यह नियम किया कि वे महोत्सव का कोई भी कहीं भी प्रसाद ग्रहण नहीं करेंगे। चूंकि विषयों का अन्न खाने से मन मलीन होता है और उससे श्रीगौरांग भजन में बाधा होती है।।२२।।

एमत शास्त्रेर वाक्य ख्यात सर्वजन।
पापार्जित अर्थ वाक्य ना याय कथन।।
सिद्ध बाबा द्वारे जगजीवे शिक्षा दिल।
सिद्ध बाबार प्रेमागुण जगत व्यापिल।।
प्रवल वैराग्य चेष्टा नैष्ठिक भजन।
बाबार महिमा गुणे मुग्ध त्रिभुवन।।२३।।

भावसार– यह शास्त्र की बात सर्वत्र प्रसिद्ध है। पाप से अर्जित धन न ग्रहण करना चाहिये। महाप्रभु ने सिद्ध बाबा के द्वारा जगत के जीवों को यह शिक्षा दी है। प्रबल वैराग्य की चेष्टा और निष्ठापूर्ण भजन बाबा के इस महिमा से त्रिभुवन मुग्ध हो उठा।।२३।।

विषयीर अन्ने किवा हय विघ्नोदय।
बाबार महिमा गुणे सकले बूझय।।
श्रद्धा भक्ति लाभे एइ भजन नियम।
बलराम बाबा द्वारे विदित भुवन।।
वैराग्येर प्रतिमूर्ति प्रेमिक प्रधान।
'किशोरी' वर्णये ताँर गुणेर आख्यान।।२४।।

भावसार– विषयी के अन्न से इस प्रकार विघ्न होता है। बाबा की कृपा से सबने यह जाना। बाबा की महिमा और गुण सभी समझते थे। श्रद्धा, भक्ति एवं लाभ का यही नियम है। बलरामदास बाबा द्वारा जगत जान पाया। वे वैराग्य की मूर्ति थे और प्रधान प्रेमी थे। यह किशोरीदास

उनके गुणों की महिमा का गान करते हुए उन्हें नमन करता है।।२४।।

४. सिद्ध श्रील कृष्णदास बाबाजी

जय जय विश्वम्भर द्विजराज राज।
जय जय नित्यानन्द रसिक समाज।।
जय जय श्रीअद्वैत जीवेर जीवन।
जय जय गदाधर श्रीवासादिगण।।
रण वाडीर सिद्ध बाबा कृष्णदास नाम।
वैराग्येर प्रति मूर्ति प्रेमानन्द धाम।।१।।

भावसार– भक्तों के जीवनधन विश्वम्भर आपकी जय हो! पतितों को पावन करने वाले नित्यानन्द आपकी जय हो! गौरभक्तों के प्यारे श्रीअद्वैतचन्द्र आपकी जय हो! हे गदाधर श्रीवासादि भक्तगण आपकी जय हो! रणवारी के सिद्ध बाबा इनका नाम कृष्णदास था। वैराग्य की प्रति मूर्ति और प्रेमानन्द धाम ही थे।।१।।

ब्रजाश्रयी साधकेर नैष्ठिक भजन।
यार द्वारे जगजीव करिल शिक्षण।।
यशोहरे आहमदपुर नामे ग्राम।
तथाय जन्मिल बाबा करूण निदान।।
पिता गोकुलचन्द्र चट्ट महाशय।
श्रीकृष्णप्रसाद नामे बाबा तथा जनमय।।२।।

भावसार– ब्रज का आश्रय लेकर निष्ठापूर्वक भजन यह इनके द्वारा जगत जीवों ने शिक्षा पायी। आपने यशोहर जिले के आहमदपुर नामक ग्राम में जन्म ग्रहण किया। आपके पिता गोकुलचन्द्र चट्ट महाशय थे। जिनके यहाँ ये बाबा कृष्णप्रसाद के नाम से जन्म लिये।।२।।

पिता हरेकृष्ण राये करये सेवन।
तेंह बाल्यावधि सेवे करिया यतन।।
सेवानन्दे विषये ताँर वैराग्य जन्मिल।
विवाह प्रस्तावे गृह त्यजिया चलिल।।
शेष रात्रे गृह त्यजि करिल गमन।
पदव्रजे उपनीत हैल वृन्दावन।।३।।

भावसार– पिता हरे कृष्ण महामंत्र जप करते। उन्हें देख वे भी बचपन से ही यत्नपूर्वक हरे कृष्ण महामंत्र का जप करते। निष्ठापूर्वक जप से उनके हृदय में वैराग्य उत्पन्न हुआ। परिवार ने जब विवाह का प्रस्ताव किया तो वे घर को छोड़कर वृन्दावन की ओर चले गये।।३।।

कतदिन मदन मोहने सेवा कैल।
रणवाड़ीते गिया पाछे भजने मातिल।।
तत्काले रणवाडी जंगल भीषण।
कुटीर निर्माइया बाबा भजने मगन।।
ग्रामे माधुकुरी करि करये भोजन।
बाबाके परम प्रीति करे सर्वजन।।४।।

भावसार– वहाँ जाकर कुछ दिन श्रीमदनमोहनजी की सेवा की। रणवारी में जाकर पीछे भजन में मत्त हो गये। उस समय रणवारी में भीषण जंगल था। कुटीर बनवाकर बाबा भजन में मग्न रहते और गाँव में माधुकुरी करके रहते और बाबा से सभी ब्रजवासी प्रेम करते।।४।।

निर्बन्धातिशये बाबा सर्वगृहे याय।
प्रयोजन मत राखि गरुके विलाय।।
बाबा ना याइले दुःखी ब्रजवासीगण।
ताइ नित्य सर्व गृहे बाबार गमन।।
बाल्यावधि गृहत्यजि ब्रजे आगमन।
अन्य तीर्थादि बाबा न कैल दर्शन।।५।।

भावसार– प्रेम के कारण बाबा सभी घरों में जाते; जितनी जरूरत होती बाकी गुरुदेव को अर्पण करते। बाबा यदि न जायें तो ब्रजवासी लोग दुःख पाते। बालकपन से घर छोड़कर बाबा आये थे। अन्य किसी तीर्थ में बाबा का जाना नहीं हुआ था।।५।।

प्राय पंचाश वत्सर ब्रजे वास कैल।
तीर्थ भ्रमणेते बाबार वाञ्छा उपजिल।।
हेनकाले प्रियाजी ताँरे दिल दरशन।
कहये अन्यत्र नाहि करह गमन।।
वृन्दावन छाड़ि कोथा ना कर गमन।
एथाइ हइवे तव वाञ्छित पूरण।।६।।

भावसार– प्राय पचास वर्षों तक बाबा ने ब्रज में वास किया। तब तीर्थ भ्रमण की बाबा की इच्छा हुई अन्तर्यामी राधारानी अपने भक्त का धाम से बाहर जाना निष्प्रयोजन जान दर्शन देकर और कहीं मत जाना ऐसा कहा। इस ब्रजधाम में ही भजन से तुम्हारी सभी मनोकामना पूर्ण हो जायेंगी।।६।।

तीर्थादि भ्रमणे तव नाहि प्रयोजन।
शुनि भावे बूझि मोर स्वमत कल्पन।।
चित्त भ्रम ज्ञाने तेंह आज्ञा उपेक्षिल।
चारिधाम करिवारे गमन करिल।।
भ्रमिते भ्रमिते प्रेमे द्वारका गमन।
तथाय घाटिल एक विचित्र घटन।।७।।

भावसार– तीर्थों–तीर्थों में भ्रमण का तुम्हारा प्रयोजन नहीं है सुनकर ही बाबा भाव में विचार किये। यह मेरा ही मन का कोई कल्पना है। चित्त के भ्रम ज्ञान से उन्होंने आज्ञा की उपेक्षा की और चार धाम करने के लिये चल दिये। चलते–चलते प्रेम से द्वारिका आये, वहाँ एक विचित्र

घटना घटी।।७।।

सर्वकाल तथा एक आछये नियम।
चतुःसम्प्रदायी करे तप्त मुद्रार धारण।।
किन्तु ब्रज अनुरागीर नहे सदाचार।
शास्त्र आज्ञा ज्ञाने बाबा करिल आचार।।
तप्त मुद्रा धरि बाबा विचलित मन।
चित्तेर विक्षेपे आर ना कैल भ्रमण।।८।।

भावसार– वहाँ सदा ही एक नियम है चारों सम्प्रदायी तप्त मुद्रा का धारण करते हैं। किन्तु ब्रज के अनुरागियों का यह सदाचार नहीं है। शास्त्र की आज्ञा ज्ञान से बाबा ने यह किया और तप्त मुद्रा को धारण किया; किन्तु इससे बाबा का मन विचलित हो उठा। उनके चित्त में विक्षेप आ गया, जिससे वे और भ्रमण नहीं कर पाये।।८।।

तथा हैते ब्रजधामे कैल आगमन।
सेई रात्रे राधारानी दिल दरशन।।
कहे ब्रज छाड़ि तुमि करह गमन।
सत्यभामादिर दासी हइल एखन।।
तप्त मुद्रादि यवे तुमि करिले धारण।
एखाने थाकिया आर कोन प्रयोजन।।९।।

भावसार– वहाँ से आप ब्रजधाम आये। उसी रात्रि को राधारानी ने दर्शन दिया। वे बोलीं– ब्रज छोड़कर चले जाओ। अब तुम सत्यभामा के दासी हो गये हो। जब तुमने तप्त मुद्रा धारण की; तब यहाँ रहने का क्या प्रयोजन है?।।९।।

स्वप्नादेशे सिद्ध बाबा व्याकुलित मन।
किं कर्त्तव्य विमूढ़ हञा करये चिन्तन।।
ब्रज सिद्ध बाबाजी गणे जिज्ञासा करिल।

प्यारी आज्ञा अनुरूप सकले कहिल।।
गोवर्द्धने सिद्ध बाबार समीपे गमन।
चिर सख्य भावे तेंह दिल आलिंगन।।१०।।

भावसार– स्वप्नादेश से बाबा अति व्याकुलित हो उठे। हाय! अब क्या करूँ? ऐसा सोचने लगे। उन्होंने ब्रज के सिद्ध बाबाओं से जिज्ञासा की कि– सबने राधारानी की आज्ञानुसार करने की कही। गोवर्धन में सिद्ध बाबा के पास गये। सख्यभाव के आवेश में उन्होंने आलिंगन किया।।१०।।

एत काल अदर्शन वारता पूछिल।
एके एके महाराज सकलि कहिल।।
वार्ता शुनि सिद्ध बाबा छाड़िल निःश्वास।
स्पर्शनेर योग्यता मोर हइल विनाश।
राज राजेश्वरी दासी हइले एखन।
गोयालिनी दासी मुइं स्पर्शिव केमन।।११।।

भावसार– इतने समय से आपका दर्शन नहीं हुआ। पूरा विवरण बाबा ने उनको बताया फिर संवाद सुनकर सिद्ध बाबा ने दीर्घ श्वास छोड़ी और बोले– आपको छूने की मेरी योग्यता नष्ट हो गई। आप तो राज–राजेश्वरी की दासी हो गईं; मैं तो ग्वालिनी की दासी हूँ, आपको कैसे छूऊँगी?।।११।।

शुनि रणवाड़ी बाबा स्तम्भित हइल।
कतक्षणे प्रणमिया स्व स्थाने आसिल।।
निज प्रतिकार चिन्ते वैष्णवेर स्थाने।
सबे कहे प्यारी आज्ञा शाश्वत वचने।।
ताँहार वचन लंघे आछे कोन जन।
शुनिया हइल बाबा अतीव विमन।।१२।।

भावसार– यह सुन रणवारी के बाबा स्तम्भित हो गये

और कुछ समय प्रणाम करके निज कुटीर में आये और वैष्णवों से कोई समाधान की जिज्ञासा करने लगे। सबने यही उत्तर दिया राधारानी की आज्ञा सर्वोपरि है। उनकी आज्ञा का उलंघन करने वाला कौन हो सकता है? यह सुनकर बाबा अति विमना हो उठे।।१२।।

हताश हइया रणवाड़ीते आसिल।
व्याकुलित चित्ते अन्न जल त्यागिल।।
निज कृत कार्ये सदा अनुतप्त मन।
प्रियाजी विरहानले तप्त सदा प्राण।।
विरह अनले हृदय करये दहन।
हेनमते तिनमास करये यापन।।१३।।

भावसार– वे हताश होकर पुनः रणवारी आये। अति व्याकुलित चित होकर अन्न–जलादि का त्याग कर दिया। अपने किये कार्य में वे बड़े ही चिन्तित हो उठे थे और राधारानी की विरह में उनका सदा प्राण जलता रहता। इसतरह से तीन मास बीत गये।।१३।।

भितरेर अग्नि एवे बाह्य प्रकाशिल।
विरह अनले देह भस्मीभूत हैल।।
दक्षिण पदे वृद्धांगुले अग्नि प्रकाशिल।
क्रमे क्रमे तिन दिने भस्मीभूत हैल।।१४।।

भावसार– भीतर की अग्नि ने अब बाहर प्रकाश पाया। विरह की अग्नि से देह भस्मीभूत हो उठा। दक्षिण पद के अँगूठा से अग्नि प्रकटी और धीरे–धीरे तीन दिनों में आप भस्मीभूत हो गये।।१४।।

से काले जगन्नाथ बाबा तथा आगमन।
सेवक बिहारीदास वलये वचन।।
अदूरे कुटीरे तेहँ करे अवस्थान।

शेषे राते बिहारीदासे कहिल आख्यान।।
कहये ये कुटीरेते करह गमन।
घरेर भितर देख कि हय घटन।।

भावसार– उस समय वहाँ जगन्नाथदास बाबा आये। सेवक बिहारीदास ने कहा– "उस कुटिया में जाओ और पता करो वहाँ क्या घटना हुई है?"।।१४।।

आज्ञा पाञा बिहारीदास करिल गमन।
अनुसंधान क्रमे जाने सब विवरण।।
सिद्ध बाबा पाशे आसि कहे विवरण।
कृष्णदास बाबार अंग होतेछे दहन।।१५।।

भावसार– आज्ञा पाकर बिहारीदास आये व अनु-संधान करने पर सब जान गये और फिर बाबा को बताया। कृष्णदास बाबा का देह जल रहा है।।१५।।

घरे खिल लागि विशेष जानिते पारिल।
शुनि जगन्नाथ बाबा व्यथित हइल।।
अहो विरहानल वलि वलिया वचन।
विहारीर स्कन्धे चापि करिल गमन।।
कुटीर द्वारेते आसि दरजा भांगिल।
भितरे प्रवेश करि नयने हेरिल।।१६।।

भावसार– यह सब जानकर बाबा बड़े व्यथित हुये। अहो! विरहाग्नि ऐसा कहने लगे और बिहारी के स्कन्ध पर चढ़कर आये, कुटीर के दरवाजे पर आकर दरवाजा तोड़ दिया फिर भीतर प्रवेश कर देखा।।१६।।

कण्ठ पर्यन्त अग्नि यवे कैल आगमन।
उपरे ना उठे हेरि करिल चिन्तन।।
अन्धकार घरे खूँजि तुला आनि दिल।
तिनटि वर्तिका बाबा आपनि पाकाल।।

सेइत वर्तिका शिरे करिल अर्पण।
अमनि दप करि अग्नि ज्वलिल तखन।।१७।।

भावसार– बाबा के कण्ठ पर्यन्त अग्नि आ पहुँची और जब ऊपर नहीं उठ रही थी; तब जगन्नाथ बाबा ने चिन्ता किया और अन्धकारमय कपास खोज के लाये उससे तीन बत्ती बनाई और मस्तक पर रखीं; जिससे अग्नि धधक उठी।।१७।।

सेइत ज्वलने देह भस्मीभूत हैल।
आश्चर्य हेरिया सबे विस्मित हइल।।
वुक पर्यन्त अग्नि यवे कैल आगमन।
तदवधि स्फुरे नाम करे उच्चारण।।
कातरे ब्रजवासीगण यदि ताकाइल।
इंगिते अभय दिया बाबा ये कहिल।।१८।।

भावसार– उस विरहाग्नि से बाबा का देह भस्मीभूत हो उठा। यह आश्चर्य देख सभी विस्मित हो उठे। हृदय पर्यन्त अग्नि आ गई तो भी कण्ठ से हरिनाम चल रहा था। तब ब्रजवासियों ने दुःखित मन से 'बाबा–बाबा' कहकर रोने लगे। बाबा ने इशारे से अभय देकर कहा।।१८।।

हस्त उत्तोलन करि वलये वचन।
चिन्ता ना करिह सवार दुःख विमोचन।।
दुर्भिक्ष महामारी ग्रामे कभु नाहि हवे।
नित्य आसि मोर स्थाने कीर्तन करिवे।।
ग्राम पार्श्व दिया यमुना हवे प्रवाहित।
निश्चिन्त हइया रह कहिये विहित।।१९।।

भावसार– बाबा महाराज हाथ उठाकर कहने लगे– चिन्ता न करो, तुम्हारा कोई दुःख नहीं रहेगा। दुर्भिक्ष और महामारी गाँव में कभी नहीं आयेगी। प्रतिदिन यहाँ आकर

हरिनाम संकीर्तन करना। गाँव के निकट यमुना प्रवाहित होगी, निश्चिन्त होकर रहो।।१६।।

संवाद पाञा दारोगार हैल आगमन।
तहसील दार सह तथाय गमन।।
हिन्दू तहसीलदार दारोगा मुसलमान।
सिद्ध बाबार लीला हेरे आसि विद्यमान।।
मुसलमान आसिले अग्नि निर्वापित हैल।
गमनेते पूर्ववत् ज्वलिया उठिल।।२०।।

भावसार– संवाद पाकर वहाँ दरोगा आये और तहसीलदार को भी साथ लाये। तलसीलदार तो हिन्दू था और दरोगा मुसलमान। ये आकर सिद्ध बाबा का लीला दर्शन करने लगे। मुसलमान के आने पर अग्नि बुझ गयी और चले जाने पर पुनः अग्नि जल उठी।।२०।।

तहसीलदार तवे करिया चिन्तन।
बाबार देहे प्रचुर घृत करिल अर्पण।।
ये भावे वसिया बाबा भस्मीभूत हैल।
एखनओ सेइरूप समाधि रहिल।।
कतदिने एक गुरु भायेर आगमन।
प्रेमदास बाबाजी नाम परम सुजान।।२१।।

भावसार– तहसीलदार ने तब चिन्तन किया बाबा के देह में बहुत घी उन्होंने अर्पण किया। इसप्रकार बाबा का देह भस्मीभूत हुआ। तब भी इसी प्रकार से समाधि में ही थे। कुछ दिनों में एक दिन उनके गुरु भाई का आगमन हुआ, जिसका नाम प्रेमदास बाबाजी था। वे बहुत सज्जन थे।।२१।।

सिद्ध बाबा लागि बहु करिल रोदन।
कहे मम हस्त काष्ठ ना कैल ग्रहण।।

एइ काष्ठ दिलाम वलि भस्मेते अर्पिल।
अमनि ज्वलिया काष्ठ भस्मीभूत हैल।।
अचिन्त्य सिद्ध बाबार महिमा कथन।
सर्वत्र घोषये ताँर चरित्र कथन।।२२।।

भावसार– वे सिद्ध बाबा की दशा देखकर रोने लगे और बोलने लगे कि मैं उनकी कोई सेवा नहीं कर पाया। बोलकर उन्होंने एक काष्ठ अर्पण किया, जिससे अग्नि जल उठी और वे भस्मीभूत हो गये। बाबा की अचिन्त्य महिमा थी। सभी लोग उनकी महिमा का गान करने लगे।।२२।।

अद्यापि बाबार प्रभाव देखे सर्वजन।
अचिन्त्य महिमा बाबार घोषे त्रिभुवन।।
नित्यानन्द महान्त नाम परम सुजन।
अच्युतानन्द शास्त्री शिष्य ख्यात सर्वजन।।
बाबार शाखा गदीर महान्त तेंह हय।
आपनि श्रीमुखे एइ महिमा कहय।।२३।।

भावसार– आज भी बाबा की महिमा और प्रभाव देखा जाता है। नित्यानन्द महन्त नाम के परम सज्जन वैष्णव थे और अच्युतानन्द शास्त्री उनके शिष्य जिनको सभी जानते थे। वे स्थान के महन्त हुये। बाबा की उन्होंने अनोखी महिमा कही।।२३।।

पौष अमावस्या तिथि विरह उत्सव।
ब्रजवासी चाँदा तुलि करे महोत्सव।।
चौरासी क्रोश वैष्णवेर हय आगमन।
स्मरिया बाबार गुण करेन भोजन।।
अचिन्त्य अगम्य बाबार चरित्र कथन।
शुनिले लभये शुद्ध प्रेमभक्ति धन।।२४।।

भावसार– बाबा का विरहोत्सव पौष मास की अमावस्या

के दिन मनाया गया। ब्रजवासियों ने बड़े प्रेम से अपने में से ही धन इकट्ठा करके महोत्सव किया और चौरासी कोस वैष्णवों को निमन्त्रण दिया। वे बाबा की लीला भजन प्रणाली चिन्ता करते हुए आये और प्रसाद पाये। बाबा की महिमा लीला चिन्तन करने से प्रेमभक्ति प्राप्त होती है।।२४।।

ब्रज आनुगत्य भावेर भजन स्फुरण।
बाबार एकान्त निष्ठा राधिका चरण।।
राधारदासीत्व प्राप्ति साधन श्रेष्ठ हय।
आपनि आचरि बाबा जगते बुझाय।।
जयकृष्ण दास बाबा पतित पावन।
कृपादृष्टि कर मोरे जानि दीन जन।।
श्रीराधार पादपद्मे दासी अभिलाष।
'किशोरीर' हृदेते कराह प्रकाश।।२५।।

भावसार– गौड़ीय वैष्णवों की भजन प्रणाली ब्रज में गोपियों के अनुगत होकर श्रीराधा चरणसेवा प्राप्ति की एकान्त कामना करते हुये भजन यही सर्वश्रेष्ठ साधन है। यह आचरण करके बाबा सबको शिक्षा देते। बाबा आप पतित पावन थे आप कृपा करो जैसे मैं राधारानी के पदकमलों की अधिकारिणी हो सकूँ।।२५।।

७. श्रील तोतारामदास बाबाजी

नवद्वीप

जय जय प्रेम अवतार गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द प्रेमदानकारी।।
जय जय श्रीअद्वैत सीतार जीवन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
तोताराम दास बाबा प्रेमिक सुजन।
गौरप्रेम मय मूर्ति गौर प्रियजन।।१।।

भावसार– भक्तों के जीवनधन विश्वम्भर आपकी जय हो! पतितों को पावन करने वाले नित्यानन्द आपकी जय हो! गौरभक्तों के प्यारे श्रीअद्वैतचन्द्र आपकी जय हो! हे गदाधर श्रीवासादि भक्तगण आपकी जय हो! तोतारामदास बाबा प्रेमीभक्त थे। वे गौर के प्रेममय मूर्ति और प्रियजन थे।।१।।

नवद्वीपे बड़ आखड़ा याँहार स्थापन।
अचिन्त्य महिमा ताँर ख्यात सर्वजन।।
द्रविंड़ ब्राह्मण रामदास मिश्रवर।
सर्वशास्त्र विशारद महाशक्ति धर।।
न्याय पड़िवारे नवद्वीपे आगमन।
पाठ शेषे पूर्वे हैल वैराग्य उद्‌गम।।२।।

भावसार– नवद्वीप में बड़े अखाड़े के नाम से इन्होंने मठ तैयार किया। यहाँ संतों के रखकर भजन कराया। इनके भजन के प्रभाव से वह स्थान गौरप्रिय हो उठा। द्रविड़ देश के ब्राह्मण रामदास मिश्र सर्वशास्त्र विशारद और महाभक्त थे। वे न्याय पढ़ने के लिये नवद्वीप आये। पाठ के अन्त में उनके हृदय में वैराग्य का उद्‌गम हुआ।।२।।

प्रवल वैराग्ये ब्रजे करिला गमन।
हेरि गोपी नाथदेवे पुलकित मन।।
मधु पण्डितेर प्राणधन गोपीनाथ।
भुवन मोहन मूर्ति करूणा अगाध।।
ताँहार दक्षिणे एक ठौरेते भजन।
दिवानिशि लीला स्मरणे पुलकित मन।।३।।

भावसार– प्रबल वैराग्य से ब्रज की ओर आये। गोपीनाथजी के दर्शन कर पुलकित मन हो उठे। जिस विग्रह को मधु पण्डित जी ने बनाया था। गोपीनाथ अति मोहन मूर्ति और करूणासागर थे। उनके दक्षिण में एक ठौर में रहकर आप भजन करते थे और दिन–रात लीला स्मरण

कर पुलकित मन होते।।३।।

कतदिने गौरहरि कैल आज्ञा दान।
नवद्वीपे चल तुमि यथा मोर स्थान।।
मोर सेवा पर्यवेक्षण करह एखन।
शुनि प्रेमानन्दे गौड़े कैल आगमन।।
विष्णुप्रिया प्राण गौर नवद्वीपे वास।
भक्ते कृपा प्रकाशिते अद्‌भुत प्रकाश।।४।।

भावसार– कुछ दिनों में गौरहरि ने आज्ञा की कि– मेरी लीलास्थली नवद्वीप में जाओ। वहाँ मेरी सेवा का पर्यवेक्षण करो। आज्ञा पाकर आप आनन्द पूर्वक गौड़ देश आये। विष्णुप्रिया प्राण धामेश्वर महाप्रभु श्रीगौरांगहरि विग्रह रूप में भक्तों पर कृपा करने के लिये नवद्वीप में रह रहे थे।।४।।

गौर अन्तर्धाने विष्णुप्रिया दुःख मन।
श्रीवंशीवदन काँदे करिया रोदन।।
दोहाँरे प्रबोधि प्रभु हइल प्रकाश।
नवद्वीपवासी करे तार दरसने आस।।
सेइत विग्रह नदे करये विराज।
माधवेर वंशधर करये सेवा काज।।५।।

भावसार– जब गौरांग महाप्रभु अप्रकट हो गये थे। तब विष्णुप्रिया विरह कातरा और अति दुःखित मन हो उठीं थी और वंशीवदन फुत्कार कर रोते थे। दोनों को प्रबोध देने के लिये उन्होंने विग्रह करने का आदेश दिया; वही विग्रह नदिया में आज भी विराजमान है। माधव गोस्वामी के वंश–धर अति सुन्दर भाव से सेवा करते हुए आ रहे हैं।।५।।

सेकाले विश्रृंखला अति प्रभुर सेवने।
परम दारिद्रे सेवे गोस्वामिर गणे।।

दारिद्रे करिते नारे मन्दिर रचन।
पाला अनुसारे सेवे लञा स्वभवन।।
विशेष पाषण्डी आर राजगण भये।
मध्ये मध्ये श्रीविग्रह राखे लुकाइये।।६।।

भावसार– प्रभु की सेवा उस समय अति सुन्दर भाव से होती। अति गरीब गोस्वामी गण यद्यपि प्रीति से सेवा करते; किन्तु गरीबी के कारण मन्दिर न बना पाते। गोस्वामी गण क्रमानुसार ठाकुरजी को अपने भवन में ले जाकर सेवा करते। चूंकि उन्हें नास्तिक राजा से भय था, बीच–बीच में श्रीविग्रह को भी छुपा के रखना पड़ता।।६।।

सेकाले प्रभुर आज्ञाय चले रामदास।
महाप्रभुर स्थायी सेवा करिते प्रकाश।।
नवद्वीपे गंगातीरे कैल आगमन।
दश अश्वत्थ तलाय करिल आसन।।
ललाटे तिलक शोभे कण्ठे तुलसि माला।
सात्विक विकार सदा देहे करे खेला।।७।।

भावसार– आज्ञा पाकर रामदास चले। उनका उद्देश्य महाप्रभु की स्थायी सेवा का प्रकाश करने का था। आप नवद्वीप में गंगा तट पर उपस्थित हुये और दस अश्वत्थ तला पर अपना आसन जमाया। उनके ललाट में सुशोभित तिलक और तुलसी माला विराज रही थी। देह में सदा सात्त्विक विकार दृष्ट होते हैं।।७।।

सदा उदासीन वेष अद्भुत दर्शन।
प्रेमे टुलु टुलु आँखि नहे बाह्य मन।।
नवद्वीपवासी यत पाषण्डीर गण।
ताँरे हेरि परिहासे करये पीड़न।।
आम्लान वदने तेह सहे अनुक्षण।
ताँहार अचिन्त्य गुण के करे वर्णन।।८।।

भावसार– वे सदा विरक्त वेश और अद्‌भुत दर्शनीय थे। उनके प्रेममय नयन और लीला में मन रहता। नवद्वीप वासी जितने पाखण्डीगण थे। वे इन्हें देखकर इनकी हंसी करते और दुःख देते। दुःखी मन से वे सब सहते। उनकी करूणा को कौन वर्णन कर सकता है?।।८।।

एकदा कौतुके रामदास प्रश्न कैल।
शुनिया पीड़नकारी निर्वचन हैल।।
न्याय शास्त्र हैते ताँरे दुइ प्रश्न कैल।
तेंह अध्यापके गिया सकलि कहिल।।
पाण्डित्य प्रतिभा तार करिया श्रवण।
विमोहित हैल यत अध्यापक गण।।९।।

भावसार– किन्तु एकबार रामदास उत्पीड़न कारियों से जिज्ञासा किये। जिसे सुनकर पीड़नकारी निःशब्द हुये। उन्होंने न्यास शास्त्र से दो प्रश्न किये थे। उन्होंने अपने अध्यापक से जाकर कहा, जिसे सुनकर अध्यापक गण अत्यन्त विमोहित हो उठे।।९।।

शास्त्र चर्चा लागि सवे करे आगमन।
असाधारण प्रतिभा हेरि चमकित मन।।
एकदा प्रत्यूषे नैयायिक दुइ जन।
गंगाजले वाक युद्ध कैल आरम्भन।।
पक्ष प्रतिपक्ष करि दिवस काटाल।
से स्थले रहिया बाबा कैल निरक्षण।।१०।।

भावसार– वे सब अध्यापक गण शास्त्र चर्चा करने आये। एकबार गंगास्नान करने गये दो न्यायिक स्नान करते ही वाक् युद्ध में प्रवृत्त हो गये पूरा दिन एक–दूसरे को पराजित करने की कोशिश करते रहे। वहीं पर रहकर बाबा सुनते रहे।।१०।।

सन्ध्याकाले दोंहापाशे करिया गमन।
उभयेर समस्या तवे कैल निरसन।।
तदवस्तु देखि दोंहा मीमांसा करिल।
उभये आनन्द पाञा चक्षु उन्मीलिल।।
कंथ करंगधारी बाबाय करि निरीक्षण।
बहु प्रशंसिया दोंहे करिल गमन।।११।।

भावसार– बाबा संध्याकाल में उन दोनों के पास आये और दोनों की समस्या को निरस्त कर दिया। तब वे दोनों आनन्द पाकर बाबा का दर्शन करते हुये व उनकी प्रशंसा करते हुए चले गये।।११।।

तदावधि बाबार गुण हइल प्रकाश।
बाबार पाण्डित्य गुण अद्‌भुत विकाश।।
एकदा गंगातटे वसि आन्हिके मगन।
सेकाले पाषण्ड बहु कैल निर्यातन।।
आनिया जूतार माला गले पराइल।
सेकाले तथाय एक विचित्र घटिल।।१२।।

भावसार– तब से बाबा की महिमा का प्रकाश हुआ और वे विशेष पाण्डित्य गुणों से पहचाने–जाने लगे। एकबार गंगा तट पर वे भजन में मग्न थे, उसी समय बहुत पाखण्डी लोग आकर दुष्टतापूर्वक उनके गले में जूतों की माला पहना दी। तब वहाँ एक विचित्र घटना घटी।।१२।।

दैवे गंगा गोविन्द सिंह देवान।
नौकायोगे गंगा पथे गमन ताहान।।
बाबार अपमान हेरि महा क्षुब्ध हैल।
हेन के करिल बलि बाबाय पूछिल।।
निर्विकार रामदास ध्यान मग्न हैल।
ताहार वचने कोन उत्तर ना दिल।।१३।।

भावसार– दैवयोग से गोविन्द सिंह दीवान नौका से गंगा पार कर रहे थे। बाबा का अपमान होते देख वे बड़े रुष्ट हुये और कहा कि ऐसा किसने किया? किन्तु उस समय भी बाबा निर्विकार और भजन में ध्यान मग्न थे। उनके वचनों का उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया।।१३।।

तवे दुःखे घाटे तेंह नौका भिड़ाइल।
नवद्वीपे अधीश्वर समीपे चलिल।।
राजा कृष्णचन्द्र स्थाने अभियोग कैल।
शुनिया आपनि राजा तथाय आसिल।।
वृतान्त शुनिया राजा हैल मर्माहत।
आपनारे दोषी करि हैल अनुतप्त।।१४।।

भावसार– तब दुःखपूर्वक उन्होंने नौका को घाट पर लगाया। परिस्थिति देखकर नवद्वीप के अधीश्वर के पास आये और राजा कृष्णचन्द्र से मिले। सुनकर राजा वहीं पर आये। वृतान्त देखकर राजा मर्माहत हुये और अपने आपको दोषी मानते हुए अनुतप्त होने लगे।।१४।।

कहे आसि पीड़न करिल येइ जन।
आमार दोषेते दोषी हैल सेइ जन।।
दोष स्वीकार करि राजा क्षमा चाहि निल।
विविध विधाने बाबाय सम्मान करिल।।
षड्दर्शन शास्त्रेर अद्भुत पाण्डित्य।
हेरि राजा कृष्णचन्द्र हैल विमोहित।।१५।।

भावसार– वे कहने लगे, जिसने इन्हें दुःख दिया वे मेरे दोष से दोषी हुआ व दोष को स्वीकार कर बाबा ने क्षमा चाही और अनेक प्रकार से बाबा का सम्मान किया। बाबा का षड्दर्शन शास्त्रों में अद्भुत पाण्डित्य देखकर राजा कृष्णचन्द्र विमोहित हो उठे।।१५।।

'तोता' वलि उपाधि ताँने करिल अर्पण।
तदवधि 'तोताराम दास' ख्यात हन।।
श्रीगिरिधारी देवे बाबा सेवे अनुक्षण।
वृक्षतले रहे सदा पुलके मगन।।
कयेक बार शास्त्रालापे सुखी राजमन।
ठाकुरेर आश्रम लागि करिल चिन्तन।।१६।।

भावसार– और उन्हें तोता (शुक) बोलकर उपाधि दी। जिससे वे तोताराम दास के नाम से प्रसिद्ध हुये। बाबा श्रीगिरिधारीजी की सदा सेवा करते। वृक्षतल में रहकर सदा निमग्न रहते। अनेक बार राजा के साथ शास्त्रालाप करके उन्हें सुखी किया था। ठाकुरजी के आश्रम के लिये आप चिन्ता करने लगे।।१६।।

वृक्षपाशे छय विद्या जमि कैल दान।
निष्कर वलिया सत्व करिल प्रदान।।
एइ जमिते आश्रम हइल स्थापित।
'वड़ आखडा' नामे एवे रयेछे विख्यात।।
तवे रामदास हृदे करिया चिन्तन।
महाप्रभुर प्रेमसेवा करिल स्थापन।।१७।।

भावसार– उस वृक्ष के पास में उनको जमींन देकर उसका अधिकार दे दिया और उस पर आश्रम हुआ; जिसका नाम बड़ा अखाड़ा विख्यात हो गया। तब रामदास हृदय में विचार करके महाप्रभु की प्रेममयी सेवा स्थापित किये।।१७।।

श्रीमन्दिर करि महाप्रभु आनाइल।
मालन्च पाड़ा हइते विजय हइल।।
तदवधि नित्य सेवा चलिते लागिल।
महाप्रभु वाड़ी वलि प्रसिद्ध हइल।।
वर्तमाने श्रीमन्दिरे करिछे विराज।
गोस्वामिगण नित्य करे सेवा काज।।१८।।

भावसार– श्रीमन्दिर का निर्माण कर महाप्रभु का प्रतिष्ठान हुआ। महाप्रभु मालन्च पाड़ा से आये और नित्य सेवा चलने लगी। वह स्थान महाप्रभु वाड़ी नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज भी ठाकुर वहीं पर विराजमान हैं और गोस्वामिगण नित्य उनकी सेवा करके धन्य होते हैं।।१८।।

गौरांग आदेशे रामदास गौड़े एल।
स्थापिया गौरांग सेवा भुवन तारिल।।
विष्णुप्रिया प्राणनाथ प्रभु गौरहरि।
गदाइर गौर वलि कहे जय भरि।।
नदियार नाथ गौरा जगतेर प्राण।
अद्यापिओ गिया हेरे यत भाग्यवान्।।१९।।

भावसार– गौरांग महाप्रभु के आदेश से श्रीरामदास गौड़ देश में आये। गौरांग महाप्रभु की भुवन तारण विग्रह सेवा स्थापित करके जगत उद्धार किया। वह विष्णुप्रिया द्वारा सेवित श्रीगौरहरि का विग्रह जिसको लोग गदाधर का गौर बोलकर भी जयकार देते हैं। नदिया के नाथ गौरहरि जगत के प्राण का दर्शन कर आज भी भाग्यवान जन कृतार्थ होते हैं।।१९।।

बाबार प्रसादे जीवेर हेन भाग्य हैल।
देवेर दुर्लभ धने जगते लभिल।।
बाबार एतेक गुण करिया स्मरण।
'किशोरी' वन्दये तार युगल चरण।।२०।।

भावसार– बाबा की कृपा प्रसाद से जीवों का भाग्य खुल गया। उन्होंने देव दुर्लभ धन को पाया। बाबा के ऐसे दिव्य गुण स्मरण करके। यह ग्रंथकार किशोरी बाबा के युगल चरणों में प्रणाम करता है।।२०।।

६. श्रील विनोदबिहारी गोस्वामी (गौरविनोददास बाबाजी)

कालीदह, वृन्दावन

जय जय पतित पावन विश्वम्भर।
जय जय नित्यानन्द करूणासागर।।
जय जय श्रीअद्वैत कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर वासादिगण।।
गौरांगेर शक्ति रूप पण्डित गदाधर।
गदाई गौरांग बलि ख्याति चराचर।।१।।

भावसार– भक्तों के जीवनधन विश्वम्भर आपकी जय हो! पतितों को पावन करने वाले नित्यानन्द आपकी जय हो! गौरभक्तों के प्यारे श्रीअद्वैतचन्द्र आपकी जय हो! हे गदाधर श्रीवासादि भक्तगण आपकी जय हो! गौरांग की प्रिय शक्ति स्वरूप श्रीगदाधर पण्डित जिनको प्रेम से भक्त गदाई गौरांग बोलकर जानते व आराधना करते हैं।।१।।

सेई वंशे आविर्भूत एक महाजन।
विनोद विहारी नाम रसिक सुजन।।
वेशाश्रय करि धरे गौर विनोद नाम।
परम अद्‌भुत ताँर चरित्र आख्यान।।
वेगुड़ा जेलाय धोन्दा कोला नाम ग्राम।
दुर्गादास गोस्वामी तथा विप्रेर प्रधान।।२।।

भावसार– उसी वंश में विनोदविहारी नाम से रसिक महाजन हुये वेशाश्रय लेने के बाद उनका नाम श्रीगौर विनोददास पड़ा। उनके अद्‌भुत महिमा और चरित्र था। वेगुड़ा जिला के धोन्दा कोला ग्राम वे रहते थे। जहाँ के प्रधान दुर्गादास गोस्वामी थे।।२।।

कामिनी सुन्दरी नाम ताँर पतिव्रता।
पुत्ररूपे विनोद विहारी सर्व दाता।।

भारद्वाज गोत्रीय तेंह वैदिक ब्राह्मण।
रसिक राय राधामाधवे सेवे अनुक्षण।।
वारस साताशि सने चोटा चैत्रेते।
कृष्णा प्रतिपदा तिथि मिलन ताहाते।।३।।

भावसार– अति सुलोचना सुन्दर और पतिव्रता उनकी धर्मपत्नी थी। पुत्र रूप में उन्होंने विनोद विहारी दास को पाया। वे भारद्वाज गौत्रीय वैदिक ब्राह्मण थे। परम अद्भुत उनका चरित्र था। वे रसिक राय राधामाधव की सेवा सदा करते हैं। सन् १२८७ में चैत्र पक्ष में कृष्णा प्रतिपदा के तिथि पर उनके साथ मिलन हुआ।।३।।

उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र तिन शुभक्षण।
सेईकाले जनमिल पुरुष रतन।।
सर्व सुलक्षण पुत्र करिया दर्शन।
विनोद विहारी नाम करिल अर्पण।।
विनोद याहार हृदे करये विहार।
सेई अर्थे विनोद विहारी नाम तार।।४।।

भावसार– उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र के शुभक्षण पर महाशय की अपने सुपुत्र का जनम हुआ देखकर विनोद विहारी नाम अर्पण किया। ठाकुर विनोदी जी जिसके हृदय में सदा विहार करते हैं। उसका विनोद विहारी नाम पड़ा।।४।।

शिशुकाले विनोद प्रभु मातृ हारा हैल।
ग्राम्य पाठ शालाय विद्या आरम्भ करिल।।
अल्पकाले बांग्ला भाषाय व्युत्पत्ति लभिल।
हेरिया प्रतिभा ताँर सकले मोहिल।।
पाठशालाय पाठाभ्यास करि समापन।
रामकाली ग्रामे तवे करिल गमन।।५।।

भावसार– शिशुकाल में ही श्रीविनोद प्रभु की माता

उन्हें छोड़कर परलोक सिद्धार गईं। उनका ग्राम्य पाठशाला में विद्या आरम्भ कराया गया। अल्पकाल में ही बंग्ला भाषा सीख लिये। उनकी प्रतिभा देखकर सभी मोहित हो उठे। पाठशाला में पाठ अभ्यास समाप्त करके; रामकाली ग्राम में गमन किये।।५।।

तथा टोले संस्कृत शिक्षा आरम्भिल।
मेधा हेरि विपिन विहारी गोस्वामी मोहिल।।
सयतने आपने ताँरे कराय पठन।
व्याकरण समापि नवद्वीपे आगमन।।
काव्य पुराण सांख्यादि करिया पठन।
शेष वेदान्त रत्नोपाधि करिल धारण।।६।।

भावसार– वहाँ उन्होंने टोल में संस्कृत पढ़ाना शुरू किया। उनकी तीव्र बुद्धि देखकर विपिन बिहारी गोस्वामी मोहित हो उठे और यत्नपूर्वक उन्हें पढ़ाने लगे। व्याकरण समाप्त करके आप नवद्वीप आये। काव्य, पुराण, सांख्यादि का पठन किया और शेष में वेदान्त रत्न की उपाधि पाई।।६।।

यद्यपि न्यायतीर्थ उपाधि ना पाइल।
उक्त शास्त्र पड़ि वहु व्युत्पत्ति लभिल।।
असाधारणी पाण्डित्य हेरि पण्डितेर गण।
भूयसी प्रशंसा तारे करे अनुक्षण।।
तत्काले प्रयागेते कुम्भ मेला हैल।
मदनमोहन मालव्य एकसभा वसाइल।।७।।

भावसार– यद्यपि आपने न्याय तीर्थ की उपाधि नहीं पा सके; तो भी उस शास्त्र को स्वयं पढ़कर बहुत अधिकार प्राप्त कर लिया। असाधारणीय पाण्डित्य बुद्धि देखकर पण्डित गण उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा करते। इस समय प्रयाग में कुम्भ मेला हुआ। जहाँ मदनमोहन ने एक

सभा बैठाई।।७।।

भारतेर नाना स्थानेर पण्डित आगमन।
सेई सभाय विनोद प्रभु उपनीत हन।।
विविध प्रकार शास्त्रेर लइया वचन।
पण्डितगण तर्क वितर्क करे बहु क्षण।।
प्रभुपाद संस्कृतेते करिया वर्णन।
मीमांसा करिया तर्क कैल समापन।।८।।

भावसार– जहाँ भारत के नाना स्थानों से पण्डितगण आये और विनोद प्रभु भी पधारे। विविध प्रकार के शास्त्रों के वचन लेकर पण्डितगण तर्क–वितर्क करते रहे। तब प्रभुपाद ने संस्कृत में सारगर्भित मीमांसा करके समाधान कर दिया।।८।।

प्रश्नेर उत्तर दिया सभा जय कैल।
प्रतिभा देखिया पण्डित सकले मोहिल।।
मदनमोहन मालव्य सविस्मय मन।
कतदिने पिता तार हैल अदर्शन।।
दुपचाँचियार जमिदार महाशय।
भक्तिपूर्वक स्वग्रामेते वैसय।।९।।

भावसार– और प्रश्न का उत्तर देकर पण्डितों की सभा में जय पायी। उनकी प्रतिभा देखकर पण्डितगण मोहित हो उठे। मदनमोहन मालवीय का भी मन विस्मित हो उठा। कुछ दिनों के बाद उनके पिता का अदर्शन हुआ। दुपचाँचिया ग्राम के जमींदार महाशय भक्तिपूर्वक निजग्राम में वास करते थे।।९।।

सवा उपरोधे तथा आवास गड़िल।
तथाय स्थापिल टोल विद्या शिक्षा दिल।।
हाईस्कूल एक तथा करिल स्थापन।

प्रधान शिक्षकेर कार्य कैल कतदिन।।
भागवत पाठेते बहु कृतित्त्व लभिल।
बहु बहिर्मुख जने अन्तर्मुखी कैल।।१०।।

भावसार– सबके अनुरोध पर आपने वहाँ निवास बनाया और वहीं पर टोल बनाकर शिक्षा देने लगे। वहाँ आपने एक हाईस्कूल बनवाया और प्रधान शिक्षक के रूप में स्वयं कार्य किया। भागवत पाठ में आपने बहुत ही विद्या लाभ की। आपका पाठ सुनकर बहुत सारे बहिर्मुख लोग भगवान के भक्त बन गये।।१०।

तवेत हृदये महा वैराग्य जन्मिल।
तिपान्न वर्ष वयकाले संसार छाड़िल।।
कुल विग्रह राधामाधव सेवा छिल।
ज्येष्ठ पुत्र निकुञ्जेर हस्ते समर्पिल।।
आपने स्वजन छाड़ि ब्रजधामे एल।
वत्रिश वर्षकाल तथा यापन करिल।।११।।

भावसार– तब उनके हृदय में महा वैराग्य जन्मा। तिरेपन वर्ष की उम्र में आपने संसार छोड़ दिया। आपके कुल के विग्रह श्रीराधामाधव की सेवा थी। जिसे आपने ज्येष्ठ पुत्र निकुञ्ज के हाथ में सेवा दी और आप स्वजनों को छोड़कर श्रीब्रजधाम आये और बत्तीस वर्ष ब्रजधाम में रहे।।११।।

बृजवासी वैष्णवेर अनुरोध कारण।
भक्ति विद्यालयेर अध्यक्ष हइला तखन।।
बहु छात्रके तथा विद्यादान कैल।
रवीन्द्र बन्द्यो पाद्यादि बहु छात्र हइल।।
कतदिन परे तेंह छाडिल अध्यापन।
आपने भजनानन्दे रहिला मगन।।१२।।

भावसार– ब्रजवासी वैष्णवों के अनुरोध से आप भक्ति विद्यालय में अध्यक्ष हुये और बहुत छात्रों को विद्या दान की। रवीन्द्र बन्द्योपाद्यादि बहुत छात्र हुये। कुछ दिन बाद आपने अध्यापन भी छोड़ दिया और कृष्ण–भजन में रहने लगे।।१२।।

निरवधि करे गौर गोविन्द स्मरण।
प्रवल भजन चेष्टा प्रेमाकुल मन।।
वैराग्य वेश लभिवार उत्कण्ठा जन्मिल।
दाऊजी बागाने गिया उपनीत हैल।।
रामकृष्ण पण्डित बाबा तथा करे वास।
वेषाश्रय कैल गिया ताँहारे सकास।।१३।।

भावसार– आप सदा गौर–गोविन्द का स्मरण करते। आपके भजन की चेष्टा अति प्रबल थी। आपको वैराग्य लेने की इच्छा हुई तो आप दाऊ बगीचे में पधारे। जहाँ रामकृष्ण पण्डित बाबा वास करते थे। जिनसे आपने वेशाश्रय ग्रहण किया।।१३।।

श्रीगौर विनोद नाम करिल धारण।
कालिदहे कैल वास प्रेमाकुल मन।।
तथाय आसिया बहु पद्माश्रम कैल।
भजनानुभूति पाञा कृतार्थ हइल।।
आजि ब्रजगौर मण्डले तारा करे वास।
बाबार कृपार गुण अद्भुत प्रकास।।१४।।

भावसार– बाबा महाराज ने आपका नाम गौरविनोद रखा। आपने कालीदह में वास करके प्रेमाकुल मन से भजन करने लगे। आपकी भजन सुगन्ध से बहुत–से भक्तरूपी भ्रमर आपके पदकमल में आसक्त हो गये और भजन की अनुभूति बाबा से पाकर कृतार्थ हो उठे। आज भी वे ब्रज और गौर मण्डल में वास करते हैं। बाबा की अद्भुत कृपा

का यही प्रकाश था।।१४।।

केह शास्त्रानु शीलन केह करये भजन।
बाबार महिमा गुण घोषे त्रिभुवन।।
तत्काले ब्रजवासी वैष्णवेर गण।
शिक्षागुरु ज्ञाने मान्य करे सर्वजन।।
भागवत आश्रमेर कृपासिन्धु दास।
गोवर्द्धने पण्डित बाबा श्रीअद्वैतदास।।१५।।

भावसार– कोई तो शास्त्र का अनुशीलन और कोई भजन करता। बाबा की तो दोनों क्षेत्रों में महिमा त्रिभुवन गाता है। उस समय के ब्रजवासी वैष्णव गण उनको शिक्षा गुरु के रूप में उनको सम्मान देते। भागवत आश्रम के कृपासिन्धु दास बाबा और गोवर्धन के पण्डित श्रीअद्वैतदास बाबा।।१५।।

एइ सब महात्मा सह सदा आलापन।
इष्ट गोष्ठी करि सदा भजने मगन।।
तृणादपि सुनीचेन वैष्णव लक्षण।
दृढ़करी बाबा सदा करये याजन।।
यावतीय वैष्णवेर सद् आचरण।
बाबार देहेते सदा प्रकटन।।१६।।

भावसार– इन सब महात्माओं के साथ आपका संलाप होता। इनसे इष्टगोष्ठी करके आप भजन में मग्न रहते। तृणादपि सुनीचेन सदा वैष्णवों के लक्षण हैं। इस बात को दृढ़ करके बाबा भजन करते। जितने भी वैष्णवों के सद् आचरण थे। महाप्रभु की कृपा से बाबा के देह में प्रकट हो गये थे।।१६।।

भजने आवेश सदाचार निष्ठ मन।
धामनिष्ठा सर्वजीवे सम्मान समान।।

परगुण ग्रहणादि साधुर स्वभाव।
सर्वक्षण बाबार देहे करये प्रभाव।।
परचर्चा परनिन्दा जिह्वाय ना आने।
सर्वक्षण भागवत पड़ये आपने।।१७।।

भावसार– आपका भजन में आविष्ट और सदाचार निष्ठ मन था। धामनिष्ठा सर्व जीवों को सम्मान परगुण ग्रहण ये सब साधु के स्वभाव हैं। सर्वक्षण बाबा के देह में विराजते। बाबा परनिन्दा जिह्वा पर नहीं लाते स्वयं ही सर्व समय भागवत पाठ करते रहते।।१७।।

भागवतेर नाना रूप अर्थ प्रकाशिया।
कठिन शब्देर अर्थ देन बुझाइया।।
सरल सरस भावे कराय बोधगम्य।
बाबार प्रेमगुण सवार अगम्य।।
अश्रु कम्पन पुलकादि सात्विक विकार।
पाठ काले ताँर देहे करित विहार।।१८।।

भावसार– आपने भागवत के नाना अर्थ प्रकाश करके कठिन शब्दों का सरल अर्थ समझा देते। बाबा का प्रेम सब समझ नहीं पाते थे। अश्रु, कम्प, पुलक आदि सात्विक विकार बाबा के देह में विहार करते थे।।१८।।

एमत बाबार गुण अपूर्व कथन।
पाण्डित्य भजन गुणे तारिल भुवन।।
कतक काल एइभावे करि कृपादान।
देह छाड़ि चलिलेन नित्यलीला स्थान।।
तेरश वाहात्तर क्षने पौषी कृष्णा द्वितीय।
पचाशि वर्ष वरषे चले धरणी छाड़िया।।१९।।

भावसार– इस प्रकार बाबा के गुणों की अपूर्व महिमा है। अपने पाण्डित्य और भजन के गुण से जगत का

उद्धार कर दिया। बहुत समय तक इसी प्रकार आपने जीवों को कृपा दान की। फिर देह छोड़कर नित्य लीला में आपने प्रवेश किया। सन् १३७२, पौष मास की कृष्णा द्वितीया तिथि को ८५ वर्ष की उम्र में आपने इस धराधाम को छोड़ दिया।।१६।।

गौर गदाधरेर पादपद्मे समर्पिया मन।
चलिलेन नित्य लीलाय छाडिया भुवन।।
अपूर्व महिमा ताँर अद्भुत कथन।
'किशोरी' वन्दये तारे लइया शरण।।२०।।

भावसार– गौर गदाधरजी श्रीचरणकमलों में मन समर्पण करके आप नित्य लीला में प्रवेश किये। आपकी अपूर्व महिमा और भजन देखकर मैं किशोरीदास आपकी शरण लेकर वन्दना करता हूँ।।२०।।

७. श्रील माधवदास बाबाजी

वृन्दावन

जय जय विश्वम्भर जगत जीवन।
जय जय नित्यानन्द पतित पावन।।
जय जय अद्वैत गौर प्रियजन।
जय जय गदाधर वासादि गण।।
श्रृंगार वटेर गोसाँई प्रभु प्रेमानन्द।
ताँर शिष्य माधवदास प्रेमानन्द कन्द।।१।।

भावसार– भक्तों के जीवनधन विश्वम्भर आपकी जय हो! पतितों को पावन करने वाले नित्यानन्द आपकी जय हो! गौरभक्तों के प्यारे श्रीअद्वैतचन्द्र आपकी जय हो! हे गदाधर श्रीवासादि भक्तगण आपकी जय हो! श्रृंगार वट के गोसांई प्रभु प्रेमानन्द जिनके शिष्य माधवदासजी प्रेमानन्द

कन्द थे।।१।।

मालदह मध्ये रामकेलि पुण्य स्थान।
रूप सनातनेर लीला विचित्र विधान।।
महानन्दा नदी यथा पद्‌माय मिलिल।
तथा वार घरिया ग्रामे तेंह जनमिल।।
वार सत चौषट्टि सने लभिल जनम।
बाल्य पितृ वियोगेते नहे अध्ययन।।२।।

भावसार– मालदह नाम के ग्राम में रामकेलि नाम का एक पुण्य स्थान था। जहाँ रूप–सनातन की विचित्र लीला बनवाई थी। पास ही महानन्दा नदी बहती थी जो पद्‌मा में आकर मिली है। सन् १२६४ में आपने पावन जन्म लिया। बाल्यकाल में पितृ वियोग से आपका अध्ययन नहीं हो पाया।।२।।

विशेष लेखापड़ा माता शिखाते नारिल।
हिसाब पत्र लेखाशिखि जीविका अर्जिल।।
भक्ति ग्रंथ पाठे संकीर्तन रति छिल।
भक्त संगे भजनेते लालसा बाड़िल।।
साताइस वर्ष वयस यवे ताँर हैल।
पत्नी परिजन छाँड़ि वृन्दावने गेल।।३।।

भावसार– आपकी माताजी ज्यादा लिखा–पढ़ा नहीं पायीं। हिसाब पत्र लिखने जितना सीखकर जीविका अर्जन पर्यन्त ज्ञान प्राप्त किया। आपकी भक्ति ग्रंथ के पाठ में और संकीर्तन में रती थी। भाग्यवश भक्तों के संग में भजन की आपकी लालसा बढ़ी। जब आप सत्ताईस वर्ष के हुये; पत्नी और परिजन छोड़कर आप वृन्दावन चले आये।।३।।

श्रृंगार वटे प्रेमानन्द प्रभु पाशे एल।
ताँहार चरणाश्रये भजने मातिल।।

माधुकुरी द्वारे करे जीवन धारण।
श्रवण कीर्तन पाठे प्रेमानन्द मन।।
बाल्यावधि प्रीतिमय स्वभाव आछिल।
ते कारणे सर्वजन प्रिय पात्र हैल।।४।।

भावसार– आप श्रृंगार वट में प्रेमानन्द प्रभु के पास आये। उनके चरणाश्रय के प्रभाव से आपका भजन में मन लग गया। माधुकुरी करके अपना जीवन–यापन करते। आपका मन श्रवण–कीर्तन में था। बाल्यकाल से ही आपका स्वभाव अति मधुर था; इसी कारण आपसे सभी प्रीती करते।।४।।

कतदिने गुरु स्थाने आदेश लइया।
ब्रजेर ग्रामेते गेल भजन लागिया।।
नित्यानन्द बाबार शिष्य श्रीजगदानन्द।
ताँर संग पाञा हैल परम आनन्द।।
संकेत वटेते दोंहे कतकाल रैल।
पाछे वर्षाने भानुकुण्ड तीरे वास कैल।।५।।

भावसार– कुछ दिनों के बाद गुरुदेव से आज्ञा लेकर भजन के लिये वृन्दावन आये। जहाँ नित्यानन्द बाबा के शिष्य श्रीजगदानन्द का संग पाकर परम आनन्दित हुये। आप दोनों को कुछ समय संकेत वट में रहे बाद में बरसाने में भानुकुण्ड में आपने वास किया।।५।।

माधुकुरी द्वारे करे देहेर रक्षण।
रात्रिते वाहिरे वसि करये भजन।।
एकदा माधवदास वलेन वचन।
माठा भक्षिवारे चाहि आनिव लवण।।
जगदानन्द कहे पुन नाचाह कखन।
लवण चाहिले गुड़ चाहिते हवे मन।।६।।

भावसार– माधुकुरी के द्वारा आप देह की रक्षा करते। रात में बाहर बैठकर भजन करते। एकबार माधवदास ने बोला– मट्ठा पीना चाह रहा हूँ, नमक ले आऊँगा। जगदानन्द ने बोला– नमक मत लाना। नमक लाने पर कल को गुड़ लाने की इच्छा होगी।।६।।

एकदा माधवदास उत्सवेते गेल।
आसिले जगदानन्द ताँरे जिज्ञासिल।।
एथा होते कत दूरे कोन ग्रामे गेले।
कयखाना मालापोया तथाय खाइले।।
तेंह कहे दुइ क्रोश दूरे गियाछिनु।
आटखाना मालपोया तथाय खाइलुँ।।७।।

भावसार– एकबार माधवदास उत्सव में गये। उनके वापिस आने पर जगदानन्द ने उनसे पूछा– यहाँ से आप कौन गाँव में गये? और कितना माल–पूआ खाया? उसने बोला– दो कोस दूर गया और आठ माल–पूआ खाकर आया।।७।।

शरीर केमन लागे जिज्ञासिल यदि।
कहे परिश्रमे देह अलस हैल अति।।
जगदानन्द कहे यदि मालापोया खेतेमन।
एत कष्ट करि केन रहियाछ वन।।
वृन्दावने गिया तुमि कर अवस्थान।
माल पोया लाड्डू मिलिवेक बहुस्थान।।८।।

भावसार– बाबा ने पूछा– अब, शरीर कैसा लग रहा है? उसने कहा– थकावट से बहुत आलस्य आ रहा है। जगदानन्द ने बोला– यदि माल–पूआ खाने में तुम्हारा मन रहता है, तो इतना कष्ट करके मन में क्यों रह रहे हो? वृन्दावन जाकर रहो; वहाँ तुम्हें माल–पूआ और लड्डू बहुत स्थानों पर मिल जायेंगे।।८।।

जगदानन्देर मन सकलि बुझिल।
तद्वधि उत्सवे यावा तेंह बन्द कैल।।
परे वर्षाने दोंहे कैल आगमन।
तथा होते काम्यवने करिल गमन।।
विमलाकुण्डेर तीरे सिद्ध बाबार स्थान।
तोंहार समीपे दोंहे करे अवस्थान।।९।।

भावसार– जगदानन्द समझ गये। तब से उन्होंने उत्सव में जाना बंद कर दिया। बाद में दोनों बरसाने आये और वहाँ से काम्यवन गये। विमुलाकुण्ड पर सिद्ध बाबा का स्थान है, उनके समीप में दोनों रहने लगे।।९।।

तथाय घटिल एक विचित्र घटन।
ब्राह्मण बालिका रूपे राधिका दर्शन।।
भजन ना हैले बलि चित्ते क्षोभ हैल।
मधुकुरी ना करिया शुइया रहिल।।
कतक्षणे बहु प्रकार खावार लइया।
ब्राह्मण कुमारी एक कहये डाकिया।।१०।।

भावसार– वहाँ एक विशेष घटना हुई। इन्होंने ब्राह्मण बालिका के रूप में राधारानी का दर्शन किया। भजन नहीं होने पर हृदय में दुःख हुआ। बहुत देर तक माधुकुरी न करके सोते रहे। तब राधिकाजी ने आकर उन्हें बुलाया।।१०।।

मधुकुरीते तुमि नाहि करिले गमन।
ते कारने माता मोरे करिल प्रेरण।।
बाबा कहे पुरी किछु करह रक्षण।
तेंह कहे वानियाय घरे ख्याया आगमन।।
बालिका चलिया गेले करिल चिन्तन।
श्रीमतिर कृपा जानि करिल भक्षण।।११।।

भावसार– बाबा! माधुकुरी में तुम क्यों नहीं आये? इसीलिये माता ने माधुकुरी देकर भेजा। बाबा ने कहा– कुछ पूड़ी रख दो। लाली ने कहा– बनिया के घर में खाकर आये क्या? बालिका जब चली गईं तो बाबा ने राधारानी की कृपा को जानकर भोजन किया।।११।।

तारपर ब्रजेर बहु ग्रामे वास कैल।
काम्यवन लोटन कुञ्जे झाडूमण्डले रैल।।
वृन्दावने गोपाल भट्टेर समाधि सेविल।
झाडूमण्डले अवस्थाने एक लीला हैल।।
झाडूमण्डले अवस्थाने करये चिन्तन।
कांगाल वैष्णवे रक्षे गोसाँई सनातन।।१२।।

भावसार– इसके बाद आपने ब्रजधाम के बहुत–से गाँवों में वास किया। आप काम्यवन, लोटन कुञ्ज, झाडूमण डल में रहे। वृन्दावन में गोपालभट्ट गोस्वामी की समाधि की सेवा की। झाडूमण्डल अवस्थान काल में एक लीला घटी– वहाँ आप चिन्ता करते कि गरीब वैष्णवों की सेवा सनातन गोस्वामी करते थे।।१२।।

माधुकुरी कार्ये आमि ना करि गमन।
पथे घुरि याहा पाइ करिव ग्रहण।।
एतेक चिन्तिया मधु कुञ्जरी पथे याय।
गोपाल भट्टेर समाधिर समीपेते याय।।
सेकाले समाज सेवक श्रीमथुरादास।
डाकिया कहये ताँरे गुण माधवदास।।१३।।

भावसार– माधुकुरी करने को मैं नहीं जाऊँगा; रास्ते में जो मिलेगा खा लूँगा। ऐसा सोचकर मधुकुञ्ज के पथ से जा रहे थे कि गोपालभट्टजी की समाधि के समीप सेवक श्रीमथुरादास ने बुलाकर उनकी महिमा कहने लगे।।१३।।

माधुकुरी लागि तुमि करिह गमन।
कोथाउ ना गिया एथा करह आगमन।।
लुचि पूरी धरा आछे कर निवेदन।
मोर स्वर ताहा तुमि करह ग्रहण।।
आज्ञामत समाजेर भोग लागाइया।
कतदिने रहे तथा प्रसाद पाइया।।१४।।

भावसार– तुम माधुकुरी के लिये जाओ। कहीं नहीं जाकर यहीं वापिस आओ। पूड़ी–कचौड़ी रखी हैं उसे भोग लगाओ; मेरी इस बात को ग्रहण करो। आज्ञानुसार भोग लगाकर वे कुछ दिन वहीं रहे और प्रसाद सेवन किया।।१४।।

समाज सेविया हैल उल्लसित मन।
गोसाँई सनातन कृपा हृदये स्मरण।।
एकदा वृन्दावने तेंह करे अवस्थान।
जन्मस्थान होते पत्नी एल सेइ स्थान।।
पत्नी आगमन शुनि गुरु पाशे एल।
ग्रामे येते अनुमति प्रार्थना करिल।।१५।।

भावसार– समाज की सेवा करके वे उल्लसित हो उठे। सनातन गुसांई की कृपा को उन्होंने हृदय में स्मरण किया। एकबार जब वे वृन्दावन में रह रहे थे, जन्मस्थान से पत्नी वहाँ आयीं। पत्नी का आगमन सुनकर आप गुरु के पास आये और ग्राम जाने की अनुमति चाही।।१५।।

गुरू ताँर अभिप्राय जानिया तखन।
कहे केन ग्रामे तुमि करिवे गमन।।
ताँर मत थाकि तेंह भजन करिवे।
तोमार भावे रहि तुमि स्वकार्य साधिवे।।
वृथा केन हेथा होते करिवे गमन।
शुनिया माधवदास रहिल तखन।।१६।।

भावसार– गुरुदेव उनकी अभिप्राय को जानकर बोले– तुम गाओं क्यों जाओगे? उसके अनुसार रहकर तुम भजन करोगे। अपने भाव में रहकर तुम अपना कार्य–साधन करोगे। वृथा क्यों यहाँ से जाओगे? यह सुनकर माधवदास वहीं रह गये।।१६।।

कतकाल पत्नी तार ब्रजधामे रैल।
पाछे स्वदेशेते तेंह गमन करिल।।
काम्यवने सिद्ध बाबार स्थाने यवे रैल।
से काले बहु वैष्णव संग लाभ हैल।।
सकल बाबार स्थानेर महान्त करिल।
स्पृहा नाहि तवु ताँरे हइते हइल।।१७।।

भावसार– कुछ समय तक पत्नी ब्रजधाम में ही रहीं और पीछे स्वदेश वापस चली गईं। काम्यवन के सिद्धबाबा के स्थान में जब आप रहे उस समय आपको वैष्णवों का बहुत संग लाभ हुआ। बाबा के समस्त कार्य स्थानीय महन्त ने किये। यद्यपि उनको महन्त होने की इच्छा नहीं थी तो भी बाबा की इच्छा से हुये।।१७।।

बार शत निरानवई सने चैत्र मासे।
श्रीराधिकानाथ (दास) गोस्वामी ब्रजे आसे।।
ताँर मुख हेरि कथा करिये श्रवण।
शिक्षागुरु ज्ञाने करे सम्मान प्रदर्शन।।
प्रभुपाद ताँर गुणे विमुग्ध हइल।
अभिन्न हृदय बन्धु ज्ञान उपजिल।।१८।।

भावसार– सन् १२९९ चैत्र मास में श्रीराधिकानाथ दास गोस्वामी ब्रज में आये। उनके श्रीमुख से आपने कथा श्रवण की। तब श्रद्धापूर्वक उन्हें शिक्षागुरु के रूप में सन्मान देने लगे। प्रभुपाद उनके दैन्यगुण से विमुग्ध हो उठे। अभिन्न हृदय बन्धु हैं ऐसा जाना।।१८।।

गोपीनाथ मन्दिरे राधावल्लभ गोस्वामी।
तिन एकत्रेते मिलि प्रेमे याय भासि।।
हरिकथा प्रसंगे यवे करिते यापन।
उच्च हास्ये सर्वगृह भरित तखन।।
तथा हैते वनमाली वाहादुर संगे।
राधाकुण्डे वास करे प्रेमानन्द रंगे।।१६।।

भावसार– गोपीनाथ मन्दिर में राधावल्लभ गोस्वामी ये तीन जब एकसाथ मिलते हैं तो प्रेम में डूब जाते हैं। हरिकथा के प्रसंग में वे अपना समय यापन करके और उच्च हास्य से आनन्द से पूरा घर भर जाता। वहाँ से वनमाली बहादुर के साथ प्रेमपूर्वक आपने राधाकुण्ड में वास किया।।१६।।

सेकाले श्रावणे तेंह करये श्रवण।
आगराय रहये गुरू असुस्थ एखन।।
संवाद पाइया त्वरा करिल गमन।
ताँरे पाञा सर्वजन हैल सुखी मन।।
परम यतने तेंह करये सेवन।
स्वहस्ते करये मलमूत्रादि मार्जन।।२०।।

भावसार– उस समय श्रावण मास में आप हरिकथा श्रवण कर रहे थे। आगरा में इनके गुरुदेव अस्वस्थ थे, संवाद पाकर आप शीघ्र गमन किये। इन्हें देखकर सभी सुखी हो उठे। परम यत्नपूर्वक वे सेवा करने लगे। अपने हाथ से वे मल-मूत्र आदि साफ करने लगे।।२०।।

ताँर सेवाय प्रभुपाद हय सुख मन।
आपन माताके डाकि वलये वचन।।
तव वधु आदि मलमूत्र करिले क्षालन।
सदाइ आमाय हय संकुचित मन।।
माधव करिले सेवा संकोच ना हय।
शुनिया माधव गुण सवे सुखी रय।।२१।।

भावसार– उनकी सेवा से प्रभुपाद का मन सुखी हो उठा। वे अपनी माता को बुलाकर बोले– आपकी वधू यदि मल–मूत्र परिष्कार करतीं तो मेरा मन सदैव संकुचित होता; किन्तु माधव की सेवा करने से मेरा कोई संकोच नहीं होता। माधव के गुण सुनकर सभी सुखी रह गये।।२१।।

एकदा श्रृंगार वटे हय वैष्णव सेवा।
जगमोहने वैष्णवेर पातियाछे पाता।।
सेकाले माधव करे येइ ठौरे वास।
से ठौरेर वैष्णव पाता राखे निज पाश।।
माधवदास वलिया डाके अनुक्षण।
उत्तर ना करे तेंह करये श्रवण।।२२।।

भावसार– एकबार श्रृंगार वट में सेवा हो रही थी। जगमोहन में वैष्णवों के लिये पत्ते बिछे हुये थे। उस समय माधव जिस ठौर में रहते थे। उस ठौर के वैष्णव पत्ता अपने पास रखे और माधवदास बोलकर उच्च स्वर से बुलाने लगे; किन्तु वे उत्तर न देकर सुनते ही रहे।।२२।।

प्रभुपाद आसि तथा वलेन वचन।
एइ स्थाने वसि कर प्रसाद ग्रहण।।
नीचेते मालिनी प्रसाद पाइते वसिल।
ताहार अनति दूरे एक पाता दिल।।
जगमोहन उपविष्ट वैष्णवेर गण।
कहये माधव एथा कर आगमन।।२३।।

भावसार– फिर प्रभुपाद आकर बोले– इस स्थान पर बैठकर प्रसाद ग्रहण करो। नीचे मालिनी प्रसाद पाने बैठी है, उसके थोड़ा ही निकट एक पत्ता दिया। जगमोहन में वैष्णव गण विराजे थे। माधव को कहा यहाँ पर आइये।।२३।।

शुनिया माधवदास वलये वचन।

प्रभुपाद दिल यथा वसिव एखन।।
दैन्येर मुरति माधव सकले बूझिल।
वैष्णव पंगत माझे ना वसे कखन।
निमन्त्रणेर कोथा ना करे गमन।।२४।।

भावसार– सुनकर माधवदास बोले प्रभुपाद जहाँ आसन दिये वहीं बैठूँगा। दैन्य की मूर्ति माधव समझ गये कि वैष्णव पंगत में वे नहीं बैठते और निमन्त्रण में भी नहीं जाते।।२४।।

वैष्णव सेवाय ताँर सदा दृढ़ मति।
वृद्ध वैष्णवेर सेवे अत्याग्रह अति।।
वर्षाने वैसे जगन्नाथदास महाशय।
वैष्णवेर लागि द्रव्य संग्रह करय।।
शुक्तापाता गुड तेतुलादि यत्न करि।
शिष्य द्वारे राखे तेंह संग्रह करि।।२५।।

भावसार– वैष्णव सेवा में इसकी दृढ़ मति रहती है और वृद्ध वैष्णव की सेवा वे अति आग्रह से करते हैं। बरसाना में श्रीजगन्नाथदास महाशय रहते थे वे सदा वैष्णवों की सेवा के लिये द्रव्य संग्रह करते। जड़ी–बूटी–औषधपत्र शिष्य के द्वारा संग्रह करके रखते।।२५।।

काम्यवने बाबार आश्रमे करे वास।
जनैक वैष्णव देहे आमाशय प्रकाश।।
औषध संग्रह ताँर समर्थ नहिल।
माधवदासेर ऊपर निर्भर करिल।।
तखन त्वराय तेंह वर्षानेते गेल।
शुक्तापात आनि ताहा वाटि खावाइल।।२६।।

भावसार– वे काम्यवन में बाबा के आश्रम में वास करते। कुछ वैष्णवों के अमाशय का कष्ट था। वे दवा लेने

में असमर्थ थे। वे माधवदास के ऊपर निर्भर हुये। तब माधवदास बरसाने जाकर औषध आदि लाकर पवाये।।२६।।

माठासह अन्न प्रसाद करिल अर्पण।
तिन चार दिने सुस्थ हइल तखन।।
वर्षाने जगदानन्द दास करितेन वास।
पीड़ित हइले सेवे श्रीमाधवदास।।
ये ठौरे माधवदास करे अवस्थान।
चलच्छक्ति रहित वृद्ध वैष्णव ताँर अवस्थान।।२७।।

भावसार- और मट्ठा के साथ अन्न प्रसाद अर्पण किया। तब तीन-चार दिनों में वे स्वस्थ हो उठे। बरसाने में जगदानन्द दास वास करते थे। वे अस्वस्थ होते तब ये माधवदास ही उनकी सेवा करते। जिस स्थान पर माधवदास वास करते अचल वैष्णव इनके पास ही रहते।।२७।।

कोले करि वाहिरेते करे आनयन।
मलमूत्र कराइत करिया यतन।।
रौद्रे उठिलेइ तारे आनिया वसाय।
मरिच जल करिया यतने खावाय।।
घरेते लइया तारे करात शयन।
एइभावे बहुमते करिल सेवन।।२८।।

भावसार- वे वैष्णवों को बाहर लाकर बैठाते और यत्नपूर्वक उनके मल-मूत्र-स्नान आदि कराते और धूप आने पर उन्हें बाहर बैठाते, शरबत आदि प्रीतीपूर्वक पवाते और घर में ले जाकर उन्हें शयन कराते। इसप्रकार से वे बहुत वैष्णव सेवा करके प्रसन्न होते।।२८।।

मलमूत्र चेष्टा भये ना करे भोजन।
देड़मासे वृद्ध बाबा छाड़िल जीवन।।
पाद सम्वाहने ताँर निपुणता छिल।

एइ सेवा करि बहुजन कृपा पैल।।
वनमाली बाहादुरेर संगेर कारणे।
दिल्लीर वागाने वास कैल कतदिने।।२९।।

भावसार– एक बाबा मल–मूत्र जाना पड़ेगा, इस भय से भोजन ही नहीं करते। इससे डेढ़ मास में ही बाबा का जीवन समाप्त हो गया। वे पाद संवाहन सेवा में बड़े निपुण थे। इसप्रकार सेवा करके उन्होंने बहुत वैष्णवों की कृपा पायी। वनमाली बहादुर का संग पाने के लिये आप दिल्ली के बागान में कुछ दिन वास किये।।२९।।

सेकाले संन्यासी एक कैल आगमन।
परम वेदान्तिक नारायण मुनि नाम।।
माधव दासेर संगे ताँर हृदयता हइल।
चैतन्यचरितामृत शुनिते लागिल।।
व्याख्या शुनिया ताँहार फिरि गेल मन।
भाविल इहाइ हय विशुद्ध भजन।।३०।।

भावसार– उसी समय एक संन्यासी आये। वे परम वेदान्तिक थे– उनका नाम नारायण मुनि था। माधवदास के साथ में उनकी बहुत प्रीती हो गई। उनसे वे चैतन्यचरितामृत सुनने लगे। व्याख्या सुनकर उनका मन बदल गया। वे विचार किये कि यही विशुद्ध भजन का पथ है।।३०।।

बांग्ला शिखिया तेंह ग्रंथ पाठ कैल।
कृष्णानन्द नामे एक संन्यासी आसिल।।
माधवदास पाशे कृष्ण भजन चाहिल।
तेंह प्रभुपाद सह मिलन कराइल।।
प्राणगोपाल प्रभु स्थाने दीक्षार ग्रहण।
छाड़िया गौरिक वास भजने मगन।।३१।।

भावसार– वे बांग्ला सीखकर ग्रंथ पाठ करने लगे।

वहाँ पर कृष्णानन्द नाम के संन्यासी आये। माधवदास से कृष्णभजन सीखना चाहा। उन्होंने प्रभुपाद के साथ उनका मिलन कराया। उन्होंने प्राणगोपालप्रभु से दीक्षा ग्रहण कर लाल वस्त्र त्याग कर शुद्ध भजन करने लगे।।३१।।

माधवदासे गुरु बुद्धि करे अनुक्षण।
सख्य रसे भजि कैल भक्ति प्रवर्तन।।
आर्यमत खण्डि भक्तिपथ देखाइल।
माधवदासेर संगगुण जगते देखाल।।
मुंगेरेर राजा श्रीरघुनन्दन सिंह।
वैष्णव कृपाय भक्तिपथे रत तेंह।।३२।।

भावसार– फिर वे माधवदास के प्रति सदा गुरु बुद्धि करने लगे। उन्होंने सख्यरस से भजन करके प्रचार किया। आर्यमत का खण्डन कर भक्तिपथ का प्रदर्शन किया। माधवदास के संग का गुण जगत को दिखाया। मुंगेर देश के राजा रघुनन्दन सिंह इसप्रकार वैष्णव कृपा से भक्तिरथ में रत हुये।।३२।।

बाबार प्रेमेर गुणे प्रीतिबद्ध हैल।
एकदा माधवदास ताहाके कहिल।।
आमि मरिले तोमार खरच वाड़िवे।
कामिनी बाबू आदि तोमाय ना छाड़िवे।।
सेकाले तोमार अर्थ देवा ना लागिवे।
एवे किछु अर्थ देह मोर कार्य हवे।।३३।।

भावसार– वे बाबा के प्रेम में प्रीतीबद्ध हो गये थे। एकबार माधवदास ने उन्हें कहा– मेरे मरने पर तुम्हारा खर्च बढ़ जायेगा। कामिनी बाबू आदि तुमको नहीं छोड़ेंगे। उस समय तो तुम्हारा अर्थ ठाकुर सेवा में नहीं लगेगा। अभी कुछ दो जिससे मेरा कार्य साधन होगा।।३३।।

पाठ कीर्तनादि शुनिवारे इच्छा हैल।
शुनि पाँच शत टाका अर्पण करिल।।
अर्थ पाञा माधवदास आनन्द मगन।
महानन्दे गोपीनाथ वागेते गमन।।
गोपाल छड़ीदारेर ठौरे अवस्थान।
आठार उनिश वर्ष तथाय काटान।।३४।।

भावसार– पाठ कीर्तन आदि सुनने की उनकी इच्छा हुई। यह सुनकर उन्होंने पाँच सौ रुपये अर्पित किये। अर्थ पाकर माधवदास आनन्द मग्न हो गये और महा आनन्द में गोपीनाथ बाग में गये और गोपाल छड़ीदार के ठौर में अवस्थान करने लगे। १८–१९ वर्ष उन्होंने वहीं बिताये।।३४।।

नित्यपाठ संकीर्तन करे त श्रवण।
बहु महोत्सव तथा कैल उद्यापन।।
दैवे तेरश चल्लिश सन आगमन।
आठारह वैशाखे तेंह छाड़िल जीवन।।
प्राणगोपाल प्रभु पदे मस्तक राखिया।
शेष निस्वास छाड़िलेन प्रेमाविष्ट हञा।।३५।।

भावसार– वे वहाँ नित्य संकीर्तन श्रवण करते और विविध महोत्सव उद्यापन करते। दैवयोग से सन् १३४० आया १८वीं वैशाख मास में उन्होंने शरीर छोड़ दिया। प्राणगोपाल प्रभु के चरणों में मस्तक रखकर उन्होंने प्रेमाविष्ट होकर शेष निःस्वास छोड़ी।।३५।।

गणेश कीर्तनिया गान करये श्रवण।
बहु वैष्णव गोस्वामी विराजे तखन।।
एइभावे वृन्दावन प्राप्ति ताँर हैल।
प्राणगोपाल प्रभु महामहोत्सव कैल।।३६।।

भावसार– गणेश कीर्त्तनीया गान श्रवण कर रहे थे। तब बहु वैष्णव गोस्वामी विराजे थे। तभी उनकी वृन्दावन प्राप्ति हुई। प्राणगोपाल प्रभु ने उनके लिये महा–महोत्सव किया।।३६।।

एइत कहिल माधव बाबार महिमा।
शिखाय वैष्णव सेवा करिया गरिमा।।
माधव दासेर पदे लइया स्मरण।
'किशोरी' वाञ्छये गुरु वैष्णव सेवन।।३७।।

भावसार– इसप्रकार माधवदास बाबा की महिमा का बखान हुआ। उन्होंने जीवन में वैष्णव सेवा करके उसकी शिक्षा दी। माधवदास के श्रीचरणों का स्मरण करके मैं किशोरीदास गुरु वैष्णव सेवा की कामना करता हूँ।।३७।।

८. श्रील हरिदासबाबाजी

जतीपुरा, गोवर्धन

जय विष्णुप्रिया नाथ प्रभु गौरहरि।
जय प्रभु नित्यानन्द शेष नामधारी।।
जय श्रीअद्वैतचन्द्र जय गदाधर।
जय श्रीनिवास आदि गौर परिकर।।
वृन्दावने प्रसिद्ध दयालदास महाशय।
ताँर शिष्य हरिदास सुदृढ़ आशय।।१।।

भावसार– हे विष्णुप्रिया नाथ! प्रभु श्रीगौरहरि! हे नित्यानन्द! प्रभु शेषनामधारी! हे श्रीअद्वैतचन्द्र! हे श्रीगदाधर! आपकी जय हो। हे श्रीनिवास आदि गौर परिकर! आपकी जय जयकार हो। वृन्दावन के प्रसिद्ध दयालदास महाशय उनके शिष्य थे– हरिदास। जिनका श्रीगौरचरणों में सुदृढ़ विश्वास था।।१।

वृन्दावने आरिट ग्रामे करि आगमन।
सात आठ वर्ष तथा करिल भजन।।
तथा होते गोवर्द्धने करि आगमन।
गोविन्दकुण्डे दश वर्ष करिल साधन।।
परे पेंठाग्रामे पाँच वत्सर रहिल।
शेष छय वत्सर यतिपुराय काटाल।।२।।

भावसार– वृन्दावन में आरिट ग्राम में आकर आपने ७–८ वर्ष भजन किया। फिर वहाँ से गोवर्द्धन आये और गोविन्द कुण्ड पर १० वर्ष भजन–साधन किया। उसके बाद पैंठा ग्राम में ५ वर्ष रहे और शेष ६ वर्ष आपने जतीपुरा में बिताये।।२।।

ये काले गोविन्द कुण्डे करे अवस्थान।
सेकाले वैराग्य तार अपूर्व आख्यान।।
आजन्म ना दिल जिह्वाय रसेर स्पर्शन।
जाति नीच आपनारे माने अनुक्षण।।
जीर्ण कान्था गाय दिया करे विचरण।
भूमिते लुटाञा करे पद चिह्न निवारण।।३।।

भावसार– उस समय वे गोविन्द कुण्ड में अवस्थान कर रहे थे। उनका वैराग्य चरम सीमा पर था। उन्होंने आजन्म जिह्वा को रसों का स्पर्श तक नहीं कराया और अपने–आपको सदा नीच मानते रहे। जीर्ण–शीर्ण कंथा शरीर पर रहता जिसे पीछे खींचते हुये अपने पैरों के चिन्हों को मिटाते चलते।।३।।

कृष्णपद चिह्न ब्रजे करे अन्वेषण।
भावावेशे सदा तेंह करे विचरण।।
मिष्टान्नादि केह यदि करे अर्पण।
अत्यादरे लञा कुटीर भितर गमन।।
एक पात्रे राखि किञ्चित् करिया स्पर्शन।

शुष्क माधुकुरी पाञा करे आगमन।।४।।

भावसार- श्रीकृष्ण चरणकमलों का ब्रज में अन्वेषण करते हुये भावावेश में वे सदा विचरण करते। यदि कोई मिष्ठान्न आदि देता तो लेकर कुटीर में गमन करते। उसे एक पात्र में रखकर किंचित् स्पर्श करके सूखी माधुकुरी ही पाकर आते।।४।।

वाहिरे आसिया तेंह वलये वचन।
तोमार प्रदत्त द्रव्य करिल ग्रहण।।
कुटीर भितर स्थान अति अन्धकार।
बहुत रजेर पात्र ताहार माझार।।
महापुरुषेर चरणामृत ओ अधरामृत।
भिन्न-भिन्न पात्रे ताहा पृथक राखिल।।५।।

भावसार- बाहर आकर बोलते कि तुम्हारे द्वारा दिया हुआ द्रव्य मैंने ग्रहण कर लिया। कुटीर के भीतर तो बहुत अंधकार और बहुत रज के पात्र बीच में रहते महापुरुष का चरणामृत और अधरामृत भिन्न-भिन्न पात्रों में पृथक्-पृथक् रखे रहते।।५।।

पूर्वोक्त मिष्ठान्न रात्रे करिया ग्रहण।
वनमध्ये वृक्षतले करित स्थापन।।
एइमत छिल आर भजने नियम।
एकान्तिक भजनेर हवे विघ्न उत्पादन।।
तथाय सीतानाथ नामे वैष्णव एकजन।
एक टाका दिल उन वस्त्रेर कारण।।६।।

भावसार- पहले दिया हुआ मिष्ठान्न आप रात्रि में ग्रहण करके फिर वन के मध्य पेड़ के नीचे भजन करते। यही आपका भजन नियम था। एकान्त भजन में विघ्न होगा इससे डरते। एकबार सीतानाथ वैष्णव ने उन्हें ऊनी वस्त्र

लाने के लिये एक रुपया दिया।।६।।

हरिदास वृन्दावने करये गमन।
उन वस्त्र आनिते तेंह चिन्तायुक्त मन।।
साधुपर देशीय द्रव्य स्पर्श नाहि करे।
वैष्णव आदेश लागिल चिन्तित अन्तरे।।
वस्त्र जड़ाइया टाका लइया चलिल।
श्रीअद्वैत दास संगे गमन करिल।।७।।

भावसार– फिर हरिदास वृन्दावन में आये और ऊनी वस्त्र लेने के लिए आप आतुर थे। आप परदेशी का धन स्पर्श नहीं करते थे। किन्तु वैष्णव आज्ञा हुई है इसीलिये उन्होंने लिया; किन्तु उन रुपयों को वस्त्र में बाँधकर लिया। श्रीअद्वैतदासजी आपके संग थे।।७।।

पृथक भावे टाका तेंह दोकानेते दिल।
पृथक भावे जड़ाइया उन वस्त्र निल।।
तिन दिन रञा तेंह कैल आगमन।
सीतानाथ दासे वस्त्र कैल समर्पण।।
सेकाले वृन्दावने तेंह कैल अवस्थान।
सात देवालय हेरे हञा सावधान।।८।।

भावसार– स्पर्श न करके उन्होंने रुपये दुकानदार को दिये फिर ऊनी वस्त्र लिया। तीन दिन ब्रज में रहकर वे चले आये और सीतनाथ दास को आकर वस्त्र दे दिया। उस समय आप वृन्दावन में रहे और सात देवालयों के भक्तिपूर्वक दर्शन किये।।८।।

अन्य जन स्पर्श भये सदा भीत मन।
परम वैराग्य वेशे करे विचरण।।
जनसंग भये रात्रे परिक्रमा करे।
गोवर्धन परिक्रमा करे आनन्द अन्तरे।।

एकदा परिक्रमा काले प्रातःकाल हैल।
कारण जानिते तेंह पश्चाते ताकाल।।९।।

भावसार– अन्य लोगों का स्पर्श न हो इससे आप भयभीत रहते। परम वैराग्य वेश में आप घूमते। जन संग के भय से आप रात्रि को परिक्रमा करते। श्रीगिरिराज परिक्रमा आप बड़े आनन्द के साथ करते। एकबार परिक्रमा करते हुये प्रातःकाल हो गया। कारण जानने के लिये उन्होंने पीछे देखा।।९।।

देखे एक सेठ पथे करे आगमन।
सशंकित हञा पथ छाड़िल तखन।।
अन्य पथ दिया तेंह कुटीरे आसिल।
संग जनित मनो वृत्तिर कारण देखाल।।
एलाहावादेर वड़ डाक्टार एकजन।
गोविन्द कुण्डेते छत्र करिल स्थापन।।१०।।

भावसार– उन्होंने देखा कि एक सेठ पीछे से आ रहे थे। सशंकित हो के उन्होंने पथ छोड़ दिया और अन्य पथ से आप कुटीर में आये। परिक्रमा में संग दोष के कारण प्रातःकाल हो गया। एक इलाहाबाद के एक बड़े डॉक्टर ने गोविन्द कुण्ड में एक छत्र स्थापित किया।।१०।।

सेथा होते रुटि लञा पुजारी ब्राह्मण।
हरिदासे माधुकुरी करिल अर्पण।।
सेई माधुकुरी खाया विपत्ति घटिल।
रात्रे स्वप्न योगे महा विभत्स्य देखिल।।
एकटि मानुषे एकजने करिया वर्तन।
सर्वांगेर चामडा ताँर करिल क्षालन।।११।।

भावसार– वहाँ से रोटी लेकर एक पुजारी ब्राह्मण हरिदास को माधुकुरी देते। वो माधुकुरी पाकर उनको विपत्ति

हुई। रात्रि में आपने एक भयानक स्वप्न देखा कि- एकजन दूसरे व्यक्ति की खाल उधेड़ रहा था।।११।।

तत्क्षणात् अद्वैतदासे डाकिया कहिल।
छत्रेर पुजारी घरे येते निवारिल।।
उहार कारणे आमार नरक भोग।
अन्न जनित मनोवृत्तिर उपभोग।।
एकदिन ज्येष्ठ मासे मध्याह्न कालेते।
वाहिरे ना याय केह रौद्रेर तापेते।।१२।।

भावसार- उसी समय उन्होंने अद्वैतदास को बुलाकर कहा- छत्र के पुजरी के घर में रोटी लाने को मना किया। उनसे रोटी लेना मेरे लिये नरक भोग हुआ। एकदिन ज्येष्ठ मास के मध्याह्न काल में जबकि कोई बाहर नहीं जाता।।१२।।

सेकालेते बहु दूरे शौचे तेंह गेल।
दुइ घण्टा हेल तवु फिरिया ना एल।।
चिन्तित अद्वैत दास करि अन्वेषण।
एकवृक्ष मूले रञा करये दर्शन।।
रौद्र मध्ये स्पन्द हञा आछे दाँडाइया।
भावेते विभोर तार प्रेमाविष्ट काया।।१३।।

भावसार- उस समय भी आप बहुत दूर शौच के लिये गये। दो घण्टे तक जाकर भी लौट नहीं। इधर अद्वैतदास चिन्तित होकर खोजने लगे; खोजते-खोजते एक वृक्ष के मूल में उन्होंने आपका दर्शन किया। आप प्रेमाविष्ट भाव में कड़ी धूप में स्थिर रहे।।१३।।

मध्ये मध्ये अंग ताँर उठिशे हेरिया।
अश्रु विनर्गत हय देखिलेन ताहा।।
हेरिया अद्वैतदास फिरिया आसिल।

कतक्षणे फिरिले तेंह सब जिज्ञासिल।।
कारण जिज्ञासिले तेंह करे विवरण।
एत कहि गिरितटे करिल यापन।।१४।।

भावसार– आपके अंग में कम्प, अश्रु देखकर अद्वैत दास लौट आये। आप कब लौट आये उन्होंने जिज्ञासा की। विवरण बोलकर वे गिरिराज तट पर रह गये।।१४।।

गर्दभ समान भाव नाहि कैल दान।
चल देखाइव सेई लीलार विधान।।
अद्वैत दासेते लञा करिल गमन।
देखाल गर्दभ यथा करे विचरण।।
खात जलेर कादाय गड़ागड़ि याय।
गर्दभे देखाञा तेंह भावेते बुझाय।।१५।।

भावसार– अहो! भगवान् ने तो मुझे इस गधे के समान भी भाव दान नहीं किया। चलो तो उसकी महिमा बताओ। इतना कहकर अद्वैतदास को लेकर आये और उस स्थान को दिखाया जहाँ गधे विचरण कर रहे थे। वहाँ कीचड़ दिखाई जहाँ गधा लोट–पोट हो रहा था।।१५।।

आवेशे चापड़ मारार उद्यम करिया।
मस्तके स्पर्शिल हस्त आविष्ट हइया।।
अनुभवे अद्वैतदास सकलि बूझिल।
कृष्ण पदधूलि ज्ञाने गर्दभ लुटिल।।
एइ अनुभवे हरिदासेर भावावेश।
बुझिल अद्वैतदास करिया विशेष।।१६।।

भावसार– आवेश में झापड़ मारने का आवेश दिखा कर हाथ को मस्तक से स्पर्श किया। अद्वैतदास भी सब समझ गये। उन्होंने कृष्ण पदधूलि के ज्ञान में गधे की चरणरज ली। इसप्रकार उच्च अनुभव के हरिदास के भावावेश होते; जिन्हें

अद्वैतदास ही विशेष रूप से समझ पाते।।१६।।

ऐरावत कुण्डेर दक्षिणे कदम्बखण्डी स्थान।
कतकाल हरिदास करे अवस्थान।।
सेकाले यतिपुराय माधुकुरी गेल।
फिरिवार काले पथे व्याघ्र नेहारिल।।
श्रीकृष्णचैतन्य वलि करये गमन।
नाम शुनि व्याघ्रवर आविष्ट तखन।।१७।।

भावसार– ऐरावत कुण्ड के दक्षिण में कदम्बखण्डी नाम का स्थान है बहुत समय तक हरिदास वहीं रहे। उस समय आप जतीपुरा में माधुकुरी गये। लौटते समय रास्ते में व्याघ्र ने निहारा। इन्होंने श्रीकृष्णचैतन्य बोलकर चलने लगे। नाम सुनकर व्याघ्रवर आविष्ट हो गये।।१७।।

रास्तार उपरे व्याघ्र वसिया रहिल।
ताँहार सम्मुख दिया हरिदास गेल।।
रास्तार उपरे व्याघ्र तेंह सब जाने।
फिरिया देखये अति कौतुक विधाने।।
पंचविंश वयक्रमे ब्रजवासी ब्राह्मण।
आसिया लइल तार एकान्त शरण।।१८।।

भावसार– और रास्ते के ऊपर व्याघ्र बैठे ही रहे। उनके सम्मुख से हरिदास गये। रास्ते के ऊपर से व्याघ्र सब जानते थे और घूमकर कौतुक पूर्वक देखने लगे। पच्चीस वर्ष का एक नवयुवक ब्रजवासी ब्राह्मण आपकी ऐसी महिमायें जानकर आपकी एकान्त शरण में आया।।१८।।

ब्रजवासी मात्रे तार गुरु बुद्धि छिल।
किभावे करिवे शिष्य चिन्तित हइल।।
शेषे गुरु सेवा बुद्धि तारे शिष्य कैल।
दीक्षा भेक दिया सर्व उपदेश कैल।।

'हरेकृष्ण दास' नाम करिल अर्पण।
कोन दिन सेवा तार ना कैल ग्रहण।।१६।।

भावसार- समस्त ब्रजवासी मात्र में उनकी गुरुबुद्धि थी। इसको कैसे शिष्य करूँ? इस बात की चिन्ता में पड़ गये। अन्त में गुरु सेवा बुद्धि से उनको शिष्य किया और दीक्षा वेश देकर सभी उपदेश भी किया और हरेकृष्णदास नाम रखा और कभी उसकी कोई सेवा नहीं ग्रहण कीं।।१६।।

यतिपुराय हरिदास कैल अन्तर्धान।
हरेकृष्ण दास तथा छिल ताँर स्थान।।
अप्रकटेर पर ताँर आसनेर नीचे।
आसन करिया तथा एक वर्ष जपे।।
एकइ नियमे एकवर्ष करिया भजन।
अन्तर्धान करिलेन हञा प्रेमधन।।२०।।

भावसार- जतिपुरा में हरिदासजी अन्तर्ध्यान किये। हरेकृष्णदास वहाँ थे उनके अप्रकट होने के बाद उनके आसन के नीचे बैठकर एक वर्ष तक नाम जपा। एक वर्ष तक नियमपूर्वक भजन करके प्रेमधन से धनी होकर आपने भी अन्तर्ध्यान लीला की।।२०।।

यज्ञ पत्नी गणेर कृष्ण प्राप्तिर विधाने।
भजन करिया तेंह कैल अन्तर्धाने।।
एरावत कुण्डेर पश्चिमे एक स्थान।
हरजी कुण्डेर ऊपर एक दिव्य स्थान।।
गुरु शिष्येर समाधि तथा विद्यमान।
भाग्यवान जन आजि करये दर्शन।।२१।।

भावसार- यज्ञपत्नीगण के कृष्ण प्राप्ति के विधान से भजन करके आपने अन्तर्ध्यान किया। ऐरावत कुण्ड के पश्चिम में एक स्थान पर हरजी कुण्ड के ऊपर एक दिव्य

स्थान है। गुरु-शिष्य की समाधि वहीं पर विराजमान है। भाग्यवान जन जाकर आज भी दर्शन करते हैं।।२१।।

हरिदास बाबाजी गुण अपूर्व कथन।
आत्म शुद्धि लागि करि किञ्चित वर्णन।।
परम वैराग्यवान रसिक सुजन।
'किशोरी' वन्दये ताँरे करिया यतन।।२२।।

भावसार- हरिदास बाबाजी के गुण अपूर्व थे। आत्मशुद्धि के लिये मैं उनका किंचित् वर्णन किया। वे परम वैराग्यवान् रसिक और स्वजन थे। मैं किशोरीदास उनके चरणों में वन्दना करता हूँ।

९. श्रीगौरचरणदास बाबाजी

जय जय जीवेर जीवन गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द भवभय हारि।।
जय जय श्रीअद्वैत कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
चैतन्य बाबार शिष्य श्रीगौरचरण।
अद्भुत महिमा ताँर करून श्रवण।।१।।

भावसार- जीवों के जीवन स्वरूप श्रीगौरहरि आपकी जय हो! जीवों के भय को हरने वाले हे नित्यानन्द प्रभु आपकी जय हो! कुबेरनन्दन श्रीअद्वैतचन्द्र आपकी जय हो! श्रीगदाधर श्रीवासादि गौरभक्तगण आपकी जय हो!

हे श्रोतागण! अब आप श्रीचैतन्यदास बाबा के शिष्य श्रीगौरचरणदास बाबा की अद्भुत महिमा को श्रवण करें।।१।।

यशोहर तालखड़ि ग्रामे दिव्य स्थान।
गौरप्रिय लोकनाथेर यथा जन्मस्थान।।

लोकनाथ वंशे गौरचरण जन्मिल।
लोकनाथ नरोत्तम गुण बाल्येते शुनिल।।
दोंहाकार प्रेमगुण करिया श्रवण।
अनुरागे गृह छाड़ि नदे आगमन।।२।।

भावसार– यशोहर जिले के तालखड़ि ग्राम में एक दिव्य स्थान है। जहाँ श्रीगौरांग के प्रिय पार्षद श्रीलोकनाथजी का पावन जन्म हुआ था। इसी लोकनाथजी के वंश में श्रीगौरचरण का जन्म हुआ। लोकनाथ नरोत्तमगुण बाल्यकाल से ही सुना दोनों का प्रेम गुण श्रवण करके अनुराग पूर्वक नदिया में आये।।२।।

नवद्वीपे विराजये श्रीचैतन्यदास।
शरण लइया पदे हैल तार दास।।
दीर्घदिन नवद्वीपे अवस्थान कैल।
वृन्दावन दर्शन वाञ्छा बाबाके कहिल।।
अनुमति दिया बाबा बलेन वचन।
दर्शन करिया शीघ्र कर आगमन।।३।।

भावसार– नवद्वीप में ही चैतन्यदास बाबा विराजते थे। आप इनकी शरण लेकर दास हो गये और दीर्घ दिनों तक वृन्दावन में वास किया। एकदिन आपकी वृन्दावन दर्शन की इच्छा हो आई। आपने बाबा से प्रार्थना की– बाबा अनुमति देकर बोले, दर्शन करके शीघ्र आओ।।३।।

आज्ञा लञा ब्रजधामे गमन करिल।
निसंग चौराशी क्रोश प्रेमेते भ्रमिल।।
दाऊजी दर्शन कैल आसि महावन।
तथा रहि संध्याकाले चिन्ति निज मन।।
एइत हइल मोर ब्रज दरशन।
ब्रज सीमा छाडि प्राते करिव गमन।।४।।

भावसार- आज्ञा लेकर ब्रजधाम में गमन किये। एकाकी होकर चौरासी कोस ब्रजमण्डल प्रेम में भ्रमण किये और महावन में आकर दाऊजी के दर्शन किये। वहाँ रहकर संध्याकाल में मन में चिन्ता करने लगे। इसप्रकार मेरा ब्रज का दर्शन हुआ। अब ब्रज की सीमा छोड़कर प्रातःकाल चला जाऊँगा।।४।।

भाविते भाविते रात्रे अंगने शुइल।
दाऊजी दयाल स्वप्ने दरशन दिल।।
नाम धरि डाकि तारे वलये वचन।
एइ गोफाय रहि तुमि करह भजन।।
तोमाके आमार वडइ भाल लागे।
एखाने रहिले तोर सर्व सिद्धि हवे।।५।।

भावसार- ऐसा सोचते-प्सोचते रात्रिकाल में आंगने में ही सो गये कि दाऊजी दयाल ने स्वप्न में दर्शन दिया। नाम लेकर बुलाते हुए प्रभु बोले- इस गुफा में रहकर तुम भजन करो। तुम्हें देखकर बड़ा अच्छा लगता है। यहाँ रहने से तुम्हें सर्व सिद्धि प्राप्त हो जायेगी।।५।।

तेंह कहे सिद्ध बाबार आज्ञाय गौड़े याव।
किछुतेइ एइ स्थाने आमि ना रहिव।।
एइरूपे वाक्यालाप हेल कतक्षण।
पुनः पुनः दाऊजी ताँरे करये वारण।।
तवे बाबा लम्फ दिये उठिया वसिल।
झोला काँधे लञा तेंह वाहिर हइल।।६।।

भावसार- वह बोला- सिद्ध बाबा की आज्ञा से गौड़ देश जाऊँगा; किसी भी तरह से यहाँ नहीं रहूँगा। इसप्रकार बहुत देर तक बातचीत हुई। दाऊजी ने उन्हें पुनः पुनः निवारण करने लगे। तब बाबा कूदकर उठ बैठे और झोला कन्धे पर रखकर बाहर हो गये।।६।।

दाऊजी वारन करे ना शुने वचन।
पथे छूटि कत दूर करिल गमन।।
मने भावे ब्रज सीमा अतिक्रम हैल।
किन्तु आश्चर्य तेंह याइते नारिल।।
प्रभाते ना हइतेइ करये दर्शन।
बलदेव कुण्ड तीरे करये भ्रमण।।७।।

भावसार– दाऊजी मना कर रहे हैं वह नहीं सुन रहा। रास्ते में आकर बहुत दूर तक गये। मन सोचने लगे कि ब्रज सीमा छूट गई। किन्तु आश्चर्य वे नहीं चल पाये। प्रभात होते-होते उन्होंने देखा कि वे बल्देव कुण्ड के चारो ओर घूम रहे हैं।।७।।

तवे सिद्ध बाबा वाक्य करये पालन।
निर्दिष्ट गोफाय रहि स्मरे श्रीचरण।।
निर्विघ्नेते एकासने गोफाय वसिया।
जपे रामकृष्ण नाम भावाविष्ट हञा।।
सख्य भावे भावान्वित ताँर मन प्राण।
श्रीदाम कनिष्ठ राधार ज्येष्ठ अभिमान।।८।।

भावसार– तब सिद्ध बाबा वाक्य पालन करने लगे और निज दृष्टि गुफा में रहकर श्रीचरणों का स्मरण करने लगे। निर्विघ्न एक आसन में गुफा में बैठकर रामकृष्ण नाम भावाविष्ट होकर जपने लगे। उसका भाव और मन प्राण सख्य भाव में था। वे राधारानी के अनुज श्रीदाम के भाव रखते थे।।८।।

एक गाछि खूब लम्बा माला संगे लञा।
नाम संकीर्तन करे निर्जने वसिया।।
एक भावे विंश वत्सर गोफाय रहिल।
प्रबल वैराग्य वेशे भजन करिल।।
प्राते कोमर धुइया गोफाय प्रवेशय।

अपरान्ह काले पुनः शौचे वाहिरय।।६।।

भावसार- एक लम्बा माला साथ में लेकर निर्जन में नाम संकीर्तन करते। एक भाव से बीस वर्ष गुफा में रहे। प्रबल वैराग्य वेश में भजन किया। प्रातःकाल में कमर धोकर गुफा में प्रवेश करते। अपराह्न काल में शौच के लिए बाहर जाते।।६।।

किछु क्षण वसि करे ग्रंथ आलापन।
संध्याकाले माधुकुरी करिते गमन।।
काहार सहित नाहि वाक्यालाप करे।
कोथाओ ना याय रहे महानिष्ठा भरे।।
ताँर प्रेम वशे दाऊजी प्रत्यक्ष हइया।
माखन मिछरी खाय आपने चाहिया।।१०।।

भावसार- कुछ समय बैठकर ग्रंथ चर्चा करते। संध्या काल में माधुकुरी के लिये जाते। किसी के साथ बातचीत न करते और कहीं भी नहीं जाते। महानिष्ठा से भजन करते। उसके प्रेमवश में प्रत्यक्ष होकर दाऊजी माखन मिश्री खिलाते।।१०।।

बंगदेशी साहा जाति भक्त एकजन।
ताँर कृपा प्राप्ति आशे कैल आगमन।।
एक वर्ष गोफा द्वारे वसिया रहिल।
नित्य माधुकुरी काले बाबा नेहारिल।।
किन्तु वाक्यालापे नाहि करिल कखन।
एक वर्ष अन्ते कैल कृपा प्रदर्शन।।११।।

भावसार- बंग देशवासी साहा जाती का एक भक्त बाबा की कृपा को पाने के लिये आया और एक वर्ष तक गुफा के बाहर बैठा रहा। नित्य माधुकुरी जाते समय बाबा उसे देखते। किन्तु उनसे कोई कथा नहीं बोलते। एक वर्ष के

बाद बाबा ने अपनी कृपा को प्रदर्शन किया।।११।।

एकदा वैकाले तारे जिज्ञासे वचन।
केवा तुमि कि कारणे हेथा आगमन।।
सेकाले कक्षेते ताँर एक पुथि छिल।
सिद्ध बाबा हेरि तारे जिज्ञासा करिल।।
चैतन्यचरितामृत नाम करिल श्रवण।
परम आह्लादे बाबा पुलकित मन।।१२।।

भावसार– बाबा ने उनसे पूछा– तुम कौन हो लाला? यहाँ कैसे आये? उस समय उसके हाथ में एक ग्रंथ था। जिसे देख बाबा ने जिज्ञासा किया; उसने बताया चैतन्यचरितामृत ग्रंथ। सुनकर बाबा आनन्दित हो उठे।।१२।।

गोफाय ढुकिते ताँरे अनुमति दिल।
एक वर्ष ताँर मुखे पाठ श्रवण कैल।।
दीक्षा भेकाश्रय ताँरे करिल अर्पण।
दयाल दास वलि नाम करिल स्थापन।।
ग्रंथ पाठ श्रवणे झुरे युगल नयन।
वर्हिवास ओड़नि आर्द्र हयत तखन।।१३।।

भावसार– अब बाबा ने गुफा में आने की उसे अनुमति दी और एक वर्ष तक उसके मुख से पाठ श्रवण किया और उसे दीक्षा और वेश आश्रय दान किया व दयालदास नाम रखा। ग्रंथ पाठ श्रवण में बाबा के नयन अश्रु बहते और वस्त्र भीग जाते।।१३।।

गौरलीला शुनि ताँर भावान्तर हैल।
निताई गौरांग भजन सर्व सार कैल।।
निताई गौरांग नाम करये कीर्तन।
निरन्तर गौर प्रेमे रहये मगन।।
दयालदास एक वर्ष बाबा पाशे रैल।

नवद्वीप यात्रा लागि वाञ्छा प्रकाशिल।।१४।।

भावसार– गौरलीला सुनकर बाबा का भावान्तर हुआ और निताई गौरांग के भजन को सर्वसार किया। अब बाबा निताई गौरांग कीर्तन करने लगे और निरन्तर गौरप्रेम में मग्न रहते। इसप्रकार दयालदास एक वर्ष बाबा के पास रहे। अब उन्होंने बाबा से नवद्वीप जाने की अनुमति चाही।।१४।।

तार अभिलाषे बाबा ना कैल वारण।
सिद्ध बाबार वाक्य स्मरि करिल प्रेरण।।
आपने नारिल बाबार राखिते वचन।
ते कारने दयाल दासे करिल प्रेरण।।
दयालदास गमने बाबा विचलित मन।
उन्मत्तवत् वने वने करये भ्रमण।।१५।।

भावसार– उसकी अभिलाषा देखकर बाबा ने मना नहीं किया। सिद्ध बाबा की आज्ञा मानकर उसको जाने दिया और स्वयं बाबा का वाक्य नहीं रख पाये। इसलिये दयालदास को भेजा। दयालदास को भेजते ही बाबा विचलित हो उठे और उन्मत्त की तरह वन–वन को भ्रमण करने लगे।।१५।।

दयाल–दयाल! वलि डाके घन–घन।
चिन्ते दयाल रूपे गौर दिवे दरशन।।
पूर्वे बाबा गौरांग विषये अज्ञ छिल।
दयालदास माध्यमे सकलि बूझिल।।
हेनमते छय वर्ष करिया यापन।
कुंजेरा ग्रामेते तवे कैल आगमन।।१६।।

भावसार– वे दयाल–दयाल बोलकर उच्च स्वर में पुकारते। वे सोचने लगे दयाल रूप में गौर ही आकर दर्शन देंगे। पहले बाबा गौरांग के विषय में तो नहीं जानते थे।

दयालदास के द्वारा ही उन्होंने सबकुछ जाना। इसप्रकार छः वर्ष बिताकर बाबा कुंजेरा ग्राम में आये।।१६।।

ब्रजवासीगण ताँरे कुटिर करि दिल।
बहुदिन सेइ स्थाने अवस्थान कैल।।
सेकाले करिल बहु शिष्यत्त्व ग्रहण।
जगन्नाथ दास आदि ख्यात बहुजन।।
सख्यभाव रसे भावित ताँर तनु मन।
गोविन्द मन्दिरे करे पाद प्रसारण।।१७।।

भावसार– ब्रजवासियों ने बाबा की निष्ठा देखकर उनके लिए कुटी निर्माण कर दी। बाबा बहुत दिन वहीं रहकर भजन किये और उस समय बाबा ने बहुत शिष्य करके उन्हें धन्य किया। जगन्नाथ दास आदि उनके प्रसिद्ध भक्त हुये। सख्य रस में उनका विभावित तन और मन था। गोविन्द मन्दिर में वे पाद प्रसारण करते।।१७।।

गोविन्द के प्रनमिते वलये वचन।
शुनिया पुजारीगण करिल ताड़न।।
प्रांगण हइते ताँरे बहिष्कृत कैल।
अभिमान भरे बाबा कहिते लागिल।।
निजलोक दिया मोरे वाहिर करिले।
एखनइ देखा यावे वाहिरे आसिले।।१८।।

भावसार– गोविन्द को प्रणाम करते हुए बोलते, सुनकर पुजारीगण उसे फटकार कर प्रांगण से बाहर कर दिया। अभिमानित होकर बाबा कहने लगे– अपना आदमी भेजकर मुझे बाहर किया; बाहर आओ तो देखूँगा।।१८।।

चरणधूलि ना लइले खेलिते ना दिव।
हेनमते भर्त्स्ये बाबा प्रकाशि वैभव।।
सख्य भावे विभावित बाबार अन्तर।

सख्य रसेर कीर्तन शुनि ना धरे सस्वर।।
एकदा शुनये सख्य रसेर कीर्तन।
गोष्ठ लीला गान शुनि पुलकित मन।।१६।।

भावसार– तुम यदि मेरी चरणधूलि न लो। तब तक मैं तुमसे नहीं खेलूँगा। इसप्रकार गोविन्द की निन्दा करते हुये बाबा वैभव प्रकाश करते। सख्य रस में बाबा का भाव था। सख्य रस का कीर्तन सुनकर बाबा विह्वल हो उठते।

एकबार बाबा सख्य रस का कीर्तन सुन रहे थे। गोष्ठ लीला सुनकर उनका मन पुलकित हो रहा था।।१६।।

दैवे कीर्तनियार रसाभाष हइल।
चापट मारिया बाबा तारे शिक्षा दिल।।
वृन्दावने आसि बाबा करिलेन वास।
दुलाल स्वाहार घेराय सतत विलास।।
शेषे मणिपुरी कुञ्जे करि आगमन।
कृष्ण चैतन्यदास सह एकत्र भजन।।२०।।

भावसार– दैवयोग से कीर्त्तनीया का कुछ रसाभास (त्रुटि) हुआ। बाबा ने छापड़ मारकर उसे शिक्षा दी।

अब, बाबा वृन्दावन आकर रहने लगे। दुलाल स्वाहार घेरा में सतत विलास होता। अन्तिम में मणिपुर मन्दिर में आते। कृष्णचैतन्यदास के साथ आपका एकत्रित भजन होता।।२०।।

तथाय रहिया बाबा कैल अन्तर्धान।
परम अद्भुत बाबार महिमा आख्यात।।
अतिवृद्ध हञा तेंह अन्तर्धान कैल।
बाबार अशेष गुण जगते व्यापिल।।
गौरचरण दास बाबा परम महान।
'किशोरी' वर्णये दैन्ये ताँहार आख्यान।।२१।।

भावसार– वहीं रहकर बाबा अन्तर्ध्यान लीला किये। बाबा का परम अद्‌भुत महिमा था। अति वृद्ध होकर उन्होंने अन्तर्ध्यान किया। बाबा के अशेष गुण जगत में व्याप्त हो गये। गौरचरणदास बाबा परम महान थे। किशोरी (दास) उनका महिमा वर्णन करता है।।२१।।

१०. श्रील गिरिधारीदास बाबाजी

जय जय गौरचन्द्र दयाल ठाकुर।
जय जय नित्यानन्द प्रेम रसपूर।।
जय जय श्रीअद्वैत जीवेर जीवन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
नदीयार सिद्ध बाबा श्रीचैतन्यदास।
गौरांग नागरी भावे याहार विलास।।१।।

भावसार– हे दयाल ठाकुर गौरचन्द्र! आपकी जय हो। हे नित्यानन्द प्रेम के भण्डार! आपकी जय हो। हे अद्वैत जीवों के जीवन स्वरूप! आपकी जय हो। गदाधर श्रीवासादि भक्तगण! आपकी जय हो। नदिया के सिद्ध बाबा श्रीचैतन्यदास का गौरांग नागरी भाव से भजन था।।१।।

ताँर शिष्य प्रेममय गौर शिरोमणि।
गिरिधारी बाबा ताँर शिष्यये बाखानि।।
गोवर्धनेर वेषाश्रय करिल ग्रहण।
अपूर्व महिमा ताँर गुण सर्वजन।।
पावनाय तडासेर छिल जमींदार।
श्रीगंगाप्रसाद नाम प्रसिद्ध ताहार।।२।।

भावसार– उनके शिष्य गौर शिरोमणि प्रेममय भक्त थे। ये गिरिधारी बाबा उनके प्यारे शिष्य थे। उन्होंने गोवर्धन में वेशाश्रय ग्रहण किया। उनकी अपूर्व महिमा

थी और उनके गुणों को सभी लोग जानते। वे पावना के ताडासेर ग्राम के जमींदार थे। उनका प्रसिद्ध नाम गंगाप्रसाद था।।२।।

ताँर दुइ सुत हन प्रेम गुणवान।
अन्ना प्रसाद आर वनमाली नाम।।
अन्नदा प्रसाद राय प्रेमिक सुजन।
गिरिधारीराय नामे तेंह ख्यात हन।।
पितामह बाल्यकाले ब्रजधामे एल।
द्वार परिग्रहेर पर पितृ वियोग हैल।।३।।

भावसार– उनके दो सुपुत्र प्रेमिक और गुणवान थे। उनका अन्ना प्रसाद और वनमाली नाम था। अन्नदा प्रसाद राय के प्रेमिक जन थे। गिरिधारी राय के नाम से वे प्रसिद्ध हुये। उनके पितामह बाल्यकाल से ही ब्रजधाम आये थे। द्वार परिग्रह करने पर आपको पितृ वियोग हुआ।।३।।

ठाकुर सेवा परिजन वर्गेर पालन।
जमिदार रक्षाभार पडिल तखन।।
आबाल्य प्रबल धर्म पिपासा आछिल।
योग्य संग ना पाइया अन्यमति कैल।।
खृष्ट धर्म निवे शुनि माता दुःख मन।
गौर शिरोमणि पदे कैल समर्पण।।४।।

भावसार– ठाकुर सेवा और परिजनों का पालन भूमि का ये रक्षाभार का दायित्व आ पड़ा। बाल्यकाल से ही आपकी धर्म पिपासा रही; किन्तु सत्संग न पाकर आपकी बाह्य मति रही और वे कृष्चन धर्म लेने की इच्छा हुई। सुनकर माता बड़ी दुःखिता हुईं और उनको गौर चरणकमलों में समर्पण किया।।४।।

ताँहार प्रभावे ताँर भावान्तर हैल।

सुनिर्मल गौर प्रेम आश्रय करिल।।
शिरोमणि स्थाने दीक्षा करिया ग्रहण।
श्रीअद्वैतदास नाम करिल धारण।।
छत्रिश वर्ष वयकाले एक कन्या हैल।
प्रसव काले पत्नी तार परलोके गेल।।५।।

भावसार– गौर शिरोमणि के परम प्रभाव से इनका भावान्तर हुआ और इनके हृदय में सुनिर्मल गौर प्रेम आश्रय किया। शिरोमणि के स्थान पर आपने दीक्षा ग्रहण की और श्रीअद्वैतदास नाम ग्रहण किया।

३६वें वर्ष में आपकी एक कन्या हुई। प्रसव काल में ही पत्नी का परलोक गमन हो गया।।५।।

कयेक दिन परे कन्या देह ये छाड़िल।
दार परिग्रह तेंह आर नाहि कैल।।
गोवर्धनेर गोविन्दकुण्ड दिव्य स्थान।
तथाय कृष्णदास बाबा प्रेमिक प्रधान।।
ताँर स्थाने वेषाश्रय करिया ग्रहण।
गिरिधारी दास करिल धारण।।६।।

भावसार– कुछ दिनों के बाद कन्या ने भी देह छोड़ दिया। उन्होंने पुनः विवाह नहीं किया। गोवर्धन में एक गोविन्दकुण्ड नाम का एक दिव्य स्थान है जहाँ कृष्णदास बाबा नाम के प्रेमीजन रहते उनसे वेशाश्रय लेकर गिरिधारीदास नाम धारण किया।।६।।

माधुकुरी करि करे जीवन धारण।
संसारेर किछु द्रव्य ना करे ग्रहण।।
परम वैराग्य वेशे सदा विचरण।
कतदिने राधाकुण्डे कैल आश्रयन।।
तेरशत दुइ सने वनमाली राय।
श्रीराधाविनोद सह कुण्डे तीरे याय।।७।।

भावसार– बाबा माधुकुरी करके जीवन धारण करते और कोई भी संसार सुख की वस्तु ग्रहण नहीं करते और सदा परम वैराग्य वेश में विचरण करते। कुछ दिनों बाद आप राधाकुण्ड में आये। सन् १३०२ में वनमाली राय राधाविनोद के साथ राधाकुण्ड में आये।।८।।

सेई स्थाने दुइ भाये एकत्र मिलन।
वैषयिक सम्बन्ध परमार्थेते गमन।।
दुइ भायेर परस्परेर स्नेह व्यवहार।
परमार्थ शिक्षार स्थान हैल सवाकार।।
दोंहे मिलि इष्ट गोष्ठी करये यखन।
सेकाले हइल एक प्रश्न उत्थापन।।८।।

भावसार– उस दिव्य प्रिय कृष्ण प्रिय स्थान पर दोनों भाई एकत्रित मिलित हुये। विषय सम्बन्ध आज परमार्थ में बदल गया। दोनों भाईयों में अपार स्नेह था। यह राधाकुण्ड परमार्थ शिक्षा और नित्यलीला चिन्तन का गौड़ीय वैष्णवों का स्थान हुआ। दोनों मिलकर सदा इष्ट गोष्ठी करते। उस समय एक प्रश्न उठा।।८।।

दोहा मध्ये यदि कार दोष दृष्ट हय।
वार उचित किना कह महाशय।।
गिरिधारी बाबा तवे वलेन वचन।
वलिते उचित ताहा ना हय कखन।।
संशोधन करिते वलिवारे चाओ।
संशोधन करिते निज क्षमता ना हय।।९।।

भावसार– दोनों के मध्य में यदि किसी का दोष दिखे तब उसे कहकर उसका शोधन करें। गिरिधारी बाबा तब बोले– यह बोलना उचित नहीं है। संशोधन करके बोलना चाहो; किन्तु यदि संशोधन करने की अपनी क्षमता न हो।।९।।

बहु त्रुटि मोर मध्ये आछये एखन।
इच्छा थाकिल ताहा ना हय शोधन।।
संशोधन लागि यदि करह चिन्तन।
गिरिराज पूर्ण मासीर वन्दह चरण।।
देह धारणेते खाद्य औषध प्रयोजन।
औषध प्रयोजन मत खाद्य सर्वक्षण।।१०।।

भावसार– आज भी मुझमें बहुत दोष है इच्छा करने पर भी मैं उसका शोधन नहीं कर पाता हूँ। संशोधन के लिये यदि चिन्तन करो। तब गिरिराज महाराज और पौर्णमासी देवी की ही चरण वन्दना करो। देह धारण करने के लिए भोजन और औषध का प्रयोजन होता है। औषधि भी प्रयोजन के अनुसार ग्रहणीय होती है।।१०।।

परमार्थ देह रक्षाय लीलादि स्मरण।
क्रमे क्रमे पाय तेंह गौरांग चरण।।
अपराधादिते चित्त मालिन्य हय।
तत्त्व ज्ञान औषधरूपे व्यवहार्यहय।।
तीव्र वैराग्य ताँर प्रगाढ़ भजन।
विनय व्यवहारे तोषे सवाकार मन।।११।।

भावसार– उसी प्रकार परमार्थ देह की रक्षा के लिये लीलादि का स्मरण करके क्रमशः साधकदास श्रीविष्णुप्रिया गौरांग के चरणकमलों की प्राप्ति करता है। यदि वैष्णव अपराध होता है तो चित्त मलीन हो जाता है। तब तत्त्व ज्ञान वैष्णव सेवा औषध रूपी व्यवहृत करना चाहिये। बाबा का तीव्र वैराग्य और प्रगाढ़ भजन था। वे विनय व्यवहार से सबका मन जीत लेते।।११।।

महात्मा वलिया डाके ब्रजवासीगण।
अपूर्व ताहार गुण करुन श्रवण।।
सेकाले कृष्णदास नामे वैष्णव एकजन।

राधाकुण्ड तीरे रहे भजन निष्ट मन।।
दोंहार संगेते गाढ़ सख्यता हइल।
इष्ट गोष्ठी करि दोंहे महातृप्त हैल।।१२।।

भावसार– सभी लोग महात्मा बोलकर ब्रजवासीगण बुलाते। उनका अपूर्व गुणावलियों का श्रवण करें। उस समय एक कृष्णदास नाम का वैष्णव था। वह राधाकुण्ड के तट पर एकनिष्ठ होकर भजन करता था। दोनों में प्रगाढ़ सख्यता हुई। इष्ट गोष्ठी करके दोनों महातृप्त हो उठते।।१२।।

एकदा बंगदेश येते कृष्णदास मन।
शुनि गिरिधारी बाबा व्याकुलित हन।।
काँदिते काँदिते भूमि लुण्ठित हइल।
हेरि कृष्णदास अति विस्मित हइल।।
कारन ना बुझे तेंह जिज्ञासे वचन।
उत्तरे गिरिधारी बाबा वलेन तखन।।१३।।

भावसार– एकबार बंग्ला देश जाने का कृष्णदास का मन हुआ। यह सुनकर गिरिधारी बाबा अति व्याकुल चित्त हो उठे, वे रोते–रोते लोट–पोट होने लगे। कृष्णदास यह देखकर अति विस्मित हो उठे। कारण न जानने पर उन्होंने जिज्ञासा कि– उत्तर में गिरिधारी बाबा यूं बोले।।१३।।

आमि हतभाग्य तव विघ्नेर कारण।
मोर संगदोषे वंगे येते तव मन।।
भजन छाड़ि बंगे याइते इच्छा हैल।
शुनि कृष्णदास बाबा कान्दिते लागिल।।
तोमा सम महानुभावेर संग छाडाइया।
श्रीमती करिछे दण्ड करूणा करिया।।१४।।

भावसार– मेरे हतभाग्य से तुम्हारे भजन में विघ्न आया। मेरे संग दोष से तुम्हारे बंग्ला देश जाने का मन

हुआ। भजन को छोड़कर बंग देश जाने की इच्छा हुई। यह सुनकर कृष्णदास बाबा भी रोने लगे। हाय-हाय! तुम जैसे महानुभाव का संग छुड़ाकर मेरे पाप के कारण मुझे बाहर जाना पड़ रहा है।।१४।।

तवे सानुनये बाबा बलेन वचन।
निश्चय याइते हले शुन निवेदन।।
आगामी कल्यान नाहि गिया तिन दिन रह।
शुनि कृष्णदास रहे करिया आग्रह।।
अन्नजल त्यजि बाबा कुटीरेते रहे।
नाम संकीर्तन करि श्रीमतिरे कहे।।१५।।

भावसार- तब अनुनय से बाबा बोलने लगे- निश्चय जाने की इच्छा होने पर मेरी प्रार्थना सुनो; आगामी तिन दिन निराहार होकर रहो। सुनकर कृष्णदास आग्रहपूर्वक अन्न-जल छोड़कर बाबा की कुटी में रहे। नाम संकीर्तन करते, श्रीराधारानी के चरणों में प्रार्थना करने लगे।।१५।।

कातरे श्रीमती पदे करे निवेदन।
बंगे कृष्णदास येन ना करे गमन।।
नित्य नियम भजन करि समापन।
अतिरिक्त पांचीस हजार नाम कथन।।
एकशत आठवार दण्डवत करे।
कुण्डद्वय चारिवार परिक्रमा करे।।१६।।

भावसार- वे कातर होकर राधारानी के चरणकमलों में निवेदन करते। हे राधिके! कृष्णदास जैसे ब्रज छोड़कर बंग देश न जाये। नित्य नियम भजन समापन करके अतिरिक्त पच्चीस हजार नाम ग्रहण करते और १०८ बार दण्डवत करके व श्रीकुण्डों की चार बार परिक्रमा करते।।१६।।

उपवासी रञा करे एमत साधन।

एदिके कृष्णदास बाबार शुन विवरण।।
कृष्णदास बाबा निज कुटीरेते रञा।
गिरिधारी बाबार गुण स्मरणे हृष्ट हञा।।
तृतीय दिवस रात्रे तन्द्राविष्ट हैल।
से कालेते दीक्षागुरु ताँरे देखा दिल।।१७।।

भावसार– आप उपवास रहकर इसप्रकार का साधन करते। इस तरफ कृष्णदास बाबा का वर्णन सुनें। कृष्णदास बाबा निज कुटीर में रहकर गिरिधारी बाबा का गुण स्मरण करके हृष्ट होते। तीसरे दिन की रात्रि में जब वे तन्द्राविष्ट हुए उसी समय उनके दीक्षागुरु ने दर्शन दिया।।१७।।

कहे गिरिधारी बाबार तीन उपवास।
तोमा लागि निवेदये श्रीमती सकास।।
तन्द्राभंगे कृष्णदास व्याकुलित मन।
गिरिधारी बाबा पाशे त्वरिते गमन।।
कियदूर होते तेंह करये श्रवण।
अस्फुट स्वरे गिरिधारी बाबार रोदन।।१८।।

भावसार– उन्होंने कहा– गिरिधारीदास बाबा तीन दिनों से उपवासी हैं और तुम्हारे लिये राधारानी से प्रार्थना करते हैं। तन्द्राभंग होते ही कृष्णदास व्याकुलित मन हो उठे और गिरिधारी बाबा के पास दौड़ते हुये आये। थोड़ी दूर से ही उन्होंने ये सुना कि– 'गिरिधारी बाबा रो रहे थे'।।१८।।

तुलसी तलाय तेंह लुण्ठित हइया।
कहे एवे वृन्दा देवी मोरे कर दया।।
धाम त्याग कृष्णदास ना करे कखन।
शुनि कृष्णदास ताँर वन्दये चरण।।
दुइ बन्धु मिलि प्रेमे करये क्रन्दन।
आँखि नीर कुण्डतीर हइल प्लावन।।१९।।

भावसार– तुलसी तल में वे लुण्ठित हो रहे थे। वे कहते– हे वृन्दा देवी मुझ पर कृपा करो। कृष्णदास जैसे वृन्दावन धाम त्याग करके न जाये। सुनकर कृष्णदास उनकी चरण वन्दना करने लगे। दोनों भाई मिलकर रोने लगे। आँखों के जल से कुण्ड तट प्लावित हो उठा।।१९।।

बंगदेशे कृष्णदास ना कैल गमन।
दुँहे इष्ट गोष्ठी करि करये भजन।।
पूर्वेयेन रामचन्द्र नरोत्तमेर मिलन।
सेइ मत दुइ बाबार चरित्र कथन।।
निरवधि भजनावेश करये यापन।
दैवेते घटिल एक विचित्र घटन।।२०।।

भावसार– अब, कृष्णदास बंग देश नहीं गये। दोनों इष्ट गोष्ठी करके भजन–साधन करने लगे। पूर्व में जिस प्रकार नरोत्तम और रामचन्द्र का मिलन हुआ था। उसी प्रकार ये दोनों भी परस्पर प्रेमिक थे। सदा आप दोनों भजनावेश में रहते थे कि दैवयोग से एक घटना घटी।।२०।।

तेरश आट सने पौषी कृष्णा त्रयोदशी।
वेला आडाइटा यवे वाजिलेक आसि।।
वनमाली राय प्रमुख वैष्णवेर स्थाने।
जनैक वैष्णवगिया कहे विवरणे।।
गिरिधारी बाबा माधुकुरी नाहि कैल।
सारा नाहि मिले द्वार आबद्ध रहिल।।२१।।

भावसार– सन् १३०८ में पौष मास की कृष्ण त्रयोदशी के दिन ढाई बजे वनमाली राय प्रमुख वैष्णवों के स्थान पर जाकर कहने लगे– "गिरिधारी बाबा माधुकुरी नहीं किये और दरवाजा बंद था और अन्दर से कोई आवाज भी न दी।।२१।।"

संध्या काले बाबा करि आगमन।
श्रीराधाविनोद याय करिया दर्शन।।
भ्रातासह इष्टगोष्ठी करे कतक्षण।
पूर्व दिने असुस्थता ना कैल दर्शन।।
संवाद शुनि श्रीकामिनी घोष महाशय।
वनमाली राये कहि कुटीर द्वारे याय।।२२।।

भावसार– संध्या काल में बाबा आगमन करके राधाविनोद मन्दिर में जाते और भाई के साथ कुछ समय इष्ट गोष्ठी भी करते; किन्तु पूर्व दिन अस्वस्थता के कारण दर्शन न किये। संवाद सुनकर श्रीकामिनी घोष महाशय वनमाली राय कहते हुये उनकी कुटीर के द्वार पर आये।।२२।।

तथाय बहु ब्रजवासी वैष्णव आछिल।
अनेक चेष्टाय कपाट खुलिया देखिल।।
गृह मध्ये ये वेदिते करये शयन।
दक्षिण हस्त दिया शिरे तथाय शयन।।
आर्द्र कौपीन वस्त्र नीचे रयेछे पतित।
शुष्क कौपीन वहिर्वास आछे परिहित।।२३।।

भावसार– वहाँ बहुत ब्रजवासी वैष्णव भी आये। अनेक चेष्टा में कपाट खोलकर देखे। घर में अन्दर जाकर बाबा वेदी में शयन कर रहे हैं, दक्षिण हाथ माथे पर देकर शयन कर रहे हैं। भीगा कौपीन वस्त्र नीचे खुला हुआ था और सूखा कौपीन पहना हुआ था।।२३।।

गाये वस्त्र नाहि चक्षु अर्द्ध उन्मीलित।
मुखेते उल्लास हास्य फेन वहिर्गत।।
तदावस्थाय वाहिरेते कैल आनयन।
सवे मिलि बहुक्षण करे संकीर्तन।।
वनमाली बाहादुर करये दर्शन।
जीवन्त लक्षण तार ना पाइल तखन।।२४।।

भावसार– शरीर पर कोई वस्त्र नहीं था और नयन अर्द्ध मूँदे हुये थे, मुख में उल्लास था और मुख से फैन निकल रहा था। उसी समय ऐसी अवस्था में बाबा को बाहर लाया गया। सबने मिलकर बहुत देर तक कीर्त्तन किया। वनमाली बहादुर बहुत देर तक दर्शन किये। किन्तु उनमें जीवन का कोई चिन्ह नहीं दिखा।।२४।।

देह शक्ति नहे ताइ वसान हइल।
उल्लास वदने मृत केह ना भाविल।।
संध्यावधि बहुविधि चेष्टा करा हैल।
क्रमे क्रमे शरीर तार सादा हञा गेल।।
तखन सकले मने करिल चिन्तन।
दाह कार्यकरा बाबार उचित एखन।।२५।।

भावसार– उनमें देहशक्ति नहीं रही। उल्लास मुख से वे मृत थे ये कोई भी नहीं सोच सकता था। संध्या काल पर्यन्त बहुत चेष्टा की गई। क्रमशः बाबा का शरीर सादा हो गया। तब सभी ने मन में चिन्ता किया कि अब बाबा का दाह संस्कार करना उचित है।।२५।।

तवे वनमाली बाहादुर आज्ञा कैल।
बाबार देह लञा सवे सत्कार करिल।।
ताहार चेहारा देखि सर्वजने कय।
नेत्रपथे अपूर्व लीला हइल उदय।।
ताहार आनन्दानुभूति सहिते नारिल।
लीला हेरि सिद्ध बाबा लीलास्थाने गेल।।२६।।

भावसार– तब वनमाली राय बहादुर की आज्ञा से सबने बाबा का देह लेकर सत्कार किया। उनका मुखमण्डल का तेज देखकर सभी जन बोल रहे थे। बाबा के नयनों के पथ से कोई लीला उदय हुई है। कोई लीला अनुभूति सहन नहीं कर पाये और लीला देखकर सिद्ध बाबा लीलास्थान

में गये।।२७।।

गिरिधारी बाबा हन सिद्ध महाजन।
वैराग्येर प्रतिमूर्ति भजन परायण।।
अत्यद्भुत प्रेमगुण अपूर्व कथन।
'किशोरी' गाहये गुण वन्दिना चरण।।२७।।

भावसार– गिरिधारी बाबा सिद्ध महात्मा थे। वैराग्य की प्रतिमूर्त्ति और भजन परायण थे। अति अद्भुत प्रेमगुण और अपूर्व कथन था। मैं किशोरी उनकी गुणावली गाकर श्रीचरण वन्दना करता हूँ।।२७।।

११. श्रील गौरकिशोर शिरोमणि

वृन्दावन, मथुरा

जय लक्ष्मी प्रियानाथ प्रभु विश्वम्भर।
जय प्रभु नित्यानन्द करूणा सागर।।
जय श्रीअद्वैतचन्द्र सीतार जीवन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
नदीयार सिद्ध बाबा श्रीचैतन्यदास।
गौर मन्दिरे रहि याहार विलास।।१।।

भावसार– हे लक्ष्मीप्रिया के नाथ! प्रभु विश्वम्भर! आपकी जय हो। हे नित्यानन्द प्रभु! करूणा के सागर! आपकी जय हो। हे सीतादेवी के जीवन स्वरूप श्रीअद्वैतचन्द्र प्रभु! आपकी जय हो। हे श्रीगदाधर श्रीवासादि गौरभक्तगण! आपकी जय हो। नदिया के सिद्ध बाबा श्रीचैतन्यदास श्रीगौरांग मन्दिर में रहकर अति भजन विलास करते थे।।१।।

ताँर कृपापात्र गौर किशोर शिरोमणि।
परम अद्भुत याँर महिमा बाखानि।।

वृन्दावनेर सिद्ध बाबा नित्यानन्द दास।
वेषाश्रय कैल गिया ताँहार सकाश।।
गौरांगेर पादपद्मे समर्पित मन।
अपूर्व चरित्र ताँर करूण श्रवण।।२।।

भावसार– उन्हीं के कृपा पात्र श्रीगौरकिशोर शिरोमणि उनकी परम अद्भुत महिमा का वर्णन करते हैं। वृन्दावन के सिद्ध बाबा श्रीनित्यानन्द दास ने उनके पास जाकर वेशाश्रय किया और गौरांग महाप्रभु के श्रीचरणकमलों में मन को समर्पण किया। उनका अपूर्व चरित्र था और अति करूण व्यवहार था।।२।।

काटोयार अनित दूरे चिताहाटी ग्राम।
गुरु प्रसाद मुखोपाध्याय महाभाग्यवान।।
ताँहार मध्यम पुत्र धनकृष्ण महाशय।
तार पुत्ररूपे शिरोमणि जनमय।।
विशवर्ष वयःकाल नाहि अध्ययन।
करिव पाला यात्रा शुनि करये यापन।।३।।

भावसार– कटुवा के कुछ दूर चिताहाटी ग्राम था। जहाँ गुरुप्रसाद मुखोपाध्याय महाभाग्यवान रहते थे। उनके मध्यम पुत्र थे– धनकृष्ण महाशय। उन्हीं के पुत्ररूप में ये शिरोमणि महाशय ने जन्म लिया। बीस वर्ष की उम्र तक इनका कुछ भी अध्ययन नहीं हुआ। मैं गाँवों–गाँवों जाकर कीर्तन करूँगा, यही सोचकर घूमते।।३।।

एकदा ग्रामवासी एक वलये वचन।
विद्यानिधिर कुले कालि करिले लेपन।।
विद्याभ्यास नाहि कर कुसंगेते रत।
कुसंग त्याग करि धर सुष्ठु पथ।।
तवेत कुसंग त्याग करिया तखन।
तैपुरे गिया कैल विद्या आरम्भन।।४।।

भावसार– यह देखकर एक ग्रामवासी ने कहा– तुम विद्या अभ्यास न करके उस अंग में रत हो रहे हो, जो कुसंग त्याग करके सत्य पथ पर चलो। क्यों विद्यानिधि के कुल पर कालिमा लेपन कर रहे हो? तब उन्होंने कुसंग त्याग करके त्रिपुरा जाकर विद्या अध्ययन आरम्भ किया।।४।।

परे काटोयाय त्रयोपुर ग्रामे एल।
सखीचरण बाबार स्थाने अध्ययन कैल।।
वर्द्धमानेर ओर ग्रामे हइल विवाह।
पत्नी रामदासी महाभक्ति माता तेंह।।
शाक्त परिवारे शिरोमनिर जनम।
श्रेष्ठ ज्ञाने कृष्ण मन्त्र करिल ग्रहण।।५।।

भावसार– बाद में कटुयाय के त्रयोपुर गाँव में आये और सखीचरण बाबा से शास्त्र अध्ययन किये। बाद में आपका वर्द्धमान जिले के ओर ग्राम में विवाह हुआ। आपकी पत्नी रामदासी महाभक्तिमति थीं। शाक्त परिवार में शिरोमणि का जन्म हुआ था। श्रेष्ठ ज्ञान में कृष्ण मंत्र ग्रहण किया।।५।।

नदीयार फरिदपुर नामे एकग्राम।
विनोदलाल ठाकुर महाशय नाम।।
ताँर स्थाने कृष्ण मंत्र करिया ग्रहण।
वैष्णव सेवये हञा एकनिष्ठ मन।।
पात्रापात्र ना विचारि वैष्णवोच्छिष्ट खाय।
हेरिया ब्राह्मण समाज महारूष्ट ताय।।६।।

भावसार– नदिया के फरीदपुर नाम का एक ग्राम था। जहाँ विनोदलाल ठाकुर महाशय से इन्होंने कृष्ण मंत्र ग्रहण किया और गुरु आज्ञा से वैष्णव सेवा एकनिष्ठ होकर करने लगे। पात्र–अपात्र का विचार न करके वे सदा वैष्णवों का अधरामृत पाते। यह देखकर ब्राह्मण समाज उनसे अति रुष्ट

होता।।६।।

सकले ताहाके बहु भय देखाइल।
बिन्दुमात्र ताहाते विचलित नहिल।।
वैष्णव अधरामृत संग्रह करिया।
प्रसाद ग्रहणेर पूर्वे पाय हृष्ट हञा।।
तार पत्नी रामदासी महाभक्ति मती।
स्वामीर आदर्शे ताय सदा अनुगति।।७।।

भावसार– सबने उनको बहुत भय दिखाया। ये बिन्दुमात्र भी उनसे विचलित नहीं हुये। वैष्णव अधरामृत संग्रह करके प्रसाद ग्रहण के पूर्व हर्षित होकर पाते। उनकी महाभक्तिमती पत्नी रामदासी अपने पति देवता स्वामी के आदर्श का अनुगमन करतीं।।७।।

सदाइ वैराग्य भावे यापये जीवन।
दुइगाछि शाखा मात्र अंगेर भूषण।।
वैष्णव आसिल गृहे पदधौत करि।
यथायोग्य सेवा करे अति यत्न करि।।
परिचारि कार प्राय रहे अनुक्षण।
सहसा चिनिते नारे नावागत जन।।८।।

भावसार– आपका सदा ही वैराग्य भाव से जीवन यापन होता। दो फेर गले की माला ही आपके अंगों का आभूषण थी। वैष्णव गृह में आने पर उसके चरण धोते और यत्नपूर्वक सेवा करते। परिचारक के भाव से सदा सेवा में रहते। नवागत जन इनको पहचान ही न पाते।।८।।

भोजनेर काले यवे करे परिवेशन।
यथार्थ परिचय ताँर बुझे सर्वजन।।
एकदा गौर शिरोमणि गंगा स्नाने एल।
बहु छात्र सह काटोया धामेते पौंछिल।।

महाप्रभुर नाट मन्दिरे लइल आश्रय।
प्रभुर सेवकगण संगे हैल परिचय।।९।।

भावसार– भोजन के समय जब परिवेशन करते। तभी सभी लोग उनका परिचय जान पाते। एकबार गौर शिरोमणि गंगा स्नान करने आये और बहुत छात्रों के साथ कटुवा धाम में पहुँचे और महाप्रभु के नाट मन्दिर में आश्रय लिया। और प्रभु के सेवक गणों के साथ में आपका परिचय हुआ।।९।।

ताँदेर भजन क्रिया करिया दर्शन।
संग लाभे कैल निज भ्रान्ति विमोचन।।
तदवधि भक्ति पथे कैल दृढ़ रति।
गृहे नवभावे रहिलेन माति।।
छात्र द्वारे वैष्णव शास्त्र संग्रह करिल।
ताहा अध्यापना करि आनन्दे मातिल।।१०।।

भावसार– उनका भजन क्रिया दर्शन करके और संग लाभ करके निज भ्रांति विमोचन किया। तब उन्होंने भक्तिपथ में दृढ़ रति की और गृह में नवभाव से रहे और छात्र रूप में भी आपने वैष्णव–शास्त्रों का संग्रह किया। उनका अध्ययन करके आनन्दित हो उठे।।१०।।

येकाले काटोया धामे कैल अवस्थान।
सेकाले भजननिष्ठ अपूर्व ताहान।।
प्रभाते मंगला हेरि प्रभाति स्मरण।
गंगास्नान संख्यानाम लीलादि चिन्तन।।
एइभावे भावावेश करिया यापन।
गंगापथ झाट देय करिया यतन।।११।।

भावसार– जिस समय आप कटुवा धाम में वास कर रहे थे, उस समय आपकी अपूर्व भजन निष्ठा थी। प्रभात काल में मंगला दर्शन करके प्रभात कालीन लीला स्मरण

करते, हरिनाम जप एवं लीलादि चिन्तन भी करते। इसप्रकार भाववेश में रहकर गंगातट पर झाड़ू सेवा भी करते।।११।।

वैष्णवेर शौच स्थान परिष्कार करि।
महाप्रभु दर्शन करे गंगास्नान सारि।।
वैष्णव गोस्वामिगणे दण्डवत करे।
वैष्णवोच्छिष्ट लय उच्छिष्ट गर्त्ते होते।।
तवेत करये तेंह पाक आचरण।
सिद्ध दिया चारि मुष्टि तण्डुल बन्धन।।१२।।

भावसार- वैष्णवों के शौच स्थान को परिष्कार करते और गंगास्नान करके धामेश्वर महाप्रभु के दर्शनों को जाते। वैष्णवों और गोस्वामिगणों को दण्डवत् प्रणाम करते एवं वैष्णवों उच्छिष्ट गर्त से निकालकर पाते। उसके बाद वे ठाकुरजी की रसोई करते। चार मुष्टि चावलों का सिद्ध अन्न भी बनाते।।१२।।

लवणसह गिरिधारी रे अर्पण करिया।
प्रसाद ग्रहण करे प्रेमयुक्त हञा।।
एइभावे करे तेंह जीवन धारण।
जिज्ञासिले कहे अन्यद्रव्य ना हय सहन।।
गोस्वामिगणेर निमन्त्रणे नाहि याय।
उच्छिष्ट गर्ते होते लया निमन्त्रण मानय।।१३।।

भावसार- मात्र लवण के साथ गिरिधारी को अर्पण करते। आप प्रेमपूर्वक प्रसाद ग्रहण करते इसी प्रकार वे जीवन धारण करते। कोई जिज्ञासा करता तो बोलते अन्य पदार्थ सहन नहीं होते। भाण्डरों में आप नहीं जाते व उच्छिष्ट गर्त से प्रसाद पाकर आप अपने आपको धन्य मानते।।१३।।

एकदा प्रभुर स्थाने बहु वैष्णव एल।

सेकाले वेनीमाधव ठाकुरेर पाला छिल।।
वैष्णव सेवाय ग्रहद्रव्य निशेष हइल।
पुनश्च वैष्णव एले चिन्तान्वित हैल।।
जानालार कपाट खुलि मस्तके वहिया।
विक्रयार्थे चले तेंह त्वरान्वित हञा।।१४।।

भावसार– एकबार प्रभु के पास बहुत वैष्णव आये। उस समय वेणीमाधव ठाकुर मन्दिर में पाला कीर्तन था। वैष्णव सेवा की सामग्री खत्म हो गई। तब उन्होंने खिड़की का कपाट मस्तक पर बेचने के लिये ले गये।।१४।।

पथे गौर शिरोमणि सहित मिलन।
प्रभुर वैराग्य प्रेमे तेंह मूर्च्छा हन।।
संज्ञा पाञा गृहे आसि करये चिन्तन।
अवश्य कर्त्तव्य मोर वैष्णव सेवन।।
बड़ प्रभुर आदेश पाञा हञा सुखमन।
नित्य तिनघण्टा करे भागवत पठन।।१५।।

भावसार– पथ में गौर शिरोमणि प्रभु के साथ आपका मिलन हुआ। प्रभु वैराग्य प्रेम देखकर आप भी चकित होते। चेतना आने पर घर में आकर चिन्तन करते कि वैष्णव सेवा मेरा परम कर्त्तव्य है। बड़े प्रभु की आज्ञा पाकर सुखी होकर आप तीन घण्टा भागवत पाठ करते।।१५।।

पँयत्रिश दिने जन्माद्यस्य श्लोक व्याख्या कैल।
गौरपक्षे व्याख्या शुनि सवे मुग्ध हैल।।
व्याख्या शुनि बड़ प्रभु वलेन वचन।
वड गोसाँइर पूर्ण कृपा तोमाय एखन।।
एकदा वर्द्धमाने बड़ो ग्रामेते गेल।
एक मास बाड़ुये वाडीते पाठ हैल।।१६।।

भावसार– आपने एकबार पैंतीस दिनों तक जन्माद्यस्य

श्लोक की व्याख्या की। इनके गौरपक्ष की व्याख्या सुनकर सभी मुग्ध हो उठे और बोले बड़े गोस्वामी की आप बड़ी कृपा है। एकबार वर्द्धमान में बड़े ग्राम में आप गये। जहाँ एक माह तक घर में पाठ हुआ।।१६।।

पाठ लागि ग्रामे यवे करिल गमन।
शुनिल नाहिक ग्रामे विष्णुर सेवन।।
विष्णुर मन्दिर किंवा शालग्राम सेवानाइ।
शुनि जमिदारे तेंह डाकिल तथाइ।।
कहये ये ग्रामे नाहि विष्णुर अर्चन।
सेई ग्रामे जल स्पर्श ना करि कखन।।१७।।

भावसार– पाठ के लिये जब आप ग्राम में गये तो उन्होंने सुना कि इस ग्राम में विष्णु भगवान् की सेवा नहीं होती। भगवान् का मन्दिर यहाँ तक की शालग्राम भी नहीं है। यह सुनकर दुःखी मन से आपने जमींदार को बुलवाया और कहा इस ग्राम में विष्णु पूजन नहीं होता; उस ग्राम का मैं जल ग्रहण नहीं करता।।१७।।

अभुक्त हइया वैष्णव करिवे गमन।
शुनि जमिदार बाबू विचलित मन।।
अगत्या दश माइले दूरे जातिगृह हैते।
शालग्राम आनाइले रहिलेन तवे।।
दैवे तार वैष्णवता करिल परिश्रण।
मुर्शिदावादेर काग्रामेर तान्त्रिक ब्राह्मण।।१८।।

भावसार– अनाहार करके वैष्णव चला जायेगा। यह सोचकर जमींदार का मन विचलित हो उठा। तब जमींदार ने दस मील दूर से शालग्राम मंगवाये। तब आप वहाँ रहे। दैवयोग से आपने जमींदार की वैष्णवता की भी परीक्षा की। मुर्शिदाबाद के काग्राम के एक तान्त्रिक ब्राह्मण थे।।१८।।

भागवत पाट छाले तारे लञा गेल।
कयेकदिन पाठ हैले चक्रान्त करिल।।
भागवत पाठ स्थाने कालीपूजा हवे।
पशुवलि दिवे शुनि हइल विह्वले।।
गंभीर रात्रे शुनि तेंह करे निवेदन।
रक्षाकर गौरहरि निवेदि चरण।।१६।।

भावसार– भागवत पाठ के छल से ले गये और कुछ दिन पाठ होने पर चक्र का अंत हुआ। भागवत पाठ के स्थान पर काली पूजा होगी। यह सुनकर वे विह्वल हो उठे। गंभीर रात्रि में वे निवेदन करने लगे– "हे गौरहरि! आपके चरणकमलों में प्रार्थना है, आप रक्षा कीजिये"।।१६।।

पूजा अन्ते वलि दिते यवे चेष्टा कैल।
वलिकाले दुइवार आघात दिते हैल।।
तवे भीत हञा देवीर लइल स्मरण।
स्वप्नावेशे देवी सवा वलिल वचन।।
विष्णु भक्तेर अपमान कैल सर्वजन।
तोमादेर सर्वनाश करिव एखन।।२०।।

भावसार– पूजा के अंत में जब बलि देने की चेष्टा की; बलि के समय दो बार आघात देने को हुआ। तब भय पाकर उन्होंने देवी की शरण ली। स्वप्नादेश में देवी ने सबको आज्ञा की कि– "विष्णुभक्त का तुम लोगों ने अपमान किया। में तुम्हारा सर्वनाश कर दूँगी"।।२०।।

स्वप्नादेशे दुवृतगण चरणे पड़िल।
शिरोमणि महाशय सवाके कहिल।।
गंगास्नान करिकर हरिनाम ग्रहण।
हइवे सकल क्षमा नहे विडम्बन।।
आज्ञामत सर्वजन कैल आचरण।
ताहार प्रभावे वैष्णव हइल तखन।।२१।।

भावसार– स्वनादेश पाकर पापीगण चरणों में गिर गये। तब शिरोमणि महाशय सबको बोले– गंगास्नान करके हरिनाम ग्रहण करो। तब क्षमा होगा अन्यथा बड़ी विपदा आयेगी। आज्ञानुसार सभी ने पालन किया। वैष्णव कृपा से सभी लोग वैष्णव हो गये।।२१।।

दैवे वैष्णव गोस्वामीर विवाद घटिल।
मीमांसार भार ताँर ऊपरे पड़िल।।
अप्य प्रापत शुनि तेंह वलेन वचन।
पिता मातार कलहे नहे पुत्रेर गमन।।
गोस्वामी वैष्णवेते हय ए रूप सम्बन्ध।
पिता मातार सम्पर्केते देखाले प्रबन्ध।।२२।।

भावसार– दैवयोग से गोस्वामी का विवाद कम हुआ और मीमांसा का भार उन पर पड़ा। अल्प प्राप्त भार सुनकर वे बोले– "पिता–माता की कलह में पुत्र का जाना ठीक नहीं है।" गोस्वामी वैष्णव में इसी प्रकार का सम्बन्ध माता–पिता के सम्पर्क में उन्होंने दिखाया।।२२।।

एतेक वचने सवार भ्रान्ति दूरे गेल।
दोंहार सम्बन्ध बूझि विवाद घूचिल।।
गोस्वामी वैष्णव हय यादृश सम्बन्ध।
तादृश आचरि सवे पाइल आनन्द।।
एइभाव कतकाल करिल यापन।
शुन सिद्ध बाबा स्थाने दीक्षार ग्रहण।।२३।।

भावसार– शिरोमणि महाशय के वचनों को सुनकर सबकी भ्रांति दूर हो गई। दोनों ने अपना–अपना सम्बन्ध जानकर विवाद छोड़ दिया। गोस्वामी वैष्णवों में जिस प्रकार का प्रेम सम्बन्ध होता है, उसका आचरण करके सबको आनन्द हो गया। इसी प्रकार का व्यवहार बहुत समय तक यापन किया। अब सिद्ध बाबा के पास उनका दीक्षा ग्रहण

प्रसंग सुनिये।।२३।।

देशे विप्र गृहे हय भागवत पठन।
श्रीगौर चन्द्रिका कथा रयेछे लिखन।।
सविनये पाठक तवे करे निवेदन।
भागवतेर भिन्न वाक्य नहे उच्चारण।।
शिरोमणि महाशय लाफाञा उठिल।
ताहार सन्मुखे गिया वलिते लागिल।।२४।।

भावसार– अपने देश में विप्र गृह में नित्य पाठ होता। गौरचन्द्रिका में यह कथा लिखी है कि– "पाठक! सविनय भागवत के अलावा और कोई बात नहीं बोलता।"

एकबार शिरोमणि महाशय कूदकर उठे और उनके सन्मुख जाकर बोलने लगे।।२४।।

शिला विप्र सम्मुखेते भागवत पठन।
ताहा छाड़ि मिछा वाक्य कर आलापन।।
'अनर्पित चरीं' कथा भागवते आछे।
आमारे देखाह तुमि सवार सम्मुखे।।
पाठक साग्रह तवे वलेन वचन।
दुइ पंक्तिर मध्ये करून दर्शन।।२५।।

भावसार– ठाकुरजी के सामने तुम क्यों मिथ्या भागवत पाठ बोल रहे हो। अनर्पित चरी कथा भागवत में कहाँ है? मुझे सबके सामने दिखाओ तो। पाठक ने सविनय उनसे बोला– दो पंक्ति में आप इसका दर्शन करो।।२५।।

शिरोमणि कहे कोथा सादा देखायाय।
शुनिया पाठक तुवे वलेन ताहाय।।
तव दृष्टि नाहि कैछे कर दरशन।
चक्षु परिष्कार कैले पाइवे दरशन।।
शुनि शिरोमणि अति क्रोधान्वित हैल।

पाठकेर प्रति तवे कहिते लागिल।।२६।।

भावसार– शिरोमणि ने कहा– कहाँ है? यहाँ तो सफेद दिख रहा है। यह सुनकर पाठक उनसे बोले– आपकी दृष्टि नहीं है आप कैसे दर्शन करोगे? आँख साफ करो तो दर्शन मिलेगा। सुनकर शिरोमणि अत्यन्त क्रोधित हुए और पाठक को बोलने लगे।।२६।।

शालग्राम भागवत करिया स्पर्शन।
ब्राह्मण सम्मुखे कर मिथ्या आलापन।।
सतेजे पाठक तवे वलये वचन।
चुप करि शुन तुमि आमार कथन।।
स्व मर्यादा लञा विवाद उपस्थित हैल।
गौर शिरोमणि महा चिन्तित हइल।।२७।।

भावसार– विग्रह के सामने भागवत पाठ करके, ब्राह्मणों के सामने मिथ्या बोल रहे हो; तब पाठक तेज पूर्वक बोलने लगा– आप चुप करके मेरी बात सुनो। अब दोनों अपनी–अपनी बात पर अड़े रहे। तब गौर शिरोमणि अति चिन्तित हो उठे।।२७।।

ब्राह्मण सभाय शालग्राम साक्षी करि।
भागवत स्पर्श करि कहिले विचारि।।
भागवते प्रति दुइ पंक्तिर मध्ये।
देखितेछि श्रीगौर वन्दन लिखा आछे।।
कोन सिद्ध स्थाने कर मन्त्रेर ग्रहण।
आमार नियमे कर भागवत पठन।।२८।।

भावसार– ब्राह्मणों की सभा में शालग्राम को साक्षी करके भागवत को स्पर्श करके विचार पूर्वक कह रहा हूँ कि भागवत की इन दो पंक्तियों में श्रीगौरांग महाप्रभु का वंदन देख रहा हूँ। किसी सिद्ध महात्मा के पास जाओ उनसे

मंत्र ग्रहण करो और मेरे नियम के अनुसार भागवत श्रवण करो।।२८।।

एक सप्ताह कलि पड़ि कर आगमन।
अष्टम दिवसे एले कराव दर्शन।।
ताहा यदि नाहि पारि शुन सर्वजन।
शपथ करि वलि जिह्वा काटिव तखन।।
शुनि शिरोमणि महातेजेर सहिते।
चलिलेन नवद्वीपे सिद्धबाबा पाशे।।२९।।

भावसार– एक सप्ताह तक भागवत पाठ करके आओ। आठवें दिन मैं आपको दर्शन कराऊँगा। सभा में उपस्थित सभी जन सुनें यदि मैं इनको दर्शन नहीं करवा पाया तो मैं अपनी जिह्वा को काट दूँगा। पाठक की तेज वाणी सुनकर शिरोमणि महाशय नवद्वीप में सिद्ध बाबा के पास आये।।२९।।

चैतन्यदास बाबास्थाने दीक्षामन्त्र निल।
पाठकेर नियमेते भागवत पड़िल।।
अष्टम दिवस तवे करिल गमन।
भागवत धूलिय पाठक देखाल तखन।।
दुइ पंक्तिर मध्ये हेरि श्रीगौर वन्दना।
पाठकेर पदे धरि वाञ्छये करूणा।।३०।।

भावसार– और सिद्ध चैतन्यदास बाबा से आपने दीक्षा ग्रहण की। पाठक के नियमानुसार भागवत पढ़ा और आठवें दिन वहाँ गमन किया। भागवत में पाठक ने दिखाया इन दो पंक्तियों में श्रीगौरांग की वंदना का देखकर पाठक के चरण पकड़कर उनकी कृपा की याचना करने लगे।।३०।।

भूमे गड़ागड़ि दिया कान्दिते लागिल।
सर्वस्व छाड़िया पदव्रजे ब्रज गेल।।

पावनार दोंगाछिया ग्रामेर भक्तजन।
केशीघाट भवने तार गिरिधारी सेवन।।
भक्तसेवा शिरोमणि महाशये समर्पिल।
गिरिराजेर प्रसाद पेते प्रतिश्रुति निल।।३१।।

भावसार– और भूमि में लोट–पोट होकर रोने लगे। सबकुछ छोड़कर वे ब्रज में आये। पावना के दोगाछिया ग्राम में काशी घाट पर भवन बनाकर गिरिधारीजी की सेवा करते थे। उन भक्तों की सेवा शिरोमणि महाशय को समर्पित की। गिरिराजजी का प्रसाद पाकर प्रतिश्रुति ली।।३१।।

सेवार निर्वाह लागि वृत्तिकरि दिल।
शिरोमणि महाशय सेविते लागिल।।
काटोयार अवस्थाने कथकता कैल।
वृन्दावने गिया ताहा वर्जन कहिल।।
अपरान्हे भागवत पड़े वैष्णवे स्थाने।
दक्षयज्ञ शुनि जिज्ञासये छात्रगणे।।३२।।

भावसार– उनको सेवा के निर्वाह के लिये वेतन बाँध दिया और शिरोमणि महाशय सेवा करने लगे। कटुवा के अवस्थान काल में जो शिथिलता हुई थी। वृन्दावन में आकर उसका वर्जन करने को कहा। अपरान्ह काल में भागवत पढ़ने वाले वैष्णवों से दक्ष–यज्ञ प्रसंग सुनकर छात्रगण जिज्ञासा करने लगे।।३२।।

सतीदेह भस्मीभूत हइल यखन।
सेइ देह लञा कैछे शिवेर नर्तन।।
तथाय वसिया छिल वैष्णव एकजन।
नित्य आसि भागवत करित श्रवण।।
शुनि तेंह छात्रगणे वलये वचन।
शुनिवारे चाइ किवा करिवे दर्शन।।३३।।

भावसार– जब सती देह भस्मीभूत हुआ था, तब शिवजी ने सती के देह को लेकर कैसे नृत्य किया? वहीं पर एक वैष्णव बैठा हुआ था। जो नित्य ही आकर भागवत श्रवण करता। वह प्रसंग सुनकर छात्रों को बोलने लगा। मैं भी यह प्रसंग सुनना चाहता हूँ।।३३।।

महाग्रहे छात्रगण वलये तखन।
शुनिवारे चाय केवा पाइले दर्शन।।
देखिनू वलिया वैष्णव आसने वसिल।
'जय गौर' वलि तेंह ध्यानस्थ हइल।।
किछु क्षण परे सबे करये दर्शन।
दक्षिण पदांगुष्ठे अग्नि लागिल तखन।।३४।।

भावसार– महा आग्रह पूर्वक छात्रगण बोलने लगे– हम इस प्रसंग को सुनना चाहते हैं कि कौन दर्शन पायेगा? देखता हूँ बोलकर एक वैष्णवगण आसन पर बैठा। 'जय गौर' बोलकर वह ध्यानस्थ हुआ। कुछ क्षण बाद ही सब दर्शन किये कि उसकी दक्षिण पद के अंगुष्ठ में अग्नि प्रज्वलित हुई।।३४।।

योगाग्निते देह तार भस्मीभूत हइल।
हेरि गौर शिरोमणि व्यथित हइल।।
यमुनार जले निवाइते चेष्टा कैल।
विफल मनोरथ हञा व्याकुल हइल।।
अन्यमना त्यजि हैल भजने मगन।
एइभावे कतकाल करये यापन।।३५।।

भावसार– योगाग्नि में उसका देह भष्मीभूत हो गया। यह देखकर गौर शिरोमणि व्यथित हो उठे और यमुना के जल से उसे बुझाने की चेष्टा की। असफल होने पर व्याकुल हो उठे और अन्य मन त्यागकर भजन में निमग्न हुये। इसी तरह बहुत समय तक उनका समय यापन हुआ।।३५।।

तत्काले ब्रजे यत वैसे कृतीगण।
सर्वजन करे तारे सम्मान प्रदर्शन।।
एकदा ब्रह्मानन्द प्रभु निमन्त्रण कैल।
उत्तम आसने चाँदीर पात्रे भोज्य दिल।।
संकुचित हया तेंह कैल निवेदन।
आपनि वसिया पाताय करून भोजन।।३६।।

भावसार– उस समय ब्रज के जितने भजनानन्दी जन थे। सभी उनको सम्मान प्रदर्शन करने लगे। एकबार ब्रह्मानन्द प्रभु ने उनको निमन्त्रण दिया। इनके आने पर उत्तम आसन और चाँदी के पात्र में भोजन दिया। संकुचित होकर उन्होंने प्रार्थना की कि– आप पत्तल पर बैठकर भोजन करें।।३६।।

आपनि प्रभु आमि दास एइत सम्बन्ध।
परमार्थे एइ विधि अवश्यइ ग्राह्य।।
शुनिया आनन्दे दोंहा प्रसाद पाइल।
पाताय प्रसाद पाञा वाहिरे फेलिल।।
हेनमते किछुकाल ब्रजवास कैल।
देवेते दारूण व्याधि ताहारे घिरिल।।३७।।

भावसार– आप प्रभु हैं और मैं आपका दास हूँ, यही तो आपका हमारा सम्बन्ध है। परमार्थ में ये विधि अवश्य ग्रहणीय है। सुनकर आनन्द पूर्वक दोनों ने प्रसाद पाया। पत्तल में प्रसाद पाकर पत्तल बाहर फैंक दिया। इसप्रकार आपने बहुत समय तक ब्रजवास किया। अचानक दैवयोग से आपको दारूण व्याधि ने घेरा।।३७।।

जीवनेर आशा नाहि करिया चिन्तन।
मदनमोहन ठौरे वेशाश्रय ग्रहण।।
नित्यानन्द बाबा स्थाने वेशाश्रय कैल।
दैहिक असुस्थ लागि गृहेते रहिल।।

ताहे बलराम बाबा करिल शासन।
ज्येष्ठ गुरु पदे क्षमा करिल प्रार्थन।।३८।।

भावसार– अब बचने की आशा नहीं है, ऐसा चिन्ता कर मदनमोहन ठौर में नित्यानन्द बाबा से आपने बाबाजी वेश ग्रहण किया। देह से अस्वस्थ होने के कारण आप घर में रहे। इस पर उनको बलराम बाबा ने शासन किया। ज्येष्ठ गुरु होने के कारण आपने बलरामदास बाबा से क्षमा प्रार्थना मांगी।।३८।।

किछु दिन परे वेशाश्रय गुरूर समीपे।
पृथक कुटीरे रहे भजनेते मेते।।
आचार्य सन्ताने करे मर्यादा अर्पण।
काहार प्रणाम कभु ना करिया ग्रहण।।
एकदा आछये तिनि करिया शयन।
श्रीधर शिरोमणि गिया वन्दये चरण।।३९।।

भावसार– उस दिन के बाद वेशाश्रयी गुरु के पास जाकर उनकी कुटीर के बगल की कुटी में भजन में मत्त रहने लगे। आचार्य संतान होने के कारण आपको मर्यादा मिलती किन्तु किसी का भी वे प्रणाम स्वीकार नहीं करते। एकबार वे सो रहे थे। श्रीधर शिरोमणि ने उनकी चरण वन्दना की।।३९।।

प्रणाम करिते ताँर चरण छुइल।
बहु चेष्टा करि प्रणाम करिते नारिल।।
दूरे रहि अज्ञाते केह प्रणमिते नारे।
अविचारे सकलेरे तेंह प्रणाम करे।।
पथेते चलिते यारे सम्मुखेते पाय।
पशु पक्षी मनुष्यादि प्रणमे सवाय।।४०।।

भावसार– प्रणाम करने के लिये उनके श्रीचरण छुये

किन्तु बहुत चेष्टा करने पर भी प्रणाम नहीं कर पाये। दूर रहकर अज्ञानता में कोई प्रणाम नहीं कर पा रहा है। अविचार में सभी को वे स्वयं प्रणाम कर रहे हैं। वे तो पथ चलते जिसको भी सन्मुख पाते वो पशु-पक्षी हो या मनुष्य सबको प्रणाम करते।।४०।।

साष्टांगे प्रणाम हञा अग्रसर हय।
तृणादपि श्लोक तेंह यतने पालय।।
प्रत्यूषे उठिया नथरानी प्रणमिल।
शिष्य प्रेम कैले तेंह कहिते लागिल।।
शिशुकाल हैते मलमूत्र परिष्करि।
मातार मत पालन करये कृपाकरि।।४१।।

भावसार- साष्टांग में सबको प्रणाम करके आगे बढ़ने लगते। तृणादपि श्लोक का वे यत्न पूर्वक पालन करते। प्रातःकाल उठकर महत्रानी को प्रणाम करते। शिष्य प्रेम पूर्वक जिज्ञासा करने पर वे बोले- शिशुकाल से ये मलमूत्र परिष्कार कर माता की तरह कृपा पूर्वक पालन कर रही हैं।।४१।।

दूरागत यात्री ब्रजे कैले आगमन।
तादेर दर्शने तेंह वन्दये चरण।।
कहे दूर देश होते एल कष्टकरी।
दर्शन आवेगे आसे महानन्दकरि।।
महा अनुरागे ताँर करे आगमन।
मोर अनुराग नाहि इहादेर सम।।४२।।

भावसार- दूर से समागत यात्री ब्रज में आने पर उनके दर्शनों के लिये उन्होंने उनके चरणों की वन्दना की। वे कहते- ये दूर देश से कष्ट करके आये हैं, इसीलिये उनके दर्शन हेतु आनन्दपूर्वक आये और महा अनुराग से ये आगमन करते हैं। उस प्रकार का मेरा अनुराग इनके

समान नहीं है।।४२।।

हरि शिरोमणि यदि करिल मिलन।
ताहाके गौरांग तत्व कराल शिक्षण।।
कोथाओ शुनिते पाठ करिले गमन।
पथेते मन्दिर यत प्रणमे तखन।।
ताहाते विलम्ब हय संगीगण कय।
शुनि कहे अग्रे गेले अपराध हय।।४३।।

भावसार– जब हरि शिरोमणि आपसे आकर मिले तो आपने उनको गौरांग–तत्त्व की शिक्षा दी। कहीं पाठ सुनने को जाते मार्ग में जितने भी मन्दिर पड़ते उन्हें प्रणाम करते। इससे साथी लोग कहते विलम्ब होता है। यह सुनकर वे बोलते– इसप्रकार प्रणाम न करके चले जाने से अपराध होता है।।४३।।

अग्रेते वसिले पा लागे सवार गाय।
पश्चाते वसिया शुने याहा शुना याय।।
हेतमपुरेर रानी ताँर पाठ शुनि।
दक्षिणा सहित वस्त्र अर्पिलेन आनि।।
प्रतिग्रह हेरि वैष्णव करिल वर्जन।
अपराध बूझि शान्ति करिल प्रार्थन।।४४।।

भावसार– आगे जाकर बैठने पर सबको पैर लगता इसीलिये पीछे बैठकर ही आप पाठ सुनते। हेतमपुर की रानी ने जब उनका पाठ सुना तब दक्षिणा के साथ वस्त्र लाकर इन्हें अर्पण किया। प्रतिग्रह जानकर इन्होंने नहीं लिया किन्तु अपराध का विचार कर शांति की प्रार्थना की।।४४।।

सवे कहे नित्य आसि बिना आमन्त्रणे।
मन्दिरे मन्दिरे पाठ कराह श्रवणे।।
एइत आदेश तेंह करिल पालन।

ताहार भजन निष्ठा अपूर्व कथन।।
बाबार कुटीर पाशे करये भजन।
बाबा स्थाने बहु करे भजन शिक्षण।।४५।।

भावसार– सब कहते आप कृपाकर हमारे बिना कहे मन्दिर–मन्दिर में पाठ सुनाया करें। वैष्णवों की इस आज्ञा को इन्होंने पालन किया। इनके भजन की निष्ठा का अपूर्व वर्णन है। बाबा की कुटी के पास में आप भजन करते और उनसे बहुत भजन की शिक्षा भी लेते।।४५।।

ताहाते बाबार अति भजन विघ्न हय।
जानिया आगन्तुक गणे निजे समाधय।।
केह कोन प्रश्न कैले मीमांसा करय।
एइ भावे गुरुसेवा यतने करय।।
तडासेर जमिदार श्रीअन्नदा राय।
दीक्षादाने अद्वैतदास नाम राखे ताय।।४६।।

भावसार– इससे बाबा के भजन में विघ्न होता। यह जानकर कि आगन्तुक गणों का स्वयं समाधान करते। किसी के द्वारा प्रश्न करने पर आप मीमांसा करते। इसी प्रकार ये यत्नपूर्वक गुरु सेवा करते। तडास के जमींदार श्रीअन्नदा राय को दीक्षा दान देकर अद्वैतदास नाम रखा।।४६।।

मुंगेर जामालपुर होते आगमन।
महेन्द्र भट्टाचार्य आसि लइल शरण।।
निज ज्येष्ठपुत्र स्थाने ताँरे दीक्षा दिया।
हरिचरन नाम राखे करूणा करिया।।
बारश साता नवई सने अग्रहायन मासेते।
चलये राधिका प्रभु गौड़ देशे पथे।।४७।।

भावसार– महेन्द्र भट्टाचार्य नाम के एक सज्जन मुंगेर के जामालपुर शहर से आकर शरण लिये। इन्होंने करूणा

करके अपने ज्येष्ठ पुत्र से दीक्षा दिलवाई और हरिचरन नाम रखा। सन् १२९७ के अग्रहायन मास में राधिकानाथ प्रभु गौडदेश के पथ को चले।।४७।।

गाडिते तुलिते तेंह मथुरा आसिल।
वनमाली बाबू आदि ताँर संगे छिल।।
कान्दिते कान्दिते प्रभुके गाडिते तुलिल।
गाडी छाडिलेइ तेंह मूर्च्छित हइल।।
प्लाट फरमे मूर्च्छा हञा रहे बहुक्षण।
संगीगण बहु चेष्टाय कराल चेतन।।४८।।

भावसार- भक्त लोग गाड़ी पर उन्हें लाकर बैठाये और वे मथुरा आये। वनमाली बाबू आदि उनके साथ ही थे और उन्होंने रोते-रोते प्रभु को गाड़ी पर बैठाया। गाड़ी छूटने पर वे मूर्च्छित हो गये। प्लेटफॉर्म पर इसीप्रकार बहुत देर तक मूर्च्छित पड़े रहे। संगीगणों ने बहुत चेष्टा करके इन्हें चेतन कराया।।४८।।

वृन्दावने फिरि ताँर देहे ज्वर हैल।
पंचम दिवसे नित्य लीलाय पशिल।।
पौषी कृष्णा तृतीयाय कैल अन्तर्धान।
प्रभु शुनि शान्तिपुरे प्रेमेते अज्ञान।।
चैतन्य बाबा यवे अन्तर्धान कैल।
शिरोमणि महाशये स्वप्नेते कहिल।।४९।।

भावसार- वृन्दावन में आने पर इन्हें देह ज्वर हुआ। पाँचवे दिन आपका नित्य लीला में प्रवेश हुआ। पौष मास की कृष्णा तृतीया को आपने अन्तर्ध्यान किया। प्रभु यह सुनकर शांतिपुर में प्रेम में अज्ञान हो गये। चैतन्य बाबा जब अन्तर्ध्यान हुये; महाशय शिरोमणि को उन्होंने स्वप्न में कहा।।४९।।

कहे वृन्दावने आमि कैनु आगमन।
प्रत्यूषे उठि तेंह करे निरीक्षण।।
महा तेजमय मूर्ति आसन ऊपरे।
मूर्च्छित हइया पड़े देखिया ताहारे।।
कयेकदिन वृन्दावन गोस्वामी आगमन।
उथली निवासी अद्वैत संतान तेंह हन।।५०।।

भावसार– वृन्दावन में आ गया हूँ। प्रातःकाल में उठकर इन्होंने जब देखा तो महातेजमय मूर्ति आसन पर विराजमान थी। यह देख वे मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े। कुछ दिनों के बाद वृन्दावन गोस्वामी का आगमन हुआ। वे उथली निवासी अद्वैत की संतान थे।।५०।।

कौंढाय बाबार अस्थि गले झोलाइया।
शिरोमणि पाशे एल त्वरित करिल।।
सिद्ध बाबार अन्तर्धान संवाद कहिल।
आपन वाडीते तेंह समाधि अर्पिल।।
काटोयाय वड प्रभु अन्तर्धान कैल।
ताहार समाधि बाबार समीपे स्थापिल।।५१।।

भावसार– कौंढाय के बाबा की अस्थि गले में झुलाकर शिरोमणि के पास शीघ्र आये और सिद्ध बाबा के अन्तर्ध्यान का संवाद बताया। अपने घर में इन्होंने समाधि की; फिर कटुवा के बड़े बाबा का जब अन्तर्ध्यान हुआ तब उनकी समाधि बाबा के समीप स्थापित की।।५१।।

शिरोमणि अन्तर्धाने अनुगत जन।
सेइ स्थाने समाधि ताँर करिल अर्पण।।
अद्यापि सेइ स्मृति आछे विद्यमान।
यथारीति भोगसेवा हयत विधान।।
गौर शिरोमणि गुण अपूर्व कथन।
'किशोरी' वन्दये ताँरे लइया शरण।।५२।।

भावसार– शिरोमणि के अन्तर्ध्यान होने पर अनुगत जनों ने उसी स्थान पर उनकी समाधि की। आज भी उनकी स्मृति विद्यमान है और यथारीति वहाँ पर भोग लगता है। गौर शिरोमणि के अपूर्व गुणों का वर्णन है। मैं किशोरीदास उनके श्रीचरणों की शरण लेता हूँ।।५२।।

१२. श्रील जगदीशदास बाबाजी

कालीदह, वृन्दावन

जय प्रेममय अवतार गौरहरि।
जय प्रभु नित्यानन्द भवेर काण्डारी।।
जय श्रीअद्वैतचन्द्र जय गदाधर।
जय श्रीनिवास आदि गौर अनुचर।।
कालनार सिद्ध बाबा भगवानदास।
अद्भुत वैभव ताँर भुवने प्रकाश।।१।।

भावसार– प्रेममय अवतार श्रीगौरहरि की जय हो! भवसागर के काण्डारी श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्रीअद्वैतचन्द्र एवं गदाधर प्रभु की जय हो! श्रीनिवास आदि गौरभक्तवृन्द की जय हो! कालना के सिद्ध बाबा श्रीभगवानदास का अद्भुत वैभव इस भुवन में प्रकाशित हुआ है।।१।।

ताँहार आश्रित हन जगदीश दास।
कालीदह गिया येवा करिव विलास।।
वर्द्धमाने विप्रकुले लभिया जनम।
कालनाय रहि करे चिकित्सा करन।।
गौरवर्ण दीर्घकाय सर्वांग सुन्दर।
गौरनाम प्रेमगुणे महाशक्ति धर।।२।।

भावसार– उनके आश्रित हुये श्रीजगदीशदास जिन्होंने कालीदह में जाकर भजन किया। वर्द्धमान के विप्रकुल में

आपने जन्म लिया और कालना में रहकर आपने चिकित्सा की। वे गौरवर्ण की दीर्घ काया वाले सर्वांग सुन्दर वैष्णव थे। श्रीगौरांग नाम उनके प्रेमगणों के कीर्तन में आपकी शक्ति अत्यन्त हुई।।२।।

सिद्ध बाबा पाशे सदा करे गतागति।
येवा याय बाबा तारे कहये मति।।
भक्ति अंग याजन कर कह हरिनाम।
बाबार व्यवहारे आकृष्ट ताँर प्राण।।
शेषावस्थाय सिद्ध बाबा ताहाके डाकिल।
त्रयकटा नाम लिख यतने कहिल।।३।।

भावसार– आप सिद्ध बाबा के पास नित्य आना–जाना करते। बाबा के पास जो भी आते बाबा उनको शिक्षा देते– भक्ति अंग याजन करके हरिनाम करो। बाबा के सद् व्यवहार से इनके मन प्राण आकृष्ट हो जाते। अपनी शेष अवस्था में सिद्ध बाबा ने उनको बुलाया और त्रयकटा नाम लिखो यत्नपूर्वक कहा।।३।।

परे काज दिवे यदि एतेक कहिल।
शुनि जगदीश बाबा सब लिखिल निल।।
हेनमते श्रीगुरु प्रणाली प्राप्त हैल।
कतदिने वृन्दावने आसि वास कैल।।
मदनमोहन पुरातन मन्दिरे वास।
तथा वहु वैष्णव सह तथाय विलास।।४।।

भावसार– बाद में काम देंगे ऐसा कहा। यह सुनकर जगदीश बाबा ने सब लिख लिया। इसप्रकार इन्होंने श्रीगुरु प्रणाली प्राप्त की और कुछ दिन में वृन्दावन आकर वास किया। प्राचीन श्रीमदनमोहन मन्दिर में आपको वास मिला। वहाँ पर बहुत सारे वैष्णवों के साथ आपकी इष्ट–गोष्ठी होती।।४।।

सिद्ध बाबार कृपाय ग्रंथादि पड़िल।
सत्संगे निजाभिष्ट भजने बूझिल।।
माधुकुरी करि करे उदर भरन।
एकबार वर्षानेते करिल गमन।।
जगदानन्द दास आर माधवदास।
नित्यानन्द बाबार चेला तथा करे वास।।५।।

भावसार– सिद्ध बाबा की कृपा से आपने सब ग्रंथ आदि पढ़े और सत्संग में अपना अभीष्ट भजन समझा। आप माधुकुरी करके उदर पूर्ण करते। एकबार वे बरसाना गये जहाँ जगदानन्ददास और माधवदास जो नित्यानन्द बाबा के शिष्य वहाँ वास करते थे।।५।।

जगदीश बाबार तेज पुञ्ज दरशने।
भावे योग्य पात्र एइ रहिते वर्षाने।।
माधवदास द्वारे जगदानन्द बाबा कैल।
अधिकारी नाहि मुइ तेंह ये कहिल।।
कालिदहे छोट एक कुटीरेते वास।
माधुकुरी करे त्यजे लवणेर आश।।६।।

भावसार– जगदीश बाबा का दिव्य तेज दर्शन करके ये सोचने लगे कि जगदीश बाबा बरसाने रहने के योग्य पात्र हैं– माधवदास के द्वारा जगदानन्द बाबा बोले। बाबा ने जो कहा मैं उसका अधिकारी नहीं हूँ। आप कालीदह में एक छोटी–सी कुटी बनाकर माधुकुरी एवं वास करते। आपने तो लवण तक की आशा त्याग दी।।६।।

क्षौर कार्ये यातायाते हय विडम्बन।
काँचि एक किनिलेन क्षौरेर कारण।।
तार द्वारे क्षौर कर्म करे समाधान।
मधुकुरी लागि नित्य श्रृंगार वटे यान।।
श्रृंगार वटे नित्यानन्द गदि हय।

गदि अधिपति प्रेमानन्द महाशय।।७।।

भावसार– बाबा को क्षौर कार्य के लिये आने–जाने में बड़ी असुविधा होती। इससे आपने क्षौर के लिये एक कैंची खरीदी, जिससे अपने क्षौर कार्य स्वयं ही कर लेते और माधुकुरी के लिये आप नित्य श्रृंगार वट जाते। वहाँ पर नित्यानन्द गद्दी है, जिसके अधिपति प्रेमानन्द महाशय थे।।७।।

सिद्ध बाबा प्रति ताँर प्रीति अनुक्षण।
बाबा प्रीति भक्ति ताँरे करे सर्वक्षण।।
एकदिन सिद्ध बाबा माधुकुरी गेल।
मलिन वदन हेरि प्रभु जिज्ञासिल।।
इंगिते सिद्ध बाबा निजभाव जानाइल।
प्रभुपाद बूझि ताहा उपाय कहिल।।८।।

भावसार– वे सिद्ध बाबा के प्रति सदा प्रीति रखते। बाबा भी सदा उनसे प्रीति भक्ति करते। एकदिन सिद्ध बाबा माधुकुरी को गये; उनके मलिन मुख को देखकर प्रभु ने जिज्ञासा की। बाबा ने इंगित में ही अपना भाव प्रकाशित किया। प्रभुपाद ने समझकर उसका उपाय बताया।।८।।

से काले श्रृंगारवट घोषि यमुना प्रवाहित।
प्रभुर अंगन दिया परिक्रमा हैत।।
प्रभुपाद व्याकुल भावे इंगिते करिल।
बाबा झोला राखि तथा गडागडि दिल।।
गडागडि मात्रे बाबार भजन उल्लास।
वैष्णवेर पदरेणुर देखाल प्रकाश।।९।।

भावसार– उस समय श्रृंगार वट से यमुना प्रवाहित होती थी। अतः प्रभु के आंगन से परिक्रमा होती। प्रभुपाद व्याकुल भाव से इंगित में कहा– बाबा! इंगित समझकर

झोली रखकर परिक्रमा में लोट-पोट होने लगे। जिससे बाबा का भजन उल्लास बढ़ गया। वैष्णवों के पदरज की महिमा प्रकाशित हुई।।९।।

वैष्णव चरणरेणु, भूषण करिया तनु,
याहा हैते अनुभव हय।
मार्जित हय भजन, साधुसंग अनुक्षण,
अज्ञान अविद्या पराजय।।१०।।

भावसार- और कहा भी है- वैष्णव की चरणधूलि से अपने तन को आभूषित करने पर अनायास ही भजन हो जाता है और भजन मार्जित होकर सदैव साधु-संग प्राप्त होता है। जिससे अज्ञान, अविद्या पराजित हो जाती है।।१०।।

सेइ पथे वैष्णवगण परिक्रमा कैल।
ताँहा गडागडि दिते भजनोल्लास हैल।।
तत्परे पनर विशवर्ष गत हैल।
प्रेमानन्द प्रभुपाद अन्तर्धान कैल।।
ताँर शिष्य माधवदास सह सदा प्रीति।
दोंहा पाशे दुहुजन करे गता गति।।११।।

भावसार- उसी पथ से वैष्णवों ने परिक्रमा की। वहाँ पर लोट-पोट होने पर भजन में उल्लास बढ़ जाता है। इसप्रकार पन्द्रह-बीस वर्ष बीत गये। फिर प्रेमानन्द प्रभु का अन्तर्ध्यान हो गया। उनके शिष्य माधवदास के प्रति बड़ी प्रीति थी। दोनों परस्पर एक-दूसरे के पास आया-जाया करते थे।।११।।

समाजवाड़ी ठौरे रहे श्रीमाधवदास।
एकदिन सिद्धबाबा तले ताँर पाश।।
मलिन मुखे ताँर पाशे करिल गमन।

हेरिया माधवदास जिज्ञासे वचन।।
असमय कि कारणे तव आगमन।
शुनिया उत्तरे बाबा कहे विवरण।।१२।।

भावसार- समाजवाड़ी ठौर पर श्रीमाधवदासजी रहते थे। एकदिन मलिन मुख से बाबा उनके पास आये। बाबा से प्रणामपूर्वक जिज्ञासा की बाबा असमय तुम्हारा आने का क्या कारण है? सुनकर बाबा सब विवरण कहने लगे।।१२।।

येमते श्रृंगार वटे अभीष्ट पूरिल।
एके एके सेई वाक्य सकलि कहिल।।
प्रभुपाद एवे करिलेन अन्तर्धान।
मोरे लञा चल ताँर समाधिर स्थान।।
तवे श्रीमाधवदास तारे लञा गेल।
सिद्ध बाबा समाधि स्थाने गडागडि दिल।।१३।।

भावसार- जिसप्रकार से श्रृंगारवट में अभीष्ट पूर्ण हुआ। बाबा एक-एक करके सब कथा बोले- प्रभुपाद अन्तर्ध्यान हो गये हैं मुझे उनकी समाधि के पास ले चलो। तब श्रीमाधवदास उनको ले गये। सिद्ध बाबा ने समाधि स्थान पर लोट-पोट की।।१३।।

प्रभु पादेर प्रसादे हैल भजनोल्लास।
सिद्ध बाबार प्रेमगुण अद्भुत प्रकाश।।
अपराधे सावधान रहे अनुक्षण।
प्राणी मात्रे उद्वेग ना देय कदाचन।।
कथा वार्ता कहि केह उल्लासेते याय।
हेरि सिद्ध बाबा मने महासुख पाय।।१४।।

भावसार- प्रभुपाद के कृपा-प्रसाद से उन्हें भजन में उल्लास हुआ। बाबा सिद्ध बाबा के प्रेमगुणों की अद्भुत महिमा थी। वे सदैव अपराध से सावधान रहते थे। कभी-भी

किसी–भी प्राणी को दुःख नहीं देते थे। बाबा की वाणी से यदि कोई–भी सुख पाकर जाता तो इससे बाबा बड़े आनन्दित होते थे।।१४।।

विषन्न वदने केह करिले गमन।
डाकिया जिज्ञासे तार दुःखेर कारण।।
एकदा देश होते कनिष्ठ भ्राता एल।
आदर स्नेह यथायोग्य ताहाके करिल।।
स्त्री वियोग शुनितार वलये वचन।
एस दुइ भाई करि ब्रजेते भजन।।१५।।

भावसार– यदि कोई उनके पास से दुःखी हो जाता तब वे उनको बुलाकर उनके दुःख का कारण पूछते। एकबार उनके देश से उनके छोटे भाई आये। इन्होंने उसे अति आदर स्नेह देकर सम्मान किया। उसकी धर्मपत्नी परलोक सिधार गईं। यह सुनकर बाबा बोले– आओ, अब दोनों भाई मिलकर ब्रज में भजन करें।।१५।।

कतक्षण रहि भ्राता करिल गमन।
तवे सिद्ध बाबा मने करये चिन्तन।।
बुझि मोर वाक्ये तार हैल दुःख मन।
अपराध मोचन लागि करये चिन्तन।।
किरूपे भ्रातार पाइ पुनश्च दरशन।
कोन स्थाने रहे ताहा ना जाने वचन।।१६।।

भावसार– कुछ देर रहकर भाई चला गया। सिद्ध बाबा मन में चिन्तित होने लगे कि लगता है मेरे किसी वाक्य से उसे दुःख हुआ और अपराध क्षमा हेतु वे चिन्तन करने लगे। किन्तु वह कहाँ रहता था बाबा ये नहीं जानते थे।।१६।।

परशु याइवे मात्र बलेछे वचन।

साक्षात् लागि दुइ बेला स्टेशनेते याय।।
कयेक दिन गतागते देखा नाहि पाय।
उपाय चिन्तिया एक पत्री ये लिखिल।।
पत्र द्वारे भ्राता स्थाने क्षमा चाहि निल।
जनैक वकील स्थाने करिल लिखन।।१७।।

भावसार– परसों जाऊँगा यही मात्र उसने बोला था। उनसे साक्षात्कार करने के लिये बाबा सुबह–शाम स्टेशन पर जाते। कुछ दिन आने–जाने पर भी उससे भेंट नहीं हुई। उपाय चिन्ता करके उन्होंने एक पत्र लिखा। पत्र में अपने भाई से उन्होंने क्षमा चाही। एक वकील के पास उन्होंने ये पत्र लिखा था।।१७।।

तेंह भ्रातारे ताँर कहिल विवरण।
भ्राता कहे ताते मुइ दुःख ना पाइल।
भजनेर विघ्न लागि पुनः नाहि गेल।।
पत्र पाञा सिद्ध बाबा आश्वस्त हइल।
हृदये चिन्तिया एक नियम करिल।।१८।।

भावसार– उन्होंने भी उनके भाई को ये विवरण बताया। भ्राता ने स्पष्टीकरण किया कि बाबा की बात से मैंने कोई दुःख नहीं पाया। उनके भजन में कोई विघ्न न पड़े; इसीलिये मैं दूसरी बार उनके निकट नहीं गया। पत्र पाकर सिद्ध बाबा अति आश्वस्त हो गये। हृदय में विचार करके बाबा ने एक नियम बनाया।।१८।।

साक्षात् करिते केह करे आगमन।
सर्व अग्रे ठिकाना तार करये श्रवण।।
दोष दृष्ट महा अपराध बीज हय।
से दिके सतर्क सदा सिद्ध बाबा रय।।
पाठ कीर्तन श्रवणेते ना करे गमन।
सज्जन समाजे करे रस आस्वादन।।१९।।

भावसार– बाबा से साक्षात्कार करने के लिये यदि कोई आता सबसे पहले वे उनका पता पूछते। दोष दृष्टि से महा अपराध का उद्गम होता है। इस ओर बाबा सदा सावधान रहते। यहाँ तक कि वे पाठ और कीर्तन में भी नहीं आते-जाते। केवल साधु-समाज में ही हरिकथा का रसास्वादन करते।।१६।।

वृद्ध वयसे बाबार दन्तहीन हैल।
माधवदासजी ताँरे बहुत सेविल।।
नरम उत्तम द्रव्य कोथाओ पाइले।
बाबाके आनिया देय परम कौतुके।।
एकदा सिद्ध बाबा ताँरे जिज्ञासे वचन।
कोन अभिप्राये कर हेन आचरण।।२०।।

भावसार– वृद्धावस्था में बाबा के दाँत नहीं रहे। माधवदासजी उनकी सेवा करते। नरम और उत्तम भोज्य पदार्थ यदि कहीं मिलते बहुत श्रद्धापूर्वक वे बाबा को देते थे। एकबार सिद्ध बाबा ने उनसे जिज्ञासा की– तुम किसलिये इतने सब पदार्थ मुझे देते हो?।।२०।।

तेंह कहे मोर नाहि कोन अभिप्राय।
देखिले नरम खाद्य चित्ते तोमा भाय।।
ते कारने तोमा लागि करि आनयन।
शुनिया हइल सुखी सिद्ध बाबा मन।।
एकबार करये बाबा गुरु महोत्सव।
से काले हइल वाञ्छा सेविते वैष्णव।।२१।।

भावसार– वे बोले– बाबा! मेरा इसमें कोई अभिप्राय नहीं है। नरम पदार्थ आपको पसन्द होते हैं इसीलिये आपके लिए ले आता हूँ। सुनकर सिद्ध बाबा अति सन्तुष्ट हुये। एकबार बाबा गुरु महोत्सव कर रहे थे। तब उनकी वैष्णव सेवा करने की इच्छा हुई।।२१।।

किनु बाबू नामे भक्त चल्लिश टाका दिल।
कुडि टाका दिया बाबा गुड़ ये आनिल।।
वाजार होते गुढ़ आनि कुटीरे राखिल।
पदधौत लागि तेंह कूप पादे गेल।।
मालपोया भोग हवे सिद्ध बाबा मन।
हेनकाले हैल एक विचित्र घटन।।२२।।

भावसार– किनु बाबू ने चालीस रुपये दिये। उसमें से बीस रुपये देकर बाबा ने गुड़ मंगाया और कुटी में रखा व चरण धोने के लिये कूए पर गये। सिद्ध बाबा विचार कर रहे थे कि मालपूआ भोग होगा। उसी समय एक विचित्र घटना घटी।।२२।।

कुटीरेर शिकल तुलिते भूल हैल।
इत्यवसरे एकदल वानर ढुकिल।।
थेलि छिडि महानन्दे करये भोजन।
बाबा प्रेमध्वनि देय करि निरीक्षण।।
भोजनेते अवे सवे करिल गमन।
बाबा दण्डवत् सवाय करिल तखन।।२३।।

भावसार– कुटी का सांकल देना बाबा भूल गये। अवसर पाकर एक बन्दरों का दल कुटी में घुस गया। थैली को चीर–फाड़कर महा आनन्द से वे भोजन करने लगे। बाबा ये सब देखकर आनन्दध्वनि करने लगे। अब, सभी भोजन के लिये सभी आने लगे फिर बाबा ने सबको दण्डवत् प्रणाम किया।।२३।।

यथारीति संध्याकाले भोजने वसिल।
संध्याकाले किनुबाबू बाबा पाशे एल।।
महोत्सव वार्ता यवे बाबा के पूछिल।
बाबा कहे बहु वैष्णव सेवन हइल।।
इतस्तत चाहि तेंह वलये वचन।

किञ्चित् प्रसाद मोरे करुन अर्पण।।२४।।

भावसार– और यथारीति पूर्वक सभी भोजन आसन पर बैठे। संध्याकाल में किनु बाबू बाबा के पास आये और महोत्सव का संवाद पूछा। बाबा बोले– बहुत वैष्णवों ने प्रसाद पाया; किन्तु किनु बाबू ने यहाँ–वहाँ देखा और बोले– मुझे भी थोड़ा प्रसाद दें।।२४।।

सहास्य वदने बाबा वलये तखन।
ब्रजेर वानर वैष्णव करिल भोजन।।
डलिया रयेछे ए करह दरशन।
उहा होते प्रसाद लञा करुन ग्रहण।।
विश टाकार गुणे हैल वैष्णव सेवन।
बाकी विश टाका तव करुन ग्रहण।।२५।।

भावसार– मुस्कराकर बाबा बोले– ब्रज के बन्दर वैष्णवों ने भोजन किया। ये डलिया पड़ी हुई है इसका दर्शन करो। इससे एक कणा प्रसाद लेकर ग्रहण करो। बीस रुपये से इतनी बड़ी वैष्णव सेवा हुई एवं शेष बीस रुपये ग्रहण करो।।२५।।

आपनि लइया करुन वैष्णव सेवन।
एत कहि विश मुद्रा करिल अर्पण।।
एकदा बाबार चित्ते वासना जन्मिल।
दीर्घिका करिते एक हृदये चिन्तिल।।
श्रीकृष्ण लीलास्थली कालीदह हय।
स्मृति चिह्न राखिवारे वाञ्छा उपजय।।२६।।

भावसार– इसे आप स्वयं लेकर वैष्णव सेवा कीजिये। एकबार बाबा के चित्त में एक इच्छा प्रकट हुई कि दीर्घिका बनाने के लिये हृदय में विचार आया। चूंकि कालीदह श्रीकृष्ण की लीलास्थली है उसका स्मृति चिन्ह रखने की

इच्छा हुई।।२६।।

इच्छामात्रे भक्त द्वारे व्यवस्था हइल।
कार्यारम्भे बाबा सह परामर्श कैल।।
सेइ रात्रे सिद्ध बाबार ना हैल भजन।
प्रस्तावित विषयेर चिन्तार कारण।।
चिन्तायुक्त हञा रात्रि करिल यापन।
भजन नष्ट कारणेते बाबा क्षोभ मन।।२७।।

भावसार– बाबा की इच्छामात्र से भक्तों के द्वारा व्यवस्था हो गई। कार्य आरम्भ करते समय बाबा से परामर्श हुआ; जिससे सिद्ध बाबा का भजन ही न हुआ। प्रस्तावित विषय की चिन्ता के कारण पूरी रात बिता दी। इधर भजन के नष्ट होने से बाबा को बहुत दुःख हुआ।।२७।।

सवार अज्ञाते वने गमन करिल।
चार पाँच दिन केह खुँजिया ना पेल।।
एकदा हठात् कैल कुटीरे आगमन।
सवे आसि जिज्ञासिया जाने विवरण।।
दीर्घिका खनन लागि आज्ञा ये चाहिल।
शुनि सवा प्रति बाबा कहिते लागिल।।२८।।

भावसार– किसी को भी न बताकर बाबा वन को चले गये। बाबा का चार–पाँच दिनों तक खोजने पर पता ही न चला। एकबार अचानक बाबा कुटी पर आये और सबसे जिज्ञासा करके विवरण जाना। तलैया, खनन के लिये बाबा ने जो आज्ञा की थी उस विषय में बाबा बोलने लगे।।२८।।

मोर वाञ्छा मोर परे करिह पूरण।
यदि केह चाह इहा करिते पूरण।।
कार्यारम्भ हैले मोर अवश्य मरण।
सकल विनाश मोर हइवे तखन।।

अतएव हेन वाक्य ना बल कखन।
बाबार भजन निष्ठा अपूर्व कथन।।२६।।

भावसार– मेरी यह इच्छा मेरे जाने के बाद पूरी करना। यदि कोई मेरे रहते इसे पूरा करना चाहो कार्य आरम्भ होते ही मेरी मृत्यु मान लेना। मेरे पूरे भजन का विनाश हो जायेगा। अतएव यह बात फिर मत बोलना। इसप्रकार थी बाबा की अपूर्व भजन निष्ठा कथा।।२६।।

एकदिन भक्त एक जिज्ञासे वचन।
कोनमते प्रेमभक्ति लभे जीवगण।।
हेन उपदेश मोरे कर कृपा करि।
बाबा कहे ब्रजवास कर निष्ठा करि।।
तेंह कहे हेन भाग्य ना हवे आमार।
शुनि बाबा ताँर प्रति कहे पुर्नवार।।३०।।

भावसार– एकदिन एक भक्त ने बाबा से जिज्ञासा की– बाबा! किसप्रकार जीवगण प्रेमभक्ति पायेंगे? आप कृपा करके मुझे यह उपदेश दें। बाबा ने कहा– तुम ब्रजवास निष्ठा से करो। वह पुनः बोला– मेरा ऐसा भाग्य नहीं होगा। सुनकर बाबा पुनः बोले।।३०।।

नरोत्तम ठाकुरेर प्रार्थनावली आर।
प्रेमभक्ति चन्द्रिकार अद्‌भुत विचार।।
उक्त ग्रंथ लञा कर पठन याजन।
प्रेमभक्ति लभ्य ताते गुण विवरण।।
शुनि हृष्ट मने तेंह करिल गमन।
मध्ये मध्ये पत्र द्वारे जिज्ञासे वचन।।३१।।

भावसार– नरोत्तमदास ठाकुर की 'प्रार्थनावली' और 'प्रेमभक्तिचन्द्रिका' ग्रंथ लेकर पठन–पाठन करो। जिससे प्रेमभक्ति लाभ होगी। सुनकर प्रसन्न मन से वह चला गया।

वह बीच-बीच में पत्र के द्वारा जिज्ञासा करता।।३१।।

पत्रादि लिखिते बाबार विरक्त अन्तर।
भक्त दुःख लागि तेंह लिखिते तत्पर।।
पुनः लिखिवारे पत्र करिल वारण।
पत्र पाञा बाबा पाशे करये लिखन।।
वारे वारे विरक्त करि आर ना करिव।
संक्षेपे उपदेश कर किसे प्रेम पाव।।३२।।

भावसार- पत्र लिखते बाबा बड़े विरक्त होते किन्तु भक्त दुःखी होगा इसलिये लिखते। जवाब देकर बाबा ने पुनः पत्र लिखने के लिये मना किया। पत्र पाकर भक्त ने बाबा को पुनः लिखा। बाबा बार-बार और विरक्त नहीं करूँगा संक्षेप में उपदेश कीजिए कि कैसे प्रेमधन प्राप्त हो।।३२।।

बाबा लिखे प्रेमभक्ति चाहिवे यवे मन।
अन्य वाञ्छा ना रहिवे पावे सेई धन।।
पत्री पाञा सेई भक्त आस्वस्त हइल।
तद्वधि बाबा स्थाने पत्री नाहि दिल।।
बाबा कहे प्रेमभक्ति हय येनमते।
येवा नाम प्रेम दिल ताँर वाक्य इथे।।३३।।

भावसार- बाबा ने लिखा प्रेमभक्ति पाने की मन में जब इच्छा हो तब अन्य कामना नहीं होनी चाहिये। तब यह प्रेमधन मिलता है एवं पत्र पाकर भक्त बड़ा आश्वस्त हुआ। बाबा बोलते हैं- प्रेमभक्ति जिसप्रकार होती है, जो नाम और प्रेम के दिये उन्हीं के वाणी है।।३३।।
तथाहि-

तृणादपि सुनिचेन तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मान देन कीर्तनीय सदा हरिः।।

तृण से भी अति दीन होकर, वृक्ष से भी ज्यादा

सहिष्णु होकर, अमाननीय लोगों को भी मान देकर सदा हरिनाम संकीर्तन करते रहना चाहिये।

एइ श्लोकेर मर्मरूप कर आचरण।
अवश्य लभिवे प्रेम गौरांग वचन।।
ये परिमाण येइ जन करे आचरण।
सेइ परिमाण प्रेम लभे सेइ जन।।३४।।

भावसार– इस श्लोक के मर्म रूप का आचरण करो। जिससे अवश्य ही प्रेमधन प्राप्त होगा। यह श्रीगौरांग की वाणी है। जिस प्रमाण में जो जन इसका आचरण करता है। उसी प्रमाण वह वह प्रेम को प्राप्त करता है।।३४।।

यतदिने श्लोक वाक्य हइवे पूरण।
सेइकाले पूर्ण प्रेम लभे भक्तगण।।
यदि केह आसि करे काहार निन्दन।
विचित्र भंगीते बाबा करे समाधान।
एकदा एक भक्त आसि वलय वचन।।३५।।

भावसार– जितने दिनों तक श्लोक की वाणी पूर्ण होगी। उसी समय भक्तगण प्रेम प्राप्त करेंगे। यदि कोई आकर किसी की निन्दा करता तो विचित्र भंगी से बाबा उसका समाधान करते। एकबार एक भक्त आकर यूं बोलने लगा।।३५।।

अमुक आसि कहे बहुत वचन।
आजिओ माछ तेंह छाड़िते नारिल।।
शुनि सिद्धबाबा तारे कहिते लागिल।
कोन दिन मत्स्य तुमि करेछ ग्रहण।।
तेंह कहे पूर्वे आमि करेछि ग्रहण।
एवे सम्पूर्ण भावे करियाछि वर्जन।।३६।।

भावसार– फलाना व्यक्ति आकर मुझसे भजन की

बहुत बड़ी-बड़ी बात करता है; किन्तु आज तक वह मांस नहीं छोड़ पाया। सुनकर बाबा बोलने लगे- तुमने भी तो कभी मांस खाया है, वह बोला मैंने पहले खाया था। अभी सम्पूर्ण भाव से त्याग दिया है।।३६।।

बाबा कहे काले हवे तोमार मतन।
हेनमते भक्ति शिक्षा देन कृपा करि।
अचिन्त्य बाबार गुण कहिते ना पारि।।
आत्म शुद्धि लागि करि किञ्चित वर्णन।
अपराध क्षमा कर यत गौर गण।।३७।।

भावसार- बाबा बोले- तब कल यह भी तुम्हारे समान हो जायेगा। इसप्रकार बाबा कृपापूर्वक शिक्षा देते थे। बाबा के अचिन्त्य गुण थे कहा नहीं जा सकता। आत्मशुद्धि के लिये किंचित् वर्णन करता हूँ। हे गौरगण! मेरा अपराध क्षमा करना।।३७।।

तेरश वाइश सने आषाढ़ मासेते।
करिलेन लीला शेष शुक्लाषष्ठिते।।
शतेक वत्सरे बाबा कैल अन्तर्धान।
कालिदहे देहत्यजि गेल लीलास्थान।।
बाबार अचिन्त्य गुण भक्त्यांग याजन।
शुनिया लभये सवे शुद्ध भक्ति धन।।३८।।

भावसार- सन् १३२२ के आषाढ़ मास में शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि पर आपने लीला संवरण की। आपको कोटि-कोटि नमन्! आप सौ वर्ष की उम्र में अन्तर्ध्यान हुये। कालीदह के पावन तट पर आपने देह त्यागकर नित्यलीला में प्रवेश किया। बाबा के अचिन्त्य गुण थे और भक्तिअंग याजन करते; जिसे सुनकर श्रद्धालुगण शुद्ध भक्ति लाभ करेंगे।।३८।।

आचरिले गौर पादपद्म लभ्य हय।
बाबार करूणा बिना साध्य कभु नय।।
जगदीश बाबा गुण करिया श्रवण।
'किशोरी' वन्दये ताँरे कृपार कारण।।३६।।

भावसार– आचरण करने से गौरचरणों की प्राप्त होगी। बाबा की करूणा के बिना साध्य कुछ भी नहीं है। जगदीश बाबा के गुणों को श्रवण करके मैं किशोरीदास उनकी कृपा की याचना करता हूँ।।३६।।

१३. श्रील कृष्णदास बाबाजी

जय जय नदियार चाँद विश्वम्भर।
जय जय नित्यानन्द करूणा सागर।।
जय जय श्रीअद्वैत कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
नवद्वीप धामवासी श्रीचैतन्यदास बाबा।
निरन्तर गौरसह याहार विलास।।१।।

भावसार– जय जय नवद्वीपचन्द्र विश्वम्भर! करूणासागर श्रीनित्यानन्द आपकी जय हो! कुबेरनन्दन श्रीअद्वैतचन्द्र आपकी जय हो! गदाधर श्रीवासादि भक्तवृन्द की जय हो! नवद्वीपधाम वासी श्रीचैतन्यदास बाबा जिनका गौरहरि के साथ निरन्तर विलास होता था।।१।।

ताँहार सुयोग्य शिष्य नाम कृष्णदास।
बाबा तार नाम राखे विष्णुप्रियादास।।
श्रीहट्टेते हिंगजिया पयगना नाम।
फुलतला वाजारेर सन्निकट स्थान।।
वारश पंचिश शके कार्तिकी पूर्णिमाय।
केशव नामे अवतीर्ण हइल तथाय।।२।।

भावसार– उनके सुयोग्य शिष्य थे– कृष्णदास। बाबा ने उनका नाम रखा विष्णुप्रियादास। श्रीहट्ट के हिंगजिया पयगना नाम के ग्राम में फुलतला बाजार के निकट स्थान था। सन् १२२५ शकाब्द की कार्तिक पूर्णिमा को केशव नाम से आप अवतीर्ण हुए।।२।।

आवाल्य वैष्णव धर्मेर स्वाभाविक प्रीति।
त्रिश वर्ष वयकाले नवद्वीपे गति।।
सिद्ध चैतन्यदास बाबाजी महाशय।
नदीयाय गौर चाँदेर एकान्त आश्रय।।
ताँहार पदारवृन्द लइल शरण।
दीक्षित हइया कैल आत्म निवेदन।।३।।

भावसार– बाल्यकाल से ही आपकी वैष्णव धर्म में स्वाभाविक प्रीति थी। आप ३० वर्ष की उम्र में नवद्वीप आये। सिद्ध चैतन्यदास बाबा महाशय जो धामेश्वर महाप्रभु के एकान्त आश्रित वैष्णव थे। उनके श्रीचरणों में आकर आपने शरण ली और दीक्षित होकर आत्म निवेदन किया।।३।।

धरिते वैराग्य वेश वाञ्छा प्रकाशिल।
पत्नी आछे जानि बाबा गृहे पाठाइल।।
गृहे गिया दश वर्ष करिल यापन।
पत्नी वियोगेते तेंह त्यजिल भवन।।
पदव्रजे नाना तीर्थ करये भ्रमण।
क्षेत्रपथे दीनहीन दासेर मिलन।।४।।

भावसार– और वैराग्य वेश धारण करने की इच्छा प्रकट की। उनके धर्मपत्नी थी इसलिये बाबा ने उन्हें घर भेज दिया। घर जाकर दस वर्ष वहाँ रहे। जब पत्नी परलोक सिधार गईं तो इन्होंने घर छोड़ दिया और पैदल ब्रज नाना तीर्थों में भ्रमण करने लगे। क्षेत्रपथ में दीनहीन दास के साथ

इनका मिलन हुआ।।४।।

श्रीहट्ट निवासी तेंह वैष्णव प्रधान।
वेशाश्रय दिया राखे कृष्णदास नाम।।
चौद्द वर्ष क्षेत्र धामे करिया साधन।
वृन्दावने गिया प्रेमे करेन भजन।।
भ्रमर घाट लोटन कुञ्ज करि अवस्थान।
तोताराम बाबाजी ठौरे करिल विश्राम।।५।।

भावसार– वे श्रीहट्टनिवासी प्रधान वैष्णव थे। इन्होंने इनका नाम कृष्णदास रखकर वेश दिया। चौदह वर्षों तक आपने क्षेत्रधाम में साधन किया। फिर वृन्दावन जाकर प्रेमपूर्वक भजन करने लगे। भ्रमर घाट, लोटन कुंज में रहकर तोताराम बाबाजी की ठौर में विश्राम किया।।५।।

एइभावे चव्विश वत्सर करिया यापन।
श्रीगौड़मण्डले एल दीक्षा गुरु स्थान।।
आज्ञा कैल श्रीखण्डेते करह गमन।
तथा सात वत्सर रहि करिल आगमन।।
तथा हैते नवद्वीपे कैल आगमन।
भजन कुटीर पार्श्वे रहि करये स्मरण।।६।।

भावसार– इसी भाव से चौबीस वर्ष बिताये। तब श्रीगौड़मण्डल में दीक्षा गुरु के स्थान पर आये। गुरुदेव ने आज्ञा की श्रीखण्ड गमन करो। आज्ञा पाकर आप वहाँ सात वर्ष रहे और पुनः वापिस आये। वहाँ से आपने नवद्वीप आगमन किया। बाबा के भजन कुटीर के पास में रहकर लीला स्मरण करते रहे।।६।।

सिद्ध बाबार आदेशे पुनः गेल ब्रजधाम।
तथा रञा शुने सिद्ध बाबार अन्तर्धान।।
तवे पुनः पद ब्रजे नवद्वीपे एल।

बाबार समाज सेवि जीवन यापिल।।
सिद्ध बाबार अन्तर्धाने शिष्या दुइजन।
सखी प्यारी दुहे करे समाधि सेवन।।७।।

भावसार- सिद्ध बाबा के आदेश से आप पुनः ब्रज-धाम में पधारे। वहाँ रहकर आप भजन कर रहे थे कि सिद्ध बाबा का अन्तर्ध्यान लीला सुना तो पुनः शीघ्र पदब्रज नवद्वीप आये और बाबा की समाधि की सेवा करके जीवन-यापन किया। सिद्ध बाबा के अन्तर्ध्यान के बाद दो शिष्या सखी और प्यारी समाधि की सेवा करतीं।।७।।

किछु दिन सखी माता परलोके गेल।
समाधि सेवार काजे विघ्न देखा दिल।।
तवे महाप्रभुर सेवक गोस्वामिगण।
कृष्णदासे सेवा कार्ये कैल नियोजन।।
अनुरागे कृष्णदास करये सेवन।
कतदिने प्यारी माता हैल अदर्शन।।८।।

भावसार- कुछ दिनों के बाद सखी माता परलोक सिधारीं तब समाधि की सेवा में विघ्न उपस्थित हुआ तो महाप्रभु के सेवक गोस्वामी गणों ने इन कृष्णदास को सेवा कार्य में नियोजित किया। सेवा पाकर अनुराग से कृष्णदास सेवा करने लगे। कुछ दिनों के बाद प्यारी माता का भी अन्र्ध्यान हुआ।।८।।

समस्त सेवाय भार ताँहाते पडिल।
वृद्ध वयसेते तेंह दृष्टि हीन हैल।।
तवेत गोस्वामिगण करिया चिन्तन।
पत्नी आछे जानि गृहे करिल प्रेरण।।
गृहे गिया दश वर्ष करिल यापन।
ताँर शिष्य शचीनन्दन कैल सेवार्पण।।९।।

भावसार– अब समस्त सेवा का भार इन्हीं के ऊपर पड़ गया। इनकी भी वृद्धावस्था आ गई थी और दृष्टि शक्ति नहीं रही। तब गोस्वामी गणों ने चिन्ता करके कि इनकी ध र्मपत्नी इनके घर में है इनको वहीं भेज दिया। घर जाकर आप दस वर्ष तक वहीं रहे। इधर समाधि की सेवा इन्हीं के शिष्य शचीनन्दन दास को समर्पण की।।९।।

एइभावे कत काल करिया यापन।
तेरश छव्विश सने हैल अदर्शन।।
आठई पौष तृतीया तिथिर विकास।
सिद्ध बाबार समाज ताँर सम्मुखे प्रकाश।।
गौर नाम प्रेमानन्दे करे उच्चास।
चलिल गौरांग धामे छाड़िया भुवन।।१०।।

भावसार– इसीप्रकार बहुत समय तक जीवन यापन करके सन् १३२६ में इनका अन्तर्ध्यान हुआ। आठवीं पौष मास की तृतीया तिथि को आपका जन्म हुआ था। सिद्ध बाबा का समाज आपके सम्मुख एकत्रित हुआ। तब गौरनाम में प्रेमानन्द में आप उच्च श्वास छोड़ते हुये गौरधाम में आप चले गये।।१०।।

गंगातीरे शेषकृत्य समर्पण हैल।
ताँर आज्ञा मत अस्थि आनीत हइल।।
श्रीगुरु समाधि क्षेत्रे समाहित कैल।
श्रीगुरु सहित प्रेमे लीलाय प्रवेशिल।।११।।

भावसार– गंगा के तट पर आपका अन्तिम संस्कार हुआ। उनकी आज्ञानुसार उनकी अस्थि लाई गयी और गुरुदेव के समाधि के क्षेत्र में ही समाहित की गई। श्रीगुरुदेव के सहित प्रेमलीला में आपका प्रवेश हुआ।।

एइत कहिल कृष्णदास बाबार कथन।

स्मरिले ताहार गुण विघ्न विनाशन।।
विशेष सिद्ध चैतन्य बाबार स्मरण।
'किशोरी' वांछये सदा ताँहार सेवन।।१२।।

भावसार– इसप्रकार कृष्णदास बाबा का वर्णन हुआ। जिसके गुण स्मरण से विघ्नों का नाश होता है। विशेष रूप से सिद्ध चैतन्यदास बाबा का स्मरण करते हुए मैं किशोरीदास आपकी श्रीचरण सेवा की आशा करता हूँ।।१२।।

१४. श्रील चैतन्यदास बाबाजी महाराज

विरचित पदावली

(श्रीगौरांग माधुरी पत्रिका १३३५ सन् भाद्र संख्याय मुदित)

श्रीअद्वैतप्रभु का भाव विचार

इहाते जानि ये श्रील अद्वैतेर महिमा।
श्रीचैतन्य अद्वैत रूप मदद्वैत धामा।।
सर्व सम्भवय ताँरे ये याहा करय।
राधाकृष्णेरे द्वैत रूप जानिह निश्चय।।
अद्वैतेर मानस पूर्ण करये हुंकार।
कि जानि कि हय तिंहो कि शक्ति ताहार।।१।।

भावसार– आप से ही श्रीअद्वैतप्रभु की महिमा जानी जाती है। श्रीचैतन्यचन्द्र के ही द्वितीय रूप हैं श्रीअद्वैतचन्द्र। वे जो करना चाहते वह संभव हो जाता। श्रीश्रीराधाकृष्ण के द्वैत रूप श्रीअद्वैतचन्द्र ही हैं। श्रीअद्वैत की लीला को पूर्ण रूप से समझने की शक्ति किसी में नहीं है।।१।।

सभे वले दास्य भावेर एइ हय सीमा।
केह नाहि पाय इहार अनुगत बिना।।
सखा भाव प्रभु यवे करे प्रकाशन।

नाना भंगि वले नानारन वचन।।
गौरांगेर संगे वंक रंगे नृत्य गान।
सभे वले मद् अद्वैत सख्येर प्रधान।।२।।

भावसार– सभी बोलते हैं ये दास्य भाव की सीमा है। कोई भी किसी अद्वैतचन्द्र के बिना श्रीगौरांग सेवा नहीं पा सकता है। अद्वैतचन्द्र जब सखाभाव प्रकाश करके नानाभंगी के बल से और नाना वचन चातुरी से गौरांग के संग में नृत्यगान करते सभी लोग अद्वैतचन्द्र को सख्यभाव का प्रकाश माानते।।२।।

ये काले श्रीलाद्वैत वात्सल्य प्रकाशे।
श्रीगौरांग तारे गुरु करि माने बहुल्लासे।।
श्रीअंग लालन करि गौरांगे अद्वैत।
से काले वात्सल्ये प्रधान अद्वैत।।
दिव्य भावे यार प्रभु करे प्रकटन।
अद्वैत वले मोर कान्त शचीरनन्दन।।३।।

भावसार– जिस समय श्रीअद्वैतचन्द्र वात्सल्य भाव का प्रकाश करते तब श्रीगौरांग उनको गुरुरूप में मानते। तब श्रीगौरांग के वे अंग लालन–पालन करते।

उस समय श्रीअद्वैतचन्द्र का वात्सल्य प्रधान भाव होता। दिव्य भाव जब अद्वैतचन्द्र प्रकट करते तो वे बोलते मेरे कान्त तो शचीनन्दन ही हैं।।३।।

सर्व भावे हइया प्रभु श्रीअंगे भूषित।
वहु भाति नृत्य गाय रसमय गीत।।
मृदुमन्द हासि आध बंकिम नयाने।
रसे पूर्ण हइया चाहे दुँहे संकीर्तन रंगे।
सुमधुर गान करे पार्षद भृंगे।।४।।

भावसार– सर्व भावों से श्रीअद्वैत प्रभु विभूषित होकर

बहु भाँति रसमय नित्य गान करते। मृदु मन्द हसते अर्द्ध बंकिम नयनों से निहारते, दोनों रसमय पूर्ण होकर संकीर्तन रंग में नाचते और उनके पार्षदरूपी भृंग उनको घेरकर सुमधुर गान करते।।४।।

एक काले नयनागोचर ना करय।
महाप्रभु संगे प्रभु सदा विहरय।।
एक महाप्रभु आर प्रभु दुइजन।
दुइ प्रभु सेवे महाप्रभुर चरण।।५।।

भावसार– वे एकक्षण भी अपने नयनों को गौरहरि से नहीं हटाते और सदा महाप्रभु के संग में विहार करते। एक महाप्रभु की दो प्रभु (अद्वैत एवं नित्यानन्द) सदा सेवा करते।।५।।

१. श्रील चैतन्यदास बाबाजी महाराज

विरचित श्रीगौरांग नामामृत स्तोत्र

श्रीगौरांग माधुरी पत्रिका सन् १३३५

(कार्तिक मास संख्या)

लक्ष्मी विष्णुप्रियाकान्तो वालानां मम वल्लभः।
गौरांग सुन्दरः श्रीमद् रमणेन्द्र शिरोमणिः।।१।।

लक्ष्मीप्रिया एवं विष्णुप्रिया के कान्त नदिया बालाओं के प्यारे मेरे वल्लभ गौरसुन्दर जो रसिकों में शिरोमणि हैं।।१।।

रति कौशल कान्तैको रसास्वाद विशारदः।
नवद्वीप नवो ढाणां सर्वेन्द्रिय समाश्रयः।।२।।

रतिकला में वे अत्यन्त कुशल हैं ब्रजरस एवं नदिया रस आस्वादन में सर्वकान्त विशारद हैं। नवद्वीप की सुन्दरियों के सर्वप्रकार से समाश्रय हैं।।२।।

नागरेन्द्र शिरोरत्नं रसकेलि सुपण्डितः।

वधूटीनां मनोहारी नटेन्द्रो नटिनी प्रियः।।३।।

वे नागरेन्द्रों में शिरोरत्न हैं रसमयी कलाकेलि में अति सुपण्डित हैं। नदिया वधूगणों के मन को हरण करने वाले हैं नटेन्द्र हैं एवं संगीत कला विशारदः सखियों के अतिप्रिय हैं।।३।।

वाद्य संगीत सम्बन्धा कन्तानंग कलास्पदम्।
किशोरी नाम शेषाणां कुचकुंकुमालञ्चितः।।४।।

वाद्य संगीत विशारदा कान्ताओं के कलास्पद हैं। किशोरी कन्याओं के कुच कुंकुम, चन्दनादि के आस्पद हैं।।४।।

अरूणोदयतः पूर्वं विपिने कुसुमावृते।
रमणीवेश रंगेन बाल्य भीरति लम्पटं।।५।।

अरूणोदय से पूर्व कुसुमों से आवृत वन में रमणीवेश धारी रसिकाओं के साथ रंग करने में अति लम्पट हैं।।५।।

जाह्नवी जल कल्यादौ तास्यं संग महोत्सवः।
श्रीलक्ष्मीकृत भोज्यान्न भोजनामोद वर्द्धनः।।६।।

जाह्नवी जलकेलि का तटस्थल अपने संग के सखाओं के साथ महोत्सव स्वरूप है। लक्ष्मीप्रिया कृत भोजन को पाने में आमोद वर्द्धनकारी हैं।।६।।

रंगिणी संग मोत्साही नवाह्लाद रसप्रदः।
प्रेमानन्द निधेबिन्दुः सखी नामक जीवनम्।।७।।

लक्ष्मीप्रिया एवं विष्णुप्रिया की सखीवृन्द को निज संग रूपी उत्साह व नवाह्लाद देने में रसप्रद हैं। प्रेमानन्द के निधि हैं उनकी निधि का बिन्दु प्राप्तकर भी सखियाँ अपना आनन्दमय जीवन धारण करती हैं।।७।।

सौन्दर्यामृत लावण्य साराकारं परात्परः।

मोहिना मोहना कारानन्ता नंगेश्वरेश्वरः।।८।।

सौन्दर्यामृत लावण्य के परात्पर साराकार रसमय मूर्ति हैं। अपने मदनमोहन रूप से मोहिनी नदिया की सखियों को अनन्त रूप से मोहने में सर्व समर्थ ईश्वर हैं।

अति धीर ललितेन्द्रो वाल्यस्यब्ज मधुव्रतः।
सुन्दरी नाम संख्यानां प्राण रक्षादि कारणम्।।९।।

अति धीर और ललित भाव में सदा विचरणकारी मधुव्रत हैं। असंख्य नदिया की सुन्दरियों की अपनी रूप-माधुरी से प्राण रक्षा करने वाले हैं।।९।।

इत्यैवं प्राणवध्यैः श्रीगौरांगस्य महात्मनः।
आनन्द विग्रहस्यैतत् सप्तविंशति नामकम्।।१०।।

ये प्राण हरणकारी श्रीगौरांगहरि के आनन्द विग्रह के सत्ताईस मंगलकारी नित्य पठनीय नाम हैं।।१०।।

।।इति श्रीमच्चैतन्य दास्याः श्रीमुखेन्द्रोविनिः सुतः रसिकेन्द्र शिरोन्मणे गौरांगस्य सप्तविंशति नामामृत स्तोत्रः सम्पूर्ण।।

२. श्रील चैतन्यदास बाबाजी विरचित

श्रीगौरांग प्रत्यंग वर्णन

धन्य धन्य धन्य धन्य, श्रीकृष्ण चैतन्य,
रूप कोटि कोटि जिनि काम।
देखिया केशेर ठाम, प्रफुल्लित मन प्राण,
बद्ध नव कुसुम सुगम।।१।।

अहो! धन्य-धन्य श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु की कोटि काम विनिन्दित रूपमाधुरी की जय हो। उनके केशकलापों की शोभा देखकर सखियों के मन, प्राण प्रफुल्लित हो उठते हैं। उनके केश नव कुसुमों से सुसज्जित हैं।।१।।

ललित मूरति रसाधार।
देखिया रंगिनीर सार, रस रतिर आकार,
हृदे उठे अनंग पाथार।।२।।

नदिया की सुन्दरियों के तो वे ललित मूरति रूप रसा-धार हैं। उनके रूपमाधुरी की छटा देखकर गौरांग प्रेयसियों के हृदय में अनंग की तरंग उठ रही है।।२।।

श्रीवदनेर शोभा देखि, अमलचाँद लक्ष कोटि,
कान्दे गौरार पदनखे पड़ि।।३।।

उनके श्रीमुखमण्डल की शोभा को निहारकर कोटि-कोटि चन्द्रमा भी श्रीगौरचन्द्र के चरणकमलों के नख में गिरकर क्रन्दन कर रहे हैं।।३।।

चञ्चल नयन देखि, नट सार खञ्जन पाखि,
पलायल लाजे मुख मोड़ि।
देखि गुरु नासाठाम, दूरे पलायल काम,
फूल धनुवान फेलाइया।।४।।

उनके चंचल नयनों की मधुरिमा को देखकर नटों में सार खंजन पक्षी भी मुख मोड़कर शरमाकर दूर चले गये हैं और उनकी सुन्दर नासिका को देखकर कामदेव भी अपने धनुष-बाण फैंककर दूर भाग गये हैं।।४।।

किवा से गण्डेर शोभा, युवतीर मन लोभा,
विगदधार जर जर हिया।।५।।

आहा! उनके गण्डदेश की शोभा देखकर युवतियों का मन लोभायमान होकर हृदय विदग्ध हो रहा है।।५।।

श्री अधर सुविमल, सुराता सुकोमल,
मृदु हासि सुचन्द्र किरण।
ताहे मृदु आधवानी, पिरीति हिल्लोल जिनि,

देखि वाउलिनी सभागण।।६।।

उनके श्रीअधर अति सुविमल सखियों को सुन्दर रति दान करने वाले हैं और उनकी मृदु हँसी सुचन्द्र किरण ही है और उस पर मृदु मन्द आधी वाणी सुनकर गौरप्रेम में पागलनियों की सभा में प्रीती की लहर को बढ़ा रही है।।६।।

पिरीति सागर छामि, रसेर हिल्लोल आमि,
ताहे छानि असंख्य अनंग।
सुउज्ज्वल रस ताय, दिया कोन विधातार,
पडियाछे नवीन गौरांग।।७।।

प्रेम के सागर को छानकर उसमें रस की हिल्लोर को मिलाकर जिसमें असंख्य अनंग को छानकर उस उज्ज्वल रस को विधाता ने गौरांग नाम देकर पृथ्वी पर भेजा।।७।।

सुरंग से आनि, माजियाछे गा खानि,
विनोद छानिया कैल बुक।
देखि चतुरानी रमन, विदग्धार शिरोभूषण,
अंग विलसिनी मन सुख।।८।।

पुनः सुरंग लाकर उनके श्रीअंगों में मज्जन करके विनोद को छानकर हृदय देश में स्थापित किया। जिसे देखकर चतुर रमणियों ने उस विदग्ध शिरोभूषण गौरांग अंग संग के विलास की आशा में मन में सुख पाया है।।८।।

ओ नव कुसुम माल, वक्षोपरि शोभे भाल,
चन्दने चर्चित किवा ताय।
भुजसार स्वर्णार्गल, राता पद्म करतल,
उदर सुकोमल तुंग हय।।९।।

उस पर नव-नवायमान कुसुमों की माला उनके सुन्दर वक्षस्थल की शोभा का बढ़ा रही है। उस पर भी चन्दन से

चर्चित शोभा का ही स्वरूप है। भुजायें तो मानों स्वर्ण के अर्गल ही हैं और श्रीपद और करतल लाल हैं और उनका उदर सुकोमल तुंग है।।९।।

किवा मध्ये क्षीण अति, त्रिवलि बन्धन कटि,
नितम्ब रंगिणी चित्त क्षोभे।
शुक्ल वास परिधान, किवा काँचनिर मान,
चलिते सतीर चित लोभे।।१०।।

उनका कटि देश अति क्षीण और त्रिवलि बन्धन से बंधा हुआ नितम्ब रंगिणियों के चित्त को क्षुभित कर रहा है। उनका शुक्ल वास परिधान कांचन वर्णा का मन मार्दन कर रहा है और उनके चलने से सतियों का चित्त लुब्ध हो रहा है।।१०।।

ऊरु युग्म अति चारू, जिनि वाम रम्भा तरू,
पूर्व अनुक्रमे स्थूल रूप।
जंघा दुटि मनोहर, नारी चित्त करिवर,
बन्धेर आलाप स्वरूप।।११।।

उनका उरु देश युगल अति सुन्दर है। केले के थोड को भी लज्जा रहा है। उनकी जंघा युगल अति मनोहर है। जो नारियों के चित्तरूपी हस्ती को बन्धन करने में आलाप स्वरूप है।।११।।

नख रञ्जित पद, धरणीर सुसम्पद,
रमणीर सरस पराण।
श्रीचैतन्यदासीर वले, मोर मन ए पदतले,
अकिंचन ताहे परमान।।१२।।

उनके पदनख की लालिता पृथ्वी की सुसम्पद है। जो रमणियों के सरस प्राणस्वरूप है। चैतन्यदास प्रार्थना करते

हैं– मेरा मन उनके पदतल में अकिंचन के धन की लालसा के समान रमता रहे।।१२।।

१४. श्रील रामहरिदास बाबाजी महाराज

नवद्वीप

जय जय विष्णुप्रिया नाथ गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द शेष नामधारी।।
जय जय सीतानाथ लाभार नन्दन।
जय जय गदाधर वासादि गण।।
श्रीखण्डवासी राधिका विलास ठाकुर।
ताँर शिष्य रामहरि महिमा प्रचुर।।१।।

भावसार– हे विष्णुप्रिया नाथ आपकी जय हो! शेषनामधारी नित्यानन्द प्रभु आपकी जय हो! श्रीलाभानन्दन श्रीसीतानाथ प्रभु आपकी जय हो! श्रीगदाधर श्रीवासादि गौर के प्यारे पार्षदगणों की जय हो! श्रीखण्डवासी राधिकाविलास ठाकुर उनके शिष्य हुए रामहरिदास बाबा जिनकी बड़ी महिमा थी।।१।।

जगन्नाथ पाशे वेशाश्रय कैल।
अचिन्त्य महिमा ताँर भुवने व्यापिल।।
श्रीगौड़ मण्डले ख्यात धाम शान्तिपुर।
सीतानाथेर लीलास्थली महिमा प्रचुर।।
वारशत चौयान्न साले सेइ शान्तिपुर।
जन्मि रामहरि बाबा गौर पद स्मरे।।२।।

भावसार– जिन्होंने जगन्नाथ बाबा से वेश ग्रहण किया। जिसके कारण उनकी महिमा संपूर्ण जगत् में व्याप्त हो गई। गौड़मण्डल में विख्यात धाम श्रीशांतिपुर जो सीतानाथ प्रभु की लीलास्थली है। जो अत्यन्त रमणीक स्थान है। सन्

१२५४ में आपका जन्म शान्तिपुर धाम में हुआ। जन्म लेकर आप गौरपद स्मरण करने लगे।।२।।

बाल्यावधि धर्मे ताँर छिल अनुगति।
संकीर्तन शुनिलेइ हैत वड़ प्रीति।।
संकीर्तन ध्वनि यथा करित श्रवण।
सेईकाले सेईस्थाने करित गमन।।
ज्ञानोन्मेष हैले दिव्यभाव उपजिल।
विधिबद्ध भक्ति अंग याजन आरम्भिल।।३।।

भावसार– बाल्यावधि में ही आपने संकीर्तन सुनते ही मुस्कराते थे। जहाँ से संकीर्तन ध्वनि आती वहाँ पर धीरे–धीरे चले जाते थे। कुछ बड़े होने पर आपमें दिव्य–भाव हुआ। आप विधिपूर्वक भंग के अंग याजन करने लगे।।३।।

भाव हेरि पिता माता विचलित मन।
विवाह दिलेन तार करिया यतन।।
किन्तु संसारे तार आसक्ति नहिल।
सदा हरि अनुरागे विभोर रहिल।।
एकदिन समीपस्थ सजिना वृक्षेते।
नृत्यरत कृष्णमूर्ति देखिलेन ताये।।४।।

भावसार– आपका भाव देखकर माता–पिता विचलित मन हो उठे एवं उन्होंने विवाह की सोची। किन्तु इनकी संसार में आसक्ति न थी। ये तो सदा हरिनाम के अनुराग में विभोर रहते थे। एकदिन साजना वृक्ष के पास नृत्य करते हुये श्रीकृष्ण के दर्शन किये।।४।

कृष्ण अनुरागे तार प्रबल हइल।
उन्मत्तवत् इतस्ततः छुटिते लागिल।।
पिता माता यत्न करि आनिल धरिया।
काटिते संसार फाँस चित्ते निज हिया।।

लभिते वैष्णव कृपा उत्कण्ठित मन।
गृह छाड़ि नवद्वीपे कैल आगमन।।५।।

भावसार– उसी समय उनका कृष्ण अनुराग प्रबल हो उठा और वे उन्मत्त की तरह इधर–उधर दौड़ने लगे। माता–पिता प्रयत्नपूर्वक उन्हें घर ले आये। संसार बन्धन को काटने के लिये और वैष्णव कृपा प्राप्ति के लिये आप घर छोड़कर नवद्वीप धाम को आये।।५।।

सिद्ध जगन्नाथ बाबार चरणे पड़िल।
आत्म निवेदन करि कान्दिते लागिल।।
उत्कण्ठा हेरिया बाबा हैल सुख मन।
दीक्षा देखाइल तारे करिया यतन।।
श्रीराधिका विलास ठाकुर महाशय।
से काले भजन कुटीरे अवस्थान करय।।६।।

भावसार– आप धाम आकर सीधे सिद्ध बाबा के चरण दर्शन करते ही चरणों में आत्मनिवेदन करके रोने लगे। सिद्ध बाबा ने इनकी उत्कण्ठा देखकर बहुत सुख पाया एवं दीक्षा गुरु के रूप में राधिकाविलास ठाकुर महाशय की भजन–कुटी को भेजे।।६।।

ताँर स्थाने दीक्षा दिया निजे भेक दिल।
रामहरिदास नाम अर्पण करिल।।
आत्मीय स्वजन ताँर निकटेते रय।
ताँदेर उत्पाते सदा भजन विघ्न हय।।
ताइ वृन्दावने तेंह करिल गमन।
कठोर भजन करे छाड़ि अन्य मन।।७।।

भावसार– उनसे दीक्षा दिलाकर स्वयं वेश दिया। आपका दीक्षित नाम रामहरिदास रखा। आपके परिवार के लोग पास में ही रहते जिससे वे बार–बार आकर आपके

भजन में विघ्न करते; इसीलिये आप वृन्दावन को चले गये। यहाँ आपने अनन्य मन होकर कठोर भजन किया।।७।।

राधाकुण्डे रञा वार वर्ष काटाइल।
परे केशीघाट ठौरे अवस्थान कैल।।
वंशीवटे कालाबाबूर कुञ्जेते रहिल।
दिवस सर्वरी भजन आवेशे काटाल।।
सकलेर प्रतिसम भालवासा छिल।
गौरांग चरणे क्रमे रति उपजिल।।८।।

भावसार– राधाकुण्ड में रहकर आपने बारह वर्ष बिताये फिर बाद में आप केशीघाट मथुरा में रहने लगे। पश्चात् वंशीवट वृन्दावन में आप कालाबाबू के कुंज में रहे। आपने रात-दिन कठोर भजन में बिताये। आपका सबके प्रति प्रीतिभाव था इससे श्रीगौरांग चरणों में आपकी रति उपजी।।८।।

गौर कथा श्रवणेते पुलकित मन।
भावावेशे मृदुस्वरे वलये तखन।।
वडदिदि वलि मोरे डाकिवे सकले।
भक्तगण डाकिलेइ हय कुतूहले।।
भावेर आवेशे सदा करे विचरण।
अपूर्व बाबार प्रेम विचित्र घटन।।९।।

भावसार– जिससे श्रीगौरांग कथा श्रवण करते ही आपका मन पुलकित हो उठता। भावावेश एवं मृदु स्वर में आप सबसे बोलते मुझे बड़ी दीदी करके बुलाना। भक्तगण इस नाम से पुकारते आपको बड़ा आनन्द होता। आप भाव के आवेश में सदा ही विचरण करते यह बाबा की अपूर्व प्रेम की विचित्र कहानी थी।।९।।

गौर परिकर गुण करिते कीर्तन।

सात्विक विकार देहे प्रकाश तखन।।
चैतन्यमंगल गान बड़ प्रिय छिल।
लोचन दासेर धामालीते प्रीति हैल।।
धामाली पड़िते शिष्यगणे आज्ञा दिल।
प्रत्येके एक एक ग्रंथ अर्पण करिल।।१०।।

भावसार- आप जब गौरांग परिकरों की गुण-कीर्त्तन करते तब आपके देह में सात्त्विक-विकार प्रकाश हो उठते। आपको श्रीचैतन्यमंगल ग्रंथ का पाठ बहुत प्रिय था और लोचनदास ठाकुर की धामाली ग्रंथ में बड़ी प्रीति थी। अतः धामाली ग्रंथ को पाठ करने के लिये अपने एक शिष्य को आज्ञा की एवं एक-एक ग्रंथ अपने शिष्यों को अर्पण किया।।१०।।

चैतन्यमंगल गीत करिया कीर्तन।
गौरांगेर रसलीला करित वर्णन।।
नाम संकीर्तने ताँर अधिक प्रीति छिल।
गीत व्याख्या शुनि ताँर सकले मोहिल।।
हृदरोग कारणे ताँर निषेध कीर्तन।
तथापि कीर्तन शुनि करित गमन।।११।।

भावसार- आप श्रीचैतन्यमंगल गीत कीर्तन करके श्रीगौरांग की रसलीला वर्णन करते। गीत की व्याख्या सुनकर सभी मोहित हो उठते। यद्यपि आपको हृदय रोग के कारण संकीर्तन निषेध था फिर भी आप कीर्तन में जाते।।११।।

लम्फ दिया संकीर्तने झाँपाइया पड़ित।
भावेते विभोर हञा कीर्तन करित।।
नरहरि नामे ताँर आछिल आवेश।
गौर नाम शुनिलेइ हय भावावेश।।
कार मुखे गौरनामेर करिले श्रवण।
भावेर आवेशे तारे दित आलिंगन।।१२।।

भावसार– संकीर्तन में पहुँचते ही आप कूद पड़ते और भाव विभोर होकर कीर्तन करने लगते। नरहरि नाम में इनका आवेश था। गौरहरि नाम सुनकर ये भावाविष्ट हो उठते। किसी के मुख से गौरनाम श्रवण करते तो उसको भाव के आवेश में आलिंगन करते।।१२।।

शिष्यगणे कराय सदा स्वरूप चिन्तन।
किरूप हइल स्फूर्ति करित श्रवण।।
निज स्वरूप अनुभूति हइवे यखन।
गौरांगेर सेवा लाभ हय त तखन।।
नदिया हइते केह याय वृन्दावन।
आदरे जिज्ञासे तवे नदीया कथन।।१३।।

भावसार– शिष्यगणों को आप सदैव उनका स्वरूप चिन्तन कराते। किस प्रकार स्वरूप की स्फूर्ति होगी? निज स्वरूप की जब अनुभूति होगी तो श्रीगौरांग की सेवा लाभ हो जायेगी। नदिया से कोई वृन्दावन आता तो आप आदर पूर्वक नवद्वीप का संवाद पूछते।।१३।।

नवद्वीपेश्वर प्राणनाथ गौरहरि।
ताँर दास दासीर कुशल कह कृपाकरि।।
यदि कहे तोमा लागि सवे उत्कण्ठित।
भावेते विभोर बाबा संज्ञाहीन चित।।
गौड़ हते केह यदि करये गमन।
एरूप सन्देश तारे जिज्ञासे तखन।।१४।।

भावसार– वे पूछते नवद्वीपेश्वर प्राणनाथ श्रीगौरहरि और उनके दास–दासियों का कुशल संवाद कृपा करके कहो। यदि वे कहते सब तुम्हारे लिये उत्कण्ठित हैं तो बाबा भाव में विभोर होकर अचेतन अवस्था में हो जाते। कोई भी गौड़देश से आता इसी प्रकार वे उनसे पूछते।।१४।।

तेंह अनुकूल उत्तर दिवारे नारिल।
तवे ताँर प्रति बाबा कहिते लागिल।।
निताई गौर सीतानाथेर करिया दर्शन।
करिवे वैष्णव संग करि दृढ़ मन।।
गौर नाम सुधारस सदाई कीर्तन।
भावे ढुलि ढुलि सदा करे विचरण।।१५।।

भावसार– यदि वे अनुकूल उत्तर नहीं दे पाते तो बाबा उनसे कहते निताई–गौर–सीतानाथ के दर्शन करके दृढ़ मन से गौरनाम सुधारस सदा कीर्तन करते। वे भाव में झूमते हुए सदा विचरण करते।।१५।।

आश्रम होते स्थानान्तरे करिल गमन।
राई जय राधे राधे करे उच्चारण।।
भावेर आवेशे तेंह करये गमन।
मध्ये मध्ये एइ गान करित कीर्तन।।
राई अंगेर छटा लेगे श्याम हलो गौरा।
गाइया आपन भावे प्रेमेते विभोरा।।१६।।

भावसार– आप आश्रम से अन्य स्थान को गमन किये और राधे जय राधे उच्चारण करते हुए इसप्रकार भाव में जाते, मध्य–मध्य में कोई और गान–कीर्तन भी करते।।१६।।

राधा अंग छटा लगी श्याम हुए गौर।
यों मधुर निजभाव प्रेम में होते भोर।।

वनमाली बाहादुर यवे करे कुण्डे वास।
लाला बाबूर कुटीरे ताँर सेकाले निवास।।
राधाविनोदेर प्रसाद करित ग्रहण।
अम्ल डाल अंगुले तुलि करत नर्तन।।
गौर गौर वलि तेंह करित कीर्तन।
बाबार प्रेमेर चेष्टा अद्भुत कथन।।१७।।

भावसार– वनमाली बहादुर जब राधाकुण्ड निवास कर रहे थे। उस समय वे लालाबाबू की कुटीर में निवास करते थे और श्रीराधाविनोदजी में महाप्रसाद ग्रहण करते। आम की डाल उँगली पर उठाकर आप नर्तन करते और गौर–गौर बोलकर कीर्तन करते। बाबा के प्रेम की अद्‌भुत चेष्टायें थीं।।१७।।

कतकाल एइ भावे करिया यापन।
तेरशत चौद्‌द समे हन अदर्शन।।
भाद्री शुक्ला चतुर्थी दिने वेला एक प्रहर।
शिष्यगणे कहे बाबा आनन्द अन्तर।।
श्रीवास अंगने गौर सह परिकर।
नाचितेछे विलासिनीर भावेते विभोर।।१८।।

भावसार– बहुत समय इसीप्रकार यापन करके सन् १३१४ में आप अप्रकट हुये। उस दिन भाद्रमास की शुक्ला चतुर्थी का दिन था दिन के १ बजे थे शिष्यगणों को बाबा ने अन्तर में आनन्दपूर्वक कहा कि श्रीगौरहरि श्रीवास आंगन में सह परिकर विलासिनीर भाव में विभोर होकर नाच रहे हैं।।१८।।

शीघ्र स्नान तिलकादि कराह आमारे।
तथाय याइते हवे शीघ्रगति मोरे।।
स्नान तिलकादि यदि हैल समापन।
नयन मुद्रित बाबा करिल तखन।।
ध्याने वसि स्वाभीष्ट वस्तु प्राप्त हैल।
एइभावे सिद्ध बाबा अन्तर्धान कैल।।१९।।

भावसार– मुझे शीघ्र स्नान कराके तिलक कराओ। मुझे जल्दी ही वहाँ जाना होगा। स्नान तिलक जब पूर्ण हुआ तब बाबा ने नयन मूँदे और ध्यान मुद्रा में बैठकर इस कलिकाल में सभी जीवों के प्रदक्रा स्वाभीष्ट वस्तु की साधना

पूर्ण करके सिद्ध बाबा अन्तर्ध्यान हो गये।।१६।।

रामहरि बाबार प्रेम विचित्र घटन।
शुनिले गौरांगे रति लभे सुधीजन।।
रामहरि बाबा पदे एकान्त स्मरण।
'किशोरी' वाञ्छये सदा गौरांग सेवन।।२०।।

भावसार– रामहरि बाबा के प्रेम की विचित्र महिमा थी। सुनते ही गौरांग के चरणों में रति लाभ होती है। रामहरि बाबा के श्रीपद में एकान्त स्मरण करके मैं किशोरी सदा गौरांग सेवा की कामना करता हूँ।।२०।।

१७. सिद्ध श्रील जगन्नाथदास बाबाजी

नवद्वीप–वृन्दावन

जय जय शचीसुत प्रभु गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द सर्व तापहारी।।
जय जय श्रीअद्वैत कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
प्रभु नित्यानन्द शाखा वृन्दावने वास।
श्रृंगार वट गोसाँई भुवने प्रकाश।।१।।

भावसार– श्रीशचीनन्दन गौरहरि की जय हो! सर्व दुःख एवं तापहारी नित्यानन्द प्रभु की जय हो! कुबेरनन्दन श्रीअद्वैताचार्य की जय हो! श्रीगदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द की जय हो! प्रभु नित्यानन्द की शाखा में वृन्दावन में वास किया। श्रृंगारवट में गुसाईं जी के नाम से उनकी विशेष ख्याति हुई।।१।।

सेई शाखार बाँकुडाय एक शाखा रय।
पुरुलिया पाट वलि सर्वत्र घोषय।।

सेई पाटेर गोसाँई जगदानन्द नाम।
ताँर शिष्य जगन्नाथ सर्वगुण धाम।।
सूर्यकुण्डवासी श्रीमधुसूदन दास।
भेकाश्रय कैल तथा गिया ताहार सकाश।।२।।

भावसार– उसी शाखा की बाँकुड़ा में एक शाखा है। जिसे पुरुलिया पाट बोलकर ही सर्वत्र घोषणा होती है। उनके शिष्य जगन्नाथ सर्वगुणों की खान थे। सूर्यकुण्डवासी श्रीमधुसूदन दास इन्होंने इनसे वेश लिया था।।२।।

सिद्ध बाबा यवे कैल सूर्यकुण्डे वास।
बाबारे पाइया ब्रजवासीर उल्लास।।
बिहारीदासजी सदा करये सेवन।
यखन ये करे आज्ञा करये पालन।।
बाबार निवास लागि ब्रजवासीगण।
एक पाका मन्दिर घर करिल गठन।।३।।

भावसार– सिद्ध बाबा जब सूर्यकुण्ड में वास कर रहे थे। बाबा को पाकर ब्रजवासियों का बड़ा आनन्द था। बिहारीदासजी सदा बाबा की सेवा करते जब बाबा जो आज्ञा करते वही पालन करते। बाबा के निवास के लिये ब्रजवासियों ने एक पक्का मन्दिर घर निर्माण किया।।३।।

मन्दिर हेरिया बाबा पुलकित मन।
बिहारीरे कहे कर विग्रह आनयन।।
विग्रह आनिते बिहारी उद्‌योग करिल।
कटोयार चारि क्रोश दूरेते पौंछिल।।
सोना रूद्‌दि ग्रामे एक भाँति जमिदार।
तार स्थान गिया कहे निज समाचार।।४।।

भावसार– मन्दिर देखकर बाबा पुलकित मन हो उठे। बिहारी को बोला कि विग्रह ले आओ। विग्रह लाने के लिये

चेष्टा प्रारम्भ की। कटुवा से चार कोस दूर पहुँचे। सोना रुद्दि ग्राम में एक जमींदार था उसके स्थान पर लाकर अपना समाचार कहा।।४।।

दाईहाट होते तेंह विग्रह आनाइल।
बिहारी लइया तारे गमन करिल।।
नौका योगे कलिकाताय कैल आगमन।
बहु अर्थ भिक्षा कैल विग्रह कारण।।
अर्थ श्रीविग्रह लैया सूर्यकुण्डे एल।
निताई गौर हेरि बाबा मोहित हइल।।५।।

भावसार– उसने दाईघाट से विग्रह मंगवाया। बिहारीजी उसे लेकर आया। नौका से कलकत्ता ले आये और बहुत अर्थ ठाकुर सेवा के लिये भिक्षा की। अर्थ और श्रीविग्रह लाकर सूर्यकुण्ड में आये। निताईगौर के दर्शन करके सिद्ध बाबा अति मोहित हो उठे।।५।।

नूतन मन्दिरे दोंहाय करिल स्थापन।
सुवर्णेर मूर्ति प्राय विचित्र गठन।।
सूर्यकुण्डे राधाकुण्डेर श्रीवैष्णवगण।
महोत्सवे आसि कैल प्रसाद ग्रहण।।
स्वर्णकान्ति ठाकुर हेरि सवे सुखमन।
एकदल डाकात दैवे कैल आगमन।।६।।

भावसार– और नवीन मन्दिर में दोनों को स्थापित किया। स्वर्ण की मूर्त्ति के समान उनका विचित्र गठन था। सूर्यकुण्ड और राधाकुण्ड के वैष्णवगण महोत्सव में आकर महाप्रसाद ग्रहण किये। स्वर्णकान्ति के ठाकुर के दर्शनकर सभी वैष्णवजन बड़े सुखी हुये। दैवयोग से एक डकैतों का दल वहाँ आया।।६।।

विग्रह हेरिते सवे आगमन कैल।

बाबार समीपे गेल कहिते लागिल।।
ठाकुर घरे याओ मोर पाशे किछुनाई।
शुनिया डाकात दल चलये तथाई।।
मन्दिरेर कपाट भांगि भितरे पशिल।
ठाकुरेर द्रव्य यत कम्वले बान्धिल।।७।।

भावसार– श्रीविग्रह देखने के लिये सभी आये और बाबा के पास जाकर कहने लगे। बाबा ने कहा ठाकुर घर में जाओ मेरे पास कुछ नहीं है। यह सुनकर डकैतों का दल वहाँ आया और मन्दिर का कपाट तोड़कर भीतर प्रवेश किया और ठाकुर की जितनी सामग्री थी सब कम्बल में बाँध ली।।७।।

वाहिर हइते मस्तक चौकाठे ठेकिल।
ठाकुर सहित डाकात भितरे पड़िल।।
भोर हेरि अन्य डाकात कैल पलायन।
ठाकुर छाड़ि अन्य द्रव्य करिया ग्रहण।।
प्रति बाबा बिहारीरे वलेन वचन।
वृन्दावने ठाकुर कारे करह अर्पण।।८।।

भावसार– बाहर निकलते समय उनका मस्तक चौखट में लग गया। ठाकुरजी के साथ डकैत भीतर गिर पड़ा। भोर हुआ देखकर अन्य डकैत भाग गये। ठाकुर छोड़कर अन्य द्रव्य ग्रहण करके सिद्ध बाबा बिहारी को बोले– वृन्दावन में ठाकुर किसी को दे आओ।।८।।

बिहारी ठाकुर लञा वृन्दावने एल।
गयेसपुर माँ गोसाँई के समर्पिल।।
दुइ सहस्त्र मुद्रा सह करिल अर्पण।
अद्यावधि वृन्दावने ताहार दर्शन।।
गोपाल वागेर धोपा पाड़ाय विराजित।
सोनार गौरांग वलि सर्वत्र विदित।।९।।

भावसार– बिहारी ठाकुरजी को लेकर वृन्दावन में आये। गयेसपुर की माता गोसाईं को समर्पित किया। दो सौ मुद्रा के साथ उन्हें अर्पण किया। आज भी वृन्दावन में इनका दर्शन होता है। ये गोपाल बाग के धोपा पाड़ा में विराजित हैं। सोनार गौरांग के नाम से सर्वत्र विख्यात हैं।।९।।

ठाकुर अर्पिया बिहारी बाबा पाशे एल।
कतदिने बाबा तवे कहिते लागिल।।
ठाकुर विहीने मोय मन उचाटन।
येमते पारह ठाकुर कर आनयन।।
शुनिया बिहारीदास राधाकुण्डे एल।
दिनु बाबाजीर सह मिलन करिल।।१०।।

भावसार– ठाकुर समर्पित करके बिहारी बाबा के पास आये। कुछ दिनों के बाद बाबा कहने लगे– ठाकुर बिना मेरा मन उच्चाटन हो रहा है। जैसे भी करो सको ठाकुर को ले आओ। आज्ञा पाकर बिहारीदास श्रीराधाकुण्ड में आये और दीनू बाबा के पास आकर मिले।।१०।।

मणिपुरी वैष्णव तेंह मथुराते वास।
षड्भुज महाप्रभु तेंह ताँर पाश।।
पूर्वे गरूर खावार भूसिते लुकाल।
ताँरे लञा वृन्दावने आगमन कैल।।
दिनु बाबाजी के कहि अंगराग कैल।
सेवाद्रव्य लञा सूर्यकुण्डेते आसिल।।११।।

भावसार– ये बाबा मणिपुरी के वैष्णव थे और मथुरा में वास करते। उनके पास षड्भुज महाप्रभु थे जिन्हें उन्होंने पहले गाय के भूसा में छिपा रखा था। उनको लेकर वृन्दावन आये। दीनू बाबाजी को कहकर अंगराग किया और सेवा द्रव्य लेकर सूर्यकुण्ड में पधारे।।११।।

स्थापन करिया प्रेमे करये सेवन।
हेनमते दश वर्ष करिल यापन।।
तवे बाबा बिहारी के वलेन वचन।
ठाकुर वृन्दावने कारे करह अर्पण।।
गौर पदे यदि मोर एदेह पड़य।
ते कारणे नवद्वीपे चलिव निश्चय।।१२।।

भावसार– स्थापन करके प्रेमपूर्वक सेवन करने लगे। इसप्रकार दस वर्ष व्यतीत किये। तब बाबा बिहारी को बोले– वृन्दावन जाकर ठाकुर किसी को अर्पण कर आओ। गौरचरणों में यदि मेरा यह देह पड़ जाये इसीलिये नवद्वीप निश्चय ही जाऊँगा।।१२।।

तवेत बिहारीदास वृन्दावने एल।
पूर्वोक्त मा गोसाँइर स्थानेते कहिल।।
पँचिश टाका भिक्षा लञा करिल गमन।
गोपाल गुरु मठे आसि करे निवेदन।।
मठाधीश नरोत्तम दासेरे कहिल।
टाका सह श्रीविग्रह ताँरे समर्पिल।।१३।।

भावसार– तब बिहारीदास वृन्दावन आये। पूर्वोक्त माँ गोसाईं से सब विवरण बोले और पच्चीस रुपये भिक्षा लेकर आये। गोपाल गुरु मठ में आकर निवेदन किये। मठाधीश नरोत्तमदास को रुपयों के सहित श्रीविग्रह समर्पित किया।।१३।।

निधुवन गली ते अद्यापि सेवा रय।
अद्‌भुत चरित्र बाबार भुवने घोषय।।
बाबाके लइया स्कन्धे बिहारी सुखमन।
नदीयार पथे तवे करये गमन।।
सूर्यकुण्ड होते मथुरा जंशने एल।
बिना टिकिटे नवद्वीप पथे यात्रा कैल।।१४।।

भावसार– निधुवन गली में आज भी उस ठाकुर की सेवा होती है। इसप्रकार बाबा के अद्‌भुत चरित्र थे। बाबा को स्कन्ध पर लेकर बिहारी सुखपूर्वक नदिया के रास्ते पर चले। सूर्यकुण्ड होते हुए मथुरा जंक्शन आये बिना टिकट नवद्वीप पथ में आपने यात्रा की।।१४।।

निर्विघ्ने वर्द्धमाने करिल आगमन।
मेमारि स्टेशने नामि करये गमन।।
जनैक साहेव हात धरि पार कैल।
फाटक पाइया बाबा गमन करिल।।
नेपाल बाबूर आखड़ाय विश्राम करिया।
कालनाय पौंछिल गरुड गाड़िते चापिया।।१५।।

भावसार– निर्विघ्न वर्द्धमान में आये और मेमारि स्टेशन पर उतरकर चलने लगे तो स्टेशन मास्टर ने सम्मान पूर्वक हाथ पकड़कर उनको बाहर किया। फाटक पहुँचकर बाबा गमन किये और नेपाल बाबू के अखाड़े में जाकर विश्राम किये। कालना में पहुँचकर बैलगाड़ी पर चढ़कर पहुँचे।।१५।।

कालनाय वैसे भगवान दास महाशय।
अद्‌भुत महिमा यार सर्वत्र घोषय।।
दोंहार मिलने दोंहे आविष्ट हइल।
अपूर्व प्रेमेर वन्या उथलित हैल।।
भगवान बाबा विष्णुदासे वलेन वचन।
सेवार योगाड़ कर बन्धु आगमन।।१६।।

भावसार– कालना में सिद्ध भगवानदास बाबा रहते थे। उनकी सर्वत्र बड़ी महिमा थी। दोनों मिलकर आविष्ट हो गये। अपूर्व प्रेम की वन्या उछल पड़ी। भगवानदास बाबा विष्णुदास को बोले– रसोई का इंतजाम करो मेरा बन्धु आया है।।१६।।

दोंहा आलिंगिया दोंहे करये रोदन।
भूमे गड़ागड़ि याय प्रेमे अचेतन।।
दोंहा गुणे दुहुजन पुलके मगन।
हेरि भाग्यवान जन आनन्दित मन।।
दशटा हइते रात्रि एगरटा हइल।
परस्पर आलिंगने आविष्ट रहिल।।१७।।

भावसार– दोनों एक दूसरे को आलिंगन करके रोने लगे। भूमि में लोट-पोट होकर प्रेम में अचेतन हो गये। दोनों के गुणों से दोनों पुलकायमान हो उठे। यह देखकर भाग्यवान् जन आनन्दित हुये। प्रातःकाल दस बजे से रात्रि के ग्यारह बज गये इसी प्रकार परस्पर आलिंगन में आविष्ट रहे।।१७।।

तिन दिन विहारीर नाहिक भोजन।
शुनि विष्णुदास तवे वलेन वचन।।
उपाय करह भाई चेतन कारण।
शुनिया बिहारीदास करिल चिन्तन।।
वुके जड़ाइया बाबार बुके हस्त दिल।
मालिश करितेई कतक्षणे बाह्य हैल।।१८।।

भावसार– तीन दिन तक बिहारी भोजन की व्यवस्था नहीं कर पाये। सुनकर विष्णुदास तब बोले– भाई! बाबा को चेतन कराने का उपाय करो। सुनकर बिहारीदास चिन्ता करके बाबा के हृदय पर हाथ रखा और मालिश करते ही बाबा को बाह्य चेतना आ गई।।१८।।

बिहारी रे सम्बोधि बाबा वलेन वचन।
आसिया तुमि कि किछु करेछ भोजन।।
तेंह कहे आपनादेर ना हैल भोजन।
केमने करिव मुइं अग्रेते ग्रहण।।
एगारटा वाजे शुनि वलये वचन।

'दूरह वेटा' संध्या मात्र हइल एखन।।१६।।

भावसार- तब बाबा बिहारी को बोले- बिहारी रे! तुमने कुछ भोजन किया है? बिहारी बोला- आप लोगों का भोजन नहीं हुआ पहले मैं कैसे भोजन करूँगा? ग्यारह बजे सुनकर बाबा बोले- अरे हट्ट बेटा! अभी तो संध्या हुई है।।१६।।

एत कहि प्रसाद पाञा विश्राम करिल।
दश एगार दिन रहि चलिते मन कैल।।
से कालेते विष्णुदासेरे डाकिल।
वंश चौंगाय कत आछे देखिते कहिल।।
ठाकुरेर प्रणामी पूर्व हैते धरा छिल।
शुनितेइ आठार टाका रेजकी हइल।।२०।।

भावसार- इतना कहकर प्रसाद पाकर सभी ने विश्राम किया। इसप्रकार दस ग्यारह दिन इष्ट गोष्ठी में व्यतीत कर बाबा को जाने की इच्छा हुई तो विष्णुदास को बुलाया। भण्डार में कितने पैसे हैं? ठाकुर का प्रणामी पहले से जो रखा था सब मिलाकर अट्ठारह रुपये हुआ।।२०।।

शुनि बाबा विष्णुदासे वलेन तखन।
बिहारीर हस्ते देह गमन कारन।।
टाका पाञा विहारी गरूर गड़िते चापिल।
पथे चलिवार काले बाबाय कहिल।।
नवद्वीपे गिया मोरा उठिव कोथाय।
कि वा उठिव गिया वड़ अखडाय।।२१।।

भावसार- यह सुनकर बाबा विष्णुदास को बोले- बिहारी के हाथ में दे दो रास्ते के लिये। रुपये पाकर बिहारी बाबा को लेकर बैलगाड़ी में चढ़े। पथ में जाते समय बाबा से बोले- बाबा नवद्वीप में जाकर हम रुकेंगे कहाँ? क्या बड़े

अखाड़े में?।।२१।।

नाना वलि सिद्ध बाबा उत्तर करिल।
नवद्वीपे आसि एक वृक्षतले रैल।।
वर्तमाने भजन कुटीर विराजे यथाय।
अग्रे आसि वृक्षतले रहये तथाय।।
पाछे बाबा दश काठा जमि क्रय कैल।
तथाय प्रकाण्ड गर्त बिहारी बुझाइल।।२२।।

भावसार– नहीं–नहीं बोलकर सिद्ध बाबा नवद्वीप में आकर एक वृक्ष के तले रह गये। वर्तमान में भी जहाँ बाबा का भजन कुटीर है। आगे आकर वृक्ष तल में वहीं रुके। पीछे बाबा ने वहाँ कुछ जमींन खरीद ली और वहाँ जो गर्त था उसको बिहारीजी ने भरा।।२२।।

रात्रिकाले सिद्ध बाबा करिले शयन।
छाड़ि गंगा होते माटि करे आनयन।।
कतदिन परे सेई गर्त उच्च हैल।
भिक्षा करि दुइ खानि चालाघर कैल।।
किछु दिन परे बाबा इंगित करिल।
राजर्षि वनमाली किछु सेवाकार्य कैल।।२३।।

भावसार– रात्रि काल में सिद्ध बाबा जब शयन करते तो छाड़ा गंगा से बिहारीजी मिट्टी लेकर गर्त को भरते। कुछ दिनों बाद वह गर्त भर गया और भिक्षा करके दो कच्ची कुटी बनाई। कुछ दिन बाद बाबा ने इंगित किया कि राजर्षि वनमाली ने कुछ सेवाराशि भेजी।।२३।।

चतुर्दिके प्राचीर कैल तिन खानि घर।
मनमोहिनी दासी कूप खुदाय तारपर।।
हेनमते सिद्ध बाबा करे नदे वास।
बाबार प्रेमेर गुण अद्‌भुत विकास।।

चतुर्मास्य काले बाबार आछिल नियम।
संध्याकाले चारटि कला करित भोजन।।२४।।

भावसार– तब बिहारीजी ने चारों तरफ दिवाल करके तीन कुटिया बनार्यी। मनमोहनी दासी ने कुँआ खुदवा दिया। इसप्रकार सिद्ध बाबा नदिया में वास करने लगे। बाबा के प्रेम के अद्‌भुत गुणों का प्रकाश था। चतुर्मास्य काल में बाबा का नियम था कि संध्या को चार केला भोग लगाकर पाते।।२४।।

द्वितीय मासेते पाका पेयारा ग्रहण।
तृतीय मासे किछु घोल करित भोजन।।
चतुर्थ मासेते मोचा सिद्ध अलवण।
एइमत चारि मास करये नियम।।
मन्त्र पुरश्चरणे बाबा हृषीकेशे गेल।
दुइ मास नियम करि भजन करिल।।२५।।

भावसार– और द्वितीय महीने में पक्का अमरुद ग्रहण करते। तीसरे महीने में केवल मट्ठा पीते और चौथे महीने में केले का थोड़ सिद्ध करके बगैर लवण के पाते। इसप्रकार बाबा चार मास नियम करते। मंत्र पुरश्चरण हेतु बाबा ऋषीकेश गये। वहाँ दो मास नियमपूर्वक भजन किया।।२५।।

व्रत भंग करि पुनः कैल आरम्भण।
तिन मासे करिलेन अभीष्ट साधन।।
बाबा कहे एइ भावे करिले साधन।
एइ देहे हय गौर कृष्ण दरशन।।
इतस्ततः करिले बाबा वलये वचन।
तोमा सबा प्रति क्रुद्ध हव कि कारण।।२६।।

भावसार– व्रत भंग करके बाबा पुनः आये और तीन महीने निज अभीष्ट साधन किया। बाबा बोलते इसप्रकार

भाव से भजन साधन करने से इसी शरीर में श्रीगौरकृष्ण के दर्शन होते हैं। यदि कोई भूल होती तो बाबा क्षमापूर्वक बोलते चिन्ता न करो तुम लोगों के प्रति मैं क्रोध क्यों करूँगा?।।२६।।

राधाकुण्डे लोकनाय गोस्वामी कुटीरेते।
छागल आसिया खाय तुलसी वृक्षटिके।।
ताहा केह एवे मुइ करिल ताडन।
शुनिया अवाक हैल यत बाबूगण।।
एमनि बाबूरा तथाय टेलिप्राम कैल।
संगे संगे उत्तर आनि सकलि बूझिल।।२७।।

भावसार- राधाकुण्ड में एकबार लोकनाथदास गोस्वामी की कुटी में बकरी आकर तुलसी खाने लगी। बाबा के दर्शन के लिये आये बाबूगणों के सामने बाबा ने हट्ट-हट्ट करके बकरी को भगाया और कहा मैंने वहाँ बकरी तुलसी खा रही तो भगाया। सुनकर बाबूगण अवाक् रह गये। उसी समय टेलीग्राम करके पूछा बकरी ने तुलसी खायी थी मालूम हुआ सुनकर सब नतमस्तक हो गये।।२७।।

छागल आसिया तुलसी वृक्ष मुड़ाइल।
एखनओ गायेर लोभ उठाने रहिल।।
ए कथा जानिया तारा क्षमा चाहि निल।
तखनइ सिद्ध बाबा कहिते लागिल।।
उहारा सकलेइ कलिर जीव हय।
किछु ना देखिले मने विश्वास ना करय।।२८।।

भावसार- वहाँ बकरी ने आकर तुलसी वृक्ष मरोड़ दिया था। अभी-भी उसका चिन्ह था। यह सब सुनकर बाबूगण नमस्कार पूर्वक बाबा से क्षमा चाही। तब सिद्ध बाबा बोलने लगे- ये लोग सभी कलि के जीव हैं। कुछ चमत्कार न देखने पर इनको विश्वास नहीं होता।।२८।।

से जन्य सिद्धाई किछु करानु दर्शन।
ता ना हैल अपराधे मरित ए जन।।
एकबार नवद्वीप वन्याय डुविल।
विहारीरे लञा बाबा आश्रमे रहिल।।
वड़ाल घाट हैते नित्य गौरहरि दास।
भेला करि खिचड़ी लञा आशे बाबा पाश।।२६।।

भावसार– इसीलिये इनको कुछ सिद्धाई दर्शन करायी। ऐसा नहीं करने से ये लोग अपराध में मरते। एकबार नवद्वीप धाम बाढ़ में डूब गया। बिहारी को लेकर बाबा आश्रम में ही रहे। वड़ालघाट से नित्य गौरहरिदास नाम का भक्त डब्बे में खिचड़ी लेकर बाबा के पास आता।।२६।।

किछु दिने परे तेंह याइते नारिल।
एदिके बिहारी दासेर ज्वर हैल।।
क्रमशः अवस्था अति खाराब हइल।
डाक्टार आसिया ताँर भरसा छाड़िल।।
सेई रात्रेइ बिहारी त्यजिवे जीवन।
कविराज आसि इहा कहे ए वचन।।३०।।

भावसार– कुछ दिन के बाद वह भी नहीं आ पाया और इधर बिहारीदास को ज्वर हो गया। क्रमशः अवस्था बिगड़ती गई और उस रात में बिहारी की तबीयत अत्यन्त खराब हो गई। कविराज ने आकर कहा– आज रात को ये परलोक जा सकता है।।३०।।

शुनि सिद्ध बाबा तवे वलेन वचन।
इहार चिकित्सा आमि करिव एखन।।
गिरिधारी चरण तुलसी हस्ते लञा।
मुख मध्ये ढुकाय एक काठि दिया।।
निजे माला निये मस्तक समीपे वसिल।
कार साध्य लय वलि बाबा ये कहिल।।३१।।

भावसार– यह सुनकर सिद्ध बाबा बोले– इसकी मैं स्वयं चिकित्सा करूँगा। श्रीगिरिधारीजी की चरण तुलसी हाथ में लेकर उसको लकड़ी से मुख में डाला और स्वयं माला लेकर बिहारी के मस्तक के पास बैठ गये। किसकी हिम्मत है जो बिहारी को ले जाये?।।३१।।

एत वलि बाबा माला जप आरम्भिल।
आध घण्टा परे बिहारी चक्षु मेलिल।।
बाबा कहे छाड़ि मोरे याइवे कोथाय।
उठ वाइश दिन मुख धोया नाहि हय।।
उठिया रसुइ तुमि करह एखन।
तवेत बिहारी दास वलये वचन।।३२।।

भावसार– इतना कहकर बाबा ने जप आरम्भ किया। आधा घण्टा के बाद ही बिहारी ने अपने नयन खोले। बाबा ने कहा– मुझे छोड़कर कहाँ जाओगे? उठो, बाईस दिनों से मुख भी धोना नहीं हुआ। उठकर अब तुम रसोई करो। तब बिहारीदास बोला।।३२।।

वडइ पेयेछे क्षुधा बाबारे कहिल।
शुनि मोहन भोग बाबा रान्धि खावाइल।।
बाबा कहे स्नान करि करह रन्धन।
वाइश दिन हैल मोर नाहिक भोजन।।
बिहारी उठिया बाबार मुख धोयाइल।
आपने करिया स्नान बाबाय कराइल।।३३।।

भावसार– बाबा! बड़ी भूख लगी है। सुनकर बाबा ने मोहन भोग रंधन कर उसे खिलाया। बाबा ने कहा– अब तुम स्नान करके रंधन करो। बाईस दिन से मैंने भोजन नहीं किया। बिहारी उठकर बाबा को मुख धुलवाया और स्वयं स्नान करके बाबा को भी स्नान कराया।।३३।।

बाबा कहे तोमा हस्ते करिले भोजन।
आमार भजन स्फूर्ति हय अनुक्षण।।
ते कारणे कार हस्ते खेते वाञ्छा नय।
हेनमते बिहारीरे कृपा प्रकाशय।।
एकदा विहारीरे डाकि बलेन वचन।
पढ़ तुमि चरितामृत करिव श्रवण।।३४।।

भावसार– बाबा ने कहा– बिहारी तुम्हारे हाथ से भोजन करने से हर समय भजन में स्फूर्त्ति होती है इसीलिये और किसी के हाथ से खाने की इच्छा नहीं होती है। ऐसी सिद्ध बाबा की बिहारी पर कृपा थी। एकबार बिहारी को बुलाकर उन्होंने कहा– बिहारी! तुम चैतन्यचरितामृत का पाठ करो मैं सुनना चाहता हूँ।।३४।।

बाबार आज्ञाय ग्रंथ किनिया आनिल।
तवे बाबा पड़िवारे आज्ञा समर्पिल।।
पड़िते नारये तेंह फाँफरे पड़िल।
बाबा तारे ग्रंथ प्रति ताकाइते कैल।।
क्षणपरे तार अक्षर परिचय हैल।
तत्परे युक्त अक्षर पड़िते शिखिल।।३५।।

भावसार– बिहारी बाबा की आज्ञा से ग्रंथ खरीद लाया। तब बाबा ने पढ़ने की उसे आज्ञा दी। वह पढ़ नहीं पा रहा था और संकट में पढ़ गया। तब बाबा ने उसे ग्रंथ की ओर देखने को कहा कुछ क्षण में ही उसका अक्षर परिचय हो गया। उसके बाद युक्त अक्षर पढ़ने लगा।।३५।।

तत्परे भालभावे पड़िते शिखिल।
एइभावे खोल वाजनादि शिक्षा कैल।।
बाबार भजन निष्ठा अपूर्व कथन।
सहस्त्र दण्डवत नित्य करे आचरण।।
अति वृद्धकाले तेंह ना छाड़े नियम।

नित्य गिरिधारी के करे तुलसी अर्पण।।३६।।

भावसार– तत्पश्चात् अच्छी तरह से पढ़ना सीख गया। इसी प्रकार से मृदंग आदि बजाना भी सीख लिया। बाबा की भजन निष्ठा की अपूर्व महिमा थी। सहस्र दण्डवत् नित्य करते, अति वृद्धावस्था में भी उन्होंने नियम नहीं छोड़ा और नित्य गिरिधारीजी को तुलसी अर्पण करते थे।।३६।।

वार्द्धक्ये चोखेर पाता झुलिया पड़िल।
सेवक तुलिते पाता चरणे अर्पिल।।
कालनार बाबा सह अधिक प्रणय।
मध्ये मध्ये तार स्थाने गमन करय।।
एकदा कुटीर पाशे नगर आसिल।
कीर्तन शुनिया बाबा बाहिर हइल।।३७।।

भावसार– वृद्धावस्था में उनके नयन की पुतली ढीली पड़ गई थी। सेवक उनके नयन खोलता तब वे तुलसी दे पाते। कालना के सिद्ध बाबा के साथ आपकी बड़ी प्रीति थी। आप बीच-बीच में उनके पास जाते। एकदिन कुटी के पास नगर-कीर्तन आया। कीर्तन सुनकर बाबा बाहर आये।।३७।।

विहारी साहाये पथे कैल आगमन।
साष्टांग प्रणाम नामे करिल तखन।।
संकीर्तनेर संगे संगे नाचिते लागिल।
प्रेमे दुइ तिन हस्त उच्च लम्फ दिल।।
सर्व पथे खुया पूर्ण ताहे नाहि मन।
हेनमते लम्फ दिया करये नर्तन।।३८।।

भावसार– बिहारी की सहायता से बाबा मार्ग पर आये और हरिनाम संकीर्तन को साष्टांग प्रणाम किया। बाबा प्रेम में दो-तीन हाथ ऊँचा कूद गये। पूरे मार्ग में कंकड़ बिछे थे

तो भी उनका मन वहाँ नहीं था और कूद-कूदकर कीर्तन कर रहे थे।।३८।।

संज्ञाहीन कभु उर्द्ध बाह्य दशा हय।
नयने गलदश्रु मुखे फेन बाहि रय।।
रानीघाटेर वटतला पर्यन्त आसिल।
छय सात घण्टा पथे नर्तन करिल।।
स्वचक्षे देखिल यारा करिल वर्णन।
बाबार प्रेमेर कथा अपूर्व कथन।।३९।।

भावसार- कभी संज्ञाहीन और कभी अर्द्ध बाह्य दशा बाबा की होती। नयनों से अश्रु व मुख से फैन निकलता। रानीघाट के वटवृक्ष तल के नीचे आये। बाबा छः सात घण्टे मार्ग में कीर्तन किये। अपने आँखों से जिन्होंने देखा उन्हीं ने बताया कि बाबा के प्रेम का कोई जवाब नहीं।।३९।।

बाबा यवे वृन्दावने करये गमन।
पुरुलिया पाट दिया गमन तखन।।
गुरु पुत्र ब्रह्मानन्द सह गाढ़ प्रेम हय।
श्रीपाटे रहिले बाबा गमन करय।।
दुहुजने गौर प्रेम करे आस्वादन।
एकदा माता गोसाँई करे परिवेशन।।४०।।

भावसार- बाबा जब वृन्दावन जाते तब पुरुलिया मार्ग से जाना होता। गुरु पुत्र ब्रह्मा के साथ में उनका गाढ़ प्रेम था। श्रीपाट में रहने पर बाबा उनके पास जाते व दोनों जन गौरप्रेम की कथा का आस्वादन करते। एकबार माता गुसाईं परिवेशन कर रही थीं।।४०।।

पूरण हइल तबु करे परिवेशन।
हेरि सिद्ध बाबा हैल सशंकित मन।।
अन्न अवशेष माता राखिते चाहिल।

चिन्ति बाबा पत्रसह सकलि भक्षिल।।
ताँर शक्ति हेरि माता चमकित मन।
ताहार कष्टेर लागि ना करे एमन।।४१।।

भावसार– बाबा ने पेटभर के पा लिया तब भी परिवेशन करती जा रही थीं। यह देख बाबा का मन सशंकित हो उठा। चूंकि माता कुछ अन्न बचाकर रखना चाहती थीं। ऐसा सोचकर बाबा ने पत्तल सहित अन्न प्रसाद पा लिया। बाबा की शक्ति देखकर गुसाईं माता चमक उठीं। बाबा को कष्ट होगा विचारकर ऐसा उन्होंने फिर कभी नहीं किया।।४१।।

छय मास नवद्वीपे छय मास वृन्दावन।
हेनमते सिद्ध बाबा करेन यापन।।
शेष समये ब्रज छाड़ि नदे आगमन।
शुनि निवेदये आसि वैष्णवेर गण।।
अति वृद्ध अवस्थाय ब्रज छाड़ कि कारण।
शुनिया आविष्ट बाबा हइल तखन।।४२।।

भावसार– बाबा छः महीने नवद्वीप और छः महीने वृन्दावन में वास करते। शेष समय में ब्रज छोड़कर नदिया में आये। वैष्णवगण सुनकर बाबा के पास आये और बाबा शेष समय में ब्रज किस कारण छोड़ा? तब बाबा आविष्ट हो उठे।।४२।।

पुलकेते सर्वअंग तार फुलि गेल।
सवा सम्बोधिया शेषे कहिते लागिल।।
सकले थाकह ब्रजे मुइ नदे याव।
मोर सम अपराधीर तथा स्थान हव।।
निताई गौरांग दुइ दयाल अवतार।
तारा अपराधीर नाहि करये विचार।।४३।।

भावसार– उनके सभी अंग पुलकित होकर फूल गये। सबको सम्बोधन करके वे बोले– आप सब लोग ब्रज में ही रहये मैं नवद्वीप जाऊँगा। मुझे जैसे अपराधी का वही स्थान है। निताई–गौरांग बड़े दयालु अवतार हैं वे अपराधों का विचार नहीं करते।।४३।।

दिनकत पूर्वे बंग होते एक भक्त गेल।
सविनय बाबा पाशे तेंह जिज्ञासिल।।
कृष्णलीला किछु बुझि इहा मने लय।
किन्तु गौरांगेर लीला बूझन ना याय।।
बाबा कहे इहा अति सहज व्यापार नय।
आगे ब्रजेर किछु होते से लीला बूझय।।४४।।

भावसार– कुछ दिन बाद पूर्व बंग से एक भक्त आया। सविनय बाबा से उसने जिज्ञासा की कि– कृष्णलीला तो कुछ समझ में आती है किन्तु गौरांगलीला समझ में नहीं आती। बाबा बोले– यह इतना सरल नहीं है। ब्रज की कुछ लीला समझ में आने के बाद ही नवद्वीप की लीला समझ में आती है।।४४।।

गौर लीला हय कृष्ण लीलार परिणति।
जगते बुझाय बाबा करिया पीरिति।।
काला बाबुर कुञ्जे बाबा करे अवस्थान।
तथा हैते नदीयाय करये प्रयाण।।
झोडाय चापाइया बिहारी स्कन्दे कैल।
तुलितेइ महाभारी पाथर बोध हैल।।४५।।

भावसार– गौरलीला श्रीकृष्णलीला का अन्तर प्रवेश का पाठ्य क्रम है। जगत को यह शिक्षा बाबा दे रहे हैं। कालाबाबू के कुंज में बाबा अवस्थान कर रहे थे वहाँ से आप नवद्वीप आये। टोकनी में लेकर बिहारी बाबा को कंधे पर ले आया। उठाने पर महाभारी जैसे पत्थर के समान

वजन लगा।।४५।।

स्कन्धे उठि गामछावत हालका हइल।
विहारी स्कन्देते करि वहिरा चलिल।।
दिवारात्र चलि नय दिने नदे एल।
भागलपुरे वनमध्ये विपत्ति घटिल।।
रात्रिकाले चलिते पथे व्याघ्र दरशन।
अग्नि स्फुलिंग सम आँखि रयेछे शयन।।४६।।

भावसार– किन्तु जैसे ही स्कन्ध पर रखकर चलने लगे तो गमछा के समान हल्का अनुभव हुआ। आप दिन–रात चलकर नौ दिनों में ही नवद्वीप पहुँच गये। भागलपुर के वन में एक घटना हुई– रात्रिकाल में चलने पर पथ में व्याघ्र दिखा अग्नि स्फुलिंग के समान उनकी आँखें चमकी थीं।।४६।।

व्यापार देखिया तेंह पश्चाते चलिल।
झोडाय रहिया बाबा तारे जिज्ञासिल।।
व्याघ्र शुइयाछे यदि विहारी कहिल।
शुनि ताँर प्रति बाबा कहिते लागिल।।
व्याघ्र नहे महाप्रभुर पारिषद हय।
तोदेर देखिते तारा एखाने आछय।।४७।।

भावसार– यह देख बिहारी पीछे को लौटा टोकनी में बैठे बाबा ने जिज्ञासा की तो बिहारी ने बाघ सोया है ऐसा बाबा से कहा। सुनकर बाबा बोलने लगे– यह व्याघ्र नहीं महाप्रभु का पार्षद है, तुमको देखने के लिये ही यहाँ आया है।।४७।।

एमनि व्याघ्र गुलि तखन उठिया चलिल।
हेरिया विहारी दास विस्मय गणिल।।
पथेते विहारी करे बाबार सेवन।

नारिकेल माला हाते एकाकी गमन।।
छोला भाजा आटा जल यथा याहा पाय।
डेला पाकाइर मालाय अर्पये बाबाय।।४८।।

भावसार– तब उसी समय व्याघ्र उठकर चलने लगा। जाते समय पथ में पथ में बिहारी बाबा की सेवा करता। नारिकल की माला हाथ में थी और वे अकेले जा रहे थे। चना का भूना आटा और जल जहाँ मिलता बाबा को पात्र में अर्पण करते।।४८।।

बाबार भोजन शेषे करये ग्रहण।
हेनमते पथ चलि कैल आगमन।।
एकदा विहारीरे बाबा वलये वचन।
यार राज्ये वैस तार करह कीर्तन।।
द्वापरेते श्रीकृष्णचन्द्रेर राज्य छिल।
कलिते श्रीमन्महाप्रभु राज्य हैल।।४९।।

भावसार– बाबा जब प्रसाद पा लेते तो उनका अधरामृत बिहारी श्रद्धापूर्वक पाता। इसप्रकार पथ पर चलकर नवद्वीप आये थे। एकबार बिहारी को बाबा ने बोला जिसके राज्य में आये हैं उनका कीर्तन करो। द्वापर में कृष्णचन्द्र का राज्य था और कलि में महाप्रभु का राज्य है।।४९।।

कृष्ण भजनेते करे अपराधेर विचार।
गौर भजने नाहि से सब विचार।।
दु पयसार हाँडि लागि माँ कृष्णेरे वान्धिल।
हेन हाँडि गौरचन्द्र कतई भांगिल।।
चाउल डाल कत कैल नोकसान।
तथापि शचीमाता किछु ना कहे ताहान।।५०।।

भावसार– कृष्ण भजन करने पर अपराध का विचार रहता है। किन्तु गौरभजन करने से ऐसा विचार नहीं होता

है। दो पैसे की मटकी के लिये यशोदा मैया ने कन्हैया को बाँध दिया। ऐसी कितनी मटकी गौर ने तोड़ दीं, चावल, दाल आदि उसने कितना नुकसान किया तथापि शची माँ ने उनसे कुछ नहीं कहा।।५०।।

अतएव कलिकाले गौरांग कीर्तन।
अवश्य करिवेक यत सुधी भक्तगण।।
एकदा विहारीरे बाबा वलेन वचन।
तुमित करिले मोर बहुत सेवन।।
आमि ना पारिलाम तोमा किछु करिवारे।
याक आजि चार पाँच गाडी टाका दिव तोरे।।५१।।

भावसार– अतः कलिकाल में श्रीगौरांग भजन का विधान है। अतः बुद्धिमान भक्तगण अवश्य ही गौर भजन करेंगे। एकबार बिहारी को बाबा ने बोला– तुमने तो मेरी बहुत सेवा की है; किन्तु मैं तुमको कुछ दे नहीं पाया। आज क्या चार–पाँच गाड़ी पैसा तुमको दे दूँ?।।५१।।

शुनिया विहारी मने करये चिन्तन।
सस्वल करोया भांगा दिवे चार गाडी धन।।
सविनये बाबाके तेंह जिज्ञासे रचन।
केमने चार गाडी धन करिवे अर्पण।।
बाबा कहे दर्शन दिते गौरांग आसिवे।
से काले कहिले तारे तेंह पाठाइवे।।५२।।

भावसार– सुनकर बिहारी मन में विचार करने लगे– इतनी गरीबी में बाबा चार–पाँच गाड़ी धन देंगे तो उन्होंने सविनय बाबा से जिज्ञासा की। बाबा! चार गाड़ी धन कैसे देंगे? बाबा ने कहा– जब गौर दर्शन देने के लिये आयेंगे तो मैं उन्हें कहूँगा तो वे दे देंगे।।५२।।

इंगित करिले ताँके करिवे प्रेरण।

टाका चास ना मोरे चास कहत वचन।।
विहारी कहये अर्थे कोन प्रयोजन।
सर्वकाल सेवि येन तोमार चरण।।
शुनि सिद्ध बाबा मने अतिसुखी हैल।
सम्बोधन करि तारे कहिते लागिल।।५३।।

भावसार– इंगित करने पर वे प्रेरण करेंगे। अच्छा, तुम मुझे चाहते हो या धन चाहते हो। बिहारी बोला– बाबा! धन की क्या जरूरत है? ऐसी आशीर्वाद करें कि सदा आपकी सेवा करता रहूँ। सुनकर बाबा अन्तर्मन बड़े सुखी हुए। उनको सम्बोधन कर बोलने लगे।।५३।।

आमारे लइले तुमि पयसा ना पावे।
किन्तु तोमार कभु अभाव ना हवे।।
एक शत वर्ष तोर परमायु हवे।
निरन्तर कायमने नाम उच्चारिवे।।
कलिकाल किछु तोर करिते नारिवे।
अवहेले सर्व वाञ्छा पूरण हइवे।।५४।।

भावसार– मुझको लेने पर तुमको पैसा नहीं मिलेगा हाँ किन्तु तुम्हारा अभाव भी नहीं रहेगा और एक सौ वर्ष की तुम्हारी परम आयु होगी और निरन्तर कायमन वचन से तुम हरिनाम करोगे। कलिकाल तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगा और शीघ्र ही तुम्हारी सभी मनोकामनायें पूर्ण हो जायेंगी।।५४।।

चार पाँच दिन परे बाबार अन्तर्धान।
बिहारी करिल तार सब समाधान।।
एक शत सात चल्लिश वर्ष वयस हइल।
सेइकाले सिद्ध बाबा अन्तर्धान कैल।।
उपयोग करिया बिहारी महोत्सव कैल।
नय वर्ष समाधि सेवि ब्रजधामे गेल।।५५।।

भावसार– इसके चार–पाँच दिन बाद ही बाबा अन्तर्ध्यान हो गये और बिहारी ने उनकी अन्त्येष्टी की। बाबा १४७ वर्ष तक पृथ्वी पर रहे। जब सिद्ध बाबा अन्तर्ध्यान हुये; बिहारी ने व्यवस्था करके महोत्सव किया। नौ वर्ष पर्यन्त बाबा की समाधि की सेवा करके बिहारी ब्रजधाम आया।।५५।।

फाल्गुनी शुक्ला प्रतिपदे बाबार अन्तर्धान।
बाबार चरित्र गुण अपूर्व आख्यान।।
बाबार कुटीर पाशे केलि कदम्ब रय।
तार तले वसि बाबा भजन करय।।
बाबा अन्तर्धाने वृक्षे क्रमे शुकाइल।
बाबा बल्कल खसिले सवे अपूर्व हेरिल।।५६।।

भावसार– फाल्गुनी शुक्ला प्रतिपद को बाबा अन्तर्ध्यान हुये थे। बाबा का पावन चरित्र उनकी गुण महिमा अपूर्व थी। बाबा के कुटी के पास केलि कदम्ब के वन थे जिनके नीचे बैठकर बाबा भजन करते। बाबा के अन्तर्ध्यान के बाद सभी वटवृक्ष सूख गये। वृक्ष के छिलके छूट जाने पर सबने देखा।।५६।।

एक एक बल्कल खसिले देखा याय।
अस्पष्टाक्षरे 'हरेकृष्ण' नाम लिखा तार।।
एइमत जगन्नाथ बाबार महिमा।
गौर गोविन्द सेवा याहा तेइ सीमा।।५७।।

भावसार– एक–एक छिलका हटने पर स्पष्ट अक्षरों में हरेकृष्ण महामन्त्र वृक्ष के सूखे तने पर लिखा पाया। ऐसी बाबा की भजन की अपूर्व महिमा थी। गौर–गोविन्द भजन की यही अन्तिम परम सीमा है।।५७।।

गौर तत्त्व कृष्ण तत्त्व रागेर भजन।
साहजिक भावे बाबार हृदये उदगम।।

प्रेममय मूर्ति सिद्ध जगन्नाथ बाबा।
'किशोरी' वाञ्छये सदा ताँर प्रेम सेवा।।५८।।

भावसार– गौर तत्त्व और कृष्ण तत्त्व राग–मार्ग का भजन है, जो बाबा के हृदय में सहज ही उद्‌गम हो गया। प्रेममय मूर्त्ति सिद्ध बाबा जगन्नाथदास की मैं किशोरी प्रेम सेवा की कामना करता हूँ।।५८।।

१६. सिद्ध श्रील कृष्णदास बाबाजी

जय जय पतित पावन गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द प्रेमदानकारी।।
जय जय श्रीअद्वैत सीतार जीवन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
अनन्त गौरांग गण अचिन्त्य महिमा।
ता सवार प्रेमगुण के पाइवे सीमा।।१।।

भावसार– हे पतित पावन गौरहरि आपकी जय हो! जय हो!! हे नित्यानन्द प्रेमदानकारी आपकी जय हो! जय हो!! हे श्रीअद्वैतचन्द्र सीतादेवी के जीवनस्वरूप आपकी जय हो! जय हो!! हे श्रीगदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द आपकी जय हो! जय हो!! श्रीगौरांग महाप्रभु के भक्तगणों की अनन्त महिमा एवं अचिन्त्य गुणावलियाँ हैं जिनकी कोई सीमा नहीं।।१।।

आपनि आसिया कैल निज प्रेमदान।
ब्रजेर निगूढ़ तत्त्वेर जानाल संधान।।
पारिषद द्वारे भक्ति तत्त्व निरूपिल।
आस्वादिया निज प्रेम वितरण कैल।।
पुनः श्रीनिवास नरोत्तम श्यामानन्द द्वारे।
जानाल आपन तत्त्व अवनी माझारे।।२।।

भावसार– गौरहरि स्वयं आकर निज प्रेमदान किये। ब्रज का निगूढ़ तत्त्व जगत् को जनाया। निज पार्षद गणों के द्वारा भक्तितत्त्व का निरूपण किया। निज भक्तितत्त्व का आस्वादन करके प्रेमदान किया। पुनः श्रीनिवास आचार्य नरोत्तमदास ठाकुर एवं श्यामानन्दजी के द्वारा निज महिमा माधुरी का पुनः प्रकाश किया।।२।।

भक्ति ग्रंथ रत्नतिन द्वारे प्रचारिल।
शुद्ध गौर प्रेम तत्त्व जगते बूझिल।।
पतित तारणकारी प्रभु गौरहरि।
नाना रंगे जीवत्राण करे कृपा करि।।
कभु स्वयं अंश कभु पाठाइ निजजन।
हेनमते करे सदा पति तारन।।३।।

भावसार– भक्ति ग्रंथ रत्नों के द्वारा ब्रज का प्रचार किया। गोस्वामी गणों के ग्रंथों के द्वारा जगत् शुद्ध गौरप्रेम तत्त्व को समझ पाया। इसप्रकार पतित पावन श्रीगौरहरि नाना लीलायें करके जीवों का त्राण कर रहे हैं। वे कभी स्वयं, कभी अंश के द्वारा सदैव पतितों का उद्धार करते ही रहते हैं।।३।।

विशुद्ध भजन पुनः कराते शिक्षण।
भवेते पाठाल तवे निज परिजन।।
गुटिका रचिया येवा सुकीर्ति राखिल।
ब्रजेर भजन यार द्वाराय जानिल।।
गोवर्धन वासी तेंह बाबा कृष्णदास।
अचिन्त्य महिमा ताँर भुवने प्रकाश।।४।।

भावसार– विशुद्ध प्रेममय भजन की शिक्षा कराने के लिये पृथ्वी पर उन्होंने निज परिजन गणों को भेजा। जिन्होंने गुटिका ग्रंथ रचना करके सुकीर्ति की स्थापना की। ब्रज का भजन जिनके द्वारा जाना वे गोवर्धन वासी बाबा कृष्णदास

थे। उनकी अचिन्त्य महिमा को जगत् जान गया।।४।।

श्रीललिता सनातन गोसाँई देखा दिल।
आज्ञा अनुरूप तेंह गुटिका सृजिल।।
गोस्वामीर अभिमत वैराग्य भजन।
आपनि आचरि जीवे कराल शिक्षण।।
एइ भजनेर उत्स्य काम्यवन हैते।
अंकुरित हैल जयकृष्ण बाबा होते।।५।।

भावसार– एकबार श्रीललितादेवी और सनातन गोस्वामी ने आपको दर्शन दिया। उन्हीं की आज्ञा के अनुसार बाबा ने गुटिका लिखी। गोस्वामिगणों का अभिमत्त था कलिकाल के जीवों को वैराग्य का शिक्षण कराना। उन्होंने भी स्वयं आचरण करके ही प्रचार किया। यह भजन का उत्स्य काम्यवन से जयकृष्णदास बाबा से अंकुरित हुआ।।५।।

कृष्णदास बाबा होते वृक्षरूप हैल।
शाखा उपशाखा क्रमे जगते व्यापिल।।
उत्कल देशेर मध्ये एक पुण्य स्थान।
याहाते जन्मिल बाबा सर्वगुण धाम।।
सनातन काननगो पिता ख्यात सर्वजन।
मंगराज कन्या जयी ताँर माता हन।।६।।

भावसार– कृष्णदास बाबा से वृक्षरूप हुआ। शाखा उपशाखा क्रम से जगत् में व्याप्त हो गया। उत्कल देश के मध्य में एक पुण्य स्थान है जहाँ पर सर्वगुण धाम जिसमें बाबा ने पावन जन्म लिया। सनातन कानन गोस्वामी इनके पिता थे जो बहुत प्रसिद्ध थे। मंगराज कन्या जयी उनकी माता थीं।।६।।

रामचन्द्र प्रसादी ज्येष्ठे भ्राता दुइजन।
कनिष्ठ वट कृष्ण नामे विदित भुवन।।

करन कुलेते आसि लभिल जनम।
शैशवे आशीष पैले गौरांग भजन।।
पितृ अन्तर्धान काले माता सती हैल।
शिरोपा वान्धिया शिरे हेन आज्ञा दिल।।७।।

भावसार– रामचन्द्र प्रसादी इनके ज्येष्ठ भ्राता दोनों जन कनिष्ठ वटकृष्ण नाम से जगत् में विख्यात हुये। इन्होंने कर्ण कुल में आकर जन्म लिया। शैशव काल में आपने संतों से गौरांग भजन की शिक्षा पायी। पिता के अन्तर्ध्यान काल में माता देवी सती हो गईं। मस्तक पर पगड़ी बाँधकर इसप्रकार आज्ञा दी।।७।।

ब्रजे गिया वैष्णव होते कैल आज्ञा दान।
से काले द्वादश वर्ष वयस ताहान।।
उड्र भाषाय छात्रवृत्ति करिल पठन।
मातृ आज्ञा हृदे स्मरि करये यापन।।
षोडश वत्सरे गृहे त्यजि ब्रजे गेल।
दुइ वर्ष काल तथा पाठाभ्यास कैल।।८।।

भावसार– ब्रज जाकर वैष्णव होने की आज्ञा दी। उस समय इनकी उम्र मात्र बारह वर्ष की थी। उड्र भाषा में आपको छात्रवृत्ति मिली। मातृ आज्ञा हृदय में धारण करके जीवन यापन किया। सोलह वर्षों में गृह त्याग करके बृज में आये। दो वर्षों तक पाठ अभ्यास किया।।८।।

नरोत्तम परिवारे करिल आश्रय।
वृन्दावने ब्रह्मकुण्ड वसति करय।।
से कालेते वेसे तथा श्रीवैष्णवदास।
'पदकल्पतरु' ग्रंथ याहार प्रकाश।।
अन्तरे जानिल तेंह ताहार आशय।
ताँहार समीपे रञा भजन सिखय।।९।।

भावसार– नरोत्तम परिवार में आपने आश्रय ग्रहण किया। वृन्दावन के ब्रह्मकुण्ड में आप रहे। उस समय वहाँ वैष्णवदास रहते जिन्होंने पदकल्पतरु ग्रंथ को प्रकाशित किया था और अन्तर में इनका आश्रय जाना और उनके पास रहकर भजन सीखने लगे।।९।।

ताँर अन्तर्धाने तेंह उचाटन मन।
गोविन्द सेवाते जयपुरेते गमन।।
श्रीरूपगोस्वामी हन गौर परिजन।
गोविन्द सेवित ताँर ख्यात सर्वजन।।
श्रीगोविन्ददेव ऐवे जयपुरे रय।
हेन वार्ता शुनि तथा गमन करय।।१०।।

भावसार– उनके अन्तर्ध्यान करते ही इनका मन उच्चाटन हो उठा। गोविन्द सेवा के लिये आप जयपुर आ गये। श्रीरूपगोस्वामी श्रीगौरांग के परिकर हैं। गोविन्दजी उनका सेवित विग्रह है यह बात जगत् विख्यात है और वे गोविन्दजी अभी जयपुर में अधिष्ठान कर रहे हैं। यह वार्ता सुनकर उन्होंने जयपुर गमन किया।।१०।।

गोविन्द माधुरी हेरि पुलकित मन।
सेवा अभिलाष राजाय करिल ज्ञापन।।
तुष्ट हञा राजा तारे सेवा समर्पिल।
द्वारे सेवकादि कार्ये नियुक्त हइल।।
प्रेमयोगे अष्टकाल करये सेवन।
हेनमते कतकाल करिल यापन।।११।।

भावसार– वहाँ पहुँचकर गोविन्दजी रूपमाधुरी दर्शन करते ही पुलकित हो उठे और राजा से वहाँ सेवा की अभिलाषा की। सन्तुष्ट होकर राजा ने उसको सेवा सौंप दी। द्वार पर सेवक के रूप में वे सेवा करने लगे। प्रेमयोग में अष्टकाल के अनुसार सेवा करते। इसप्रकार बहुत समय

बीत गया।।११।।

राजान्न भक्षणे चित्ते विकार जन्मिल।
निवारणे उपाय चिन्ति ब्रजधामे एल।।
से काले त्रिशवत्सर वयस ताहान।
चिन्तिया व्याकुल तथा नहि कोन स्थान।।
ब्रजे आसि काम्यवने उपनीत हैल।
सिद्ध बाबार पदे पढ़ि सकलि कहिल।।१२।।

भावसार– राजान्न (विषयी अन्न) भक्षण करने से उनके चित्त में विकार उत्पन्न हुआ। वहाँ कोई अनुसंधान न पाकर उपाय के लिये आप ब्रज में चले आये। उस समय इनकी आयु तीस वर्ष की थी। स्थान के लिये चिन्तन करके ही जब कोई स्थान नहीं पाया तब ब्रज में काम्यवन में आकर सिद्ध बाबा के चरणों में निवेदन किया।।१२।।

सिद्ध जयकृष्णदास प्रेमिक सुजन।
ताँहार वृत्तान्त शुनि वलेन वचन।।
काँचा वस्थाय वृक्ष काटि जलेते फेलिया।
तुलिया आगुने दिले ना याय पुड़िया।।
ना शुकाले अग्निते कभु ना हय दहन।
से मत जीवेर दशा हयत घटन।।१३।।

भावसार– सिद्ध जयकृष्णदास बाबा प्रेमीजन थे। इनका वृत्तान्त सुनकर वे बोलने लगे– कच्ची अवस्था में वृक्ष काट के जल में फैंका जाये और उठाकर अग्नि में देने पर जिस प्रकार नहीं जलता है। न सुखाकर अग्नि में देने पर नहीं जलता उसीप्रकार जीवों की दशा है।।१३।।

पतित अनादि फेलि संसार सागरे।
विषय त्याग कराञा फल भक्ति वैखानरे।।
ज्ञान वैराग्य भक्तिर साधन विहीने।

चित्त शुद्ध नाहि हय शास्त्रेर प्रमाणे।।
साधने विषय रस यत शुष्क हय।
तादृश भक्तिरस जीव आस्वादय।।१४।।

भावसार– पतित और अनादि जीव संसार सागर में पड़ा हुआ है बिना विषय त्याग कराये उसमें भक्ति कैसे आ सकती है? ज्ञान, वैराग्य और भक्ति साधन के बिना चित्त शुद्धि नहीं होती– यह शास्त्र का प्रमाण है। साधन में विषय रस जितना शुष्क होता है उसी मात्रा में भक्तिरस का जीव आस्वादन करता है।।१४।।

हेनमते बाबारे बहु उपदेश कैल।
कृतार्थ मानिया तेंह भजने मातिल।।
दोमन वने वसि तेंह करये भजन।
आटा भिक्षा लागि नन्द ग्रामेते गमन।।
कभु आँगा करे कभु आटा गुलि खाय।
मध्ये मध्ये निम्बपाता किछु देय ताय।।१५।।

भावसार– इसप्रकार बाबा को बहुत उपदेश किया। वह कृतार्थ होकर भजन में मत्त हो उठा और दोमन वन में जाकर भजन करने लगा। आटा भिक्षा हेतु नन्दग्राम में जाता; कभी आँगा और कभी आटा ही पानी में मिलाकर पी लेता, कभी–कभी नीम का पत्ता भी उसमें दे देता।।१५।।

क्रमे देह क्षीण चक्षु दृष्टिहीन हैल।
भिक्षाय याइते नारि जलपिया रैल।।
शक्तिहीन हैल क्रमे जल आनिवारे।
दुइ तिन दिन गते कृपा हैल ताँरे।।
परम करूणामयी राधा ठाकुराणी।
ललिताय डाकि कहे सकरूण वाणी।।१६।।

भावसार– धीरे–धीरे उनका देह क्षीण हो गया और

दृष्टि कमजोर हो गई। भिक्षा के लिये न जा पाने के कारण जल पीकर ही रह जाते। अब जल लाने के लिये भी शक्ति नहीं रही। दो–तीन दिन बाद ही उन पर कृपा हुई कि एकदिन परम करूणामयी राधा ठाकुराणी ललिताजी को बुलाकर सकरूण वाणी कहने लगीं।।१६।।

शीघ्र कृष्णदासे गिया कराह भोजन।
एइ लह प्रसाद थालि कर समर्पण।।
मोर नामे कलंक ना करह रटन।
ब्रजेते अभुक्त नाहि रहे कोनजन।।
ए वाक्य राखिते सत्य करह गमन।
आज्ञा पाञा अनुराधा चलिल तखन।।१७।।

भावसार– शीघ्र कृष्णदास को जाकर भोजन कराओ लो यह प्रसाद थाली उसे देना। मेरे नाम में कलंक न लगवाओ। ब्रज में कोई भी भूखा नहीं रहेगा। इस बात को सत्य करने के लिये शीघ्र जाओ। आज्ञा पाकर राधिका की प्रिय सखी ललिता उन बाबा के पास आयीं।।१७।।

दोमन वने कृष्णदास समीपे आसिल।
सम्बोधन करि तारे कहिते लागिल।।
बाबा प्रति कृपादृष्टि करि प्रदर्शन।
ब्रजवाला रूपे देवी दिल दरशन।।
ओहे बाबा प्रसाद लञा करह ग्रहण।
तव दुःख हेरि माता करिल प्रेरण।।१८।।

भावसार– चलकर वे दोमन वन में कृष्णदास के पास पधारीं। सम्बोधन करके उनको बोलने लगीं बाबा प्रति कृपादृष्टि करने के लिये ब्रज बालिका के रूप में उनको दर्शन दिया और बोलीं– ओ बाबा! प्रसाद लेकर ग्रहण करो। तुम्हारा दुःख देखकर माता ने भेजा है।।१८।।

मृत संजीवनी वाक्य करिया श्रवण।
उल्लासे बाबार चित्त हइल पूरण।।
प्रसाद सौगन्धे देह सवल हइल।
प्रसाद ग्रहणे दिव्य शक्ति उपजिल।।
रजेते माजिया पात्र कैल समर्पण।
ललिता बाबार प्रति वलेन तखन।।१६।।

भावसार– मृत संजीवनी वाक्य ग्रहण करके उल्लास पूर्वक बाबा का चित्त प्रेम पूर्ण हुआ और प्रसाद की सुगन्ध से देह प्रबल हो गया। प्रसाद ग्रहण मात्र से उनमें दिव्य शक्ति आ गई। उन्होंने रज में पात्र को माजकर लाली को दिया। अब, ललिता बाबा से बोलने लगीं।।१६।।

कि कारणे भिक्षा लागि ना कर गमने।
बाबा कहे दृष्टिहीन याइव केमने।।
तेंह कहे दृष्टि होले करिवे गमन।
बाबा कहे केन नाहि करिव गमन।।
बालिका कहये माता पाठाल अंजन।
एवे तव चोखे मुइ करिव अर्पण।।२०।।

भावसार– बाबा! भिक्षा के लिये क्यों नहीं जाते हो? बाबा बोले– दृष्टिहीन हो गया हूँ कैसे जाऊँ? वे बोलने लगीं– अच्छा, दृष्टि मिल जाये तो जाओगे? बाबा बोला क्यों नहीं जाऊँगा? तब बालिका बोलीं– माता ने अंजन भेजा है। अब मैं आपकी आँखों में अंजन लगाऊँगी।।२०।।

एक घण्टा मुदि राख आपन नयन।
तवे दृष्टि शक्ति पावे खुलिले नयन।।
एत कहि दक्षिण चोखे कि येन लागाल।
वाम चक्षु स्पर्श मात्रे बाबा ताकाइल।।
किन्तु थाली बालिकाय ना पेल दर्शन।
अलौकिक गन्धेते हवे प्राण मन।।२१।।

भावसार– एक घण्टे तक नयन बंद करके रखना। तब आँख खोलने पर दृष्टि शक्ति पा जाओगे। इतना कहकर उन्होंने दांये चक्षु में अंजन लगाया बायें चक्षु स्पर्श मात्र से बाबा ने जब देखा तो थाली और बालिका का दर्शन नहीं पाया। अलौकिक गन्ध में प्राण मन भर गया।।२१।।

कारण निर्णये बाबा करिया चिन्तन।
तिनदिन पडि रहे प्रेमाकुल मन।।
तृतीय दिवसे तन्द्रावेशे दरशन।
बाबारे डाकिया प्यारी वलेन वचन।।
कि लागि वेदना एत करिछ सहन।
किवा भय तुमि मोर हैले निजजन।।२२।।

भावसार– कौन अयाचित कृपा कर गया– ऐसा सोचते हुए बाबा तीन दिन प्रेमाकुल मन से पड़े रहे। तीसरे दिन तन्द्रावेश में कृष्णप्रिया राधिका बोलने लगी– तुम किस कारण इतना दुःख पा रहे हो? तुम्हें क्या भय है? तुम मेरी दासी हो गयी हो।।२२।।

मदभिन्ना ललिता तोमा चक्षुदान कैल।
सेई संगे सर्व शक्ति संचार करिल।।
निश्चिन्तिते गोवर्द्धने करह गमन।
शिष्टगणे कराओ भजन शिक्षण।।
सहज भजन पथ कर प्रदर्शन।
एत कहि श्रीराधिका अन्तर्हित हन।।२३।।

भावसार– मुझसे अभिन्न ललिता ने तुम्हें चक्षु दान किया है साथ ही साथ तुम्हें सर्वशक्ति संचार की है। अब निश्चिन्त होकर गोवर्धन जाओ और श्रद्धालु लोगों को भजन शिक्षा दो और सरल भजन पथ का प्रदर्शन करो। इतना कहकर श्रीमती राधिका अन्तर्ध्यान हो गयीं।।२३।।

श्रीराधा दर्शने बाबार दिव्य भाव हैल।
सात्विक विकारे बहु क्षण अवसन्न रैल।।
तत्परे उठि बाबा करिल गमन।
प्रेमे ढुलि ढुलि गोवर्धने आगमन।।
चकलेश्वरे आसि बाबा कैल अवस्थान।
श्रीमतीर वाक्य स्मरि आकुल परान।।२४।।

भावसार– श्रीराधिका के दर्शन से बाबा का दिव्य भाव हो गया। सात्त्विक विकार में बहुत समय तक अचेतन रहे। तत्पश्चात् उठकर गमन किये। प्रेम में ढुलमुल होते हुए गोवर्धन आये और चकलेश्वर में आकर रह गये। श्रीराधिकाजी की वाणी स्मरण कर व्याकुल मन थे।।२४।।

गोस्वामी ग्रंथ आस्वादिते हैल तार मन।
संस्कृत नाहि शिक्षा ताइ खेद मन।।
कोन एक वैष्णव स्थाने करिया गमन।
करे हरिनामामृत व्याकरण अध्ययन।।
ताहाते समस्या एक उदय हइल।
अध्ययने भजन विघ्न उपाय चिन्तिल।।२५।।

भावसार– अब रूप गोस्वामी आदि षडगोस्वामी गण के ग्रंथ आस्वादन करने की इच्छा हुई। संस्कृत नहीं पढ़े थे इसलिये दुःख हुआ। एक वैष्णव के पास जाकर हरिनामामृत व्याकरण पढ़ने लगे इससे भजन में विघ्न होने लगा।।२५।।

उभय संकटे हेरि हञा खेद मन।
संकल्प मानस गंगाय त्यजिते जीवन।।
चित्तेर उद्वेगे निशि यापन करिल।
शेष राते कुटीर पाशे के येन डाकिल।।
कुटीर वाहिरे आसि करे दरशन।
कन्था करंगधारी गोस्वामी सनातन।।२६।।

भावसार– इससे बाबा संकट में पड़कर दुःखी मन से मानसीगंगा में शरीर छोड़ने की इच्छा हुई। चित्त के उद्वेग से रात बिताई। शेष रात्रि में कुटीर के पास जैसे किसी ने बुलाया हो। कुटी के बाहर आकर उन्होंने दर्शन किया कि कंथा करंगधारी गोस्वामी सनातन थे।।२६।।

दिव्य रूपा श्रीललिता सह आगमन।
हेरि दोंहार पादपद्मे पड़िल तखन।।
पदप्रान्ते हेरि स्नेहे गोसाँई सनातन।
शिरे करे समर्पिया जिज्ञासे वचन।।
वेश आछत माधुकुरी हयत मिलन।
ताते उदर तव हयत पूरण।।२७।।

भावसार– वे श्रीराधिका की प्रिय सखी श्रीललिताजी के साथ आये थे। दोनों का समागम देखकर बाबा उनके चरणों में पड़ गये। चरणों में पड़ा देखकर सनातन गोस्वामी ने स्नेहपूर्वक उनके मस्तक पर हाथ फेरा और जिज्ञासा की– कुशल हो तो, माधुकुरी ठीक से मिलती है? उससे पूर्त्ति हो जाती है।।२७।।

तदुत्तरे सिद्ध बाबा साश्रु लोचन।
हाँ प्रभो वलि कहे गद्गद् वचन।।
तवेत स्वप्नेहे कहे गोसाँई सनातन।
अनन्त असीम हय यत शास्त्र गण।।
यार यत दूर हय ताहे अधिकार।
ततदूर यथेष्ट हय पक्षेते ताहार।।२८।।

भावसार– उत्तर में बाबा के नयनों में अश्रु आ गये। 'हाँ प्रभो' बोलते हुए गद्गद् वचन हो उठे। तब स्वप्न में सनातन गोस्वामी बोले– शास्त्रगण अनन्त और असीम हैं जिसका जितना दूर अधिकार है, उतनी दूर उसके समझ में आते हैं।।२८।।

तज्जन्य मरिते तोमा ना हवे एखन।
ए मत कुबुद्धि चित्ते ना कर कखन।।
तव द्वारे बहु कार्य साधित हइवे।
आमार आशीर्वाद सर्वशास्त्र स्फूर्ति पावे।।
तवेत ललितादेवी कैल आशीर्वाद।
आर ना करिह चित्ते एमत विषाद।।२९।।

भावसार– इसीलिये तुमको मरना नहीं होगा। इसप्रकार की कुबुद्धि चित्त में कभी मत लाओ। तुम्हारे द्वारा बहुत कार्य साबित होंगे। मेरे आशीर्वाद से तुम्हें सर्वशास्त्र स्फूर्त्ति पायेंगे। तब ललितादेवी ने आशीर्वाद किया और कहा– इसप्रकार चित्त में विशाद मत लाना।।२९।।

यखन स्मरिवे हृदे पावे दरशन।
तोमा द्वारे भजन मुद्रा हइवे प्रकटन।।
एत कहि दोंहे शिरे चरण अर्पिल।
बहुमत प्रबोधिया अन्तर्धान कैल।।
यद्यपि विरहे बाबा अत्यन्त अधीर।
तथापि समुद्रवत् हइल गम्भीर।।३०।।

भावसार– जब भी स्मरण करोगे हृदय में तुम दर्शन पाओगे। तुम्हारे द्वारा भजन की मुद्रा प्रकट होगी। इतना कहकर दोनों ने उनके सिर पर चरण अर्पण किया और बहु प्रकार से आशीर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गये। यद्यपि विरह में बाबा अत्यन्त अधीर हो रहे थे। फिर भी समुद्र के समान गम्भीर हो गये।।३०।।

दैवे दिग्विजयी एक ब्रजे आगमन।
दक्षिण देशीय पण्डित तैलंग ब्राह्मण।।
समकक्ष पण्डित ब्रजे ना करि दरशन।
राधाकुण्ड गोवर्धन कैल आगमन।।
मथुरा हइया तेंह गोवर्धन एल।

अग्रे सिद्ध बाबा पाशे उपनीत हैल।।३१।।

भावसार– दैवयोग से एक दिग्विजयी ब्रज में आया। वह दक्षिण देश का तैंलग ब्राह्मण था। उसने अपने समकक्ष पण्डित को ब्रज में न पाकर राधाकुण्ड आया। वह मथुरा से होता हुआ गोवर्धन आया था और सिद्ध बाबा के पास आ पहुँचा।।३१।।

भजनेर विघ्न हवे जानिया तखन।
नाना वाक्य छले बाबा करये वञ्चन।।
से स्थान त्यजिते पण्डितेर नाहि मन।
खेदे कहे नाहि हेन करे आलापन।।
वृन्दावने पण्डित बहु करिया श्रवण।
आसिलाम सवा प्रति करिते मिलन।।३२।।

भावसार– वृथा वाक्यालाप से भजन में विघ्न होगा जानकर नाना छलपूर्वक बाबा टालने लगे। किन्तु उस स्थान पर वह पण्डित अड़ा रहा और दुःख प्रकाश करने लगा कि वृन्दावन में बड़े पण्डित हैं जानकर मैं आया सबसे मिलने।।३२।।

हेन नाहि हेरि शुद्ध श्रुति उच्चारय।
वाक्य शुनि सिद्ध बाबा पण्डिते कहय।।
आपनार सम नाहि वेद परायण।
शुनाञा कृतार्थ कर सामवेद वचन।।
तवे सुललित स्वरे तेंह पाठ कैल।
सिद्ध बाबा तिन स्थाने भूल निरूपिल।।३३।।

भावसार– ऐसा कोई नहीं दिखा जो शुद्ध श्रुति उच्चारण कर सके। सुनकर सिद्ध बाबा बोले– आपके समान कोई वेद परायण नहीं है। कृपया सामवेद वाणी सुनाकर हमें कृतार्थ करो। तब सुललित स्वर में उसने पाठ किया। सिद्ध बाबा

ने तीन स्थानों पर भूल निकाली।।३३।।

पण्डित कहे इहापेक्षा शुद्ध उच्चारण।
भारत भूमिते नाहि शुनि हेन जन।।
आपनार सामर्थ थाके कराह श्रवण।
शुनि सिद्ध बाबा प्रेमे करये पठन।।
बाबार सुललित कण्ठे शुनि उच्चारण।
साष्टांग बाबार पदे पढ़ये ब्राह्मण।।३४।।

भावसार– पण्डित ने कहा इससे अधिक शुद्ध उच्चारण कोई कर सकता है भारत में मैं नहीं जानता था? आपका सामर्थ्य है तो श्रवण कराइये। सुनकर सिद्ध बाबा प्रेमपूर्वक पाठ करने लगे। बाबा का सुललित कण्ठ से उच्चारण सुनकर वह पण्डित साष्टांग होकर बाबा के श्रीचरणों में गिर गया।।३४।।

सविनये बाबा प्रति वलये वचन।
जागतिक विद्या तव ना हय कखन।।
तोमा सह कक्षा करे नाहि हेन जन।
एत कहि पण्डित देशे करिल गमन।।
हरिनामामृत व्याकरण करान पठन।
प्रतिसूत्रे भजन मुद्रा करि उद्‌घाटन।।३५।।

भावसार– और विनयपूर्वक बाबा से बोलने लगा– बाबा! आपकी विद्या जागतिक नहीं है, आपके साथ शास्त्रार्थ करे ऐसा कोई भी जन नहीं है। इतना कहकर वह पण्डित अपने देश चला गया। इधर हरिनामामृत व्याकरण के प्रतिसूत्र में भजन मुद्रा का उद्‌घाटन करके शिष्यवर्ग को सिखाने लगे।।३५।।

नित्यलीला स्थापन करि कराय शिक्षण।
अध्ययने भजन शिक्षा लभे सर्वजन।।

तत्काले राधाकुण्डे वैसे एकजन।
पण्डित जगदानन्द प्रेमिक सुजन।।
बाबार आनुमानिक शक्ति करि दर्शन।
ताहार चरित कत करित प्रसंशन।।३६।।

भावसार– वे व्याकरण शास्त्र में नित्यलीला का स्थापन करके सिखाते। जिससे भजन और अध्ययन शिष्यवर्ग को दोनों ही मिल जाते। उस समय राधाकुण्ड में एक भक्त रहता उसका नाम जगदानन्द पण्डित था। वह प्रेमी सज्जन व्यक्ति था। बाबा के अनुमान की शक्ति को दर्शन करके बाबा की महिमा का गान करने लगा।।३६।।

बाबा यवे कुण्डस्नाने करे आगमन।
इष्टगोष्ठी करलह करये दुइजन।।
दुहुँ भावे दुहुँजन प्रेमाकुल मन।
दोहाँ गुणे दुहुँ जन बद्ध अनुक्षण।।
भजन अनुकूल ग्रंथ करि आनयन।
योग्य व्यक्ति सहायतार करे आस्वादन।।३७।।

भावसार– बाबा जब कुण्डस्नान के लिये आगमन करते तो दोनों मिलकर इष्टगोष्ठी करते, परस्पर से मिलकर दोनों प्रेमाकुल मन हो उठते। दोनों के गुण से दोनोंजन सर्व समय बद्ध थे। भजन के अनुकूल ग्रंथ मंगवाकर योग्य व्यक्तियों की सहायता के लिये आस्वादन करते।।३७।।

रागानुगा भजनेते आविष्ट तनुमन।
निश्चले वसिया प्रेमे करिये श्रवण।।
नयनेते अश्रु बहे श्लेष्मा नासिकाय।
मुखेते वहये लाला प्रेमे मूर्च्छा याय।।
दुइ पार्श्वे दुइ जन मुछाइते नारे।
अपूर्व प्रेमेर भावके वर्णिते पारे।।३८।।

भावसार– रागानुगा भजन में उनका तन, मन आविष्ट था। निश्चल प्रेमपूर्वक बैठकर श्रवण करते, नयनों से अश्रु बहते, नासिका से श्लेष्मा गिरती, मुँह से लार बहती और प्रेमपूर्वक मूर्च्छित हो जाते। दोनों तरफ दो जन उनके लार को पौंछ नहीं पाते थे। बाबा के अपूर्व प्रेम भाव को कौन वर्णन कर सकता है?।।३८।।

ब्रजेर वैष्णव यत करि आगमन।
बाबार समीपे करे भजन शिक्षण।।
यद्यपि भजनाविष्ट सिद्ध वाक्य मन।
तथापि जिज्ञासिले केह कराय शिक्षण।।
भानुखोरे वेशे कृष्णदास महाजन।
ताँहार मिलने वाञ्छा सिद्ध बाबा मन।।३९।।

भावसार– ब्रज के वैष्णव आकर बाबा से भजन सीखते यद्यपि बाबा का मन भजनाविष्ट और सिद्ध था। तथापि जिज्ञासा करने पर वे प्रीतिपूर्वक शिक्षा देते थे। भानुखोर में एक कृष्णदास महाजन रहते। उनसे मिलने की सिद्ध बाबा की इच्छा थी।।३९।।

अनुगत वैष्णवगणे वलये वचन।
कृपा करि वैष्णव सब करे आगमन।।
आशंका अपराध बुझि हैल तार स्थाने।
मानस गंगाय आसे कि ना जिज्ञासे वचने।।
वैष्णवगण कहे माझे माझे आगमन।
बाबा कहे पाइले तारे करावे मिलन।।४०।।

भावसार– अनुगत वैष्णव जनों को बाबा ने बोला कि वह वैष्णव क्यों नहीं आता है? लगता है हमारा कोई अपराध हो गया है? मानसीगंगा में वो आता है कि नहीं! वैष्णवों ने बोला– बाबा! वह बीच–बीच में आता है। बाबा बोले– मिले तो उनके दर्शन कराना।।४०।।

दैवे कृष्णदास यवे स्नेहेते आसिल।
से काले वैष्णवगण बाबारे मिलिल।।
मित्र बलि सम्बोधिया जिज्ञासे वचन।
अपराध कोन बुझि करिल चरण।।
कृष्णदास सविनये बलेन वचन।
मोर स्थाने अपराध किसेर कारण।।४१।।

भावसार– दैवयोग से कृष्णदास जब आया तो वैष्णव गणों ने बाबा से उसे मिलाया। बाबा ने उन्हें मित्र बोलकर उन्हें सम्बोधन किया और जिज्ञासा की आपके चरणों में हमारा क्या अपराध हुआ? तो कृष्णदास बोला– बाबा! आपका मेरे प्रति अपराध किस कारण?।।४१।।

भजने हइले विघ्न करे आगमन।
आपनार प्रसादे विघ्न ना कर कखन।।
वृथा उद्वेग दिते नाहि करि आगमन।
शुनि सिद्ध बाबा हैल अति प्रीत मन।।
'गोविन्दलीलामृतादि' संग्रह करिया।
अष्टकालीन लीला रचे महानन्द पाञा।।४२।।

भावसार– भजन में यदि विघ्न हो तो जिज्ञासा करने आता। आपके कृपा प्रसाद से भजन कुशल है तो वृथा उद्वेग न देने के लिये ही नहीं आता। सिद्ध बाबा यह सुनकर बड़े प्रसन्न हुये। तब बाबा जगत् हित के लिये गोविन्दलीलामृतादि ग्रंथ संग्रह करके अष्टकालीन लीला ध्यानपूर्वक रचना करने लगे।।४२।।

श्रीगौर–गोविन्द लीलार स्मरण घटन।
रूचिया वैष्णवगणे कराय शिक्षण।।
नित्य आसि यारा करे भजन शिक्षण।
प्रति रात्रे एकत्रेते करिये मिलन।।
भूल भ्रान्ति शुनि सवार करये शोधन।

हेनमते भजन शिक्षा करे प्रवर्तन।।४३।।

भावसार- श्रीगौरगोविन्दलीला का स्मरण श्रद्धालु वैष्णवों को बाबा कराते। नित्य आकर वैष्णवगण भजन-शिक्षा करते। हर रात्रि में वे एकसाथ आकर मिलते। बाबा सबकी भूल भ्रांति शोधन करते। इसप्रकार बाबा वैष्णवों को शिक्षा दे रहे थे।।४३।।

एकदा कान्दिया एक वैष्णव सुजन।
बाबा पाशे निवेदय आपन भजन।।
आजि मोर किछु नाहि हइल भजन।
प्राते प्राणेश्वरी मोरे दिल दरशन।।
दक्षिण हस्ते अलंकार यवे पराइल।
सेरूप माधुरी कभु भूलिते नारिल।।४४।।

भावसार- एकबार रोते-रोते एक वैष्णव भक्त अपने भजन के विषय में बोला- बाबा! आज मेरा कुछ भी भजन नहीं हुआ। प्रातःकाल में प्राणेश्वरी ने मुझे दर्शन दिया। दक्षिण हाथ में जब मैंने स्वामिनी को अलंकार पहनाया तो उनकी रूपमाधुरी में ही मैं डूब गया।।४४।।

सारा दिन नाहि पारि सराइते मन।
शुनि बाबा कहे तव यथार्थ भजन।।
एमत उत्साह दिया कराय भजन।
परम विचित्र बाबार चरित्र कथन।।
गौरांग स्मरण लीला कराते शिक्षण।
सिद्ध बाबा धरा माझे कैल आगमन।।४५।।

भावसार- सारा दिन उनके श्रीचरणों से मन हटा नहीं पाया। सुनकर बाबा प्रसन्न हुये और बोले- तुम्हारा यथार्थ भजन हुआ। इसप्रकार बाबा सब वैष्णवों का उत्साह वर्धन करते और शिक्षा देते। परम विचित्र बाबा का चरित्र

है। बाबा गौरांग स्मरण लीला भी शिक्षा देते। बाबा का इस पृथ्वी पर आगमन लोक मंगल के लिये ही हुआ था।।४५।।

'भजन पद्धति गुटिका' नामे ख्यात हैल।
द्वितीय कृष्णदासजी ताहा बहु प्रचारिल।।
'भावनासार संग्रह' 'प्रार्थनामृत तरंगिणी'।
'साधनामृत चन्द्रिका पद्धति' अमृतेर खनि।।
आपनि रचिया बाबा कैल प्रवर्तन।
जय जय सिद्ध बाबा पतित पावन।।४६।।

भावसार– भजन पद्धति गुटिका नाम से बाबा का ग्रंथ विख्यात हो गया। द्वितीय कृष्णदास बाबा ने उनका बहुत प्रचार किया। भावनासारसंग्रह, प्रार्थनामृत तरंगिणी, साधनामृत चन्द्रिका पद्यति ये अमृत की खान ही हैं। बाबा ने स्वये रचना करके इनका प्रचार किया। जय सिद्ध बाबा पतित पावन।।४६।।

यादेर उपदेश बाबा करिल अर्पण।
सकलेइ हैल सिद्ध ख्यात सर्वजन।।४७।।

भावसार– जिन्होंने बाबा से उपदेश प्राप्त किया और उनकी आज्ञा से भजन किया वे सभी सिद्ध हो गये।।४७।।

सर्वेषां भक्ति शास्त्राणां पद्यानि तु स्वतुष्टये,
संग्रहितानि चारूणि विज्ञेयानि मनिषिभिः।
रचिता कृष्णदासेन गोवर्धन निवासिना,
केनचिदिति मुग्धेन साधनामृत चन्द्रिका।।

समस्त भक्ति शास्त्रों से पद्यादि स्व सन्तुष्टि के लिये जो मनिषिगणों ने संग्रहीत की हैं उन्हें कृष्णदास गोवर्धन निवासी ने साधनामृत चन्द्रिका के रूप में वर्णन किया।

खवानाश्वैक शाके चैत्रे गोवर्द्धनान्तरे।
द्वादश्यां सौम्य घस्रेऽहयं ग्रंथः सम्पूर्णतामगात्।।

१३५० शकाब्द में चैत्र मास की द्वादशी बुधवार के दिन मानसी गंगा में बैठकर इस ग्रंथ की पूर्णता की।

सतेरशत पञ्चाश शकाब्द गणन।
चैत्रमास द्वादशी बुधवार कथन।।
मानस गंगाय वसि ग्रंथ समाधिल।
'साधनामृतचन्द्रिका' नाम ये स्थापिल।।
एकदा मानस गंगाय बाबा ये डुबिल।
ग्रंथावलि लञा वुके भासिया उठिल।।४८।।

भावसार– इस ग्रंथ का नाम 'साधनामृतचन्द्रिका' रखा गया। एकबार मानसीगंगा में बाबा ने डुबकी लगाई। ग्रंथावली लेकर बाबा बाहर आये।।४८।।

विश्वनाथ चक्रवर्तीर स्वहस्त लिखन।
जल होते तुले बाबा करिय यतन।।
एकदा होलि लीला बाबा करिया चिन्तन।
सिद्धदेहे प्रियाजीर सेवाय मगन।।
आवीर कुंकुम गुलाल अंगेते लागिल।
तत्रात्य वैष्णवगण अंगे गन्ध्य पाइल।।४९।।

भावसार– विश्वनाथ चक्रवर्तीपादजी के स्वहस्त लिखे ग्रंथ बाबा जल से यत्नपूर्वक उठाने लगे। एकबार बाबा होली लीला के चिन्तन में थे। उस समय वे सिद्ध देह से प्रियाजी की सेवा में मग्न थे, वहाँ पर वैष्णवगण ने तब इनके शरीर में आवीर कुंकुम गुलाल अंग में लगे मिले।।४९।।

एकदा जलकेलि रंगे श्रीप्रियाप्रितम।
मानस गंगार तीरेर कैल आगमन।।
ललिता विशाखा भुया करिते लागिल।
श्रीरूप मञ्जरी आदि सर्व समाधिल।।
आतार शिशिर हस्ते बाबा दाँडाइल।

दोहाँकार लीला हेरि स्तम्भ प्राय हैल।।५०।।

भावसार– एकबार जलकेलि खेलते–खेलते प्रिया–प्रियतम मानसगंगा के तट पर आये। ललिता–विशाखा आदि सखियाँ उन्हें पंखा करने लगीं। श्रीरूप मञ्जरी आदि सब सेवाओं का समाधान करने लगीं। उस समय बाबा महाराज मञ्जरी देह से वहीं पर इत्र की शीशी लेकर खड़े थे कि दोनों की मधुर लीला दर्शन करके स्तम्भ प्राय हो गये।।५०।।

आवेशे हस्तेर शिशि भूमिते पड़िला।
सौरभेते चतुर्दिक आमोदित हैल।।
स्नानार्थी वैष्णवगण जिज्ञासे कारण।
बाह्य पाञा बाबा करे दैन्य निवेदन।।
सेवार अयोग्य मुइ अपराधी जन।
जड़ताय सेवा द्रव्य विनष्ट एखन।।५१।।

भावसार– आवेश में उनके हस्त से शीशी भूमि पर गिर पड़ी। उसकी सुगन्ध चारों ओर फैल गई। स्नान के लिये आये वैष्णवजन इसका कारण जानने की जिज्ञासा किये। बाह्य ज्ञान होने पर बाबा दैन्य प्रकाश किये। वे बोले– मैं सेवा के अयोग्य और अपराधी हूँ, इसीलिये मेरी जड़ता के कारण सेवा द्रव्य विनष्ट हो गया।।५१।।

ताहार सौगन्धे चतुर्दिके आमोदित।
शुनि अनुरागीजन हैल पुलकित।।
बाबार चरित्र गाँथा अपूर्व कथन।
आजियो स्मरये यत वैष्णवेर गण।।
एकदा करोया हस्ते बाबा स्नाने गेल।
जलकेलि हेरि मानस गंगाय पड़िल।।५२।।

भावसार– उसकी सुगन्ध से चारों ओर सुगन्धित हो रहा है। अनुरागीजन सुनकर पुलकित हो उठे। ऐसी बाबा

की चरित्र की गाथा अपूर्व थी। एकबार बाबा लोटा लेकर स्नान के लिये गये। उन्होंने मानसीगंगा में प्रिया-प्रियतम की जलकेलि देखकर अचेतन होकर गिर पड़े।।५२।।

से कालेते सेथा नाहि छिल कोन जन।
बाबाके ना हेरि सबे व्याकुलित मन।।
इतस्ततः सेवकगण करये संधान।
सप्तदिन गेल नाहि पाय कोन स्थान।।
सप्त दिन अन्ते बाबा दिल दरशन।
करोया हस्तेते तीरे उठिल तखन।।५३।।

भावसार- उस समय वहाँ पर कोई नहीं था। इधर बाबा को न देखकर सभी व्याकुलित हो उठे और इधर-उधर खोजने लगे। सात दिनों तक उनकी कोई खबर नहीं मिली। सात दिनों के अंत में बाबा ने दर्शन दिये। वही लोटा उनके हाथ में था और वे तट से उठे।।५३।।

ए व्यापारे सविस्मित हञा सेवकगण।
सविनये बाबा पाशे करे निवेदन।।
बाबा कहे स्नान सारि करि आगमन।
सप्त दिन कहे सबे ए कोन कारण।।
यशोवंत सिंह भरतपुरेर राजन।
जयपुरेर सेनापति हञा करे रण।।५४।।

भावसार- इस विषय में सविस्मित होकर सेवकगण सविनय बाबा से निवेदन करने लगे तो बाबा ने कहा- अभी तो स्नान करने के लिये गया और अभी आ गया सात दिन कैसे हो गये? एकबार भरतपुर के राजा यशोवंत सिंह जयपुर के सेनापति होकर युद्ध कर रहे थे।।५४।।

दिल्लीर बादशा स्थाने पराभूत हैल।
दुइबार हारि दुःखे बदरिकाश्रमे गेल।।

कोन सिद्ध महात्मार लइल स्मरण।
तेंह कहे ध्रुव सम तोमार साधन।।
एवे भजन काल तव नहे उपनीत।
शुनि यशोवंत सिंह चित्ते निज चित्त।।५५।।

भावसार– वे दिल्ली के बादशाह से हार गये। दो बार युद्ध में हारकर वे बद्रिका आश्रम चले गये और किसी सिद्ध महात्मा की शरण ली। उन्होंने बोला– ध्रुव के समान तुम्हारा साधन है। किन्तु अभी भजनकाल उपस्थित नहीं हुआ। यशोवंत सिंह उनकी बात सुनकर कुछ विचार किये।।५५।।

फिरिया आसिया पुनः युद्ध आरम्भिल।
बादशाहे जिनि बहु धन ये लुटिल।।
जयपुर राज ताहा ना कैल ग्रहण।
तवे यशोवंत सिंह ब्रजे आगमन।।
सिद्ध बाबा पाशे आसि करे निवेदन।
तेंह कहे ब्रजजने कर वितरण।।५६।।

भावसार– फिर आकर संकल्प के साथ पुनः युद्ध किया। बादशाह को जीतकर उसने बहुत धन संग्रह किया। किन्तु जयपुर राज उन्होंने ग्रहण नहीं किया। तब यशोवंत सिंह ब्रज में आये और सिद्ध बाबा के पास आकर निवेदन किये कि– बाबा! ये धन ब्रजवासियों को वितरण कीजिये।।५६।।

माधुकुरी बाबाजी मोर किवा प्रयोजन।
शुनि यशोवंत देय यत ब्रजजन।।
शेषे बाबा पाशे आसि करे निवेदन।
कृतार्थ करह किछु करिया ग्रहण।।
बाबा कहे रानी तव आछे बहुजन।
सर्व प्रियतमा जने कर आनयन।।५७।।

भावसार– बाबा बोले मैं माधुकुरी करने वाला बाबा हूँ मेरा अर्थ से क्या प्रयोजन? सुनकर यशोवंत सिंह ने स्वयं ब्रजवासियों को दानकर अन्तिम में बाबा के पास आकर प्रार्थना की। बाबा कुछ ग्रहण करके मुझे कृतार्थ कीजिये। बाबा ने कहा तुम्हारे पास बहुत रानियाँ हैं उनमें से जो बहुत सुन्दर हो उसे लाओ।।५७।।

आज्ञा मात्र लछमिरे तथा आनाइल।
सुसज्जित करि बाबा पाशे पाठाइल।।
भजनावेशेते बाबा वसिया निर्जन।
से काले लक्ष्मीदेवी करये गमन।।
कंकण किंकिणी नूपुरेर कलतान।
विस्फारित नेत्रेहेरि हाराइल ज्ञान।।५८।।

भावसार– आज्ञा मात्र से उसने अपनी रानी लक्ष्मी को वहाँ बुलाया और सुसज्जित करके बाबा के पास भेजा। उस समय बाबा भजन के आवेश में एकान्त में बैठे थे। उसी समय लक्ष्मी देवी आयीं। उनके चरणों में कंकण और किंकिणी बज रहे थे। बाबा दर्शन करके अज्ञान हो गये।।५८।।

दरपणेर हाथ दूरे रानी दाँड़ाइल।
एइभावे एक प्रहर अतीत हइल।।
परदा खुलिया रानी दाँडाइया रहिल।
दासीद्वारे डाकाइया राजाके देखाल।।
बाबार भाव हेरि राजा किञ्चित् बूझिल।
भाव राज्येर ज्ञानहीने संशय जन्मिल।।५९।।

भावसार– रानी के हाथ में दर्पण था और वे दूर खड़ीं थीं। एक भाव में वे तीन घण्टे तक खड़ी रहीं। परदा खोलकर रानी खड़ी ही रहीं। दासी के द्वारा राजा को बुलाकर बाबा को दिखाया। बाबा का भाव देखकर राजा किञ्चित् ही समझ पाया और भाव राज्य में अज्ञानता के

कारण उसका कुछ संशय भी जन्मा।।५६।।

हेनमते तिनदिन अतीत हइल।
राजा तथा तिनदिन अपनि रहिल।।
बाह्य पाञा बाबा यशोवन्तेरे डाकिल।
शिरे हस्त समर्पिया आशीष करिल।।
तखन बाबार भाव बुझिल राजन।
सामान्य ध्वनिते बाबार हैल दिव्यमन।।६०।।

भावसार– इसप्रकार तीन दिन व्यतीत हो गये। राजा वहीं तीन दिन रुक रहे। बाह्य आवेश में आकर बाबा ने राजा को बुलाया और सिर पर हाथ रखकर आशीष दी। तब बाबा का भाव राजा समझ पाया कि बाबा का दिव्य मन हुआ था।।६०।।

राधार कंकण ध्वनि करि अनुमान।
प्रेमेते विभोर हञा हाराइल ज्ञान।।
तदवधि रानी महाभक्तिवती हैल।
बहु अर्थ लञा राधाकुण्डेते आसिल।।
सविनये वैष्णवगणे करे निवेदन।
सवे कहे राज अन्न ना करि स्पर्शन।।६१।।

भावसार– रानी के बजते कंकण की ध्वनि को बाबा ने राधारानी के कंकण की ध्वनि का अनुमान कर प्रेम में विभोर होकर ज्ञानहारा हो गये थे। इस दौरान बाबा का दर्शन आदि कर रानी महाभक्तिवती हो गई और बहुत अर्थ लाकर राधाकुण्ड में आयीं और सविनय वैष्णवों से अर्थ लेने की प्रार्थना करने लगीं। सबने बोला हम राजान्न ग्रहण नहीं करते।।६१।।

काँदिया कातरे रानी करे निवेदन।
कृपा कर राजकुले ना हय जनम।।

तार प्रेम हेरि कहे श्रीवैष्णवगण।
गाभीर गोबरे घुटे करह एखन।।
ताहा वेचि उपार्जित हवे येई धन।
सेई धने हवे तव अभीष्ट पूरण।।६२।।

भावसार– रोते-रोते रानी बोलने लगीं– हे प्रभो! कृपा करो, जैसे अब राजकुल में जन्म न हो। उसका प्रेम देखकर वैष्णवगण बोले कि गाय के गोबर के ऊपला बनाओ उसको बेचकर जो धन होगा उससे आपका इच्छा पूर्ण होगी।।६२।।

आज्ञा पाञा रानी ताहा कैल आचरण।
अद्यापि सेइ अर्थ पाय वैष्णवगण।।
बाबार प्रसादे रानीर हेन भाव हैल।
गौरप्रेम पारसमणि बाबार ख्यात हैल।।
हेनमते वैभव बहु प्रकाश करिल।
कराइया भजन शिक्षा जगत तारिल।।६३।।

भावसार– आज्ञा पाकर रानी ने वैसा ही किया। आज भी उस अर्थ से वैष्णवों की सेवा होती है। बाबा की कृपा प्रसाद से रानी का ऐसा भाव हुआ। गौर प्रेम पारसमणि रूप में बाबा की ख्याति हो गई। इसप्रकार बहुत वैभव प्रकाश किया और भजन शिक्षा देकर जगत का उद्धार किया।।६३।।

दैवे आश्विनी चतुर्थी तिथि आगमन।
ए देह छाड़िया कैल लीलाते गमन।।
अद्यापि गोवर्द्धने समाधि विद्यमान।
मानस गंगाय पडे हेरे भाग्यवान।।
सिद्ध बाबार प्रेमगुण अपूर्व कथन।
श्रवणे त्रिताप ज्वाला हय विमोचन।।६४।।

भावसार– दैवयोग से आश्विनी चतुर्थी तिथि का आगमन हुआ। इस दिन बाबा देह छोड़कर नित्यलीला में

गमन किये। आज भी उनकी समाधि मानसीगंगा में विद्यमान है। सिद्ध बाबा के प्रेम की महिमा अपूर्व थी जिसके श्रवण से त्रिताप ज्वाला शांत हो जाती है।।६४।।

वैराग्येर पराकाष्ठा प्रेममूर्त्ति मत्त।
साधन स्मरण लीलाय सदा अनुरक्त।।
स्मरण मनन पथेर प्रदर्शक हञा।
राखिल अक्षय कीर्ति साधक हियाय।।
अद्यापि साधक करे स्मरण मनन।
सिद्ध बाबार कृपा गुण करिया स्मरण।।६५।।

भावसार– बाबा वैराग्य की पराकाष्ठा और प्रेम की मूर्त्ति थे। वे साधन स्मरण लीला में सदा अनुरक्त रहते। स्मरण मनन पथ के प्रदर्शक होकर साधकों के हृदय में अपनी अक्षय प्रीति स्थापित कर दी। आज भी साधक परम्परा से प्राप्त ज्ञान को ग्रहण करके धन्य होते हैं और बाबा की कृपा गुणों का स्मरण करते हैं।।६५।।

जय कृष्णदास बाबा पतित पावन।
वारेक करह दीने कृपा निरीक्षण।।
नाहि मोर निष्ठा भक्ति स्मरण मनने।
ब्रजगोपी आनुगत्य ना हय स्फुरणे।।
उपाय नाहिक देखि करि निवेदन।
'किशोरीरे' कर एवे कृपार भाजन।।६६।।

भावसार– श्रीकृष्णदास पतित पावन बाबा की जय हो! आप एकबार इस दीन पर कृपा करें। मेरी स्मरण मनन में निष्ठा नहीं है, ब्रजगोपी का आनुगत्य भी स्फुरण नहीं होता। उपाय न देकर आपके श्रीचरणों में प्रार्थना करता हूँ। मुझ किशोरी पर कृपा करके अपनी कृपा का पात्र बनाइये।।६६।।

१७. सिद्ध श्रील नित्यानन्द दास बाबाजी

जय जय प्रेम अवतार गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द प्रेमदानकारी।।
जय जय श्रीअद्वैत जय गदाधर।
जय जय श्रीवासादि गौर अनुचर।।
गोवर्धनेर सिद्ध बाबार श्रीकृष्णदास।
ताँहार द्वितीय शिष्य नित्यानन्द दास।।१।।

भावसार– प्रेमावतार गौरहरि की जय हो! प्रेमदानकारी श्रीनित्यानन्दप्रभु की जय हो! श्रीअद्वैतचन्द्र की जय हो! श्रीगदाधर पण्डित की जय हो! श्रीवासादि गौर के प्यारे भक्तों की जय हो! गोवर्धन के सिद्ध बाबा श्रीकृष्णदास के द्वितीय शिष्य हुए श्रीनित्यानन्द दास।।१।।

राढ़ीय ब्राह्मण कुल लभिया जनम।
गदाधर परिवारे दीक्षार ग्रहण।।
अधिक वयसे सिद्ध बाबार आश्रय।
मदन मोहन ठौरे भजने वसय।।
अद्यापि तथाय आसन आछे विद्यमान।
बहु वैष्णव भजन शिक्षा कैल ताँर स्थान।।२।।

भावसार– राढ़ीय ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर आपने गदाधर परिवार में दीक्षा ग्रहण की और अधिक उम्र में सिद्ध बाबा का आश्रय लिया और मदनमोहन ठौर में भजन के लिये वास किया। आज भी उनका वहाँ पर आसन विद्यमान है। बहुत वैष्णवजन आपसे शिक्षा लेकर धन्य हुये।।२।।

रागानुगीय सिद्ध ब्रजे वैसे यत जन।
ताँर मध्ये अद्वितीय कहे सर्वजन।।
किवा स्वप्न सुषुप्ति आर जागरण।
एक भावे सर्वकाल करये यापन।।

चेतने गभीर निष्पन्द सदा प्राण मन।
आहार विहारे अनुरोध करे शिष्यगण।।३।।

भावसार– रागानुगीय जितने भी सिद्ध वैष्णव ब्रज में थे उनमें आपको सभी अद्वितीय मानते। क्या स्वप्न क्या सुषुप्ति और जागरण? एक ही भाव में सब समय रहते। चेतना होने पर गंभीर निष्पन्दन प्राण मन रहता आहार विहार के लिये शिष्यगण सदा अनुरोध करते रहते।।३।।

निद्रोत्थित प्राय उठे समाधि हइते।
निद्रितावस्थाय भाव अद्‌भुत विहिते।।
हास्य प्रलाप रोदन करि दरशन।
लोकेर चित्ते बाबा बुझि करे जागरण।।
चेतन काले ये रूप करे आपना गोपन।
निद्राकाले गुप्त भाव हय प्रकाशन।।४।।

भावसार– निद्रा से उठकर प्रायः लगता मानो समाधि से उठे हों और निद्रित अवस्था में भी आपको अद्‌भुत भाव रहता। हास्य प्रलाप रोदन दर्शन करके लोग समझते कि बाबा जागरण कर रहे हैं। चेतनावस्था में बाबा अपने भाव को गोपन करते किन्तु निद्राकाल में यह भाव जाग्रत हो उठता।।४।।

सेवकगण भाव बूझि करये सेवन।
कखन निद्रित रहे कभु जागरण।।
अचिन्त्य महिमा ताँर अद्‌भुत कथन।
अद्‌भुत प्रभाव ताँर विदित भुवन।।
महा दैन्येर पराकाष्ठा प्रेमनिष्ठ मन।
गोस्वामीर नीति सदा करे आचरण।।५।।

भावसार– सेवकगण सदा उनका भाव जानकर उनके अनुकूल सेवा करते। कभी बाबा निद्रित रहते, कभी जाग्रत

रहते। बाबा की अचिन्त्य महिमा थी और अद्‌भुत प्रभाव जगत में व्याप्त हो गया। वे महादैन्य की पराकाष्ठा थे एवं उनका प्रेमनिष्ठ मन था। गोस्वामी गणों की नीति का ही आप सदा आचरण करते।।५।।

तृणादपि सुनीचेन वैष्णव लक्षण।
सर्वक्षण बाबा हृदे करे विचरण।।
केह दर्शनेते यदि करे आगमन।
दण्डवत् अग्रे बाबा करये तखन।।
एमनकि शिष्यई यदि करे आगमन।
तथापि करये बाबा निज आचरण।।६।।

भावसार– तृणादपि सुनीचेन यह वैष्णव का लक्षण है। यह दीनता का भाव बाबा के हृदय में सदा विराजमान रहता। कोई भी दर्शन के लिये यदि आता बाबा उसे पहले ही दण्डवत करते। इतना ही नहीं यदि उनका शिष्य भी आ जाता तथापि बाबा अपना आचरण नहीं छोड़ते।।६।।

केह यदि दैन्य वाक्य करे उच्चारण।
अमनि शुनिया बाबा करये तखन क्रन्दन।।
दैन्य वाक्ये बाबा यदि करये रोदन।
तवे ताँरे केह किछु ना वले वचन।।
कखनओ शिष्य एक कैल निवेदन।
मोरा शिष्य मोदेर केन हेन आचरण।।७।।

भावसार– कोई यदि दैन्य वाक्य उचारण करता तब बाबा सुनकर क्रन्दन करते। दैन्य वाक्य से बाबा यदि क्रन्दन करते तब कोई उन्हें कुछ नहीं बोलता। एकदिन एक शिष्य ने उन्हें निवेदन किया– बाबा! हम तो आपके शिष्य हैं आप इस तरह हमें दण्डवत–प्रणाम क्यों करते हैं?।।७।।

एतेक शुनिया बाबा वलेन तखन।

यतेक देखह सबे गौर परिजन।।
वैष्णव वन्दनाय वैष्णव रीतिर लक्षण।
आपने आचरि बाबा कराय शिक्षण।।८।।

भावसार– इतना सुनकर बाबा ने बोला– जितनी जगत में देखते हो वे सभी गौर के ही भक्त हैं। वैष्णव वन्दना में वैष्णव रीति का यही लक्षण है जिसे बाबा स्वयं आचरण करके जगत् को शिक्षा देते थे।।८।।

तथाहि–

हइयाछिन हइवेन प्रभुर यत दास।
सभार चरण वन्दौं दन्ते करि घास।।

प्रभु के जितने भी दास हुये हैं और होंगे उन सबके चरणों में वंदना दाँतों में तृण रखकर करता हूँ।

हयाछेन हवेन यत श्रीवैष्णवगण।
सवार गौरांग प्रिय पूज्य सर्व जन।।
तवे शिष्यगण ताते वाद नाहि याय।
शुद्धा भक्ति शिखाते बाबा हेन आचरय।।
बाबार दैन्येर वार्ता अपूर्व कथन।
परम अद्भुत ताहा ख्यात सर्वजन।।९।।

भावसार– जितने भी वैष्णव हुये हैं और होंगे सभी गौरांग के प्रिय हैं और पूज्य हैं। उससे शिष्यगण भी बाकी नहीं रहते। शुद्ध भक्त सिखाने के लिये बाबा ऐसा आचरण करते। बाबा की दैन्यता की कथा ही अपूर्व थी। वह परम अद्भुत थी और लोक विख्यात थी।।९।।

गौर शिरोमणि नामे एक महाजन।
बाबा स्थाने वेशाश्रय करिल ग्रहण।।
गुरु भ्राता बलरामदास महाशय।
ए कारणे बाबा प्रति असन्तुष्ट हय।।

झाडूमण्डले कैल महोत्सव आयोजन।
से काले बाबार नाहि कैल निमन्त्रण।।१०।।

भावसार– गौर शिरोमणि नाम के एक महाजन थे। उन्होंने बाबा से वेशाश्रय ग्रहण किया। उनके गुरुभ्राता बलरामदास महाशय थे। एक कारण से बाबा के प्रति असन्तुष्ट थे उन्होंने झाडूमण्डल महोत्सव का आयोजन किया; किन्तु बाबा को निमन्त्रण नहीं दिया।।१०।।

ब्रजेर महान्त यत तथाय आसिल।
बिना आमन्त्रणे बाबा उपनीत हैल।।
सगण सहित तथा करिल गमन।
हेरि बलराम बाबाय कहे सर्वजन।।
वार्ता पाञा वाहिरे तेंह कैल आगमन।
सिद्ध बाबा दण्डवत् करिल तखन।।११।।

भावसार– ब्रज के जितने महान्तगण थे वे सभी वहाँ आये और बाबा भी महोत्सव जानकर बगैर निमन्त्रण के ही चले आये और अपने भक्तों को भी साथ लाये। बलरामदास बाबा बाहर आकर वैष्णवों से बातचीत कर रहे थे। बाबा वार्ता पाकर ये बाहर आये और सिद्ध बाबा को दण्डवत् प्रणाम किया।।११।।

बलराम बाबा ताँरे आलिंगन कैल।
सम्भाषा करिया अभ्यन्तरे लञा गेल।।
कहे पराजित मुइ हैल तव स्थान।
अभ्यन्तरे चल सुखी हइनु एखन।।
बाबा कहे अभ्यन्तर नाहि अधिकार।
अधरामृत पाइ मुइ वसि मुइ स्थान।।१२।।

भावसार– बलरामदास बाबा ने उनको आलिंगन किया और संभाषण करके उनको अन्दर लिया और बोले– आपसे

मैं पराजित हो गया अन्दर चलिये मैं आपसे बहुत प्रसन्न हूँ। बाबा ने बोला– अन्दर जाने का मेरा अधिकार नहीं है अधरामृत पाकर मैं यहीं बैठूँ।।१२।।

सयतने बलराम बाबा तारे लञा गेल।
यथायोग्य सम्बोधना स्वस्नेहे करिल।।
हेनमते नित्यानन्द बाबार महिमा।
ताँर दैन्य गुणे शिक्षा पेल बहु जना।।
गौर शिरोमणि आर श्रीब्रजकिशोर।
नृसिंह दास आदि गणेर प्रचार।।१३।।

भावसार– बहुत यत्नपूर्वक बलरामदास उनको अन्दर ले गये। यथायोग्य सेवा अपने हाथ से की। इसप्रकार नित्यानन्द बाबा की महिमा थी। उनकी दैन्य गुणों की शिक्षा बहुत लोगों ने प्राप्त की। गौर शिरोमणि और श्रीब्रजकिशोर नृसिंहदास आदि इनके शिष्य हुये।।१३।।

पण्डित बाबा आर नरोत्तम अधिकारी।
बाबार चरण आश्रये हैल गुणधारी।।
बाबार महिमा गुण विचित्र घटन।
'किशोरी' वन्दये ताई लइया शरण।।१४।।

भावसार– पण्डित बाबा और नरोत्तम अधिकारी बाबा का चरण आश्रय लेकर बहुत गुणों से गुणान्वित हो उठे। बाबा के गुणों की महिमा की विचित्र ही घटना है। मैं किशोरी वन्दना करके उनकी शरण ले रहा हूँ।।१४।।

१८. पण्डित श्रील रामकृष्णदास बाबाजी

पूँछरी, गोवर्धन व वृन्दावन

जय जय नवद्वीप प्राण गौरहरि।

जय जय नित्यानन्द प्रेमदानकारी।।
जय जय श्रीअद्वैत पतित पावन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
गोवर्द्धनेर सिद्ध बाबा श्रीरामकृष्णदास।
तिनि प्रेमावेशे कैलो गोवर्द्धने वास।।१।।

भावसार– श्रीनवद्वीप के प्राण गौरहरि की जय हो जय हो! श्रीश्रीप्रेमदानकारी श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! पतितपावन अद्वैतचन्द्र की जय हो! श्रीगदाधर श्रीवास भक्तगण की जय हो! श्रीगोवर्धन के सिद्ध बाबा श्रीरामकृष्ण दास उन्होंने प्रेमावेश में गोवर्धन में अपने भजन को सिद्ध किया।।१।।

गदाधर परिवारे ताँहार आश्रय।
रामकृष्ण पण्डित बाबा ताँर शिष्य हय।।
दीक्षा वेशाश्रय तेंह एकत्रे करिल।
अपूर्व महिमा गुणे जगत मोहिल।।
वारशत चौषट्टि सने हेरि शुभक्षण।
कुलीन गौड़ ब्राह्मण कुलेते जनम।।२।।

भावसार– गदाधर परिवार में उन्होंने आश्रय ग्रहण किया। उस परिवार में रामकृष्ण पण्डित बाबा शिष्यता लाभ कर धन्य हुये। दीक्षा और वेशाश्रय एक ही समय में लिया और अपने दैवीय गुणों से जगत् को विमोहित कर दिया। सन् १२६४ में आपका शुभ क्षणों में पावन जन्म गौड़ ब्राह्मण कुल में हुआ।।२।।

जयपुरे भुरा टिपा पंचगली स्थान।
तथाय जन्मिया धरे रामप्रताप नाम।।
पिता रामानुजीय वैष्णव महाजन।
अश्वारोही रघुनाथ करिल दर्शन।।
वल्लभ कुलेते ताँर माता जन्मिल।

पितृ मातृ कुल बहु सद्गुण आछिल।।३।।

भावसार- जयपुर में भुरा टिपा पंचगली नाम का स्थान है वहाँ जन्म लेकर रामप्रताप नाम पड़ा। पिता रामानुजीय वैष्णव थे जिन्होंने अश्व पर सवार श्रीरामचन्द्र प्रभु के दर्शन किये। वल्लभ कुल में उनकी माता जन्मी थीं। पितृ और मातृ कुल में सभी सद्गुणी थे।।३।।

रामानुजीय वैष्णव पितामह आदिगण।
जयपुर राजवंशे कैल विद्या दान।।
पाँच छय वर्ष यवे वयकाल हैल।
भक्तिते आग्रह ताँर प्रकाश पाइल।।
सात आठ वर्ष तेंह अकुतभय हैल।
श्रीकृष्ण पूजा लागि जल आनिते लागिल।।४।।

भावसार- रामानुजीय वैष्णव पितामह आदिगण जयपुर राजवंश में विद्या दान किये। आप जब ५-६ वर्ष के ही थे तब भक्ति उनके हृदय में प्रकाश पाने लगी। ७-८ वर्ष में वे भजन में परिपक्व हो गये। श्रीकृष्ण पूजा के लिये जल लाने लगे।।४।।

माधवपुर झरना होते करे आनयन।
एकाकी चलये पथे व्याघ्र दरशन।।
मनुष्य भक्षये हेरि निर्भये चलिल।
हेनमते नित्य वारि आनिते लागिल।।
नवम वर्षे व्याकरण पाठ शेष कैल।
से कोले नृसिंहानन्द भट्ट मिलिल।।५।।

भावसार- वे माधवपुर झरना से जल ले आते। एकबार अकेले जाते उनको व्याघ्र ने देखा जो मनुष्य को खा रहा था। यह देखकर भी ये निर्भय होकर चले आये। इसप्रकार आप रोज ही जल ले आते। नवम वर्ष में आपने

पूरा व्याकरण ही पढ़ लिया। उस समय आपका मिलन नृसिंहानन्द भट्टजी से हुआ।।५।।

सिद्ध नित्यानन्द बाबार शिष्य तेंह हय।
षड्दर्शन पण्डित बाह्य वाद्य संगीत जानय।।
ताँहार महिमा हेरि करये चिन्तन।
इहार गुरूर गुण ना जानि केमन।।
ताँहार सानिध्य पाय आनन्दित मन।
गौड़ीय वैष्णव संग वाञ्छे अनुक्षण।।६।।

भावसार- सिद्ध श्रीनित्यानन्द बाबा के वे शिष्य हैं। षड् दर्शन के पण्डित हैं और वाद्य-संगीत भी जानते हैं। उनकी महिमा समझकर चिन्तन करते हैं। इनके गुरु का गुण न जाने कैसे उनका सान्निध्य पाकर आनन्दित मन से गौड़ीय वैष्णवों का संग की वाञ्छा अनुक्षण करने लगा।।६।।

गौड़ीय वैष्णवे ताँर श्रद्धा उपजिल।
बंगभाषा शिखिवारे आरम्भ करिल।।
दशम वर्षे उर्दू भाषाय व्यूत्पत्ति जन्मिल।
एकादशे उपनयन संस्कार हैल।।
पुरश्चरणे पुरोहित कैल आज्ञादान।
जपये सावित्री मन्त्र हय भक्तिमान।।७।।

भावसार- गौड़ीय वैष्णवों में उनकी श्रद्धा उत्पन्न हुई। बंगला भाषा सीखने का प्रयास आरम्भ किया। दशम वर्ष में उर्दू भाषा में व्युत्पत्ति जन्मी। ग्यारहवें वर्ष में उपनयन संस्कार हुआ। पुरश्चरण में पुराहित ने आज्ञा की कि श्रद्ध ापूर्वक गायत्री मन्त्र जपो।।७।।

साताइश दिवस सावधानेते जपिल।
सन्तुष्ट हइया देवी दरशन दिल।।
दरशन दिया देवी कैल वरदान।

कहे वृन्दावने तुमि करह प्रयाण।।
एत कहि सावित्री देवी अन्तर्धान कैल।
तिन वर्ष चेष्टा करि याइते पारिल।।८।।

भावसार- सत्ताईस दिन सावधानीपूर्वक जपा, सन्तुष्ट होकर देवी ने दर्शन दिया। दर्शन ने देवी ने वरदान दिया और कहा- तुम वृन्दावन जाओ। ऐसा कहकर गायत्री (सावित्री) देवी अन्तर्धान हो गईं। तीन वर्ष चेष्टा करने पर गये।।८।।

माता जयपुर राज अवरुद्ध कैल।
पाछे कोन छल करि तेंह ब्रजे एल।।
पुरोहित जीय पाशे करे वेद अध्ययन।
तिन मास वेद पडि ब्रजे आगमन।।
त्रयोदश वर्ष वर्षा काले ब्रजे एल।
गोविन्द मन्दिर पाशे आसिया रइल।।९।।

भावसार- माता ने उन्हें जयपुर नगर में अवरुद्ध किया; फिर किसी बहाने ब्रज में आ गये। पुरोहितजी के निकट वेद अध्ययन किया। तीन मास वेद पढ़ ब्रज में आगमन किया। तेरहवें वर्ष वर्षाकाल में ब्रज में आये। श्रीगोविन्द मन्दिर के निकट रहने लगे।।९।।

गोस्वामीदेर आश्रये करि अवस्थान।
न्याय पडे सुदर्शन शास्त्री सन्निधान।।
नीलमणि प्रभु स्थाने करिया गमन।
षट् संदर्भादि भक्तिशास्त्र कैल अध्ययन।।
नृसिंहदास स्थाने भागवत शिक्षा कैल।
पडिते हरिभक्तिविलास मन हैल।।१०।।

भावसार- गोस्वामियों के आश्रय में रहें। श्रीसुदर्शन शास्त्रीजी से न्याय पढ़ा। श्रीनीलमणि प्रभु से षट्सन्दर्भ आदि

भक्तिशास्त्र पढ़ें। श्रीनृसिंहदासजी से श्रीमद्भागवत की शिक्षा ग्रहण की। श्रीहरिभक्तिविलास पढ़ने का मन हुआ।।१०।।

गोपीलाल गोस्वामी करिल शिक्षण।
हेनमते कैल बहु विद्या उपार्जन।।
विश वर्ष वयकाले पाठ शेष कैल।
मातार प्रेरणे मध्ये मध्ये गृहे गेल।।
दुइ तिनवार मात्र करिल गमन।
पुनराय वृन्दावने कैल पलायन।।११।।

भावसार– श्रीगोपीलाल गोस्वामी से शिक्षण किया। इसप्रकार बहुत दिन तक विद्या उपार्जन किया। बीस वर्ष की आयु में पाठ पूर्ण किया। माता की प्रेरणा से मध्य-मध्य में गृह में भी जाते थे। केवल दो-तीन बार ही गये। पुनः वृन्दावन के लिये प्रस्थान किया।।११।।

नित्यानन्द बाबा स्थाने दीक्षा वेश लैल।
भजन विषयक यावतीय शिक्षा कैल।।
स्मरण मनने सम्यक इच्छा उपजिल।
'गोविन्दलीलामृते' ग्रंथ कठस्थ करिल।।
सिद्ध बाबार आज्ञा लया गोवर्धने गेल।
कृष्णदास बाबा सह मिलन करिल।।१२।।

भावसार– श्रीनित्यानन्ददास बाबाजी से दीक्षा-वेश ग्रहण किये और भजन विषयक शिक्षा ग्रहण की। लीला स्मरण की इच्छा उत्पन्न हुई। 'श्रीगोविन्दलीलामृत' ग्रंथ कण्ठस्थ कर लिया। सिद्ध बाबा की आज्ञा लेकर गोवर्धन गये और श्रीकृष्णदास बाबा से मिले।।१२।।

स्मरण मनने सम्यक शिक्षार कारण।
सिद्ध बाबा कायमने लइल शरण।।
भजनेर सहित शास्त्र समन्वय कैल।

सिद्ध बाबार कृपाय ताँर वाञ्छा पूर्ण हैल।।
तवे नित्यानन्द बाबा पाशे आगमन।
कतकाल रहि तेंह करिल गमन।।१३।।

भावसार- स्मरण-मनन में सम्यक् शिक्षा के लिये सिद्ध बाबा की कायमन से शरण ली। भजन के साथ शास्त्र का समन्वय किया। सिद्ध बाबा की कृपा से उनकी वाञ्छा पूर्ण हुई। तब श्रीनित्यानन्द बाबा के पास आगमन किया। कुछ काल रहकर वहाँ से गमन किया।।१३।।

बाबार आदेश लया वर्षाने चलिल।
प्रवल अनुराग सह भजने मातिल।।
गौर चरण बाबा तथा संकीर्तन।
कीर्तन माधुरी हेरि शिखिते कैल मन।।
वडदेश कुशीय विकच सरोज कीर्तन।
तिनमास गेल तार करिते शिक्षण।।१४।।

भावसार- बाबा का आदेश लेकर बरसाना में चले गये। प्रबल अनुराग के साथ भजन में मत्त हो गये। वहाँ श्रीगौरचरणदास बाबा संकीर्तन करते थे। कीर्तन की माधुरी से आकर्षित हो सीखने का मन किया। तीन मास में कीर्तन की शिक्षा प्राप्त की।।१४।।

भजन आवेश क्रमे शिथिल हइल।
संकीर्तन आवेशेते विमुग्ध रइल।।
शुनि सिद्ध बाबा तारे कैल आनयन।
कहये कीर्तन छाड़ि करह भजन।।
बाबार आदेशे तेंह करये यतन।
बहु चेष्टा करि नारे फिराइते मन।।१५।।

भावसार- लीला स्मरण आवेश क्रम शिथिल होने लगा और संकीर्तन के आवेश में विमुग्ध होने लगे। सुनकर

सिद्ध बाबा ने उनको बुलाया और कहा कि कीर्तन छोड़कर लीलाचिन्तन में विशेष मन लगाओ। बाबा को आदेश से ऐसा ही किया। बहुत चेष्टा करने पर मन को स्थिर किया।।१५।।

पुनः आदेश लञा तेंह वर्षाने चलिल।
कोनमते भजने मन वसाते नारिल।।
कीर्तन आवेशे सदा विचलित मन।
भजने वसाते मन करिल चिन्तन।।
अष्टा दशाक्षर श्रीगोपाल मंत्र राज।
सतेर दिवस करे पुरश्चरण काज।।१६।।

भावसार– पुनः बाबा का आदेश लेकर बरसाना चले गये। किसी प्रकार एकान्तिक भजन में मन लगा नहीं पा रहे हैं और कीर्तन के आवेश में मन विचलित रहता है। भजन में बैठने पर मन से चिन्तन करते हैं। सात दिन तक अष्टादशाक्षर गोपाल मन्त्र का पुरश्चरण किया।।१६।।

उद्धव केयारीते कदम्ब तरुतले।
प्रिया प्रियतमेर दरशन मिले।।
दरशन दिया दोंहे वलये वचन।
अभिलाष मत वर करह प्रार्थन।।
बाबा कहे शुन प्रभु मोर निवेदन।
श्रीगुरु आज्ञाय मुई करि ये भजन।।१७।।

भावसार– उद्धव क्यारी में कदम्ब वृक्ष के नीचे प्रिया–प्रियतम् के दर्शन प्राप्त किये। दर्शन देकर दोनों ने कहा– "अपनी अभिलाषा के अनुसार प्रार्थना करो।" बाबा ने कहा– "प्रभु! मेरा निवेदन सुनिये। श्रीगुरुदेव की आज्ञा से भजन करता रहूँ"।।१७।।

तोमार दोंहार प्रसन्नता सदा मोर मन।
आर अन्य वरे मोर कोन प्रयोजन।।

श्रीराधाविनोद शुनि ताँरे आज्ञा कैल।
राघवेर गोफाय गिया भजने मातिल।।
हिंस्र जन्तु संकुश गोफाय रहिया।
भजन करये सर्व सुख विसर्जिया।।१८।।

भावसार– तुम दोनों की प्रसन्नता में ही मेरा मन लगा रहे और अन्य वरदान से मेरा क्या प्रयोजन है? श्रीराधा–विनोद ने यह सुनकर उनको आज्ञा दी– जाओ, गोवर्द्धन पूँछरी की राघव पण्डित गुफा में जाकर भजन करो। हिंसक जीव गुफा के आसपास रहते। किन्तु बाबा निर्भय होकर सब सुख बिसराकर भजन में ही निमग्न रहते।।१८।।

छय वर्ष तथा करे कठोर भजन।
ए दिकेते माता ब्रजे कैल आगमन।।
वैष्णव मुखे वार्ता लञा गोफा द्वारे एल।
तिन दिन रहि तथा प्रतीक्षा करिल।।
तिन दिन आछे बाबार बाहिरे गमन।
एमत नियमे सदा करये भजन।।१९।।

भावसार– इसप्रकार छः वर्ष तक कठोर भजन किया। इधर माता ने ब्रज में आगमन किया। वैष्णव मुख से बात सुनकर गुफा के द्वार पर आयीं। तीन दिन तक प्रतीक्षा की। तीन दिन बाद बाबा बाहर जाते थे, यही नियम से भजन करते थे।।१९।।

नियमित काले बाबा बाहिरे आसिल।
तत्पूर्वे माता ताँर उठिया चलिल।।
बहुत डाकिया यदिसारा नाहि पेल।
कान्दिते कान्दिते माता जयपुर गेल।।
मातार गमने बाबार भजन विघ्न हैल।
क्रमशः भजने ताँर तारल्य जन्मिल।।२०।।

भावसार– नियम के अनुसार बाबा तीन दिन में बाहर आये; इससे पूर्व ही माता वहाँ से चली गयीं। बहुत पुकारने पर भी पुत्र से नहीं मिल पायीं, रोते–रोते माता जयपुर चली गयीं। माता के गमन से बाबा के भजन में विघ्न उत्पन्न हुआ, जिससे भजन में शिथिलता होने लगी।।२०।।

कयेकदिन परे मने करये चिन्तन।
अपराध बूझि किछु हइल घटन।।
वैष्णवगणेर कहि सकलि सुनिल।
दुःख पाञा माता ताँर स्वदेशे चलिल।।
मातार सन्तोष बिना विघ्न घोरतर।
माताके ब्रजेते तवे आनाल सत्वर।।२१।।

भावसार– कुछ दिन पश्चात् मन में चिन्तन किया। अपराध समझकर कि कुछ घटना हुई है। वैष्णवगण से यह सब सुना कि माता दुःख पाकर जयपुर चली गई हैं, तो विचार किया कि अब उनके संतोष के बिना हय विघ्न हटेगा नहीं। अब माता को शीघ्र ब्रज में बुलाना होगा।।२१।।

पूछरिते राखि माताय करये सेवन।
भजन आवेश क्रमे करये तखन।।
मातृसेवा भजन उभयेते विघ्न हैल।
सेइकाले वैष्णव एक आसिया मिलिल।।
उत्कल हते एल कृष्ण चैतन्यदास।
ताहाके पाइया बाबार वाड़िल उल्लास।।२२।।

भावसार– पूँछरी गाँव में ठहराकर माता की सेवा करने लगे। मातृसेवा व भजन उभय में विघ्न हुआ। उसी समय एक वैष्णव आया। वह ओडिशा आया था उसका नाम श्रीकृष्णचैतन्यदास था। उनको पाकर बाबा का उल्लास और भी बढ़ गया।।२२।।

प्रभुदास जीर पाशे भेक दीक्षा कराइल।
आपन समीपे राखि भजन शिक्षा दिल।।
तद्वधि मातृ सेवाय ताँरे नियोजिल।
तिन वर्ष सेवि तेंह अन्तर्धान कैल।।
सात आठ वर्ष परे मातार अन्तर्धान।
निर्विघ्न हइया बाबा भजे अविराम।।२३।।

भावसार– बाबा ने उनकी श्रीप्रभुदासजी के पास दीक्षा–वेश संस्कार कराये और अपने पास रखकर भजन शिक्षा प्रदान की। तद्वधि मातृसेवा में उनको नियोजित किया। तीन वर्ष सेवा कर वे अन्तर्धान हो गये। सात–आठ वर्ष पश्चात् माता का अन्तर्धान हो गया। अब बाबा निर्विघ्न भजन करने लगे।।२३।।

पूर्व अनुरूप भावे करये साधन।
बाबार भजननिष्ठा ना याय वर्णन।।
छेंडा चट गुदडी छिद्र करोया सहिते।
परम वैराग्य वेशे भजनेते माते।।
हेनमते कयेक वत्सर अतीत हइल।
गौड़ीय सम्प्रदाये एक आन्दोलन हैल।।२४।।

भावसार– पूर्व अनुरूप भाव में साधन करने लगे। बाबा की भजन निष्ठा का वर्णन नहीं हो सकता। छेंडा, चट, गुदड़ी व करुआ के साथ परम वैराग्यमय वेश में भजन करने लगे। इसप्रकार बहुत वर्ष व्यतीत हुये। गौड़ीय सम्प्रदाय में एक आन्दोलन हुआ।।२४।।

महाप्रभुर मन्त्र लइया घोर आन्दोलन।
हेरिया पण्डित बाबा विचलित मन।।
स्वपक्षे विपक्षे हेरि यत गुरुजन।
गोफा छाड़ि वर्षानेते करिल गमन।।
मयूर कुटीते गिया करिलेन वास।

प्रियादास स्वामीचरण सहित विलास।।२५।।

भावसार- महाप्रभु के मन्त्र को लेकर घोर आन्दोलन हुआ। यह देखकर बाबा का मन विचलित हुआ। स्वपक्ष व विपक्ष में जितने भी गुरुजन थे, इसलिये आप गुफा छोड़कर बरसाना चले गये। मोरकुटी में जाकर वास किया। श्रीप्रियादास स्वामीचरण के संग रहे।।२५।।

आध वर्ष गोपनेते तथा काटाइल।
विवाद मिटिले पुनः गोफाय आसिल।।
दश वर्ष राघव गोफाय निर्जन भजन।
तथाय तिनटि घटे विस्मय घटन।।
माघ मासे कयलार आगुन करिया।
भजन करये तेंह गोफाय द्वार दिया।।२६।।

भावसार- आधा वर्ष गोपन में व्यतीत किया, विवाद मिटने पर पुनः गुफा में आ गये। दश वर्ष तक श्रीराघव पण्डित की गुफा में एकान्त भजन किया। माघ मास में कोयला की अग्नि जलाकर भजन करने बैठे और द्वार बन्द कर दिया।।२६।।

वाहिरिते नारे ग्यास ताहे मूर्च्छा गेल।
के येन अलक्ष्ये तारे वाहिर करिल।।
गोवर्धने तटे लया राखिल फेलिया।
कतक्षणे ज्ञान तार आसिल फिरिया।।
प्रभातेर रीते ताँर हइल चेतन।
गोफार वाहिरे हेरि करिल चिन्तन।।२७।।

भावसार- बाहर गैस न निकलने से वह मूर्च्छित हो गये, किसी ने अलक्षित रूप से उनको बाहर किया और गोवर्धन तट पर लाकर सुला दिया। प्रातःकाल में वे चेतन हो गये और सोचने लगे कि मैं गुफा के बाहर कैसे आ

गया था?।।२७।।

चलच्छक्ति हीन हञा दुइ दिन रैल।
कतदिन परे एक घटना घटिल।।
पुँछरीते गंगाजीर महोत्सव हैल।
पुया वटने दुइ चार ढुकिते नारिल।।
तवेत पुयार लोभे बाबार पाशे एल।
बाबार पाइयाछे बहु अन्तरे चिन्तिल।।२८।।

भावसार– चलने की शक्तिहीन होकर दो दिन चले गये। कितने दिन पश्चात् एक और घटना घटी। पूँछरी में गंगाजी का महोत्सव हुआ। पुआ बाँटे हैं, दो चार जन यह जानकर बाबा के पास आये। बाबा को पाकर मन में सोचे।।२८।।

बाबारे डाकिले बाबा बाहिरे आसिल।
तवे पुया लागि दोंहे प्रार्थना करिल।।
पुया नाहि यदि बाबा वलिल वचन।
आघात करिल शिरे चोर एकजन।।
लाठिर आघाते कापाल फारि रक्त पड़े।
अन्य चोर गोफा ढुकि अन्वेषण करे।।२९।।

भावसार– बाबा को पुकारने पर बाबा बाहर आये; तब वे पुआ माँगने लगे। बाबा बोले– "पुआ नहीं हैं।" तब उनमें से एक ने बाबा के सिर में आघात किया। लाठी के आघात से रक्त बहने लगा। अन्य चोर गुफा में घुसकर खोजने लगे।।२९।।

पुया ना पाइया दोंहे अनुतप्त हैल।
ऊन वस्त्र लया बाबार शिरेते बाँधिल।।
पाछेते घटिल एक अपूर्व घटन।
परम विचित्र ताहा शुन सर्वजन।।

एकदा दिवसे एक विषधर एल।
कतक्षण गला वुक वेडिया रइल।।३०।।

भावसार– पुआ न पाकर वे अनुतप्त हुये और ऊनी वस्त्र लेकर बाबा के सिर पर बाँधने लगे। इसके पश्चात् एक अपूर्व घटना घटी। इस परम विचित्र घटना को सर्वजन सुनिये। एकबार एक विषधर सर्प आया और बहुत देर तक कण्ठ व वक्ष पर पड़ा रहा।।३०।।

परेते आपनि तेंह करिल गमन।
सेइ रात्रे ध्वनि एक करये श्रवण।।
गोफा छाड़ि अन्यस्थाने करह गमन।
शुनि कुसुम सरोवरे कैल आगमन।।
श्याम कुटीते आसि गोफाय कहिल।
सेकाले गोयालियर ताँर स्थाने एल।।३१।।

भावसार– इसके पश्चात् अपने आप चला गया। उसी रात्रि एक ध्वनि श्रवण की, गुफा छोड़कर अन्य स्थान पर चले जाओ। यह सुनकर आप कुसुम सरोवर चले आये। श्यामकुटीी पर आकर गुफा में रहे। वहाँ ग्वालियर से कोई जन आया।।३१।।

मातार अलंकार लञा कैल आगमन।
छय लक्ष्य मुद्रा मूल्य हइवे तखन।।
वैष्णव सेवार लागि बाबाय करे दान।
गोपने करिते व्यय करिल विधान।।
शुनि भत्सिया बाबा करिल ताड़न।
हरिचरण दास स्थाने प्रेरिल तखन।।३२।।

भावसार– माता के आभूषण लेकर आया वह छः लाख रुपये के थे। वैष्णव सेवा के लिये बाबा को दान किया। गुप्तरूप से व्यय करना ऐसा बोला। यह सुनकर

बाबा उसकी भर्त्सना करने लगे। श्रीहरिचरणदास के स्थान में भेजा।।३२।।

राजा बलवन्त राव करिया गमन।
हरिचरणदास पदे कैल निवेदन।।
करूणा करिया तेंह वाञ्छा पुराइल।
सेई अर्थेते मन्दिर निर्मित हइल।।
ठाकुर सेवार सब व्यवस्था हइल।
निष्किञ्चन वैष्णव सेवार सहाय करिल।।३३।।

भावसार– राजा बलवन्त राव ने गमन किया और श्रीहरिचरणदास के चरणों में निवेदन किया। करूणाकर उनकी वाञ्छा पूर्ण हुयी उस धन से मन्दिर का निर्माण हुआ। ठाकुर सेवा की सब व्यवस्था हुयी। निष्किञ्चन वैष्णवों की सेवा हुयी।।३३।।

एक लक्ष मुद्राराज सरकारे जमा कैल।
मासे छय शत टाका आय हइते लागिल।।
अद्यापि पाँच मुद्रा हारे पाय वैष्णवगण।
हेनमते महाराजेर वाञ्छित पूरण।।
श्याम कुटीते पण्डित बाबा करे अवस्थान।
गौरांगदास प्रियाशरण एल ताँर स्थान।।३४।।

भावसार– एक लाख रुपये राज्य सरकार में जमा किये। मास में छः सौ रुपये आये आने लगी। पाँच रुपया वैष्णवगण को प्राप्त होने लगे। इसप्रकार महाराज की वाञ्छा पूर्ण हुयी। श्यामकुटी में पण्डित बाबा ने प्रस्थान किया। श्रीगौरांगदास व श्रीप्रियाशरणदास उनके स्थान में आये।।३४।।

आनुगत्य लञा दोंहे करये भजन।
पाछे वनमाली राय आदिर मिलन।।

चरणे आसिया कैल आत्म निवेदन।
कायमने सेवे सदा बाबार चरण।।
तेरश बाइस सने इनफ्लुयेंजा हैल।
ताहाते अधिक बाबा पीडित हइल।।३५।।

भावसार– दोनों ने बाबा का आनुगत्य लेकर भजन किया। तत्पश्चात् वनमाली राय बहादुर से मिलन हुआ। उन्होंने भी बाबा के चरणों में आत्म निवेदन किया। काय–मन से बाबा की सेवा की। १३२२ बंगाब्द में इन्फ्लुयेंजा रोग हुआ, जिससे बाबा अधिक पीड़ित हुये।।३५।।

वृन्दावन होते कामिनी घोष आदिगण।
मदनमोहन वागिचाय कैल आनयन।।
कार्तिक मासेते बाबा कैल आनयन।
सेकाले ते गोवर्धने भीषण प्लावन।।
वृन्दावने टाटियास्थानेर करिलेन वास।
दुइ वर्ष रहितया करये विलास।।३६।।

भावसार– वृन्दावन से श्रीकामिनी कुमार घोष आदि आये। फिर मदनमोहन बगीचा में आ गये। कार्तिक मास में बाबा ने आगमन किया, उस समय गोवर्धन में भीषण प्लावन था। वृन्दावन के टटिया स्थान में दो वर्ष तक वास किया।।३६।।

नारायण भट्ट मुखे हेरि कथा श्रवण।
तत्परे केयारी वने करिल गमन।।
दिल्ली धर्मशाला मदनमोहन वागिचाय।
तिनवर्ष तिनस्थाने क्रमेते काटाय।।
से समय गौरांग दासे करान पठन।
षट् संदर्भादि आर वैष्णव दर्शन।।३७।।

भावसार– श्रीनारायण भट्ट नामक एक वैष्णव के

मुख से कथा श्रवण करते थे। तत्पश्चात् क्यीवन में गमन किया। दिल्ली धर्मशाला व मदनमोहन बगीचा में भी रहे। इसप्रकार तीन स्थानों पर तीन वर्ष व्यतीत किये। उस समय श्रीगौरांगदास षट् सन्दर्भ आदि ग्रंथों को पढ़ने व वैष्णव-दर्शन के लिये गये।।३७।।

कृपासिन्धु दासे कैल सेवा अंगीकार।
भजन वैराग्य शिक्षाय शासन अपार।।
परे वराह घाट वार दुयारी एल।
सेई स्थाने किछु दिन अवस्थान कैल।।
एकदा वृन्दावनेते हइल प्लावन।
मिर्जापुर धर्मशालाय कैल आगमन।।३८।।

भावसार- श्रीकृपासिन्धुदासजी ने सेवा प्रारम्भ की। उन पर बाबा का भजन-वैराग्य शिक्षा का सम्पूर्ण अनुशासन था। तत्पश्चात् वाराह घाट वारह द्वारी पर आये। कुछ दिन इस स्थान पर रहे। एकबार वृन्दावन में प्लावन हुआ। तब मिर्जापुर धर्मशाला में आये।।३८।।

छय मास परेते रौली कुञ्जे एल।
सेकाले मालेरियाय बाबा आक्रान्त हइल।।
सेकाले देह निर्याण उपक्रम हइल।
कृपासिन्धु दासेर महादुःख उपजिल।।
स्वप्ने महाप्रभु ताँरे कृपा प्रकाशिल।
कार्तिके दाऊजी वागिचाय एल।।३९।।

भावसार- छः मास पश्चात् रौली कुञ्ज में आये। वहाँ मलेरिया रोग से बाबा ग्रसित हो गये। कृपासिन्धुदासजी को अति दुःख हुआ। स्वप्न में महाप्रभु ने उन पर कृपा की; तब कार्तिक मास में दाऊजी बगीचा में आ गये।।३९।।

सेखाने रहिया बाबा आरोग्य हइल।

दुँहुजन प्रेमानन्दे भजने मातिल।।
निरवधि कृपासिन्धु करये सेवन।
ताँहार सेवाय सुखी सिद्ध बाबा मन।।
बाह्यावेश रहित बाबा क्रमेते हइल।
व्यावहारिक यत कृपासिन्धु समाधिल।।४०।।

भावसार– वहाँ रहकर बाबा स्वस्थ हुये। दोनों जन प्रेमानन्द में मत्त हुये। कृपासिन्धुजी निरन्तर सेवा करते रहे। उनकी सेवा से सिद्ध बाबा प्रसन्न हुये। बाबा प्रतिक्षण लीलाचिन्तन में ही निमग्न रहते; बाह्य आवेश ही नहीं रहता। व्यावहारिक कार्य कृपासिन्धुजी सम्हालते थे।।४०।।

आहार विहार आर देहेर रक्षण।
समाधये कृपासिन्धु करिया यतन।।
निश्चिन्त मनेते बाबा करये भजन।
शेषेर एकजने कैल वेशाश्रय अर्पण।।
भूगर्भ संतान तेंह विनोद बिहारी।
अचिन्त्य महिमा ताँर कहिते ना पारि।।४१।।

भावसार– आहार विहार व देहरक्षा कार्य कृपासिन्धु दासजी ही यत्नपूर्वक कराते थे। बाबा तो निश्चित होकर लीलाचिन्तन व भजन में डूबे रहते थे। अन्त में श्रीविनोदबिहारीजी को वेशाश्रम प्रदान किया। उनकी महिमा भी अवर्णनीय है।।४१।।

पण्डित बाबा कैल ताँरे वेशाश्रय दान।
तेरश सात चल्लिश सने कैल अन्तर्धान।।
पौष आश्विनी कृष्णा चतुर्थी दिवसेते।
नित्य लीलाय प्रवेशिल महानद चिते।।
बाबार अलौकिक गुणे मुग्ध सर्वजन।
सर्व सम्प्रदायी आसे सिद्धान्त कारण।।४२।।

भावसार– पण्डित बाबा ने उनको विरक्त वेश प्रदान किया। १३४७ बंगाब्द में वे अन्तर्धान हुये। पौष आश्विन कृष्णा चतुर्थी दिवस में नित्यलीला में प्रवेश किया। बाबा के अलौकिक गुणों से सब जन मुग्ध थे। सब सम्प्रदाय के लोग भजन उपासना के सिद्धान्त जानने आते थे।।४२।।

स्व स्व सम्प्रदायी गूढ़ रहस्य जानय।
बिना जिज्ञासाय केह सुसिद्धान्त लभय।।
बाबार अनन्त गुण के करे वर्णन।
आत्मशुद्धि लागि किञ्चित् करिल कीर्तन।।
त्यागे वैराग्येर मूर्ति गोस्वामी निदर्शन।
आपने आचरि धन्य हैल कतजन।।४३।।

भावसार– अपने–अपने सम्प्रदाय के गूढ़ रहस्यों को जानने आते। कोई–कोई उनके दर्शन से ही बिना प्रश्न पूछे उत्तर पा जाता था। बाबा के अनन्त गुणों का कौन वर्णन कर सकता है? आत्मशुद्धि के लिये यत्किञ्चित् वर्णन किया है। आप त्याग–वैराग्य की साक्षात् मूर्ति थे, स्वयं आचरण करके कितने लोगों को धन्य किया है।।४३।।

ताँहार कृपाय धन्य हैल कतजन।
ताँदेर प्रसादे धन्य हतेछे भुवन।।
त्यागे वैराग्य भजन कराते शिक्षण।
धरा माझे पण्डित बाबा कैल आगमन।।
जय जय पण्डित बाबा पतित पावन।
करूणा कटाक्ष मोरे कर प्रदर्शन।।४४।।

भावसार– उनकी कृपा से कितने लोग धन्य हुये हैं। उनकी कृपा से भुवन धन्य हुआ है। त्याग–वैराग्य का भजन करते हुये शिक्षा दी है। जगत में पण्डित बाबा का आगमन पतितों को पावन करने के लिये हुआ है। बाबा! आप मुझ पर करूणा कटाक्ष कीजिये।।४४।।

अनादि वर्हिमुख मुइ पातकि दुर्जन।
आपात मधुर रसे मुग्ध अनुक्षण।।
भुक्ति मुक्ति मोक्ष वाञ्छाय यापिल जीवन।
ना भजिले निताई गौरेर अभय चरण।।४५।।

भावसार– बाबा! मैं अनादि बहिर्मुख पातकी दुर्जन जीव हूँ। अनुक्षण मधुर रस में मुग्ध होना चाहता हूँ। भुक्ति–मुक्ति–मोक्ष की अभिलाषा में ही जीवन व्यतीत कर दिया। श्रीनिताईगौर के अभय चरणारविन्द का भजन किया ही नहीं।।४५।।

लाभ प्रतिष्ठाय मातिया रहिल।
निवारिते नारि मन विपाके पडिल।।
परम दयाल तुमि करूणा आधार।
'किशोरीर' हृदे कर भकति संचार।।४६।।

भावसार– कामना–यश में ही मत्त रहा। इसका निवारण न करके मन विपाक में पड़ गया है। तुम परम दयाल हो, करूणा आधार हो। इस 'किशोरीदास' के हृदय में भक्ति का संचार कर दीजिये।।४६।।

१९. श्रील राधाचरणदास बाबाजी

छाता ब्रज

जय जय विश्वम्भर राज द्विजराज।
जय जय नित्यानन्द रसिक समाज।।
जय जय श्रीअद्वैत जगत जीवन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
कालनाय सिद्ध बाबा भगवान दास।
ताँहर शिष्य इन श्रीजगदीश दास।।१।।

भावसार– द्विजराज विश्वम्भर गौरचन्द्र की जय हो! रसिक समाज के प्राण श्रीनित्यानन्द की जय हो! जगत के जीवन श्रीअद्वैतचन्द्र की जय हो! श्रीगदाधर श्रीवास आदि भक्तगण की जय हो! कालना के सिद्ध श्रीभगवानदास बाबा हुये। इनके शिष्य सिद्ध श्रीजगदीशदास बाबा कालीयदह निवासी हुये।।१।।

तार शिष्य राधाचरण बाबा महाशय।
अपूर्व भजन निष्ठा सुदृढ़ आशय।।
छाताई ग्रामे बाबा यवे करये भजन।
अश्वत्थ वृक्षतले रहे प्रेमकुल मन।।
सम्मुखेते तथा एक वृहत् स्थान रय।
ब्रजवासी शवदाह सतत करय।।२।।

भावसार– उनके शिष्य श्रीराधाचरणदास बाबा हुये। उनकी भजननिष्ठा अपूर्व थी। छाता गाँव में बाबा जब भजन करते थे, तब अश्वत्थ वृक्ष के तल में प्रेमपूर्वक बैठकर करते। सामने एक विशाल स्थान था, जहाँ ब्रजवासी शवदाह करते थे।।२।।

वृक्षतले रहि बाबा करये भजन।
कतिपय भूत नित्य करे ज्वालातन।।
वसिते आसन दाओ वले अनुक्षण।
भजनेते विघ्न हेरि बाबा कष्ट मन।।
कयेकटि इट बाबा करि आनयन।
सम्मुखेते धुनि मध्ये करिल क्षेपण।।३।।

भावसार– वृक्षतल रहकर बाबा भजन करते। कुछ भूत आकर विक्षेप करने लगे और बैठने के लिये आसन माँगने लगे। भजन में विघ्न होता देखकर बाबा को कष्ट हुआ। कुछ ईंट बाबा ले आये और सामने धूनी में क्षेपण करने लगे।।३।।

से दिन भूतगण यदि कैल आगमन।
कहे बाबा वसिवारे देयत आसन।।
शुनि बाबा अग्नि हैते इट वाहिरिल।
तप्त इट अनायासे हातेते धरिल।।
वाहिर करिया वले वसह एखन।
शुनि भूतगण ताहे कैल उपवेशन।।४।।

भावसार– उस दिन भूत आये और बैठने के लिये आसन मागे। सुनकर बाबा ने अग्नि से ईंट बाहर की। तप्त ईंट को हाथ से बाहर कर बैठने के लिये कहा। सुनकर भूत बैठे।।४।।

पाछा पुडि याय भूत करये चित्कार।
पलाइया गेल सवे ना आसिल आर।।
तद्वधि आसि नाहि करे ज्वालातन।
निर्विघ्ने वसिया बाबा करये भजन।।
येइ वृक्षतले बाबा करित भजन।
सेइ वृक्ष अद्यावधि करये शोभन।।५।।

भावसार– बैठते ही भूत चीत्कार करने लगे। फिर सब भाग गये और आये नहीं। फिर कभी आकर कष्ट नहीं दिये। बाबा निर्विघ्न भजन करने लगे। जिस वृक्ष के नीचे बाबा भजन करते थे वह वृक्ष आज भी शोभा पा रहा है।।५।।

आर एक बाबार गुण करह श्रवण।
होली खेला हेरि बाबा प्रेमाविष्ट मन।।
स्त्री पुरुषे दाँडि खेले महानन्द मन।
एकदा खेलये तारा करिया यतन।।
मेघई कुण्डतीरे बाबा करे दरशन।
तथा वावला गाछतले बाबा दाँडाइल।।६।।

भावसार– बाबा का एक और गुण श्रवण कीजिये। होली खेल में बाबा का मान प्रेमाविष्ट हो गया। लोगों के होली खेल को मेघई कुण्ड के तट पर दरशन करने लगे और बाबा गाछ जल में खड़े रहे।।६।।

भावावेशे सेई लीला देखिते लागिल।
चिन्ते युगल किशोर खेले दाँडिखेला।।
खेला हेरि बाबा प्रेमे हइल विभोला।
एइ भावे सारा दिन अतीत हइल।।
दाँडि खेला समापिया सबे घरे गेल।
ताहा नाहि जाने बाबा भावेते विभोर।।७।।

भावसार– भावावेश में श्रीराधाकृष्ण की होली लीला देखने लग गये। लीलाचिन्तन आवेश में प्रेम विह्वल हो गये। इसप्रकार सोचते हुये पूरा दिन व्यतीत हो गया। होली खेलकर सब लोग अपने घर चले गये; भाव में विभोर बाबा यह जान ही नहीं पाये।।७।।

दाँडाइया रहे नाहि देह स्मृति तार।
संध्याकाले ब्रजनारी शौचकार्ये एल।।
बावला तले दाँडाइया तथा हया भीतमन।
गृहे गिया कहिलेन यत विवरण।।
ब्रजवासीगण आसि करये दर्शन।
राधाचरण बाबा ताहा दाँडाञा एमन।।८।।

भावसार– देह स्मृति नहीं है और इसी भाव में खड़े ही रहे। संध्याकाल में ब्रजनारी उधर आयीं और हय देखती हैं कि बाबा तो एक ही जगह घण्टों से खड़े हुये हैं। उन्होंने घर जाकर सब वर्णन किया। तब ब्रजवासी उनके दर्शन करने आये, बाबा वहाँ उसी प्रकार खड़े हुये हैं।।८।।

ब्रजवासीगण यदि ताहाके डाकिल।

बाबार देहेते बाह्यज्ञान फिरे एल।।
ताँरा कहे बाबा केन एथा दाँडाइया।
बाबा कहे राधाकृष्ण खेले मत्त हञा।।
ब्रजवासी कहे खेला सांग बहुक्षण।
बाबा कहे एवे हेरि खेले दुँहुजन।।९।।

भावसार– ब्रजवासी जब उन्हें पुकारने लगे तो बाबा को बाह्यज्ञान हुआ। वे बोले– "बाबा! ऐसे क्यों खड़े हुये हो?" बाबा बोले– "राधाकृष्ण मत्त होकर खेल रहे हैं।" ब्रजवासी ने कहा– होली खेल तो बहुत देर पहले ही पूर्ण हो गया है। बाबा ने कहा– "श्रीराधाकृष्ण दोनों अभी भी होली खेल रहे हैं"।।९।।

शुनिया विस्मित हैल ब्रजवासी मन।
अन्तरे बूझिल बाबा सिद्ध महाजन।।
कतदिने बाबा वेल के मारिते एल।
ब्रजवासी उपद्रवे भजन विघ्न हैल।।
श्यामलिया नामे पालोयान एकजन।
महा बलशाली ग्रामेर श्रेष्ठ जन।।१०।।

भावसार– यह सुनकर ब्रजवासी बड़े विस्मित हुये। सब समझ गये कि बाबा सिद्ध महात्मा हैं। कितने दिन बाबा? ब्रजवासीगण के उपद्रव से भजन में विघ्न हुआ। श्यामलिया नामक एक पहलवान गाँव का एक सम्मानित व्यक्ति था।।१०।।

उन कुश्ती करे तथा करि आगमन।
कतिपय दिन बाबा करे निवारण।।
किछुतेई नाहि गुणे बाबार वचन।
ताँहारे धरिया बाबा वलेन तखन।।
कत शक्तिधर तुमि कराह दर्शन।
हात टान करि तुमि बाँकाओ तखन।।११।।

भावसार– वह कुश्ती के लिये आगमन किया। कुछ दिन तो बाबा ने मना किया। फिर बाबा ने कहा– तुम्हारी कितनी शक्ति है दिखलाओ तो?।।११।।

ऊर्ध्व किंवा अधः तुमि बाँकाओ एखन।
पालोयान नाहि पारि हैल व्यर्थमन।।
तवे बाबा तारे एक चापड मारिल।
बाबार शकति तेंह तखनि बूझिल।।
अगाध शकति बाबा करये धारण।।१२।।

भावसार– तब बाबा ने उसे एक चापड़ लगाया। उसी समय वह बाबा की शक्ति को पहचान गया कि बाबा में अगाध शक्ति है।।१२।।

सुगठित अंगकान्ति सर्व विमोहन।
स्वल्पभाषी भावावेशे रहे अनुक्षण।।
मधुर वचने हरे सवाकार मन।
दैवे एल श्रीरास पूर्णिमार शुभक्षण।।
रास पंचाध्यायी बाबा करये पठन।
पड़िते पड़िते बाबा छाडिल जीवन।।१३।।

भावसार– बाबा का शरीर सुगठित है, अंगकान्ति सबको प्रभावित करने वाली है। मधुर वचन से सबके मन को हरण करते हैं। रास पूर्णिमा के शुभ दिन बाबा रास पञ्चाध्यायी का पाठ कर रहे थे पढ़ते-पढ़ते प्राण त्याग दिये।।१३।।

श्रीरास पूर्णिमार दिने रासलीला स्मरि।
नित्यलीलाय चलिलेन प्रेमानन्द पुरि।।
अचिन्त्य बाबार लीला अपूर्व कथन।
श्रीगुरु मुखेते शुनि करिलु दर्शन।।
इष्टदेव वन्दौं मोर गुरुपद दास।

ताँर मुखे शुनि एइ तथ्येर प्रकाश।।१४।।

भावसार– श्रीरास पूर्णिमा पर रास लीला का स्मरण करते हुये नित्य लीला में गये। बाबा की लीला अचिन्त्य है, श्रीगुरुदेव के श्रीमुख से श्रवण की है। मैं अपने श्रीगुरुदेव श्रीगुरुपददास जी महाराज के मुख से श्रवण कर यह लीला प्रकट की है।।१४।।

सिद्ध बाबारे सानिध्य बहु करिल ग्रहण।
तेंह मोरे लेखाइया करिल श्रवण।।
ताँहार कृपाते लिखि बाबार महिमा।
बाबार अचिन्त्य गुण के पाइवे सीमा।।
राधाचरण बाबा पदे एकान्त स्मरण।
'किशोरी' वाञ्छये सदा शुद्ध भक्तिधन।।१५।।

भावसार– सिद्ध बाबा का सान्निध्य बहुतों ने ग्रहण किया। उन्होंने मुझसे लिखवाया है, बाबा की कृपा से ही लेखन हुआ है। बाबा के गुणों की सीमा नहीं है। श्रीराधा–चरणदास बाबा के श्रीचरणों का एकान्त स्मरण करता हूँ। यह 'किशोरीदास' सदाँ शुद्ध भक्तिधन की ही कामना करता है।।१५।।

श्रील निवासाचार्य शाखा

२०. श्रील चैतन्यदास

याजिग्राम (श्रील श्रीनिवासाचार्य प्रभु के पिताश्री)

श्रीकृष्णचैतन्य जय कुबेर नन्दन।
जय जय श्रीअद्वैत पतित पावन।।
जय जय गदाधर रत्नावली सुत।
जय जय श्रीवासादि गौरभक्त यत।।

श्रीनिवासाचार्य पिता श्रीचैतन्यदास।
गौरपाद पद्मे याँर प्रगाढ़ विस्वास।।१।।

भावसार– श्रीकृष्णचैतन्यदेव व श्रीकुबेरनन्दन अद्वैतप्रभु की जय हो! श्रीरत्नावली सुत गदाधर की जय हो! श्रीवास आदि गौरभक्तवृन्द की जय हो! श्रीनिवासाचार्य प्रभु के पिता श्रीचैतन्यदास थे, जिनका श्रीगौरचन्द्र के चरणकमल में प्रगाढ़ विस्वास था।।१।।

भागीरथी तटे श्रीचाखन्दि नाम ग्राम।
तथा वैसे चैतन्यदास विप्र प्रेमधाम।।
गंगाधर भट्टाचार्य पूर्व नाम छिल।
गौरभक्ति बले हेन आख्याति हइल।।
नवद्वीपे बाल्ये गौर करये विहार।
गदाधर अध्ययन करे अनिवार।।२।।

भावसार– भागीरथी गंगा के तट पर श्रीचाखन्दी गाँव है वहाँ श्रीचैतन्यदास वास करते थे। उनका पूर्व नाम श्रीगंगाधर भट्टाचार्य था। गौरभक्ति के प्रभाव से वे विख्यात हो गये। नवद्वीप में बाल्यावस्था में गौर विहार करते हैं, गदाधर भी आकर अध्ययन करते हैं।।२।।

भक्ति मार्ग नाहि जानि तर्कादि पठन।
दुसंग कारणे नहे विहार दर्शन।।
यद्यपि हेरिते वाञ्छा हय तार मन।
तथापि याइते नारे संगेर कारण।।
गौरचन्द्र नदे करे अद्भुत विहार।
शुनिया विप्रेर चित्ते उत्कण्ठा अपार।।३।।

भावसार– भक्तिमार्ग न जानकर तर्क आदि का पठन करते हैं। दुर्दैव के कारण विहार दर्शन नहीं होता है। यद्यपि उनकी देखने की इच्छा होती थी। फिर भी संग के कारण

नहीं जा पाते हैं। गौरचन्द्र नदी में अद्‌भुत विहार करते हैं, यह सुनकर विप्र के चिह्न में अपार उत्कण्ठा उत्पन्न हुई।।३।।

काजीर उद्धार शुनि करये चिन्तन।
नवद्वीपे गिया हेरि शचीर नन्दन।।
याजिग्रामे आसि कैल कार्य समाधान।
काटोयाय चलिलेन भारतीर स्थान।।
कभु काटोयाय रहे कभु याजिग्राम।
देवेते हेरिल गौरचन्द्र भगवान।।४।।

भावसार– काजी उद्धार की बात सुनकर चिन्तन करने लगे कि नवद्वीप में जाकर शचीनन्दन गौर के दर्शन कर आऊँ। याजिग्राम आकर कार्य पूर्ण किये। कटवा में श्रीकेशव भारती के स्थान पर आये। कभी कटवा में रहते तो कभी याजिग्राम में।।४।।

एकदा भारती हेरि करिछे प्रणाम।
सहसा हइल ध्यान फल विद्यमान।।
से कालेते लोक मुखे करिल श्रवण।
संन्यास करिते एल शचीर नन्दन।।
हेरिया गौरांग रूप आनन्दित मन।
संन्यासेर वार्ता शुनि कान्दे अनुक्षण।।५।।

भावसार– एकबार केशव भारती को प्रणाम किये। सहसा ही ध्यान का फल विद्यमान हुआ। उसी समय लोगों के मुख से श्रवण किया कि शचीनन्दन संन्यास लेने के लिये कटवा आये हैं। आप तब गौरांग के रूप को देखकर आनन्दित हुये। किन्तु उनके संन्यास लेने की बात सुनकर रोने लगे।।५।।

प्रभुर संन्यास हेरि करये क्रन्दन।

केश अदर्शन हेरि नहे धैर्य मन।।
केश अदर्शने विप्र व्याकुल हइल।
श्रीचैतन्य बलि प्रेमे पागल हइल।।
प्रभुर संन्यास नाम श्रीकृष्णचैतन्य।
कर्णे शुनि गदाधर हैल अचैतन्य।।६।।

भावसार– गौर के संन्यास को देखकर वे क्रन्दन करने लगे। केश के अदर्शन से अधीर मन हो गये। 'श्रीचैतन्य' कहते–कहते प्रेम से पागल हो गये। गौर का संन्यास नाम हुआ– 'श्रीकृष्णचैतन्य'। यह सुनकर गदाधर मूर्छित हो गये।।६।।

श्रीचैतन्य नाम विप्र लय अनुक्षण।
धैर्य धरिते नारे झुरे दु नयन।।
क्षिप्त प्राय तथा हैते करिल गमन।
गंगातीरे तीरे भ्रमे प्रेमाकुल मन।।
स्नान भोजनादि क्रिया नहेक स्मरण।
चैतन्य चैतन्य बलि डाके अनुक्षण।।७।।

भावसार– ये विप्र चैतन्यदासजी निरन्तर श्रीचैतन्य नाम अनुक्षण रटते रहते। धैर्य नहीं रखते और दोनों नेत्रों से अश्रु प्रवाहित होते रहते। क्षुप्त होकर वहाँ से गमन किया। गंगा तट पर प्रेमाकुल मन से भ्रमण करने लगे। स्नान–भोजन क्रिया का स्मरण ही नहीं रहा। 'चैतन्य–चैतन्य' कहकर पुकारने लगे।।७।।

हेनमते चाकन्दि ग्रामेते प्रवेशिल।
हेरि ग्राम लोक सवे विस्मय गणिल।।
गौरे निष्ठा हेरि तार सबे सुखमन।
'श्रीचैतन्यदास' बलि डाके सर्वक्षण।।
श्रीचैतन्यदास नाम विप्र सुखमन।
निरवधि गौर प्रेमे रहये मगन।।८।।

भावसार- इसप्रकार से चाकन्दी गाँव में प्रवेश किया। गाँव के लोग सब विस्मित हुये। उनकी गौरनिष्ठा को देखकर सब सुखी हुए। 'मैं चैतन्य का दास हूँ' ऐसा सब समय कहते रहते। निरवधि गौरप्रेम में मग्न रहने लगे।।८।।

पत्नी लक्ष्मीप्रिया सह करये भजन।
भक्तिक्रिया हेरि ताँर मुग्ध सर्वजन।।
प्रभुर इच्छाय ताँर पुत्र वाञ्छा हइल।
उद्विग्न हेरिया चित्त पत्नीरे कहिल।।
कि कारणे हेन वाञ्छा हइल आमार।
चित्त स्थिर हय किसे करह विचार।।९।।

भावसार- पत्नी लक्ष्मीप्रिया के साथ भजन करने लगे। उनकी भक्ति क्रिया देखकर सब मुग्ध होने लगे। भगवान् की इच्छा से उनके पुत्र की कामना उत्पन्न हुयी। उद्विग्न होकर पत्नी से कहा- क्या कारण से यह वाञ्छा उत्पन्न हुयी है? चित्त स्थिर कर विचार करो।।९।।

लक्ष्मीप्रिया कहे क्षेत्रे करह गमन।
प्रभुर दर्शने हवे अभीष्ट पूरण।।
शुनि हर्ष चित्ते विप्र याजिग्रामे गेल।
श्वसुर बलराम गृहे वसति करिल।।
दुइ चारि दिन रहि श्रीक्षेत्र चलिल।
यात्रा पूर्व दिन प्रभु स्वप्ने देखा दिल।।१०।।

भावसार- लक्ष्मीप्रिया ने कहा- क्षेत्र में गमन करो। प्रभु के दर्शन से अभीष्ट पूर्ण होगा। यह सुनकर हर्षचित्त से विप्र ने याजिग्राम में प्रस्थान किया। श्वसुर श्रीबलराम के गृह में वास किया। दो चार दिन रहकर श्रीक्षेत्र में चले। यात्रा के पूर्व दिन ही प्रभु ने स्वप्न में दिखा दिया।।१०।।

खेदेते स्वस्त्रीक विप्र कान्दे अनुक्षण।

प्रभुर दर्शन हीने गोआँल जीवन।।
कृपा करि प्रभु किवा दिवे दरशन।
चिन्तिया शयने विप्र हेरिल स्वपन।।
मुरली मनोहर स्वप्न छले देखा दिल।
देखाया मोहनरूप कृतार्थ करिल।।११।।

भावसार– पत्नी सहित विप्र क्रन्दन करने लगे। प्रभु के दर्शन बिना जीवन गवाँ दिया। कृपा कर प्रभु कब दर्शन देंगे। सोचते हुये विप्र ने स्वप्न देखा और मुली मनोहर के दर्शन कर कृतार्थ हो गये।।११।।

देखिते देखिते रूप गौरांग हइल।
हेरिया गौरांग रूप विह्वल हइल।।
अपूर्व रूपेते पुनः दिल दरशन।
जगन्नाथ बलराम शुभद्रा तीन जन।।
ब्रह्मा आदि देवगण करये स्तवन।
रहस्य हेरिया विप्र पाइल चेतन।।१२।।

भावसार– देखते–देखते वह मुरली मनोहर रूप श्रीगौरांग रूप में हो गया। गौरांग रूप देखकर विह्वल हो गये। अपूर्व रूप में पुनः दर्शन दिया। श्रीजगन्नाथ–बलभद्र–सुभद्रा हैं। उनकी ब्रह्मा आदि देवगण स्तुति कर रहे हैं। इसके पश्चात् विप्र चेतन हुये।।१२।।

निद्रा भंगे व्याकुलित हञा विप्रवर।
प्राते महानन्दे चले प्रभुर गोचर।।
परम उत्कण्ठा चित्ते क्षेत्रेते पौंछिल।
सिंहद्वार पथे गौरांग हेरिल।।
भुवन मोहन गौरा करि दरशन।
आनन्द सागरे विप्र डुबिल तखन।।१३।।

भावसार– निद्रा भंग होने पर विप्र व्याकुल हुये।

प्रातःकाल महा आनन्द में प्रभु को देखने चले। परम उत्कण्ठा चित्त से जगन्नाथपुरी पहुँचे। सिंहद्वार पथ से श्रीगौरांग को देखा। भुवन मोहन गौर के दर्शन कर आनन्द सागर में डूब गये।।१३।।

वन्दिल गौरांग पद करिल स्तवन।
तुष्ट हञा गौर कैल कृपा प्रदर्शन।।
मधुर वचने गौर बलये तखन।
हृष्ट हञा जगन्नाथ कैल आनयन।।
चलह जगन्नाथ देवे करह दरशन।
जगन्नाथ करिवे तव वासना पूरण।।१४।।

भावसार- श्रीगौरांग चरण में स्तुति वन्दना की। सन्तुष्ट होकर गौर ने कृपा की तब गौर मधुर वचन से बोले- "जगन्नाथ आ गये हैं, चलकर श्रीजगन्नाथदेव का दर्शन कीजिये। श्रीजगन्नाथ तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेंगे"।।१४।।

प्रभु मुख वाक्य शुनि विप्र गदाधर।
प्रणमि प्रेमेते स्तव करये विस्तर।।
गौर पादपद्मे समर्पिल आत्म मन।
अन्तर्यामी गौर तारे कैल निजजन।।
सजन सहित लञा श्रीमन्दिरे गेल।
जगन्नाथ हेरि विप्र आविष्ट हइल।।१५।।

भावसार- प्रभु के मुख वाक्य सुनकर विप्र श्रीगदाधर प्रेमपूर्वक प्रणाम करने लगे। गौर पादपद्म में आत्ममन समर्पित किया। अन्तर्यामी ने उनको निज पार्षद बना लिया। स्वजन के सहित श्रीमन्दिर गये। श्रीजगन्नाथ दर्शन कर विप्र आविष्ट हो गये।।१५।।

अचल सचल ब्रह्मे एकस्थाने हेरि।
संगोपने स्तव करे आपना पासरि।।

विप्रभाव हेरि प्रभु सन्तुष्ट हइल।
जगन्नाथ पादपद्मे तारे समर्पिल।।
सजन सहित प्रभु मिश्रगृहे एल।
विप्र गंगाधारे निज वासाते पाठाइल।।१६।।

भावसार– अचल–सचल ब्रह्म की एक स्थान में देखकर संगोपन में स्तव करने लगे। विप्र के भाव को देख प्रभु सन्तुष्ट हुये। श्रीजगन्नाथ के पादपद्म में उनको समर्पित किया। स्वजन सहित प्रभु मिश्रगृह में आये। विप्र गंगाधर निज घर में भेजा।।१६।।

भक्तगण निज निज वासाते चलिल।
विप्र अभिप्राय सवे चिन्तिते लागिल।।
एकदा गोविन्द सबे वलेन वचन।
ना बूझि विप्रेर किवा अभिलाष मन।।
गोविन्द कहे आछ्ये रहस्य इहार।
प्रभु इच्छामते इहा हइवे प्रचार।।१७।।

भावसार– भक्तगण अपने–अपने घर चले गये। विप्र अभिप्राय से सब चिन्तित हुये। एकबार गोविन्द ने सबको वचन कहा– विप्र की क्या अभिलाषा है समझ नहीं पाये? गोविन्द ने कहा– यह आपका रहस्य है, प्रभु इच्छानुसार इसका प्रचार होगा।।१७।।

हेनकाले गौरचन्द्र गोविन्दे डाकिल।
भावावेशे गभीर नादे कहिते लागिल।।
पुत्रवाञ्छा करि येइ विप्रेर आगमन।
श्रीनिवास नामे तार हइवे नन्दन।।
तार द्वारे भक्ति शास्त्र हइव प्रचार।
तारे हेरि उल्लास जन्मिवे सबाकार।।१८।।

भावसार– उसी समय गौरचन्द्र ने गोविन्द को पुकारा

भावावेश में गंभीर स्वर कहने लगे। पुत्र वाञ्छा के लिये विप्र का आगमन हुआ है, तुम्हारा श्रीनिवास नामक पुत्र होगा। उसके द्वारा भक्तिशास्त्र का प्रचार होगा; उसको निहारकर सबको उल्लास होगा।।१८।।

गौड़देशे शीघ्र विप्र करह गमन।
एत कहि प्रभु कैल भाव संवरण।।
हैथा विप्र जगन्नाथ दिया दरशन।
कहे शीघ्र गौड़देशे करह गमन।।
पुत्र जनमिवे एक सर्व गुणवान।
अल्पकालेर हव तेंह परम विद्वान।।१९।।

भावसार– विप्र ने गौड़देश में गमन किया। इतना कहकर प्रभु ने भाव संवरण किया। वहाँ विप्र को जगन्नाथ ने दर्शन दिया और कहा– जाओ, शीघ्र गौड़देश में जाओ। तुम्हारा एक सर्व गुणवान पुत्र होगा, अल्पकाल में ही वह परम विद्वान होगा।।१९।।

जगन्नाथे स्वप्ने हेरि चिन्ते मने मन।
कृष्ण गौर जगन्नाथ कैल निज जन।।
हेन सुख छाड़ि कैछे करिव गमन।
स्मरि गौर गुण विप्र व्याकुलित मन।।
हेनकाले गोविन्ददास कैल आगमन।
विप्रे लञा प्रभु स्थाने करिल गमन।।२०।।

भावसार– जगन्नाथ को स्वप्न में देखकर सोचने लगे। कृष्ण गौर जगन्नाथ ने अपना जन बना लिया है। ऐसा सुख छोड़कर कैसे गमन करूँ? गौरांग के गुणों को स्मरण कर विप्र व्याकुल हुये। इसी समय गोविन्ददास ने आगमन किया। विप्र को लेकर प्रभु स्थान में गमन किया।।२०।।

प्रभु भृत्य द्वारे जगन्नाथ देखाइल।

परम स्नेहेते तारे कहिते लागिल।।
जगन्नाथ तोमा प्रति हइल प्रसन्न।
अचिरात् तव वाञ्छा हइवे पूरण।।
दुःख त्याजि गौड़देशे करिला गमन।
निरन्तर करि तुमि नाम संकीर्तन।।२१।।

भावसार– प्रभु भृत्य द्वार में श्रीजगन्नाथ को दिखाया। परम स्नेह से उनको कहने लगे– जगन्नाथ तुम्हारे प्रति प्रसन्न हो गये हैं। शीघ्र ही तुम्हारी वाञ्छा पूर्ण होगी। दुःख त्याग कर गौड़देश में प्रस्थान करो और निरन्तर नामकीर्तन करो।।२१।।

तवे विप्र गौर सह भक्ते प्रणमिल।
व्याकुल हञा विदाय लइया चलिल।।
एक वत्सर जगन्नाथे सुखे करि वास।
प्रभुर आज्ञाय चले आपन आवास।।
प्रभु आज्ञा शिरे धरि गौड़देशे एल।
याजिग्रामे दुइ चारि दिवस रहिल।।२२।।

भावसार– तब विप्र ने गौर के साथ भक्त को प्रणाम किया और व्याकुल होकर उनसे विदा ली। एक वर्ष जगन्नाथपुरी में सुखपूर्वक वास किया। प्रभु की आज्ञा से अपने गृह को चले। प्रभु आज्ञा शिर धरकर गौड़देश में आये। याजिग्राम में दो चार दिन रहे।।२२।।

सकल वारता बलरामेरे कहिल।
तारे संगे लञा निज वासाते आसिल।।
निरन्तर गौरगुण करये कीर्तन।
चैतन्य दासेर गुण मुग्ध सर्वजन।।
कतदिने पत्नी तार गर्भवती हैल।
वैशाखी पूर्णिमा दिने पुत्र जनमिल।।२३।।

भावसार– सब बातें श्रीबलराम से कहीं। उनको संग लेकर अपने घर में आये। निरन्तर गौर गुणों का कीर्तन किया। चैतन्यदास विप्र के गुणों से सब जन मुग्ध हो गये। तत्पश्चात् उनकी पत्नी गर्भवती हुयीं फिर वैशाख पूर्णिमा के दिन पुत्र का जन्म हुआ।।२३।।

पुत्र जन्मदिने विप्र प्रेमानन्द मन।
विविध रहस्य स्वप्ने करिल दरशन।।
गौरांग चरणे पुत्रे कैल समर्पण।
पुत्रेर चरित्र हेरि सदा सुख मन।।
गौरांग चरित यत पुत्रेरे कहिल।
गणसह निताई अद्वैते जानाइल।।२४।।

भावसार– पुत्र जन्मदिन पर विप्र का मन प्रेम में आनन्दित हुआ। विविध रहस्य स्वप्न में जो दरशन किये। श्रीगौरांग के चरण में पुत्र समर्पित किया। पुत्र के शुभ चरित्र को देखकर सदा सुखी हुये। पुत्र को श्रीगौरांग के चरित्र सुनाये और श्रीनिताई–अद्वैत व पार्षदों की भी महिमा बताई।।२४।।

गोस्वामीगण कैल येछे ब्रजभूमे वास।
लुप्त तीर्थ उद्धारि कैल भक्तिर प्रकाश।।
एके एके प्रेममने सकलि कहिल।
शुनि श्रीनिवास चित्ते दिव्य भाव हैल।।
श्रीनिवास आचार्य चाहे छाड़िवारे घर।
पाठे मन नाहि वशे प्रेमेते कातर।।२५।।

भावसार– श्रीरूप सनातन आदि षड् गोस्वामी ने जैसे ब्रजभूमि का वास किया; लुप्त तीर्थों का उद्धार कर ब्रजभूमि का प्रकाश किया। यह सब बातें एक–एक करके पुत्र को बताईं। इनको सुनकर पुत्र श्रीनिवासाचार्य के चित्त में दिव्य भाव का उदय हुआ। उनका मन घर त्यागने के

लिये हुआ, अब पढ़ाई में मन नहीं है केवल प्रेम में कातर हो रहे हैं।।२५।।

पिता माता दुःख लागि करये चिन्तन।
केमन प्रकारे मुंइ याव वृन्दावन।।
से कालेते विधि तार सहाय हइल।
पिता श्रीचैतन्यदास नित्य लोके गेल।।
पिता–माता विद्यमाने केमने छाड़िव।
विशेषे बालक आमि वृन्दावने याव।।२६।।

भावसार– माता–पिता को दुःख होगा– यह सोचने लगे। किस प्रकार वृन्दावन जाऊँ? उसी समय भगवान् सहायक हुये। पिता श्रीचैतन्यदास नित्य लोक पधार गये। माता–पिता के विद्यमान रहते कैसे छोड़ें? विशेष रूप से बालक वृन्दावन कैसे जाये?।।२६।।

चैतन्य करूणा अति हय गाढ़तर।
घुचिव सकल दुःख आनन्द अन्तर।।
आचम्बिते चैतन्यदासेर देहे ज्वर हैल।
सप्त दिवस मध्ये गंगा प्राप्ति हैल।।
एइमत चैतन्य दासेर महिमा।
श्रीनिवास आचार्य पिता एइ ताँर सीमा।।२७।।

भावसार– श्रीचैतन्य की करूणा अति गाढ़तर हुयी। सब दुःख मिटा और हृदय में आनन्द आया। अकस्मात् श्रीचैतन्यदास को ज्वर हुआ। सात दिवस बाद गंगा प्राप्ति हो गयी। इसप्रकार चैतन्यदास की महिमा अपार है, जिनके पुत्र श्रीनिवासाचार्य प्रभु जैसे महान् गौरप्रेमी हों।।२७।।

गौरांग प्रकाश मूर्ति आचार्य श्रीनिवास।
जगते शिखाल गौर भक्तिर प्रकाश।।
ताँर पिता श्रीचैतन्य दास महामति।

परम अद्‌भुत ताँर महिमार ख्याति।।
गौर जगन्नाथे ताँर समर्पित मन।
'किशोरी' वन्दये तारे करिया यतन।।२८।।

भावसार– श्रीगौरांग महाप्रभु की प्रकाश मूर्त्ति हैं– श्रीनिवासाचार्य प्रभु। जगत में सिखाने के लिये उन्होंने गौरभक्ति का प्रकाश किया है। उनके पिता श्रीचैतन्यदास परम बुद्धिमान और विख्यात हैं। गौर जगन्नाथ में उनका मन समर्पित है। 'किशोरीदास' उनकी वन्दना करता है।।२८।।

२१. प्रभुपाद श्रील प्राणगोपाल गोस्वामी

नवद्वीप

जय जय गौरचन्द्र द्विज कुलमणि।
जय जय नित्यानन्द मनिधारी फणि।।
जय जय सीतापति कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
जगदगुरु नित्यानन्द नित्यानन्द राय।
याँहार कृपाय पाइ गौर गुण धाम।।१।।

भावसार– द्विजकुल मणि गौरचन्द्र की जय हो! श्रीनित्यानन्द प्रभु व श्रीअद्वैतप्रभु की जय हो! श्रीगदाधर व श्रीवास आदि की जय हो! जगद्‌गुरु नित्यनान्द नित्य आनन्द में रहते हैं। जिनकी कृपा से गुणधाम गौरचन्द्र की प्राप्ति होती है।।१।।

ताँर वंशे आविर्भूत एक महाजन।
प्राणगोपाल गोस्वामी विदित भुवन।।
नित्यानन्द प्रभु सुत प्रभु वीरचन्द्र।
गौर नाम प्रेमे दिते महाशक्ति मंत।।
ताँर पत्नी नारायणी माता ठाकुराणी।

श्रीजाह्नवा मातार शिष्य जगते बाखानि।।२।।

भावसार- श्रीनित्यानन्द प्रभु के वंश में एक महाजन आविर्भूत हुये। जो श्रीप्राणगोपाल गोस्वामी के नाम से भुवन में विख्यात हुये। श्रीनित्यानन्द प्रभु के पुत्र श्रीवीरचन्द्र प्रभु हुये। वे गौरनाम में प्रेम प्रदान करने की महाशक्ति रखते थे। उनकी पत्नी का नाम श्रीनारायणी ठाकुराणी था, जो श्रीजाह्नवा माता की शिष्य जगत प्रसिद्ध हैं।।२।।

ताँर शिष्या हन श्रीगोविन्द प्रिय माता।
नवकुमारी ताँर शिष्या भुवने विदिता।।
ताँर शिष्या कालिन्दी माता ख्यात सर्वजन।
अन्नपूर्णा माता ताँर शिष्याते गमन।।
तारामणि माता ताँर शिष्यत्त्व लभिल।
कृष्ण किशोर ताँर शिष्य जगत जानिल।।३।।

भावसार- उनकी शिष्या हुयीं श्रीगोविन्द प्रिय माता। उनकी शिष्या श्रीनवकुमारी भुवन में विदित हैं। उनकी शिष्या श्रीकालिन्दी माता सर्वजन विख्यात है। श्रीअन्नपूर्णा माता उनकी शिष्या हुयीं। श्रीतारामणि माता ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। श्रीकृष्णकिशोर उनके शिष्य हुये, जिन्हें जगत जानता है।।३।।

किशोरी माता कैल ताँर शिष्य शिष्यत्त्वग्रहण।
शारदा माता ताँर शिष्य गुणे विचक्षण।।
प्रभु नित्यानन्द सह याँर आलापन।
ताँर गर्भे प्रभुपाद लभिल जनम।।
अलक मोहन पिता सर्व गुणवान।
प्राण गोपाल प्रभु याँर सुयोग्य संतान।।४।।

भावसार- श्रीकिशोरी माता ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। श्रीशारदा माता उनकी शिष्य गुणों में विचक्षण हैं।

श्रीनित्यानन्द प्रभु के साथ जिनका आलापन होता है। उनके गर्भ से श्रीप्राणगोपाल गोस्वामी का जन्म हुआ। उनके पिता श्रीअलकमोहन गोस्वामी सर्वगुणवान थे। जिनके आप सुयोग्य संतान हुये।।४।।

तीव्र भजनावेशे ताँर आविष्ट तनु मन।
कण्ठेते अनन्त शिला सदा सुशोभन।।
निज निष्ठा लागि शिष्य भवने ना याय।
शालग्राम सेवे सदा आनन्द हियाय।।
विशेषे अनुरोधे यदि कभु कोथा याय।
शालग्रामे निज वक्षे राखये सदाय।।५।।

भावसार– तीव्र भजन में मन उनका मन आविष्ट हुआ। कण्ठ में अनन्त शिला सुशोभित रहती। निज निष्ठा से शिष्य के भवन में नहीं जाते हैं और आनन्द हृदय से शालग्रामजी की सेवा करते हैं। विशेष अनुरोध से यदि कहीं जाते हैं। तब भी शालग्राम निज वक्ष में सदा धारण करते हैं।।५।।

प्रगाढ सदाचार ताँर भजननिष्ठा मन।
परम अद्‌भुत ताँर चरित्र कथन।।
बांग्लादेशे ढ़ाका जेलाय वुतनि ग्राम।
तथाय जन्मिल प्रभु सर्व गुणधाम।।
चारि वर्ष वयकाले पिता अदर्शन।
भ्राता कृष्णगोपाल करे ताँहार पालन।।६।।

भावसार– प्रगाढ़ सदाचार व भजन–निष्ठा में उनका मान रहता है। उनका परम अद्‌भुत चरित्र कहा नहीं जा सकता। बंगलादेश में ढ़ाका जिला में बुतनी गाँव है वहीं आपका जन्म हुआ था। चार वर्ष की अवस्था में पिता का नित्यलीला गमन हो गया। भ्राता श्रीकृष्ण गोपाल ने उनका पालन किया।।६।।

कतदिन कृष्ण गोपाल अदर्शन हैल।
शिशु पुत्रे लञा माता विपन्न पडिल।।
हरेन्द्रकुमार राय शिष्य एक जन।
प्रभुपादे अध्ययने करिल यतन।।
फरिदपुरे पाँचरिया ग्रामे लञा एल।
तथाय टोले अध्ययन व्यवस्था करिल।।७।।

भावसार– कुछ दिन बाद श्रीकृष्ण गोपाल भी नित्यलीला में पधारे। छोटे शिशु को लेकर माता विपदा में पड़ गयीं। श्रीहरेन्द्रकुमार राय एक शिष्य थे, उन्होंने उस शिशु के अध्ययन के लिये चेष्टा की फरीदपुर के पाँचरिया गाँव में ले जाकर विद्याध्ययन कराया।।७।।

द्वादश वत्सर प्रभुर वयस यखन।
शिशु संगे खेला करे पुलकित मन।।
निकटे गृहस्थ गृहे वाइसी एकजन।
कीर्तन करये शुनि तथाय गमन।।
कि रूप हेरिनु पद करिया श्रवण।
अभिनव भावोद्गम हृदये तखन।।८।।

भावसार– बारह वर्ष की आयु जब शिशु की हुयी। बालकों के साथ खेलने में उनका मन पुलकित था। निकटस्थ गृहस्थ के घर में एक बाईजी रहती थीं। उनका कीर्तन सुनकर वहाँ गये। वे 'कि रूप हेरिनु' पद को गा रही थीं, यह सुनकर उनका भाव उद्गम हृदय में हुआ।।८।।

अकस्मात् मूर्च्छित हञा भूमिते पडिल।
आश्चर्य हेरिया सबे सम्मुखे आसिल।।
पुनः पुनः वाइजी करे से पद कीर्तन।
कतक्षणे प्रभुपाद पाइला चेतन।।
वाइजी जिज्ञासे ताँरे मूर्च्छार कारण।
अकपटे प्रभुपाद बलेन तखन।।९।।

भावसार- अकस्मात् मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिर पडत्रे। आश्चर्यचकित हो सब सामने आये। बाईजी ने बार-बार कीर्तन किया। तब बालन थोड़ा चैतन्य हुये। बाईजी ने उनसे इसका कारण पूछा तब प्रभुपाद बोले।।९।।

कीर्तन श्रवणे मोर दिव्य भाव एल।
श्रीश्यामसुन्दर रूप नयने हेरिल।।
हेरिया मधुर रूप हइल मूर्च्छित।
शुनिया सकल लोक हइल स्तम्भित।।
तद्वधि खेला धूलाय मन नाहि रय।
से रूप माधुरी सदा नयने देखय।।१०।।

भावसार- कीर्तन श्रवणकर मेरा दिव्य हो गया। श्रीश्यामसुन्दर का रूप नयनों से देखा। फिर मधुर रूप दर्शन कर मूर्च्छित हो गया। सब लोग यह सुनकर स्तम्भित हो गये। इतने समय तक खेल-कूद में मन नहीं रह गया, वह रूपमाधुरी सदा नयनों से दिखती रहती।।१०।।

प्रभु पाद सर्वक्षण वलित वचन।
सेई बाईजी मोर वत्मोद्देशी गुरु हन।।
षोडश वर्ष वयःकाले स्कूल छाड़िल।
फरिदपुर खोलावाडी ग्रामेते आसिल।।
रजनीकान्त भट्टाचार्य स्थाने आगमन।
दुइ वर्षे मुग्ध बोध व्याकरण अध्ययन।।११।।

भावसार- आप सबसे यही वचन कहते- वे बाईजी मेरी उद्देश्य गुरु हैं। सोलह वर्ष में विद्यालय छोड़ दिया। फरीदपुर खोलावाड़ी गाँव में आये। श्रीरजनीकान्त भट्टाचार्य के स्थान में आगमन किया और दो वर्ष मुग्ध बोध व्याकरण अध्ययन किया।।११।।

अध्ययन शेषे जन्म भूमिते आसिल।

तथा हैते कलिकाता आगमन कैल।।
गोकुल चाँद गोस्वामी स्थाने अध्ययन।
रास्तार ग्यासेर आलोय करये पठन।।
दारुण दारिद्र माझे यापये जीवन।
काव्य शेषे भागवत करे अध्ययन।।१२।।

भावसार– अध्ययन के उपरान्त अपने जन्मभूमि में आये। वहाँ से कोलकाता में आगमन किया। श्रीगोकुलचाँद गोस्वामी के यहाँ अध्ययन किया। मार्ग के गैस बल्व के प्रकाश में पढ़ते थे। दारुण दरिद्रता में रहकर जीवन यापन किया। काव्य के पश्चात् श्रीमद्भागवत का अध्ययन किया।।१२।।

भागवतेर पाँच छय अध्याय पठन।
प्रतिभा हेरिया सबे विमोहित मन।।
तवे अतुल कृष्ण गोस्वामी स्थाने एल।
भागवतेर ब्रह्म स्तुति अध्ययन कैल।।
तवेत प्रभुपाद देशे करिया गमन।
श्रीमद्भागवत पाठ कैल आरम्भण।।१३।।

भावसार– भागवत के पाँच–छः अध्याय पाठ करते। प्रतिभा देखकर सब विमोहित हुये। तब श्रीअतुलकृष्ण गोस्वामी के स्थान पर आये। भागवत की श्रीब्रह्म स्तुति का अध्ययन किया। तब प्रभुपाद ने दो में गमन किया और श्रीमद्भागवत का पाठ आरम्भ किया।।१३।।

पाठे मुग्ध श्रीआनन्द किशोर गोस्वामी।
सरोजिनी नामे कन्या अर्पिलेन तिनि।।
कतदिन ासजन सह नवद्वीपे एल।
बड आखडाय घर भाडा करिया रहिल।।
कलिकातार आखडाय पाठ आरम्भिल।
शुनिया अपूर्व व्याख्या सबे मुग्ध हैल।।१४।।

भावसार– श्रीआनन्दकिशोर गोस्वामी ने उनके पाठ से मुग्ध होकर अपनी सरोजिनी नामक कन्या उनको अर्पित की। कुछ दिन पश्चात् भक्तों के साथ नवद्वीप में चले आये। बड़ा अखाड़ा में किराये पर रहे। कोलकाता के अखाड़ा में पाठ आरम्भ किया। उनकी अपूर्व व्याख्या सुनकर सब मुग्ध हो गये।।१४।।

गोविन्ददास बाबाजी नामे एकजन।
पाठे शुनि स्वीय सेवा कैल समर्पण।।
वसत वाटी सह सेवा मदन मोहन।
प्रभु करे समर्पिया गेला वृन्दावन।।
प्रभुपाद सेई सेवा करि अंगीकार।
प्रेम अनुरागे सेवे आनन्द अपार।।१५।।

भावसार– श्रीगोविन्ददास नामक एक बाबाजी थे। पाठ सुनकर अपने श्रीमदनमोहनजी की सेवा उनको अर्पित कर दी और वृन्दावन चले गये। प्रभुपाद ने वह सेवा अंगीकार की। आनन्दपूर्वक अनुराग सहित सेवा करने लगे।।१५।।

तद्वधि नवद्वीपे स्थायी अवस्थान।
पाठ संकीर्तन रंगे भुवन मातान।।
माता स्थाने मंत्र दीक्षा करिया ग्रहण।
जग जीवे गौर प्रेम कर समर्पण।।
मातार चरणे ताँर दृढ़ रति छिल।
आपने आचरि गुरु भक्ति शिखाइल।।१६।।

भावसार– तद्वधि नवद्वीप में ही अवस्थान करने लगे। पाठ–संकीर्तन आनन्द में जगत को मत्त करने लगे। अपनी माता से दीक्षा–मंत्र ग्रहण किया। जगत के जीवों को गौर प्रेम में मत्त किया। माता के श्रीचरणों में उनकी दृढ़ प्रीति थी। आपने आचरण कर गुरुभक्ति सबको सिखाई।।१६।।

त्रिसंध्या परिक्रमा आर साष्टांग प्रणाम।
चरणामृत पान यत सेवार विधान।।
रामदास बाबा नामे पण्डित एकजन।
चैतन्य चरितामृत ताँर स्थाने अध्ययन।।
प्रभुर प्रतिभा हेरि तेंह मुग्ध हैल।
बालकेर यतगुण हृदये बूझिल।।१७।।

भावसार– त्रिसंध्या परिक्रमा और साष्टांग प्रणाम करते। चरणामृत पान करते। श्रीरामदास बाबा नामक एक विद्वान् पुरुष थे। उनके निकट श्रीचैतन्यचरितामृत ग्रंथ का अध्ययन करते। प्रभुपाद की प्रतिभा देखकर वे मुग्ध हो गये। बालक के गुणों को हृदय में समझे।।१७।।

क्रमे क्रमे प्रभुगुण सर्वत्र प्रकाश।
बंग देशेर सर्वत्रेते पाठेर विलास।।
आबाल वृद्ध वनिता पाठ करिया श्रवण।
पदाश्रय करि बहु सधन्य जीवन।।
तेरश आठार सने ब्रजे आगमन।
रहये गोपाल कुंजे पुलकित मन।।१८।।

भावसार– धीरे–धीरे प्रभु के गुणों का सर्वत्र प्रकाश होने लगा। बंगाल में उनके पाठ प्रवचन का सर्वत्र प्रचार हुआ। वृद्ध बालक वनिता सब उनका पाठ श्रवण कर श्रीचरण का आश्रय कर जीवन को धन्य किये। १३१८ बंगाब्द में ब्रज वृन्दावन में आगमन किया और श्रीगोपाल कुञ्ज में पुलकित मन से रहे।।१८।।

ताँर पूर्व पुरुष श्रीलक्ष्मीकान्त गोस्वामी।
श्रीगोपाल देवेर सेवा स्थापिलेन तिनि।।
यवे प्रभुपाद ब्रजे करये गमन।
तथागिया अवस्थान करे सर्वक्षण।।
प्रभु यदि वृन्दावने करिल गमन।

ताहारे पाइया सुखी ब्रजवासी गण।।१६।।

भावसार– उनके पूर्व पुरुष श्रीलक्ष्मीकान्त गोस्वामी ने श्रीगोपालदेव की सेवा स्थापित की थी। जब आपने ब्रज में आगमन किया। तब वहाँ जाकर सर्वक्षण अवस्थान किया। प्रभुपाद के वृन्दावन आगमन से ब्रजवासीगण सुखी हो गये।।१६।।

वृन्दावने वासी यत वैष्णव गण।
प्रभु लञा शोभा यात्रा कैल विलक्षण।।
चौद्द मादल सह संकीर्तन विलास।
सकले हइल मुग्ध हेरिया प्रकाश।।
भक्ति ग्रंथ विचारणे सेवा कैल।
शुनिया शास्त्रेर व्याख्या मोहित हइल।।२०।।

भावसार– वृन्दावनवासी जितने वैष्णवगण हैं, वे प्रभुपाद के साथ शोभायात्रा करते थे। चौदह मील तक संकीर्तन का विलास किया। सब मुग्ध हो गये। भक्ति ग्रंथ पाठ की सेवा की; जिसे सुनकर सब मोहित हो गये।।२०।।

अद्‌भुत सिद्धान्त शुनि प्रेमा कुलगण।
प्रभु पादेर जयगान करे सर्वजन।।
जगदीश बाबा आर रामकृष्ण बाबा।
वनमाली बाहादुर श्रीमाधव बाबा।।
कामिनी घोष आदि अनुरागी गण।
सेवा सह इष्ट गोष्ठी करे अनुक्षण।।२१।।

भावसार– उनके मुख से अद्‌भुतर सिद्धान्त सुनकर सब लोग प्रभुपाद की जय–जयकार करने लगे। श्रीजगदीशदास बाबा, श्रीरामकृष्णदास बाबा, श्रीमाधवदास बाबा, श्रीवनमाली राय बहादुर, श्रीकामिनीकुमार घोष आदि अनुरागी वैष्णवों के साथ संगोष्ठी आदि करते थे।।२१।।

इष्ट गोष्ठी काले सवे विभोर हइत।
भावावेशे दिवा रात्रि करिया याइत।।
दैवे तथा माता गोस्वामिनीर अन्तर्धान।
प्रभुपाद कैल महामहोत्सव विधान।।
भक्तिग्रंथ परायण पाठ कीर्तन विलास।
हेरि ब्रजवासीगण परम उल्लास।।२२।।

भावसार– इष्टगोष्ठी (सत्संग) के समय सब विभोर हो जाते। भावावेश में दिन–रात्रि व्यतीत हो जाते। दैवयोग से माता गोस्वामिनीजी अन्तर्धान हो गयीं। प्रभुपाद ने उनका तिरोधान महा महोत्सव मनाया। भक्ति ग्रंथों का पाठ व कीर्तन का आयोजन हुआ; यह देखकर ब्रजवासीगण परम उल्लसित हुये।।२२।।

माता गोस्वामीर प्रत्यर्थे भक्तिग्रंथ वितरण।
हइल परम सुखी ब्रजवासी जन।।
राधाकुण्ड संस्कारे शुन नियोजिल।
रामदास बाबाजी सह अर्थ संग्रह कैल।।
सेकाले राजगडेर राजा विशन्ति घटाल।
मकोर्द्दमा कार्ये बहु अर्थ व्यय हैल।।२३।।

भावसार– माताजी के निमित्त भक्ति ग्रंथों का वितरण किया। जिससे ब्रजवासीगण बड़े सुखी हुये। राधाकुण्ड संस्कार की बात सुनकर श्रीरामदास बाबाजी के साथ मिलकर अर्थ सेवा की। वहाँ राजगढ़ के राजा विशन्ति घटाल थे, जिनका मुकदमा कार्य में बहुत अर्थ व्यय हुआ।।२३।।

जय अन्ते प्रिय शिष्य कैल आज्ञा दान।
प्रियनाथ पाल सब करिल विधान।।
राधाकुण्ड श्यामकुण्ड संस्कार कैल।
तेंह भाग्यवान श्रीमतीर कृपा पाइल।।
तेंह स्वकीया परकीया वादे वितर्क उठिल।

से कालेते प्रभुपाद ब्रजधामे छिल।।२४।।

भावसार- विजय होने पर अपने प्रिय शिष्य को आज्ञा दी- प्रियनाथ पाल ने सब विधान किया और राध ाकुण्ड श्यामकुण्ड का संस्कार किया। वे भी भाग्यवान् हैं, उन्होंने श्रीराधारानी की कृपा पायी है। जब स्वकीया-परकीया उपासना का विवाद प्रारम्भ हुआ, तब आप ब्रज में ही थे।।२४।।

श्यामसुन्दर मन्दिरेते भागवत पठन।
विराट वैष्णव सेवा हैल आयोजन।।
आइलेन यत वैष्णव गोस्वामीर गण।
से सभाय प्रभुपाद करिलेन गमन।।
सर्वजन समक्षे सुयोग्य बाखानिल।
शुनि सबे प्रभु पादेर जय जय दिल।।२५।।

भावसार- श्रीराधाश्यामसुन्दर मन्दिर में श्रीमद्भागवत का पाठ किया और विशाल वैष्णव सेवा का आयोजन किया। वहाँ वैष्णव गोस्वामिगण आये थे। आपने सर्वजन के समक्ष वक्तव्य दिया। जिसे सुनकर सब प्रभुपाद की जय-जयकार करने लगे।।२५।।

कतदिने कर्त्ता माता कैल अन्तर्धान।
प्रभुपाद कैल महोत्सव विधान।।
विरह उत्सवे यत कैल आयोजन।
हइल वैष्णव सेवा नाम संकीर्तन।।
प्रत्यक्ष दर्शन बिना नहे अनुभव।
हेरिल जगतवासी प्रभुर वैभव।।२६।।

भावसार- कुछ दिन बाद कर्ता माता अन्तर्धान हो गयीं। आपने उनका महोत्सव किया। विरह उत्सव में नाम संकीर्तन व वैष्णव सेवा का आयोजन हुआ। प्रत्यक्ष दर्शन

बिना अनुभव नहीं हो सकता। जगतवासियों ने प्रभु के वैभव को देखा था।।२६।।

प्रेम सम्पुट कृष्ण प्रीति संदर्भ आदि।
वैष्णवे करये दान प्रेमानन्द मति।।
एकदा नदिया होते ब्रज यात्रा कैल।
पथे रेल दुर्घटनाय विपर्यय हैल।।
एलाहाबाद समीपे भामराली स्टेशन।
तथाय हइल एइ विपट्टिट घटन।।२७।।

भावसार- प्रेमसम्पुट, कृष्ण सन्दर्भ, प्रीति सन्दर्भ आदि ग्रंथ वैष्णवों को दान किये। एकबार नवद्वीप से ब्रज की यात्रा की। रास्ता में रेल दुर्घटना का विपर्यय हुआ। प्रयाग के निकट भामराली स्टेशन है, वहाँ यह हुआ।।२७।।

अग्र पश्चातेर कामरा सब चूर्ण हैल।
भक्तगण सह प्रभु अल्लाहत हइल।।
अग्रे अनुभवि संकीर्तन आरम्भिल।
भजन प्रभावे ताँर अल्पहानि हैल।।
एलाहाबाद पंचायती आखड़ाय गमन।
अल्पे सुस्थ हञा ब्रजे करिल गमन।।२८।।

भावसार- आगे-पीछे के डिब्बे सब चूर्ण हो गये। भक्तगण सहित प्रभुपाद बच गये। आपने संकीर्तन आरम्भ किया। भजन के प्रभाव से अल्पहानि ही हुयी। प्रयाग के पंचायती अखाड़ा में गमन किये। थोड़ा स्वस्थ होकर ब्रज में आये।।२८।।

माधवदास बाबा नामे ब्रजेर वैष्णव।
प्रभु पादेर प्राण प्रिय अपूर्व वैभव।।
ताँहार निर्याण लीला अद्भुत कथन।
प्रभु क्रोड़े शिर राखि छाड़िल जीवन।।

आपने प्रभुपाद ताँर महोत्सव कैल।
चौरासी क्रोशेर यत वैष्णव आसिल।।२६।।

भावसार– ब्रज में श्रीमाधवदास बाबा नाम के एक वैष्णव हैं। वे प्रभुपाद के प्राणप्रिय थे। उनकी निर्याण लीला अद्भुत है। स्वयं आपने उन बाबा का महोत्सव किया। चैरासी क्रोश ब्रजमण्डल से वैष्णव आये।।२६।।

माखन गाँगुलि आर गणेश कीर्तनिया।
संकीर्तन परिवेशे महानन्द हञा।।
श्रीखण्ड निवासी राखालानन्द ठाकुर।
दैन्य चन्द्रामृत पाठे आनन्द प्रचुर।।
आनन्द गोपाल प्रभुर चैतन्यचरितामृत।
गौरांगदासेर चैतन्यचन्द्रोदय पठन अमृत।।३०।।

भावसार– श्रीमाखन गांगुली और श्रीगणेश कीर्तनीयार ने संकीर्तन प्रारम्भ किया। श्रीखण्ड निवासी श्रीराखालानन्द ठाकुर आये। उन्होंने श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम् का पाठ किया। प्रभुपाद श्रीआनन्द गोपाली गोस्वामी ने श्रीचैतन्यचरितामृत का पाठ किया। श्रीगौरांगदास ने श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटक का पाठ किया।।३०।।

आपने प्रभुपाद कैल भागवत पठन।
पाठ संकीर्तने काँपे श्रीवृन्दावन।।
चौद्द मादल सह नगर संकीर्तन।
उत्सव आनन्दे माते ब्रजवासी जन।।
आनन्द वृन्दावन चम्पू ग्रंथ महाधन।
प्रेमानन्दे वैष्णव करे कैल समर्पण।।३१।।

भावसार– और स्वयं प्रभुपदा ने श्रीमद्भागवत का पाठ किया। पाठ व संकीर्तन से श्रीब्रज वृन्दावन गूँज उठा। चौदह मील तक नगर कीर्तन हुआ। उत्सव आनन्द से

ब्रजवासी जन मग्न हुये। श्रीआनन्दवृन्दावनचम्पू ग्रंथ वैष्णवों को प्रेमपूर्वक समर्पित किया।।३१।।

एइ भावे महोत्सवेर कैल समाधान।
प्रभुपादेर भजन क्रिया अद्भुत विधान।।
रात तिनटाय उठि शौचक्रिया सारि।
स्नान करि वसिलेन आसन उपरि।।
लीला स्मरण सह लक्ष नामेर ग्रहण।
आन्हिक समापि चैतन्य भागवतादि श्रवण।।३२।।

भावसार– इसप्रकार से श्रीमाधवदास बाबा का तिरोधान महोत्सव पूर्ण किया। प्रभुपाद की भजन रीति अद्भुत थी। रात्रि तीन बजे उठकर शौचादि जाते और स्नानकर आसन पर भजन में बैठ जाते। लीला स्मरण के साथ एक लाख हरिनाम जपते। आन्हिक पूर्ण कर श्रीचैतन्य भागवत आदि ग्रंथ श्रवण करते।।३२।।

भक्त मुखे शुनि हैल भावाविष्ट मन।
बाल्य भोग पाञा इष्ट गोष्ठी कतक्षण।।
पाठ संकीर्तन आर भजन आवेशे।
निरवधि काल याय नाहि अन्य आशे।।
कभु यवे ब्रजधामे करित गमन।
वसित आनन्द बाजार दर्शन कारण।।३३।।

भावसार– भक्त मुख से सुनकर भावाविष्ट मन हो जाता। बाल्यभोग पाकर इष्टगोष्ठी करते। पाठ–संकीर्तन व भजन के आवेश में ही रहते। निरवधि इसी में समय जाता और कोई आशा नहीं रहती। कभी जब ब्रज–वृन्दावन में जाते तो आनन्द बाजार दर्शन करने जाते।।३३।।

वृन्दावनवासी आर वनवासी गण।
प्रभुर दर्शन आसे करित गमन।।

यथायोग्य सम्मान सदा करि प्रदर्शन।
प्रभुपाद करितेन आनन्द वर्द्धन।।
भजन सम्पर्के केह कहिलेन वचन।
प्रभु कहे सदा कर नाम संकीर्तन।।३४।।

भावसार- वृन्दावनवासी और वन वासीगण प्रभु के दर्शन करने जाते। यथायोग्य सम्मान करते और प्रभुपाद उनका आनन्दवर्धन करते। भजन सम्बन्ध के कुछ वचन कहते। प्रभुपाद कहते- सदा नाम संकीर्तन करो।।३४।।

वैकाले भक्ति ग्रंथ पाठ रात्रे संकीर्तन।
भक्त संगे इष्ट गोष्ठी करे अनुक्षण।।
प्रभुर गुणेते मुग्ध सबाकार मन।
प्रभु पादेर प्रेमगुण अपूर्व कथन।।
एइ भाव कतकाल करिल विलास।
भक्ति ग्रंथ पाठे सवार बाडाय उल्लास।।३५।।

भावसार- शाम को भक्ति ग्रंथ पाठ व रात्रि में संकीर्तन करते। भक्त संग में इष्टगोष्ठी करते अनुक्षण। सबका मन प्रभुपाद के गुणों से मुग्ध था। उनके प्रेमगुण का अपूर्व कथन है। इसी भाव में कितने समय रहे। भक्तिग्रंथ पाठ से सबको उल्लास होता था।।३५।।

देवे तेंरश आटचल्लिश सन आगमन।
आठाइशे ज्येष्ठे आसि ताहाते मिलन।।
कृष्णा तृतीया बुधवार उपसन्न हैल।
नवद्वीपे प्रभुपाद अन्तर्धान कैल।।
उज्ज्वल जोतिष्क उदि जीव भाग्य काशे।
एवे अन्तर्हित हैल सबे शोके भासे।।३६।।

भावसार- बंगाब्द १३४८ अट्ठाइस ज्येष्ठ कृष्णा तृतीया बुधवार दिन में प्रभुपाद अन्तर्धान हुये। नवद्वीप के उज्ज्वल

नक्षत्र आज अन्तर्हित हुये। सब लोग शोकायमान हुये।।३६।।

प्रभुपादेर गुण स्मरि करये क्रन्दन।
अद्यापिओ भाग्यवान हृदेय स्मरण।।
ताँहार सेवित राधा मदनमोहन।
विराजये नवद्वीपे भुवन मोहन।।
ताँर वंशधर क्रमे अद्यापि सेवन।
प्रेम सेवा हेरि धन्य माने सर्वजन।।३७।।

भावसार- प्रभुपाद के गुण स्मरण करके सब क्रन्दन करने लगे। आज भी भाग्यवान् उनका हृदय में स्मरण करते हैं। उनके सेवित श्रीराधामदनमोहन नवद्वीप में विराजमान होकर भुवन को मोहित कर रहे हैं। उनके वंशज गोस्वामी आज भी सेवा कर रहे हैं। प्रेमसेवा देखकर सब जन धन्य हो रहे हैं।।३७।।

अद्यापिओ कर्त्ता मातार तिथि योगेते।
श्रीगुरु निर्याण उत्सव महा समारोहे।।
निवराथि काल पाठ कीर्तन विलास।
हेरिया भुवनवासी परम उल्लास।।
प्रभुपाद कर्तामातार चित्रपट लञा।
अद्यापि नगर भ्रमे प्रेमयुक्त हञा।।३८।।

भावसार- आज भी कर्ता माता की तिथि में श्रीगुरु निर्याण उत्सव समारोह होता है। उस समय पाठ-कीर्तन होता है, यह उत्सव देख सब परम उल्लसित होते हैं। प्रभुपाद की कर्तामाता का चित्रपट लेकर आज भी नगर भ्रमण संकीर्तन होता है।।३८।।

परिजन सह एइ नगर भ्रमण।
हेरिया भक्तजन पुलकित मन।।
प्रभुपाद स्वहस्ते इहा कैल आरम्भन।

हृदये स्मरिया सवे पुलकित मन।।
अद्यापि सेई कार्य चलिते लागिल।
प्रभुर प्रेमेर गुण जगत जानिल।।३६।।

भावसार– परिजन सहित नगर भ्रमण करते हैं। भक्तजन का मन पुलकित होता है। प्रभुपाद स्वहस्त से इसका प्रारम्भ किया था। हृदय में स्मरण कर सब पुलकित होते हैं। आज भी वही कार्य चलने लगा है। आपका प्रेमगुण सब जगत जानता है।।३६।।

प्रभुर प्रेमेर गुण करये खोषणा।
अनुभव करे यत अनुभवी जना।।
परम करूण प्राण गोपाल गोस्वामी।
अचिन्त्य अगम्य ताँर गुणेर काहिनी।।
आत्मशुद्धि लागि किञ्चित् करिनु कीर्तन।
कृपा कर प्रभुपाद लइल शरण।।४०।।

भावसार– अनुभवी जन उनका प्रेमगुण का अनुभव करते हैं। श्रीप्राण गोस्वामी परम करूण थे, उनके गुण अगम व अचिन्त्य हैं। आत्मशुद्धि के लिये किञ्चित् वर्णन किया है। हे प्रभुपाद! कृपाकर शरण में लीजिये।।४०।।

तोमार दासेर दास ताँर अनुगत।
मुंइ अभाजन एइ कहिये किञ्चित्।।
कृपा करि निजगुणे कर आकर्षण।
गण मध्ये स्थान दिया राख अनुक्षण।।
तोमा गणे रहि करि गौरांग सेवन।
'किशोरी' करये हृदे एइ अंकिचन।।४१।।

भावसार– मैं तुम्हारे दास के दास का अनुगत हूँ। मुझ अभाजन पर किञ्चित् कृपा कीजिये। कृपाकर निजगुणों से प्रसन्न हो जाइये। अपने गणों के मध्य में स्थान दीजिये।

तुम्हारे सेवकों के मध्य रहकर श्रीगौरांग की सेवा कर सकूँ। 'किशोरीदास' हृदय में यही कामना करता है।।४१।।

२२. सिद्ध श्रील मनोहरदास बाबाजी

गोविन्दकुण्ड, गोवर्धन

जय जय विश्वम्भर द्विजकुल राज।
जय जय नित्यानन्द रसिक समाज।।
जय जय श्रीअद्वैत कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
गोवर्द्धने श्रीगोविन्दकुण्डे दिव्य स्थान।
श्रीकृष्णेर लीलास्थली ख्यात सर्वस्थान।।१।।

भावसार– द्विजकुल राज विश्वम्भर महाप्रभु की जय हो! रसिक समाज के प्राणस्वरूप श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्रीकुबेर पण्डित नन्दन श्रीअद्वैतप्रभु की जय हो! श्रीगदाधर श्रीवास आदि भक्तगण की जय हो। गोवर्द्धन में श्रीगोविन्दकुण्ड दिव्य स्थान है, जो श्रीकृष्ण की लीलास्थली विख्यात है।।१।।

यथा पुरी माधवेन्द्र कृष्ण देखादिल।
अपूर्व आख्यान ताहा भुवने व्यापिल।।
तथा वैसे सिद्ध बाबा मनोहर दास।
गौर प्रेममय मूर्ति अद्भुत प्रकाश।।
नदिया जेलाय माधव पुरेते जनम।
वारश चौयान्न सने क्षिति आगमन।।२।।

भावसार– जहाँ श्रीमाधवेन्द्रपुरी को श्रीकृष्ण के दर्शन हुये थे। वह प्रसंग भुवन विख्यात है। वहाँ पर ही सिद्ध श्रील मनोहरदास बाबाजी महाराज ने भजन किया। वह गौरप्रेम की अद्भुत मूर्त्ति थे। उनका भजन प्रकाश अद्भुत

था। नदिया जिला के माधवपुर गाँव में १२५४ बंगाब्द में जन्म लिया।।२।।

कार्तिकी शुक्ला पञ्चमी तिथि योगे।
आविर्भूत धरा माझे प्रेम अनुरागे।।
पिता भोला नाथ अधिकारी महाजन।
माता प्यारी देवी नाम ख्यात सर्वजन।।
पूर्वाश्रमे महेन्द्र नाम करिल धारण।
शिशुकाले माता ताँर हन अदर्शन।।३।।

भावसार– कार्तिक शुक्ला पञ्चमी तिथि में धराधाम पर आविर्भूत हुये। पिता श्रीभोलानाथ अधिकारी व माता श्रीमती प्यारीदेवी थीं। पूर्वाश्रम में उनका नाम महेन्द्र था। शिशुकाल में माता अन्तर्धान हो गईं।।३।।

छय वर्ष वयः काले हरये स्वपन।
घरेर वाहिरे कैल एक साधुजन।।
ताहारे लइया एक अरण्ये राखिल।
तारपर चतुःपार्श्वे अग्नि धराइल।।
हेरिया ए रूप स्वप्न उद्विग्न हइल।
तदवधि गृहाश्रमे विरक्ति जन्मिल।।४।।

भावसार– उन्होंने छः वर्ष की आयु में स्वप्न देखा कि घर के बाहर एक साधु है, उनको लेकर अरण्य में चला गया है। तत्पश्चात् चारों ओर अग्नि जला दी है। ऐसा स्वप्न देखकर उद्विग्न हो गये। तब उनका गृह से विरक्ति हो गई।।४।।

तेर वर्ष वयेसेते पिता अदर्शन।
संसारे उदासिन्य हेरि भ्राता रुष्ट मन।।
तवेत संसार छाड़ि करिल गमन।
शिमूलिया ग्राम पाशे कैल आगमन।।

मासीर भवने तथा कतदिन रैल।
नन्दकिशोर प्रभु स्थाने मंत्र दीक्षानिल।।५।।

भावसार– तेरह वर्ष की आयु में पिता अप्रकट हो गये। संसार से उदासीन देखकर भ्राता का मन रुष्ट हो गया। तब उन्होंने घर छोड़कर गमन किया। शिमूलिया गाँव के पास आगमन किया। मौसी के घर में कुछ दिन रुके। फिर श्रीनन्दकिशोर गोस्वामी प्रभुपाद से दीक्षामन्त्र ग्रहण किया।।५।।

अद्वैत वंशोद्भव नन्दकिशोर गोस्वामी।
मंत्रदीक्षा दिल ताँरे पात्रा गुणमनि।।
से काले शिमूलिया महान्त ना छिल।
वेशाश्रय करि आखडार महान्त हइल।।
प्राणकृष्ण बाबा स्थाने वेशाश्रय कैल।
अम्बिका दास नाम धारि तथाय रहिल।।६।।

भावसार– श्रीनन्दकिशोरजी श्रीअद्वैत प्रभु के वंश में उत्पन्न हुये थे। उस समय शिमूलिया में महान्त नहीं था। वेशाश्रय कर आप अखाड़ा के महान्त बने। श्रीप्राणकृष्ण ादास बाबाजी से विरक्त वेश ग्रहण किया। उन्होंने इनको अम्बिकादास दिया।।६।।

तिन वर्ष रहि तथा करिल सेवन।
अध्ययने नवद्वीपे कैल आगमन।।
बड आखडाय रहि करे अध्ययन।
दुइ वर्ष पडि तथा करिल गमन।।
रामकेलि केन्दुविल्व आर गयेशपुर।
मयना डालादि भ्रमे आनन्द प्रचुर।।७।।

भावसार– तीन वर्ष रहकर वहाँ सेवा की। अध्ययन के लिये नवद्वीप में आगमन किया। बड़ा अखाड़ा में रहकर

अध्ययन किया। दो वर्ष पढ़कर गमन किया। रामकेलि, केन्दु विल्व, गयेशपुर, मयनाडाला आदि में आनन्दपूर्वक भ्रमण किये।।७।।

किछु दिन हेनमते करिया यापन।
बड आखडाय पुनः कैल आगमन।।
बड आखडाय श्रीरूपदास महाशय।
शिक्षागुरु तेंह तथा पुनः वेशाश्रय।।
मनोहरदास नाम करिल धारण।
चैतन्यदास बाबा स्थाने शास्त्र श्रवण।।८।।

भावसार- कुछ दिन इसप्रकार से बिताये। पुनः बड़ा अखाड़ा में लौट आये। बड़ा अखाड़ा के महान्त श्रीरूपदास महाशय थे। उनसे आपने पुनः वेशाश्रय लिया। तब आपका वेश का नाम हुआ- 'श्रीमनोहरदास'। श्रीचैतन्यदास बाबा के स्थान पर शास्त्र श्रवण किये।।८।।

बड आखडार पण्डित नरोत्तमदास।
ताँर सह सदा आशे सिद्ध बाबा पाश।।
दोंहार शास्त्रालाप शुनि पुलकित मन।
कालनाय गिया सिद्ध बाबार दरशन।।
कलिकाता कम्बलिया टालार आखडाय।
कतदिन महानन्दे रहिल तथाय।।९।।

भावसार- बड़े अखाड़ा के पण्डित श्रीनरोत्तमदास थे। उनके साथ कालना के सिद्ध श्रीभगवानदास बाबा के पास दर्शन करने गये। कोलकाता के कम्बलिया टाला अखाड़ा में कितने समय तक आनन्दपूर्वक रहे।।९।।

हेनमते चारि वर्ष अतीत हइल।
पाठय ग्रंथ संग्रहार्थे कलिकाता एल।।
वैशाख मासे क्षेत्र पथे करये गमन।

किछु काल काँटा पुकुर ग्रामेते यापन।।
गोपी वल्लभपुर रेमुणा हइया चलिल।
क्षेत्रे गंगामाता मठे उपनीत हइल।।१०।।

भावसार– इसप्रकार चार वर्ष बिताये। भक्ति ग्रंथ संग्रह को कोलकाता में आये। वैशाख मास में जगन्नाथपुरी में गमन किया। कुछ समय काँटापुकुर गाँव में व्यतीत किया। रेमुणा होते हुये गोपीवल्लभपुर चले। जगन्नाथपुरी में गंगामाता मठ में आ गये।।१०।।

कार्तिक मासेते गिया तथा पौंछिल।
दर्शनादि करि पुनः रेमुनार आसिल।।
चैतन्य चरितामृत तथा पाठ कैल।
पाँच छय मास रहि नवद्वीपे एल।।
तथा हैते ब्रज धामे करिल गमन।
परम उत्कण्ठ ताँर ब्रज दरशन।।११।।

भावसार– कार्तिक मास में जाकर वहाँ पहुँचे। दर्शन करके पुनः रेमुणा में आये। वहाँ श्रीचैतन्यचरितामृत का पाठ किया। नवद्वीप में पाँच–छः मास रहे। वहाँ से ब्रजधाम में गमन किया। परम उत्कण्ठा में ब्रज दर्शन किया।।११।।

बड आखडाय चेला श्रीराधाचरण।
ताँर अनुरोध सत्वे करिल गमन।।
वारश अष्टाशी सने ब्रजे यात्रा कैल।
मेमारी स्टेशन आसि असुस्थ हइल।।
जनैक दातार अर्थे गाड़ीते चापिल।
वृन्दावने आसि तथा एक सेवा पेल।।१२।।

भावसार– बड़ा अखाड़ा के शिष्य श्रीराधाचरणदास थे, उनके अनुरोध से शीघ्र गमन किया। १२८८ बंगाब्द में ब्रज के लिये यात्रा की। आप मेमारी स्टेशन आकर अस्वस्थ

हुये। एक दाता के अर्थ से गाड़ी में बैठ गये। वृन्दावन में आकर सेवा पायी।।१२।।

गोविन्देर कामदार श्रीगुरु चरण।
ताँर प्रतिष्ठित सेवा करये सेवन।।
पाँच वर्ष प्रेमे करये सेवन।
गोपी लाल प्रभु स्थाने करये अध्ययन।।
पाछे अनुमति लञा करये गमन।
कुसुम सरोवरे रहि भजने मगन।।१३।।

भावसार– श्रीगोविन्द मन्दिर के कामदार श्रीगुरुचरण दासजी हैं। उनके प्रतिष्ठित सेवा करने लगे। पाँच वर्ष प्रेमपूर्वक सेवा की। फिर श्रीगोपीलाल प्रभु के यहाँ अध्ययन किया। तत्पश्चात् अनुमति लेकर गमन किये। गोवर्धन के कुसुमसरोवर पर रहकर भजन में मग्न रहे।।१३।।

भजनानन्दे पाँच वर्ष तथाय रहिल।
रामकृष्ण बाबा सह परिक्रमाय गेल।।
वदरीर निर्जन स्थाने स्थान निरूपिल।
यवन अत्याचार भये काम्यवने एल।।
पाछे नन्दग्रामे तेंह कैल आगमन।
भादावलिते गिया कैल पाठ आरम्भन।।१४।।

भावसार– भजनानन्द में पाँच वर्ष वहाँ रहे। श्रीरामकृष्ण दास बाबा के साथ परिक्रमा गये। ब्रज के आदिबद्री स्थान में रहे। यवन अत्याचार से काम्यवन में आ गये। पीछे नन्दगाँव में आ गये। भदावल गाँव में रहकर पाठ आरम्भ किया।।१४।।

गोपाल दासजीर वाक्ये पाठ आरम्भिल।
एक वर्षे षट्संदर्भ पाठ शेष कैल।।
तवेत गोविन्द कुण्डे कैल आगमन।

स्वप्नादेशे रहि तथा भजने मगन।।
तदावधि सेइ स्थाने करये भजन।
निरवधि सेइ स्थाने करये भजन।।१५।।

भावसार– भदावल के श्रीगोपालदास बाबा के वचन से पाठ प्रारम्भ किया। एक वर्ष में षट् सन्दर्भ पाठ पूर्ण किया। फिर गोविन्दकुण्ड में आये। स्वप्नोदश से यहीं रहकर भजन किया। फिर जीवन पर्यन्त इसी स्थान में निरन्तर भजन किया।।१५।।

निर्जने वसिया सदा करे हरिनाम।
भावावेशे दिवानिशि नाहि ताँर ज्ञान।।
माधुकुरी द्वारे करे जीवन धारण।
बाबार महिमा बुझे आछे कोन जन।।
'विदग्ध विलास' आर 'नामरत्नमाला'।
दुइ ग्रंथ रचे तथा हइया विभाला।।१६।।

भावसार– निर्जन में रहकर सदा हरिनाम जप करते और भावावेश में दिन–रात्रि का ज्ञान ही नहीं रहता। माधुकरी वृत्ति से जीवन धारण करने लगे। बाबा की महिमा कोई विरला ही समझ पाता है। बाबा ने 'श्रीविदग्धविलास' व 'श्रीनामरत्नमाला' नामक दो ग्रंथों की रचना की।।१६।।

वटवृक्ष छायाय कुटीरे करये भजन।
परम वैराग्य भावे करये यापन।।
किछु काल परे वायु प्रकोप हइल।
एक वर्ष परे पुनः सुस्थता लभिल।।
वानर शकुनोत्पाते गोफा निर्माइल।
पाछे श्रीमन्दिर करि विग्रह स्थापिला।।१७।।

भावसार– वटवृक्ष की छाया कुटीर में रहकर भजन किये। परम वैराग्य भाव से रहे। कुछ काल पश्चात् वायु का

प्रकोप हुआ। एक वर्ष पश्चात् फिर स्वस्थ हुये। वानर–पक्षी के उत्पात से गुफा निर्माण की। तत्पश्चात् मन्दिर बनाकर श्रीविग्रह की स्थापना की।।१७।।

ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशीते महोत्सव कैल।
मदनमोहनेर सिंहासन यात्रा हैल।।
चौरासी क्रोशेर वैष्णव कैल आगमन।
हइल महा महोत्सवेर घटन।।
रूटि निम पातार रसा नित्य भोग हय।
अनन्त दासादि एल अन्नभोग हय।।१८।।

भावसार– ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी में महोत्सव किया; श्रीमदनमोहनजी की सिंहासन यात्रा हुई। चौरासी क्रोश ब्रजमण्डल के वैष्णवों का आगमन हुआ। फिर महा महोत्सव सम्पन्न हुआ। रोटी, नीमपत्ता रसा साग का नित्य भोग होता। अनेक दासों के आने पर अन्नभोग होता।।१८।।

पुनः वायु रोग बाबा आक्रान्त हइल।
कतकाल भुगि तेंह अन्तर्धान कैल।।
एकाकी निर्जने सदा करये यापन।
दुग्ध पाने करये मात्र शरीर धारण।।
सर्व विषये निःस्पृह हैल तार मन।
अनुतापे काकुवाद करे अनुक्षण।।१९।।

भावसार– पुनः वायुरोग से बाबा आक्रान्त हुये। कितना समय रोग सहनकर समाप्त किया। एकान्त में सदा यापन करते। केवल दुग्धपान ही करे शरीर धारण करते। उनका मन सर्व विषयों से निस्पृह था। अनुताप में अनुक्षण विनती करते।।१९।।

तेरश चौयान्न सने कैल अन्तर्धान।
श्रावणी शुक्ला त्रयोदशी तिथिर विधान।।

बाबार वैराग्य चेष्टा अद्‌भुत कथन।
चरण स्पर्शि प्रणमिते ना देय कखन।।
पद धौत काले वारि माटिते मिशाय।
पाछे केह तुलि ताँर पदोदक खाय।।२०।।

भावसार– १३५४ बंगाब्द में अन्तर्धान हुये। श्रावण शुक्ल त्रयोदशी तिथि थी। बाबा की वैराग्य चेष्टा अद्‌भुत थी। वे किसी को भी अपने चरण स्पर्श नहीं करने देते थे। चरण धोने के समय भी जल को मिट्टी में मिला देते; ताकि कोई पीछे से चरणोदक का पान न कर ले।।२०।।

मशारि व्यवहार नाहि करिते कखन।
कहे मशा बन्धु कार्य करे अनुक्षण।।
निद्रा भंग करि करे भजन सहाय।
आर एक अद्‌भुत वाक्य शुनह सवाय।।
एकबार दारूण शीत ब्रजेते पडिल।
गोविन्दकुण्डे वरफ भासिते लागिल।।२१।।

भावसार– बाबा कभी–भी मच्छरदानी का उपयोग नहीं करते थे। वे कहते कि मच्छर बन्धु का कार्य करता है, वह निद्रा भंग कर भजन में सहायता करता है और एक अद्‌भुत वाक्य सभी सुनिये एकबार ब्रज में दारूण शीत पड़ा गोविन्दकुण्ड के जल में बर्फ बहने लगी।।२१।।

छिन्न कंथा गाये बाबा करये भजन।
रात्रे शीते काँपे अंग हैल क्रोध मन।।
भजनेते विघ्न हेरि उपाय चिन्तिल।
कुण्डेर वरफ जले गिया स्नान कैल।।
हेरि नवद्वीप दास जिज्ञासे वचन।
कहे बड पौषाकि देह हइल एखन।।२२।।

भावसार– बाबा फटी गूदरी देह पर डालकर भजन

करते थे; रात्रि में शीत से अंग काँपने लगे। तब आप खिन्न हुये कि भजन में विघ्न हो रहा है हफर उपाय सोचने लगे। कुण्ड के बर्फ जल से स्नान करने लगे। यह देखकर श्रीनवद्वीप-दास ने कारण पूछा। तब बाबा कहने लगे- यह देह बड़ा पौषाकी हो गया है।।२२।।

शीतेते काँपिया भजने विघ्न कैल।
नवद्वीप दास लेप वानाते चाहिल।।
एतेक शुनिया बाबा बलिये वचन।
तुल्य ववस्थार नहे वैरागी धरम।।
एकदा वैष्णव एक जिज्ञासे वचन।
कि भावे भजन विघ्न हय निवारण।।२३।।

भावसार- शीत में काँपने से भजन विघ्न हुआ। श्रीनवद्वीप दास ने लेप बनाना चाहा। यह सुनकर बाबा बोले- ऐसी व्यवस्था वैरागी का धर्म नहीं है। एकबार एक वैष्णव ने पूछा- किस प्रकार से भजन का विघ्न निवारण हो।।२३।।

बाबा कहे प्राणपने करिले भजन।
कृपाय परमात्मा करे द्वार उद्घाटन।।
भजनेते भजन विघ्न सब दूरे याय।
दृढ़ता धैर्य सहिष्णुता परम सहाय।।
जडेते आसक्ति हीने चित्त शुद्ध हय।
चित्त शुद्धे हैले हय भक्तिर उदय।।२४।।

भावसार- बाबा ने कहा- प्राणप्रण से भजन करने की चेष्टा करने पर भगवान् कृपा का द्वार खोल देते हैं। भजन से भजन विघ्न सब दूर हो जाते हैं। दृढ़ता, धैर्य व सहिष्णुता (सहनशीलता) भजन में परम सहायता करते हैं। जड़ वस्तु में आसक्ति हीन होने से चित्त शुद्ध होता है। चित्त शुद्ध होने पर भक्ति का उदय होता है।।२४।।

चिद्वस्तुर उपलब्धिर भक्तिर उदये।
एकान्तिक भजनचेष्टा सर्वलभ्य हये।।
भजन प्रभावे जडीय संस्कार याय।
हयत निर्मल चित्त हञा विघ्न क्षय।।
मनोहर बाबार गुण अपूर्व कथन।
वैराग्येर प्रतिमूर्ति भजननिष्ट मन।।२५।।

भावसार– चिद्वस्तु की उपलब्धि का भक्ति से उदय होता है। एकान्तिक भजन चेष्टा से सबकुछ प्राप्त होता है। भजन के प्रभाव से जड़ीय संस्कार जाते हैं। चित्त निर्मल होता है और विघ्न क्षय होता है। श्रीमनोहरदास बाबा के गुण अपूर्व हैं वे वैराग्य की प्रतिमूर्त्ति थे और भजनाविष्ट मन था।।२५।।

चित्त शुद्धि करि शुद्ध भक्तिर उदय।
बाबार महिमा गुने सकले बुझाय।।
परम करूणामय बाबा मनोहर।
चित्तशुद्धि लागि 'किशोरी' वाँचे सेवा तार।।२६।।

भावसार– चित्त शुद्धि करने पर शुद्ध भक्ति का उदय होता है। बाबा की महिमा व गुण सब समझ में आयेंगे। बाबा मनोहरदास परम करूणामय हैं। 'किशोरीदास' चित्तशुद्धि के लिये उनका गुणानुवाद सेवा करता है।।२६।।

२३. सिद्ध श्रील भगवानदास बाबाजी महाराज

कालना

जय जय श्रीचैतन्य जय नित्यानन्द।
जय जय श्रीअद्वैत प्रेमानन्द कन्द।।
जय जय गदाधर माधव नन्दन।
जय जय श्रीवासादि गौर परिजन।।

गौरांगेर लीलास्थली कालना दिव्यस्थान।
ब्रजेर सुबल यथा करित विश्राम।।१।।

भावसार– श्रीश्रीचैतन्यदेव की जय हो! श्रीनित्यानन्ददेव की जय हो! प्रेमानन्दकन्द श्रीअद्वैतप्रभु की जय हो! माधावनन्दन श्रीगदाधर पण्डित की जय हो! श्रीवास आदि गौरभक्तवृन्द की जय हो! श्रीगौरांग महाप्रभु की लीलास्थली कालना दिव्यस्थान है। ब्रज के सुबल सखा ही यहाँ आये।।१।।

गौरीदास पण्डित नाम गौर प्रेमधाम।
निताई गौरांग याँर घरे अविराम।।
सेई कालना धामे वैसे भगवानदास।
दिव्य प्रेममय मूर्ति शुद्ध गौरदास।।
गौरांग नागर याँर हृदे अनुक्षण।
परम अद्भुत ताँर महिमा कथन।।२।।

भावसार– वे सखा ही श्रीगौरीदास पण्डित के रूप में प्रकट हुये। जिनके गृह में श्रीश्रीनिमाईगौर अविराम विराजमान रहते हैं। उसी कालना धाम में श्रीभगवानदास बाबा रहते थे। वे गौरांग के विशुद्ध दास और दिव्य प्रेम मूर्त्ति थे। श्रीगौरांग जिनके हृदय में निरन्तर विराजते। उनकी महिमा परम अद्भुत है।।२।।

सदाई गोपने राखे आपन भजन।
दिवानिशि प्रेमार्णवे करे विचरण।।
गोवर्द्धनेर सिद्ध बाबा श्रीकृष्णदास।
वेशाश्रय कैल गिया ताँहार सकाश।।
नवद्वीप वासी सिद्ध श्रीचैतन्य दास।
सख्य व्यवहार ताँर सहित विलास।।३।।

भावसार– सदा ही गोपन में भजन करते थे। दिवा–निशि प्रेमपूर्वक विचरण करते थे। गोवर्धन के सिद्ध श्रील कृष्णदास

बाबाजी महाराज के पास विरक्त वेश लिया। नवद्वीप धाम वासी सिद्ध श्रील चैतन्यदास बाबाजी महाराज के साथ उनका सख्यभाव (मित्रता) था।।३।।

गम्भीर आशय सदा भगवानदास।
ताँहार महिमा गुण अति सुप्रकाश।।
नाम ब्रह्माश्रये बाबा भजने मगन।
पुजारी अलंकार लञा कैल पलायन।।
पुलिशे संवाद दिते चाहे भक्तगण।
सवारे निवारि बाबा वलये वचन।।४।।

भावसार– श्रीभगवानदास बाबा का सदैव गम्भीर आशय था। नामब्रह्म के आश्रय में बाबा भजन में मग्न रहते। पुजारी आभूषण लेकर चला गया। सबने सिपाहियों को बुलाना चाहा; किन्तु बाबा ने निषेध कर दिया।।४।।

बाबा हासि कहे केन केह ए वचन।
याय द्रव्य सेइ दिलेके करे वारण।।
नाम ब्रह्मेर इच्छा नहे परिवार।
ते कारणे पुजारीरे दिल अलंकार।।
भाल हैल एइ रूप थाकूक एखन।
हेनमते कतदिन करिल यापन।।५।।

भावसार– आप हँसकर बोले– ऐसा वचन क्यों कहते हो? नाम ब्रह्म की इच्छा नहीं है, इसी कारण पुजारी को आभूषण दिला दिये हैं। अच्छा होगा इसी प्रकार रहो। इसप्रकार कितने दिन चले गये?।।५।।

कयेक मासान्ते पुनः पुजारी आसिल।
बाबार चरणे पडि कान्दिते लागिल।।
अलंकार सब लञा कैल आगमन।
सविनये राधा पदे करे निवेदन।।

लोभ वशे अलंकार करिल हरण।
भांगिवार काले हैल व्याकुलित मन।।६।।

भावसार– कुछ मास के पश्चात् पुजारी पुनः लौट आया और बाबा के चरणों में पड़कर रोने लगा। वह सब आभूषण ले आया। विनयपूर्वक राधा पद में निवेदन कर दिया। लोभवश आभूषण का हरण किया। भागने के समय व्याकुलित मन था।।६।।

प्राणेर माझारे बहु अशान्ति जागिल।
ते कारणे पादपद्मे फिराया आनिल।।
अपराध क्षम मोर लइल शरण।
शुनि सिद्ध बाबा डाके निज भक्तगण।।
सवारे सम्बोधि बाबा वलये तखन।
नाम ब्रह्मेर हैल एवे इच्छार उद्गाम।।७।।

भावसार– मन में बहुत अशान्ति पायी। जिस कारण आपके चरणकमल में लौट आया। मेरा अपराध क्षमाकर शरण में ले लो। यह सुनकर सिद्ध बाबा ने भक्तगण को बुलाया। फिर सबको सम्बोधित कर वचन बोले– नामब्रह्म की इच्छा का उद्गम हुआ है।।७।।

ते कारने पुनः अलंकार फिराइल।
हेरिया सकल जन मोहित हइल।।
कहे तखन नाम ब्रह्मेर कि इच्छा हय।
याओ गिया नाम ब्रह्म गहना पराओ।।
पुनः पुजारी सेवा कार्ये नियोजिल।
बाबार महिमा हेरि सकले मोहिल।।८।।

भावसार– इसी कारण पुनः आभूषण लौटा लिये हैं। यह देखकर सब मोहित हो गये। कहने लगे– नामब्रह्म की क्या जाने इच्छा होती है। जाओ नामब्रह्म को आभूषण

पहनाओ। पुनः पुजारी सेवाकार्य में नियोजित हुआ। बाबा की महिमा देख सब मुग्ध हुये।।८।।

काठ बेचिवारे आसे दरिद्र स्त्रीगण।
सेवकगण काठ लञा करये आगमन।।
पयसा दिते नामब्रह्मे करे आनयन।
बाबा जिज्ञासये तार आछे कोन जन।।
तेंह कहे शिशु एइ बड दुइ जन।
शुनि बाबा ताँर प्रति वलये वचन।।९।।

भावसार– लकड़ी बेचने वाली दरिद्र स्त्रीगण आयीं। सेवकों ने काष्ठ लेने के लिये आगमन किया। नामब्रह्म पर चढ़े पैसा देने गये। बाबा ने पूछा– कौन आया है? उन्होंने कहा– एक शिशु और दो बड़े लोग हैं। सुनकर बाबा उनसे बोले।।९।।

एइ तिन जनार केछे निर्वाह हय।
सेवके कहये चाहे एबे आना छय।।
तारपर हेनजन ना कराए आनय।
याहाते बाबार चित्ते दुःख उपजय।।१०।।

भावसार– इन तीन लोगों का कैसे निर्वाह होता है? सेवक ने कहा– छः आना है। तत्पश्चात् उन्होंने नहीं लिये। इससे बाबा को दुःख हुआ।।१०।।

एकदा आश्रमेते एक सर्प एल।
कोन भक्त लञा तारे दूरे फेलाइल।।
बाबा शुनि दुःख पाञा बलेन वचन।
तुमि आर ए स्थाने ना आस कखन।।
नाम ब्रह्मेर बड़ भाई हन एइ जन।
हेन व्यवहार तारे ना याय सहन।।११।।

भावसार– एकबार आश्रम में एक साँप आया। किसी

भक्त ने उसे दूर भगाया बाबा को यह सुनकर दुःख हुआ और कहा- तुम इस स्थान पर आना नहीं। नामब्रह्म पर उसके बड़े भाई थे उन्हें यह व्यवहार सहन नहीं हुआ।।११।।

कत दिन असन्तुष्ट सेइ भक्त प्रति।
अगाध चरित्र बाबाय के पाइवे इति।।
महाप्रभुर भोग अन्ते सम्मुखे धरित।
सर्प आसि भक्षिले बाबा भोजन करित।।
यावत आसिया तेंह ना करे भोजन।
तावत सिद्ध बाबा ना करे ग्रहण।।१२।।

भावसार- कितने दिन उसके प्रति असन्तुष्ट हुये। बाबा के अगाध चरित्र की सीमा नहीं है। महाप्रभु का भोग अन्त में सामने रखते, सर्प आकर भक्षण करने पर बाबा भोजन करते। जब तक वह नहीं आता, आप भोजन नहीं करते।।१२।।

भजन आवेशे मत्त सिद्ध बाबा मन।
भोजनेर तार कभु ना छिल नियम।।
बाबा सह विडाल एक प्रसाद पाइत।
प्रसाद पेते देरि हैले म्याओ म्याओ करित।।
तार मन बुझि बाबा ढाकना खुलित।
तार भक्षणे अन्ते दिया ये राखित।।१३।।

भावसार- भजन आवेश में सिद्ध बाबा का मन था, उनका भोजन करने का कोई नियम नहीं था। बाबा के साथ एक बिल्ली प्रसाद पाती। प्रसाद पानो मों विलम्ब होने पर म्याऊँ-म्याऊँ करती। उसका मन समझकर बाबा ढक्कन खोल देते, उसके भक्षण के बाद छोड़ देते।।१३।।

कोन दिन भजन यदि ना हय स्फुरण।
सेई सिद्ध बाबा ना करित भोजन।।

सबाके आदेश दित करिते भोजन।
बाबा ना भक्षिले केह ना करे भोजन।।
पुनः पुनः निवेदय यदि शिष्यगण।
तवेत सवारे बाबा वलये वचन।।१४।।

भावसार– किसी दिन बाबा को लीला स्मरण की स्फूर्त्ति नहीं होती तो उस दिन भोजन नहीं करते। सबको भोजन करने का आदेश देते। किन्तु बाबा के भोजन न ग्रहण पर कोई भी भोजन नहीं करता था। शिष्यगण पुनः पुनः निवेदन करते तब सबको बाबा कहते।।१४।।

यदि नाहि खाओ सबे कर आगमन।
बाबा वेटा सबे मिलि करिव शयन।।
अगत्या सकले प्रसाद करित ग्रहण।
बाबार चरित्र बूझे आछे कोन जन।।
ए भावे दुइ तिन दिन अतीत हइल।
अधिक रात्रिते भजनोल्लास हइल।।१५।।

भावसार– यदि नहीं खाओ तो सब आगमन करो और सब शयन करो। अन्ततः सब प्रसाद ग्रहण करते। बाबा के चरित्र को कौन समझ सकता है? इसप्रकार तीन दिन व्यतीत हुये। अधिक रात्रि में भजन का उल्लास होता।।१५।।

तवेत बाबार भोजनेर चेष्टा हैल।
बाजार हते द्रव्य आनि भोजन करिल।।
नाम ब्रह्म बाजारे द्रव्य ना करे ग्रहण।
चरणामृत सिक्त करि करिल भोजन।।
एकदा सेवक विष्णु दासेर ज्वर हैल।
दुइ तिन दिन गेल ज्वर ना सारिल।।१६।।

भावसार– तब बाबा की भोजन चेष्टा होती। बाजार से द्रव्य लाकर भोजन करते। नामब्रह्म बाजार द्रव्य ग्रहण

नहीं करते। चरणामृत सिक्त कर भोजन करते। एकबार सेवक विष्णुदास को ज्वर हुआ। दो-तीन दिन ज्वर नहीं गया।।१६।।

सिद्ध बाबा विष्णुदासे वलये वचन।
ज्वर माँहि गेल औषध करह गृहण।।
तेंह कहे औषधे कोन प्रयोजन।
नाम ब्रह्म प्रसादे ज्वर करिवे गमन।।
बाबा कहे आजि हते तुमि सिद्ध हैले।
नाम ब्रह्म तोमा लागि डाक्टार साजिवे।।१७।।

भावसार- सिद्ध बाबा विष्णुदास को कहे- ज्वर चला गया औषध ग्रहण करो। उसने कहा- बाबा! औषधि का फिर क्या प्रयोजन? नाम ब्रह्म प्रसाद से ज्वर चला जायेगा। बाबा बोले- आज से तुम सिद्ध हो गये; नाम ब्रह्म तुम्हारे लिये वैद्य बनकर सजेंगे क्या?।।१७।।

रोग प्रायश्चित हये औषय सेवन।
नाम ब्रह्म भार केन करिवे ग्रहण।।
तवे आदेश क्रमे औषध भक्षण करिल।
क्रमे क्रमे विष्णुदास तवे सुस्थ हैल।।
एकदा ताल साँसें बाबार झोक हैल।
ताल साँस खाया केयेकदिन काटाइल।।१८।।

भावसार- रोग प्रायश्चित व औषधि से जाता है, नामब्रह्म भार क्यों ग्रहण करेंगे? तब आदेश पाकर औषधि ग्रहण की। धीरे-धीरे विष्णुदास स्वस्थ हुये।

एकबार तालफल खाने का बाबा का मन हुआ, कुछ दिन इसी से व्यतीत किये।।१८।।

अन्न ना ग्रहणे आमाशय देखा दिल।
ताहाते सेवकगणेर चिन्ता उपजिल।।

शत निवारण बाबा ना शुने वारण।
तवे प्राण कृष्ण बाबा करिल चिन्तन।।
एकजन माली डाकि डेरा देवाइल।
वाजारेते तालशाँस विक्रि बन्ध हैल।।१६।।

भावसार– अन्न न ग्रहण करने से आँत दीखने लगीं। जिससे सेवकगण चिन्तित हुये। सौ बार निवारण करने पर भी बाबा माने नहीं। बाजार में तालफल का विक्रय बन्द होगया।।१६।।

शुनि बाबा कहे मोर ना रहे जीवन।
येनमते तालशाँस कर आनयन।।
बहुत यतने बाबाय अप धराइल।
तबे बाबाय पुनः अन्य झाँक हैल।।
नाम ब्रह्म सामने करि पुकुर खनन।
टुंगि वाधि वसि ताँहा करिव भजन।।२०।।

भावसार– सुनकर बाबा ने कहा– मेरा जीवन नहीं रहेगा। किसी प्रकार तालफल लाओ। बहुत यत्न से बाबा तब बाबा की पुनः इच्छा हुयी। नामब्रह्म के सामने तालाब का खनन हो रहा था। बैठकर वहाँ भजन करने लगे।।२०।।

प्राणकृष्ण बाबाय डाकि आज्ञा कैल।
कल्य प्राते पुकुर तवे खुदाते कहिल।।
शुनि प्राणकृष्ण बाबा कैल आयोजन।
एक संगे लागाइल लोक पञ्चाश जन।।
चल्विंश घन्टाय पुकुर हइल खनन।
हेरि सिद्ध बाबा पुलके मगन।।२१।।

भावसार– प्राणकृष्ण बाबा को बुलाकर आज्ञा की। कल प्रातः तालाब खनन सुनकर प्राणकृष्ण बाबा ने आयोजन किया। एकसाथ पचास लोग लग गये चालीस घण्टा में तालाब

खुद गया। देखकर बाबा का मन पुलकित हुआ।।२१।।

एकादशी दिने जगदीश बाबा कहिल।
बाजार हते बाँश आनि ढंगि बाँधि दिल।।
द्वादशीर दिन ढुंगि प्रस्तुत हइल।
हेरिया आनन्दे बाबा टुंगिते उठिल।।
कयेकदिन वसि तथा करये भजन।
देवे गरूर बाछुर हइल पतन।।२२।।

भावसार– एकादशी के दिन जगदीश दास बाबा ने कहा– बाजार से बांस लाकर बांध दिया। द्वादशी के दिन प्रस्तुत हुयी। देखकर बाबा मैं चढ़े। कुछ दिन बैठकर भजन किया।।२२।।

चीत्कार करिया बाबा सबाके डाकिल।
बाछर उठाले सबे कहिते लागिल।।
पुकुर बुजाया फेल नाहि प्रयोजन।
शेषकाले हव गोवधेर भोजन।।
यथा काले सेवकजन पुकुर बुजाइल।
बाबार चरित्र गाथा जगते व्यापिल।।२३।।

भावसार– चीत्कार कर बाबा ने सबको बुलाया बछड़ा उठाकर सबको कहने लगे। उस समय सेवकगण तालाब रहे थे। बाबा की चरित्र गाथा जगत में व्याप्त है।।२३।।

मध्ये मध्ये नवद्वीपे करये गमन।
श्रीचैतन्य बाबा सह रस आलापन।।
एकदा स्मरणेर बाबा रयेछे मगन।
नित्य सिद्ध देहे ब्रजे करे विचरण।।
गोविन्द मन्दिरे एक तुलसी वृक्ष छिल।
छागल नाशिते गेले तारे ताडाइल।।२४।।

भावसार– मध्य–मध्य में नवद्वीप में जाते थे और

श्रीचैतन्यदास बाबा के साथ रस चर्चा करते थे। एकबार बाबा स्मरण में मग्न थे। नित्य सिद्ध देह (मञ्जरी भाव) से ब्रज में सेवा कर रहे थे। श्रीगोविन्दजी मन्दिर में एक तुलसी वृक्ष था। बकरी उसे विनष्ट करने लगी, वे उसे भगाने लगे।।२४।।

मन्दिर प्रांगण हते छाग ताडाइल।
सेइकाले हेथा एक विचित्र घटिल।।
वर्द्धमान महाराजा दर्शने आगमन।
दूर हओ दूर हओ वाक्य करये श्रवण।।
ताँहा केइ लक्ष्य करि वलिल वचन।
एत अनुभवी राजा करिल गमन।।२५।।

भावसार– मन्दिर प्रांगण से बकरी को भगाया। उसी समय वहाँ एक विचित्र घटना घटी। वर्द्धमान के महाराजा बाबा के दर्शन के लिये आये थे। 'दूर हो, दूर हो'– यह वाक्य उन्होंने सुना। वहाँ किसको लक्ष्य करके बाबा बोले हैं, ये अनुभव कर राजा चले गये।।२५।।

दुःखीत हइया राजा स्वगृहे चलिल।
बाह्य दशाय सेवकगण बाबाय कहिल।।
शुनि ससम्भ्रमे बाबा लोक पाठाइल।
पुनर्वार महाराजे आक्षिते कहिल।।
बाबार आज्ञाय राजा कैल आगमन।
राज पाशे बाबा कहे सब विवरण।।२६।।

भावसार– दुःखी होकर राजा अपने घर में चले आये। जब बाबा लीला चिन्तन के आवेश से निकल बाह्य दशा में आये तब सेवकगण ने यह सब वृत्तान्त कहा। फिर बाबा ने लोग भेजकर पुनः महाराज को बुलाया। बाबा ने अपने अन्तरंग भाव को महाराज को बताया, जिससे वे संशय मुक्त हो सकें।।२६।।

दूर हओ दूर हओ बलि छाग ताडाइल।
ताहा शुनि दुःख पाइ तुमि चलि गेल।।
एवे यत शुनि मोर करह मार्जन।
शुनिया हइल राजा सविस्मय मन।।
तार करि ब्रज हते खबर आनाइल।
यथार्थ जानिया राजा कृतार्थ हइल।।२७।।

भावसार– 'दूर हो, दूर हो'– कहकर जो बकरी को भगाया था, राजा उसे अपने बारे में समझ दुःखी हो चले गये थे। अब बाबा के वचन सुन राजा विस्मित हुये। ब्रज से भी इस बात का संवाद आ गया। यथार्थ जानकर राजा कृतार्थ हुआ।।२७।।

तदवधि सिद्ध नाम जगते प्रचार।
अचिन्त्य बाबार गुण नाहि पारापार।।
प्रेमेर आवेशे बाबा रहे अनुक्षण।
कभु हासे कभु कान्दे कभु ये नर्तन।।२८।।

भावसार– इसके बाद बाबा 'सिद्ध बाबा' के नाम से जगत में प्रसिद्ध हो गये। बाबा के अचिन्त्य गुण हैं, जिनका पारावार नहीं है। आप प्रेमावेश में निरन्तर रहते थे। कभी हँसते, कभी रोते और कभी नृत्य करने लग जाते।।२८।।

गौण कार्तिकी कृष्णाष्टमी तिथिते।
अन्तर्धान कैल बाबा एइ क्षिति हैते।।
अचिन्त्य अगम्य भगवानर बाबा महिमा।
'किशोरी' वन्दये तारे करिया गरिमा।।२९।।

भावसार– गौण कार्तिक कृष्ण अष्टमी तिथि में बाबा का अन्तर्धान हो गये। श्रीभगवानदास बाबा की महिमा असीम अचिन्त्य है। 'किशोरीदास' उनकी वन्दना करता है।।२९।।

२४. सिद्ध श्रील बलरामदास बाबाजी महाराज

वृन्दावन

जय जय विश्वम्भर जीवेर जीवन।
जय जय नित्यानन्द पतित पावन।।
जय जय श्रीअद्वैत गौर प्रियजन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
गोवर्द्धनेर सिद्ध बाबा श्रीकृष्णदास।
गौर प्रेममय मूर्ति अद्‌भुत प्रकाश।।१।।

भावसार– जीवों के जीवनधन श्रीविश्वम्भर की जय हो! पतित पावन श्रीनित्यानन्द की जय हो! श्रीगौर प्रियजन श्रीअद्वैत की जय हो! श्रीगदाधर श्रीवासादिगण की जय हो! गोवर्धन के सिद्ध श्रील कृष्णदास बाबा गौरप्रेम की अद्‌भुत मूर्त्ति थे।।१।।

याहार प्रसादे ब्रजे रागेर भजन।
गुटिका रचिया कीर्ति करिल स्थापन।।
ताँर शिष्य बलराम दास महाशय।
वैराग्येर प्रतिमूर्ति सुदृढ़ आशय।।
चल्लिस वर्ष वयसे दीक्षा ग्रहण कैल।
बाबार प्रसादे अल्पे संस्कृत पडिल।।२।।

भावसार– जिन्होंने श्रीराधारानी की कृपा से 'श्रीगौर–गोविन्दलीलामृत गुटिका' नाम विख्यात ग्रंथ की रचना की। जिसमें ब्रज के रागानुगा मार्ग का भजन है। उनके शिष्य श्रीबलरामदास हुये। जो वैराग्य की दृढ़ मूर्त्ति थे। चालीस वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की और बाबा की कृपा से अल्प समय में संस्कृत के विद्वान् हो गये।।२।।

स्वहस्ते भागवत तेंह करिया लिखन।

सिद्ध बाबार करे लञा करिल अर्पण।।
वृन्दावने झाडू मण्डलेते कैल वास।
निरवधि लीला स्मरे करे हा हुताश।।
गौरनाम प्रेमगुणे मुग्ध प्राणमन।
सदाचार वैराग्ये ताँर दृष्टि अनुक्षण।।३।।

भावसार– उन्होंने अपने हाथों से श्रीमद्भागवत की प्रतिलिपि लिखी और अपने गुरुदेव को लाकर अर्पित की। वृन्दावन के झाडूमण्डल में वास किया। निरन्तर लीला स्मरण करते। गौरनाम–गुण में उनके मन प्राण मुग्ध थे। सदाचार, वैराग्य में उनकी दृष्टि निरन्तर थी।।३।।

बाबार वैराग्य चेष्टा अद्भुत कथन।
स्वप्नेओ स्त्रीमुख नाहि करये दर्शन।।
श्रीमन्दिर दर्शने यवे करये गमन।
स्त्रीगण हटाय यत सेवकेर गण।।
आँखिते बाँधिया वस्त्र करये गमन।
अपूर्व महिमा बाबार अद्भुत कथन।।४।।

भावसार– बाबा की वैराग्य चेष्टा अद्भुत थी। स्वप्न में भी स्त्रीमुख का दर्शन नहीं करते।श्रीमन्दिर में जब दर्शन करने जाते तब सेवकगण स्त्रीगण को हटा देते थे। फिर आप नेत्रों पर पट्टी बाँधकर गमन करते। ऐसी बाबा की अपूर्व महिमा है।।४।।

वृद्ध वयसेओ बाबा चोखे वस्त्र बाँधे।
षष्ठि हस्ते लञा पथे चले धीरे धीरे।।
श्रीराधारमण सेवक श्रीमधुसूदन।
बाबार चरित्र तेंह जाने विलक्षण।।
युवक वयस यवे गोस्वामी आछिल।
एकदा बलराम बाबा दर्शने आसिल।।५।।

भावसार– वृद्धावस्था में भी बाबा नेत्रों को बाँधकर चलते हैं और लाठी लेकर पथ पर धीरे–धीरे चलते हैं। श्रीराधारमण मन्दिर के सेवायत श्रीमधुसूदन गोस्वामी बाबा के विलक्षण चरित्र को जानते हैं। जब वे युवक थे, तब एकबार बाबा के दर्शन को गये थे।।५।।

मन्दिर द्वारेते तेंह वसिया आछिल।
चक्षु वृद्ध बाबाय हेरि आपने पूछिल।।
अभिवादन करि तेंह जिज्ञासे वचन।
वार्द्धक्य वयसे केन हेन आचरण।।
तदुत्तरे सिद्ध बाबा बलेन वचन।
वैरागीर निषिद्ध सदा स्त्रीमुख दर्शन।।६।।

भावसार– मन्दिर द्वार में बैठे हैं चक्षु बन्द होने पर आपने पूछा– 'वृद्धावस्था में आप क्यों ऐसा आचरण करते हो?' इसके उत्तर में सिद्ध बाबा बोले– वैरागी साधु के लिये स्त्रीमुख का दर्शन सदा निषिद्ध है।।६।।

हाड मांस रक्त देहे थाके यतक्षण।
ततदिन कामवृत्ति करे जागरण।।
ते कारणे साधु सदा रहे सावधान।
वैरागीर धर्म एइ विज्ञेर विधान।।
हेनमते सिद्ध बाबार वैराग्य लक्षण।
बहुजन आसि करे भजन शिक्षण।।७।।

भावसार– जब तक देह में अस्थि, माँस रक्त है तब तक कामवृत्ति जागृत रहेगी। इसी कारण साधु को सदा सावधान रहना चाहिये। यही वैरागी का धर्म विधान है। इसप्रकार सिद्ध बाबा ने वैराग्य का लक्षण कहा। बहुत जन भजन की शिक्षा लेने आते।।७।।

एकदा जगदानन्दास कैल आगमन।

स्कन्धे उपवीत हेरि बलेन तखन।।
भेक लञा ब्रजधामे करह भजन।
जाति अभिमान तव ना गेल एखन।।
शुनि मात्र तेंह यमुनाय समर्पिल।
बाबार समीपे एले आशीष करिल।।८।।

भावसार– एकबार श्रीजगदानन्ददासजी ने आगमन किया। स्कन्ध पर यज्ञोपवीत देखकर बोले– "विरक्त वेश धारण कर ब्रजधाम में भजन करो। अभी तक वर्ण जाति का अभिमान नहीं गया है।" यह सुनकर उन्होंने यज्ञोपवीत को यमुना में समर्पित कर दिया और बाबा के समीप आकर आशीर्वाद लिया।।८।।

से कालेते ब्रजधामे आछिल नियम।
नगर कीर्तन पूर्व जानाय सर्वजन।।
संकीर्तन वनि बाबा करिले श्रवण।
अमनि सात्त्विक भाव देहेते उद्‌गम।।
बलराम बाबा गुण विचित्र कथन।
सुधी कण्ठे निरवधि करिछे नर्तन।।९।।

भावसार– उस समय ब्रजधाम में नियम था। नगर कीर्तन पूर्व सर्वजन आते। बाबा संकीर्तन श्रवण करते। आपके सात्विक भाव देह में प्रकट होते। श्रीबलराम बाबा के गुण विचित्र हैं सुधीकण्ठ से गाकर नृत्य करते हैं।।९।।

एकदा नीलमणि प्रभु महोत्सव कैल।
बाबार समीपे दुइ पारस पाठाल।।
सर्वकाल प्रभुपादेर आछये नियम।
महोत्सव कैले पारस करेन प्रेरण।।
एकबार कलिकाता हते किछु भक्त एल।
महोत्सव हैले तथा पारस पाठाल।।१०।।

भावसार– एकबार श्रीनीलमणि प्रभु का महोत्सव हुआ। बाबा के लिये पत्तल प्रसाद भेजा। सब समय प्रभुपाद का यह नियम था। महोत्सव करने पर पारस भेजते थे। एकबार कोलकाता से कुछ भक्त आये। महोत्सव होने पर पारस भेजा।।१०।।

सर्वकाल आछे तथा सुदृढ़ नियम।
बाबाके जानाय प्रसाद करये रक्षण।।
सेदिओ सेवकगण बाबाय जानाल।
निर्दिष्ट स्थानेते लञा यतने राखिल।।
कुटीर अभ्यन्तरे शिखाय करिल रक्षण।
कतक्षणे बाबा दृष्टि कैल आरोपन।।११।।

भावसार– सर्वकाल में यही सुदृढ़ नियम था। बाबा को पारस भेजा है। उधर सेवकगण ने बाबा को बताया। निर्दिष्ट स्थान में लेकर यत्न से रखा। कुटीर के भीतर रखने का शिक्षण दिया। कितने देर बाबा ने उसे देखा।।११।।

ससम्माने बाबा यदि दृष्टिपात कैल।
टप टप करि रक्त पडिते लागिल।।
झुलिर निम्न देशे ताजा रक्त देखिया।
सेवकगण पाठाय तवे आज्ञा लिया।।
सेवकगणे नीलमणि प्रभु पाशे गेल।
वार्ता पाञा शीघ्र प्रभु बाबा पाशे एल।।१२।।

भावसार– बाबा ने सम्मान से दृष्टिपात किया। टप–टप कर रक्त बहने लगा। टप–टप कर रक्त देखा। तब बाबा ने सेवक भेजा वह श्रीनीलमणि प्रभु के पास गया। तत्पश्चात श्रीनीलमणि प्रभु बाबा के पास आये।।१२।।

जय जय गौरचन्द्र पतित पावन।
जय जय नित्यानन्द जाह्नवा जीवन।।
जय जय श्रीअद्वैत जय गदाधर।
जय जय श्रीवासादि गौर सहचर।।
श्रीनिवासाचार्य शाखा मनोहरदास।
परम अद्भुत यार महिमा प्रकाश।।१।।

भावसार– पतित पावन श्रीगौरचन्द्र की जय हो! श्रीजाह्नवा के जीवन श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! गौर सहचर श्रीवास आदि की जय हो! श्रीनिवासाचार्य की शाखा में श्रीमनोहरदासजी हुये। परम अद्भुत जिनकी महिमा का प्रकाश है।।१।।

'अनुरागवल्ली' रचि महिमा राखिल।
गौर प्रेम प्रचारिया जीव धन्य कैल।।
श्रीगोपाल भट्ट गोसाँई गौर परिजन।
ताँर शिष्य श्रीनिवास आचार्य प्रेमधन।।
रामचरण चक्रवर्ती ताँर शिष्य हन।
ताँर शिष्य चट्टराज श्रीराम शरण।।२।।

भावसार– इन्होंने 'अनुरागवल्ली' नामक ग्रंथ की रचना की। गौरप्रेम का प्रचार कर जीवों को धन्य किया है। श्रील गोपाल भट्ट गोस्वामीा श्रीगौरांग के पार्षद हैं। उनके शिष्य श्रीनिवासाचार्य प्रभु प्रेमधन हैं। उनके शिष्य श्रीरामचरण चक्रवर्ती हुये। उनके शिष्य श्रीरामचरण चक्रवर्ती हुये। उनके शिष्य श्रीरामचरण चट्टराज हुये।।२।।

आचार्य सेवक चट्टराज कृष्णदास।
ताँर सुत रामशरण शुद्ध गौरदास।।
ताँर शिष्य मनोहर दास महामति।

गौर पाद पद्मे ताँर सुदृढ़ भकति।।
मनोहर नाम ताँर श्रीगुरु राखिल।
सर्व त्यजि प्रेमानन्दे उदासी हइल।।३।।

भावसार– आचार्य के सेवक श्रीकृष्णदास चट्टराज थे, उनके पुत्र श्रीरामशरण शुद्ध गौरभक्त थे। उनके शिष्य श्रीमनोहरदास हुये। गौरपदकमल में उनकी सुदृढ़ भक्ति थी। उनके गुरु ने मनोहरदास नाम रखा। सब त्यागकर वे प्रेमानन्द में मत्त रहे।।३।।

काटोया निकट वाइगण कोला नाम।
तथाय निवास करे प्रेमेत उद्दाम।।
प्रेमानन्दे कत काल तथाय रहिल।
गुरु आज्ञा क्रमे प्रेमे ब्रजेते चलिल।।
यात्राकाले शिरे पद करिया अर्पण।
गुरु ताँर कृपा दृष्टे वलिल वचन।।४।।

भावसार– कटवा के निकट वाइगण कोला गाँव हैं वहाँ ही आप प्रेमानन्दपूर्वक निवास करते थे। श्रीगुरु आज्ञा से ब्रज में चले आये। यात्राकाल में शिर पर गुरु चरण धारण कर चले। गुरु ने कृपा दृष्टि वचन कहे।।४।।

पाहे याव अग्रे तुमि करह गमन।
सर्वथा साक्षात् पावे रहि वृन्दावन।।
हेनमते गुरु आज्ञा शिरेते धरिया।
ब्रज पथे चलिलेन प्रेमोन्मत्त हञा।।
वृन्दावने राधाकुण्डे कैल आगमन।
वाक्य अनुरूप गुरु दिल दरशन।।५।।

भावसार– पैदल चलकर आगे तुम गमन करो। साक्षात् वृन्दावन के दर्शन पाओगे। इसप्रकार गुरु आज्ञा सिर पर रखकर चले। मार्ग में प्रेमोन्मत्त होकर चले। वृन्दावन में

राधाकुण्ड में आये। वाक्य अनुरूप गुरु ने दर्शन दिये।।५।।

तथाहि- श्रीअनुरागवल्लीर अष्टम

तार आज्ञा क्रमे अविरोध वृन्दावन।
चलिया आइलाओ आसि पाइल दरशन।।
एइमते राधाकुण्डे रहिलान तखन।
द्वितीय वत्सर रात्रे देखिये स्वपन।।
मोर प्रभु श्रीकुण्डे आइला यथावत्।
सम्भ्रमे उठिया मुंइ कैलु दण्डवत्।।६।।

भावसार- उनकी आज्ञा लेकर वे अविरोध वृन्दावन में गये। चलकर आने पर दर्शन पाये। तब राधाकुण्ड में रहे। दूसरे वर्ष रात्रि में स्वप्न देखा। मेरे प्रभु श्रीकुण्ड पर यथावत् आये हैं सम्भ्रम उठकर दण्डवत् किया।।६।।

समाचार पूछिते कहिल तिंहो मोरे।
पासरिला ये आसिते कहिलावें तोरे।।
आगे चल तुमि आमि आसिछि पश्चात्।
से आमि आइलाव एइ देखह साक्षात्।।७।।

भावसार- समाचार पूछने पर कहा- वह मेरे हैं आगे चलकर तुम मैं।।७।।

स्वप्न देखि मोर आनन्दित हैल मन।
जानि अविलम्बे प्रभुर हव आगमन।।
एइमत कथोदिन अपेक्षा करिते।
प्रभुर अप्रकट वार्ता आइल आचम्बिते।।८।।

भावसार- स्वप्न देख मेरा मन आनन्दित हुआ। जानकर अविलम्ब प्रभु का आगमन हुआ। इसप्रकार कितने दिन अपेक्षा करते रहे। प्रभु के अप्रकट की वार्ता।।८।।

एतेक वारता शुनि विकल हैल मन।
दश श्लोक विरचिल स्मरि श्रीचरण।।

गुरुदेवेर गुणपण तहिते वर्णिल।
अनुरागवल्ली द्वारे जगत जानिल।।
अपूर्व से दश श्लोक विचित्र रचन।
मनोहरेर गुरु भक्तिर पूर्ण निदर्शन।।९।।

भावसार– इतनी वार्ता सुनकर मन विकल हो गया। श्रीचरण स्मरण कर दश श्लोक की रचना की। श्रीगुरुदेव के गुण वर्णन करने लगे। अनुरागवल्ली ग्रंथ में वर्णित हैं। इनमें श्रीमनोहरदासजी की गुरुभक्ति का पूर्ण निदर्शन है।।९।।

मनोहर दास यवे ब्रजेते आसिल।
चारि सम्प्रदाय तत्त्व अनुसंधान कैल।।
तिन सम्प्रदाय स्वीय प्रणाली देखाल।
निज सम्प्रदाय तत्त्वे खूंजिते लागिल।।
श्रीजीव गोस्वामी कुञ्जे करिय गमन।
एक प्राचीन वैष्णवेर हैल दरशन।।१०।।

भावसार– मनोहरदास जब ब्रज में आये। तब आपने चार सम्प्रदाय का तत्त्व अनुसंधान किया। तीन सम्प्रदाय व स्वीय सम्प्रदाय की प्रणाली दिखाई। निज सम्प्रदाय का तत्त्व खोजने लगे। श्रीजीव गोस्वामी कुञ्ज में गमन किया। एक प्राचीन वैष्णव का दर्शन किया।।१०।।

श्रीराधा वल्लभ नाम प्रेमानन्द धाम।
गोपाल गुरु शाखा हन महामति मान।।
ताँर स्थाने मन आर्ति निवेदन कैल।
ताहार कृपाय ताँर संशय घूचिल।।
गोपाल गुरु कृत एक पत्र पुरोतन।
कृपा करि सयतने देखाल तखन।।११।।

भावसार– श्रीराधावल्लभ नाम था, प्रेमानन्द धाम थे। श्रीगोपाल गुरु शाखा में महामति थे। उनके स्थान में मन–

आर्ति निवेदन किया। उनकी कृपा से उनका संशय मिट गया। श्रीगोपाल गुरु कृत एक प्राचीन पत्र था कृपाकर यत्नपूर्वक तब दिखाया।।११।।

'हरिनाम व्याख्या' आर 'सम्प्रदा निर्णय'।
हेरि दास मनोहर पुराल आशय।।
सम्प्रदाय तत्त्व बूझि प्रेमेते मगन।
निरवधि हृदि स्मरे गौरांग चरण।।
गौरांगेर प्रिय पात्र श्रीनिवास आचार्य।
ताँहार महिमा गान बूझे तिन कार्य।।१२।।

भावसार– 'हरिनाम व्याख्या' व 'श्रीसम्प्रदा-निर्णय' देखकर मनोहरदास का आशय पूर्ण हो गया। सम्प्रदाय तत्त्व समझकर प्रेम में मग्न हो गये। निरन्तर श्रीगौरांग चरणों का स्मरण करते थे। श्रीगौरांग के प्रिय पात्र श्रीनिवासाचार्य प्रभु हैं उनकी महिमा का गान किया।।१२।।

स्मरिया ताँहार पद करिया चिन्तन।
'अनुरागवल्ली' ग्रंथ करिल रचन।।
परम अद्‌भुत सेई ग्रंथेर वर्णन।
येई शुने येई पाय गौर प्रेमधन।।
ये समये एइ ग्रंथ करिल रचन।
ग्रंथ शेषे सेई वाक्य करिल लिखन।।१३।।

भावसार– उनके श्रीचरणों का स्मरण चिन्तन करने लगे। तत्पश्चात् 'अनुरागवल्ली' ग्रंथ की रचना की। यह परम अद्‌भुत है, जो इसे सुनता है वही गौर प्रेमधन को पाता है। सन् १६९६ में इसकी रचना हुई।।१३।।

तथाहि– श्रीअनुरागवल्ली (अष्टम)
राम वानाश्वचन्द्राद्रिमिते सस्वत स्वरेगते।

वृन्दावनान्तरे पूर्णा यातात्रानुगा वल्लिका।।
(सम्वत् १७५३)
वसुचन्द्र कला युक्त शाके चैत्र सितेहमले।
वृन्दावने दशमान्ते पूर्णानुराग वल्लिका।।
(शक् १६१८)
बोल शत आठार शकाब्द आगमने।
चैत्री शुक्ला दशमी तिथि हइल मिलने।।
सेइकाले वृन्दावने ग्रंथ समापन।
श्रीनिवास आचार्य गुण याहाते वर्णन।।

१६१८ शकाब्द (सन् १६९६) चैत्र शुक्ल दशमी तिथि में यह ग्रंथ वृन्दावन में पूर्ण हुआ। श्रीनिवासाचार्य प्रभु के गुण इसमें वर्णित हैं।

परम महिमान्वित मनोहर दास।
किञ्चित कहिल तार महिमा प्रकाश।।
श्रीनिवासाचार्य गुण वर्णिलेन येंह।
गाहिते ताहार गुण हइल अग्रह।।१४।।

भावसार– श्रीमनोहर परम महिमावान हैं, उनकी किञ्चित् महिमा का प्रकाश किया है। श्रीनिवासाचार्य प्रभु के गुण को गायन करने गुणों की प्राप्ति होती है।।१४।।

गौरांग प्रकाश मूर्ति आचार्य श्रीनिवास।
यतने करिल ताँर महिमा प्रकाश।।
आचार्येर कृपा धन्य मनोहर दास।
ते कारणे 'किशोरी' करे महिमा प्रकाश।।१५।।

भावसार– श्रीनिवासाचार्य श्रीगौरांग की प्रकाश मूर्त्ति हैं। यत्न से उनकी महिमा का प्रकाश हुआ है। आचार्य की कृपा से मनोहरदास धन्य हुये हैं, इसलिये 'किशोरीदास' उनकी महिमा प्रकाश करते हैं।।१५।।

२६. श्रील प्रियादासजी महाराज

(भक्तमाल ग्रंथ के टीकाकार)

जय जय विश्वम्भर जगतेर प्राण।
जय जय नित्यानन्द करूणा निधान।।
जय जय श्रीअद्वैत जीवेर जीवन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
जय श्रीनिवास नरोत्तम श्यामानन्द।
गण सहकर कृपा मोरे जानि मन्द।।१।।

भावसार- जगत के प्राण श्रीविश्वम्भर की जय हो! करूणानिधान श्रीनित्यानन्द की जय हो! जीवों के जीवन श्रीअद्वैतप्रभु की जय हो! श्रीगदाधर-श्रीसादि की जय हो! श्रीनिवासाचार्य, श्रीनरोत्तम ठाकुर, श्रीश्यामानन्दप्रभु की जय हो! पार्षदों सहित मुझ मन्द पर कृपा कीजिये।।१।।

वृन्दावनवासी प्रियादास महामति।
श्रीनिवास आचार्य शाखा अद्भुत प्रकृति।।
भक्तमाल ग्रंथेर येवा टीका कैल।
ब्रजभाषाय विरचिया प्रकाश करिल।।
कृष्णदास कैल बंग भाषाय विरचन।
तथाय करिल तार महिमा कीर्तन।।२।।

भावसार- वृन्दावनवासी श्रीप्रियादासजी महा विद्वान् हैं। श्रीनिवासाचार्य प्रभु शाखा में अद्भुत महाजन हैं। उन्होंने श्रीभक्तमाल ग्रंथ की भक्तिरसबोधिनी नामक टीका (व्याख्या) ब्रजभाषा में रचित की है। तत्पश्चात् श्रीकृष्णदास (लालदास) ने बंगला भाषा में पद्यानुवाद किया है।।२।।

तथाहि श्रीभक्तमाल-

गौरांग भक्त वन्दौं अनन्त अपार।

विशेषे श्रीनिवास आश्रय आमार।।
ताँर पादपद्म वन्दौं लोटायाँ धरनी।
चैतन्येर आवेशावतार यारे गणि।
याँर परिवार प्रियादास गुणमणि।।

श्रीगौरांग के अनन्त भक्तों की वन्दना करता हूँ, विशेषतः श्रीनिवासाचार्य प्रभु के आश्रय ही मेरा जीवन है। पृथ्वी पर लुण्ठित होकर उनके पादपद्म में वन्दना करता हूँ, जो श्रीचैतन्य के आवेशावतार हैं। जिनके परम्परा में श्रीप्रियादास गुण मणि हैं।

प्रियादास कैल येछे ग्रंथेर वर्णन।
भक्तमाले कृष्णदास करये कीर्तन।।३।।

भावसार– प्रियादास ने जैसे टीका ग्रंथ लिखा है वैसे ही श्रीकृष्णदास ने बंग टीका लिखी है।।३।।

तथाहि–

वन्दौं श्रीअग्रदास याँर शिष्य नाभा।
तेंहो कैला भक्तमाल सज्जनेर लोभा।।
चारयुगेर भक्तगणेर अपूर्व चरिते।
प्रियादासे आज्ञा दिला टीका विस्तारिते।।

श्रीअग्रदासजी के श्रीनाभाजी की वन्दना करता हूँ। जिन्होंने सज्जनों के लिये श्रीभक्तमाल ग्रंथ की रचना की है। चार युगों के भक्तों का अपूर्व वर्णन किया है और श्रीप्रियादासजी को आज्ञा देकर भक्तमाल की टीका लिखवाई है।

वृन्दावन वासी प्रियादास महामति।
विचक्षण बुद्धि शुद्धि भक्ति रति मति।।
अल्पाक्षरे बहु अर्थ अनुप्रास याजक।
भक्तगणेर रीत वर्णे सन्धेन पूर्वक।।

एइमत प्रियादासेर चरित्र कथन।
'किशोरी' वन्दये तार धरिया चरण।।४।।

भावसार– वृन्दावनवासी श्रीप्रियादास विद्वान् थे। विचक्षण बुद्धिमन्त और विशुद्ध भक्त थे। अल्प अक्षरों में बहुत अर्थ प्रकाशित किये हैं। अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया है। भक्तों की रीति वर्णन उत्तम शैली में किया हैं। इसप्रकार श्रीप्रियादासजी का चरित्र वर्णन किया। 'किशोरीदास' उनके चरणों की वन्दना करते हैं।।४।।

२७. सिद्ध श्रील जयकृष्णदास बाबाजी महाराज

काम्यवन

जय जय पतित पावन गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द भवेर काण्डारी।।
जय जय श्रीअद्वैत कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
काम्यवन वासी सिद्ध जय कृष्णदास।
वैराग्येर प्रतिमूर्ति शुद्ध गौरदास।।१।।

भावसार– पतित पावन श्रीगौरहरि की जय हो! भव के काण्डारी श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! कुबेर नन्दन श्रीअद्वैतप्रभु की जय हो! श्रीगदाधर–श्रीवासादिगण की जय हो! काम्यवनवासी सिद्ध जयकृष्णदास बाबा की जय हो! वे वैराग्य के प्रति मूर्त्ति व शुद्ध गौरभक्त थे।।१।।

रूप सनातनेर यत वैराग्य भजन।
सिद्ध बाबा द्वारे ज्ञात हैल सर्वजन।।
ब्रजेते वैष्णव आर गृहस्थ भक्तगण।
येइ रागानुगा भक्ति करये याजन।।
ताहार प्रवाह एइ सिद्ध बाबा हैते।

याहा पाइया धन्य हैल ए त्रिजगते।।२।।

भावसार- श्रीरूप-सनातन गोस्वामी ने जैसा वैराग्य भजन सिखाया सिद्ध बाबा ने अनुसरण करते हुये भजन किया। ब्रज में वैष्णव और गृहस्थ भक्तगण थे वे रागानुगा भक्ति का याजन करते थे। उसी प्रवाह में ये सिद्ध बाबा हुये; जिन्हें पाकर यह त्रिभुवन धन्य हुआ।।२।।

गंगा माता परिवार आश्रय ताँहार।
अन्य परिचय ज्ञात ना हय ताहार।।
अनुरागे ब्रजेते बाबा करये भ्रमण।
सेइकाले वृन्दादेवी कैल आज्ञार्पण।।
आज्ञा मत काम्यवने करि आगमन।
विमलाकुण्डेर तीरे करेन भजन।।३।।

भावसार- वे श्रीगंगामाता ठकुरानी परम्परा के अन्तर्भुक्त थे और उनका कोई परिचय नहीं मिलता है। प्रेमानुराग में बाबा ब्रज में भजन करते थे। उसी समय श्रीवृन्दादेवी ने आज्ञा दी काम्यवन में जाओ। आप काम्यवन के विमलाकुण्ड के तट पर भजन करने लगे।।३।।

दिव्य स्थान निरूपिया तथा कैल वास।
स्मरये गौरांग पद करे हा हुतास।।
प्रेमानुरागे तेंह करये स्मरण।
अचिन्त्य बाबार गुण अपूर्व कथन।।
सेकाले राधाकुण्डे रहे जगदानन्ददास।
अद्‌भुत पाण्डित्य तार अपूर्व प्रभाव।।४।।

भावसार- दिव्य स्थान निरूपित कर वहाँ वास किया। श्रीगौरांग चरणकमल का स्मरण प्रेम-अनुराग सहित करते थे। आपके गुण अचिन्त्य थे। उस समय राधाकुण्ड में श्रीजगदानन्द दास बाबा रहते थे, जिनके पाण्डित्य-विद्वत्ता

का अपूर्व प्रभाव था।।४।।

ताँर गुरु भगवान दास महाशय।
फरीदपुर रामदियार मोहानत से हय।।
तेंह काम्यवन मध्ये करि आगमन।
सिद्ध बाबार पाशे रहे पुलकित मन।।
किछु रहि तेंह विदाय मागिल।
विच्छेद विरहे दोंहे मूर्च्छित हइल।।५।।

भावसार– उनके गुरु श्रीभगवानदास महाशय थे वे फरीदपुर रामदिया के मोहानत से थे। वे भी काम्यवन में आगमन किये और सिद्ध बाबा के निकट रहने लगे। कुछ दिन रहकर उन्होंने विदा माँगी। विच्छेद होने पर दोनों मूर्च्छित हुये।।५।।

एकमास रहि तेंह करिल गमन।
काम्यवने सिद्ध बाबा रहे अनुक्षण।।
काम्यवने विचेल्लीवास नामक स्थान।
तथा रहे सिद्ध बाबा प्रेमेते उद्दाम।।
सेइकाले एल नवकिशोार गोस्वामी।
नित्यानन्द वंशात्मज गौर प्रेमधनी।।६।।

भावसार– एकमास रहकर उन्होंने गमन किया। काम्यवन में सिद्ध बाबा अनुक्षण रहे। काम्यवन में विचेल्लीवास नामक स्थान है। वहाँ बाबा प्रेमपूर्वक रहते। उसी समय उनके पास श्रीनवकुमार गोस्वामी आये जो श्रीनित्यानन्द प्रभु के वंशज थे। वे गौरप्रेम के धनी थे।।६।।

मदनमोहन श्रीविग्रह संगे लञा एल।
ब्रजधाम दर्शन करि तथाय पौंछिल।।
कतकाल सिद्ध बाबार कुटीरे रहिल।
यात्राकाले मदनमोहन ताहाके कहिल।।

स्वप्नेते दर्शन दिया बलये वचन।
तोमार सेवाय तुष्ट हैल मोर मन।।७।।

भावसार– श्रीमदनमोहनजी का श्रीविग्रह संग में लेकर आये। ब्रजधाम में दर्शन कर वहाँ पहुँचे। यात्राकाल में श्रीमदनमोहनजी ने उनको स्वप्न में कहा– तुम्हारी सेवा से मेरा मन सन्तुष्ट हुआ।।७।।

एवे बाबाजीर सेवा करिव ग्रहण।
एथाय राखिया मोरे करह गमन।।
ए स्थान त्यजिते नाहि चाहे मोर मन।
आज्ञा पाञा गोसाँई जीउ करये गमन।।
तदवधि सिद्ध बाबा करये सेवन।
अनुरागे करे सेवा दिया प्राण मन।।८।।

भावसार– अब बाबा की सेवा ग्रहण करूँगा। वहाँ मुझे देकर गमन कीजिये। इस स्थान को त्यागने का मेरा मन नहीं है। आज्ञा पाकर गुसाईजी ने गमन किया। तद्वधि सिद्ध बाबा ने सेवा की। अनुराग सहित सेवा कर मन प्राण से की।।८।।

अपूर्व बाबार गुण शुन सर्व जन।
शुनिले भगवत् कथा प्रेमाविष्ट मन।।
कभु हासे कभु नाचे हुँकार गर्जन।
प्रेमे मस्तकेर शिखा हयत उद्गम।।
हुँकारे कुटीर छाद विदीर्ण हइल।
सकले हेरिया ताहा धन्य धन्य कैल।।९।।

भावसार– बाबा के अपूर्व गुण सब जन सुनें। उनका मन भगवत कथा में प्रेमाविष्ट हो जाता, कभी हँसते, कभी नाचते, कभी हुंकार गर्जन करते। प्रेम में मस्तक की शिखा का उद्गम होता। हुँकार से कुटीर की छत विदीर्ण हो गयी।

सबने देखकर धन्य-धन्य कहा।।९।।

अद्यापिओ सेई स्मृति आछे विद्यमान।
भाग्यवान जन हेरे गिया सेइ स्थान।।
निरवधि हरिनाम करये ग्रहण।
अनुरागे निद्रा नाहि करे आकर्षण।।
आहार अनाहारे ताँरे कभु नहे मन।
कभु बहु खाय कभु ना करे भोजन।।१०।।

भावसार- आज भी वही स्मृति विद्यमान है भाग्यवान जन उस स्थान पर जाकर देखते हैं। वे निरन्तर हरिनाम जप करते। भगवत्प्रेम में निद्रा नहीं आती थी। आहार आदि में उनका मन नहीं था। कभी बहुत खाते, कभी भोजन ही नहीं करते।।१०।।

सदाई भजनानन्दे रहये मगन।
आहार अनाहारे दुःख ना याय दर्शन।।
गोवर्धन सूर्यकुण्डेर बाबा दुइ जन।
सदा अनुगत ताँर ख्यात सर्वजन।।
दैवे अल्प वयस्क बाबाजी एकजन।
मदनमोहन लागि कैल आगमन।।११।।

भावसार- सर्वदा भजन के आनन्द में ही मग्न रहते। आहार आदि की चिन्ता नहीं थी। गोवर्धन व सूर्यकुण्ड के सिद्ध बाबा उनके अनुगत में भजन करते। दैवयोग से एक अल्प वयस्क बाबा आया; जिसने श्रीमदनमोहनजी की सेवा की।।११।।

सहाय करये तेंह रयाँ अनुक्षण।
ताहारे सेवाय सुखी सिद्ध बाबार मन।।
अनुरागे हेरि ताँर हञा प्रीत मन।
अनुराग भक्ति तत्त्व करान शिक्षण।।

शिक्षाकाले गुरु प्रणाली ताहाके पूछिल।
किछुइ ना जाने तेंह विनये कहिल।।१२।।

भावसार– वह उनकी सदा सहायता करता। उनकी सेवा से सिद्ध बाबा सुखी हुये। तब प्रेमपूर्वक उनको भक्ति तत्त्व की शिक्षा दी। उनसे गुरुप्रणाली के सम्बन्ध में पूछा। वह विनयपूर्वक बोला– बाबा! मैं तो कुछ भी नहीं जानता हूँ।।१२।।

बाबा कहे प्रणाली हय साधन सम्वल।
इहा बिना रागानुगा भजन निष्फल।।
सिद्ध गोपीरूपा मञ्जरी देह बिने।
श्रीराधाविनोद सेवा ना हय बाखाने।।
भजन विहीने ब्रज सेवा नाहि पाय।
प्रणाली भजन मूल परम उपाय।।१३।।

भावसार– सिद्ध बाबा ने कहा– गुरुप्रणाली साधन का सम्वल होती है। इसका बिना रागानुगा भजन होता नहीं है। सिद्ध मञ्जरी सखी देह के बिना श्रीराधाविनोद की सेवा होती नहीं है। भजन के बिना ब्रज की युगल सेवा होती नहीं है। गुरुप्रणाली व सिद्ध प्रणाली भजन का मूल परम उपाय है।।१३।।

रागानुगा भजन तत्त्व करिया श्रवण।
भजने अनुराग वृद्धि हइल तखन।।
रागानुगा भजन लुब्ध हैल ताँर मन।
प्रणाली विहीन हञा करये चिन्तन।।
केमने प्रणाली मुंइ करि आनयने।
मदन मोहन सेवा छाड़िव केमने।।१४।।

भावसार– रागानुगा भजन तत्त्व का श्रवण करके तब भजन में अनुराग बढ़ता है। उनका मन अब रागानुगा भजन

के प्रति लुब्ध हो गया। प्रणाली विहीन हूँ– ऐसा वे चिन्तन करने लगे। कैसे मैं प्रणाली लाऊँ और कैसे श्रीमदनमोहनजी की सेवा छोड़कर जाऊँ।।१४।।

विशेष बाबार सेवा छाड़न ना याय।
सिद्ध बाबाय ना देखिले प्राण वाहियाय।।
विरह विक्षेपे तेंह व्याकुल हइल।
बाबा बुझाइया ताँरे सम्मत करिल।।
प्रणाली आनिते गौड़ करे आगमन।
काँदिया काँदिया करे पथ अतिक्रम।।१५।।

भावसार– विशेष रूप से सेवा छोड़कर नहीं जाना चाहते हैं सिद्ध बाबा को न देखने पर प्राण बाहर निकले जाते हैं। विरह में अति व्याकुल हो गये। तब सिद्ध बाबा ने उनको समझाकर सम्मत किया। गुरुप्रणाली लाने के लिये बंगाल भेजा; रोते–रोते वे चल दिये।।१५।।

कातरे राधा वृन्दा स्थाने करये प्रार्थन।
गाड़ी उठा पूर्वे येन छाड़े ए जीवन।।
हेनमते हात रसे करिल गमन।
अग्रे गाड़ी छाड़ि गेले फिरिते हैल मन।।
एदिके हइल एक विचित्र घटन।
सिद्ध बाबाय वृन्दा देवी दिल दरशन।।१६।।

भावसार– आर्तिपूर्वक श्रीवृन्दादेवीर के मन्दिर में प्रार्थना किये। गाड़ी चलने से पूर्व ही ऐसा लगा, जैसे जीवन छूट जायेगा। इसप्रकार हाथरस तक पहुँचे। उनके हाथरस पहुँचने के पूर्व ही गाड़ी चली गयी। इधर एक विचित्र घटना घटी। सिद्ध बाबा को श्रीवृन्दादेवी ने दर्शन दिया।।१६।।

स्वप्ने धमकाइया तेंह वलेस वचन।
सिंहासने प्रणाली रहे करह दर्शन।।

वृन्दा स्थाने सिद्ध बाबा क्षमा चाहि निल।
प्राते उठि स्नान सारि मन्दिरे ढकिल।।
सिंहासने प्रणाली पाञा उल्लासित मन।
यार द्रव्य तार लागि चिन्ताकुल मन।।१७।।

भावसार– स्वप्न में धमकाकर उन्होंने कहा– ठाकुरजी के सिंहासन के नीचे प्रणाली रखी हुई है, जाओ देखो। सिद्ध बाबा ने श्रीवृन्दादेवी से क्षमा माँगी। प्रातः उठकर स्नान कर मन्दिर उत्थापनर किये। सिंहासन के नीचे प्रणाली पाकर उल्लासित हुये। जिसका धन है उसके लिये चिन्तातुर हुये।।१७।।

राधाकृष्ण स्थाने तेंह करये प्रार्थन।
कृपा करि फिराइ तारे आनह एखन।।
सेवा करे पथ पाने करे निरीक्षण।
संध्याकाले आसि तेंह करिल मिलन।।
क्षुधा तृषा पथक्रमे क्लान्त कलेवर।
बाबार आज्ञा लंघन चिन्ति कातर अन्तर।।१८।।

भावसार– श्रीराधाकृष्ण से प्रार्थना करने लगे और कृपा कर लौटा दो उस नवीन को। सेवा कर मार्ग की ओर देखने लगे। संध्याकाल में वह बाबा लौट आये। क्षुधा–पिपासा से वे क्लान्त हैं। बाबा की आज्ञा का उल्लंघन समझकर रो रहे हैं।।१८।।

सदैन्ये चरणे करि काकु निवेदन।
सिद्ध बाबार पद प्रान्ते पडिल तखन।।
तारे पाञा सिद्ध बाबा आनन्दित मन।
वक्षे जड़ाइया प्रेमे जिज्ञासे वचन।।
केन वा कि भावे तव फिरिते हैल मन।
शुनि आप्य प्रान्त तेंह कैल निवेदन।।१९।।

भावसार– फिर दैन्यपूर्वक चरण पकड़कर निवेदन करने लगे और सिद्ध बाबा के चरणों में पड़ गये। उन्हें देख सिद्ध बाबा आनन्दित हुये। फिर हृदय से लगाकर प्रेमपूर्वक प्रश्न पूछे– "क्यों और किस प्रकार लौटने का मन हुआ?" यह सुनकर छोटे बाबा ने निवेदन किया।।१६।।

आज्ञा लंघन जन्म तेंह क्षमा वै चाहिल।
सिद्ध बाबा क्षमा करि प्रसाद भुञ्जाइल।।
उद्‌वेगेते सिद्ध बाबा ना कैल भोजन।
ताहाके लइया संगे करिल भोजन।।
विश्राम काले वृन्दार कृपा सकलि कहिल।
तद्‌वधि सिद्ध नाम प्रचार हइल।।२०।।

भावसार– आज्ञा लंघन के लिये क्षमा चाहता हूँ। गाड़ी चली गयी। सिद्ध बाबा ने उन्हें प्रसाद पवाया। उद्‌वेग में सिद्ध बाबा ने भोजन नहींर किया था। अब उनके साथ भोजन किया। शयन के समय स्वप्न में श्रीवृन्दा देवी ने गाड़भ चले जाने के कारण छोटे बाबा लौटे हैं– यह सब बात कह दीं। तभी से वे सिद्ध बाबा के नाम से उनका प्रचार हो गया।।२०।।

सिद्ध बाबार प्रेमगुण ना याय वर्णन।
अपूर्व आरति एक करूण श्रवण।।
काम्यवने रहे बाबा प्रेमाकुल मन।
भिक्षाटने करे निज उदर भरण।।
आन कथा नाहि केह नाहि आन संग।
अन्तर्मना हञा भजे गौर पद भृंग।।२१।।

भावसार– सिद्ध बाबा के अपूर्व गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। एक करूण प्रसंग श्रवण कीजिये। काम्यवन में आप प्रेमाकुल पूर्वक रहते थे। माधुकरी वृत्ति कर उदरपूर्ति करते। अन्य कोई बात न कहते और न ही

अन्य संग करते। अन्तर्मन हो श्रीगौरचरणों का भजन करते थे।।२१।।

काम्य वनाधीश भरतपुरेर राजन।
सिद्ध बाबार गुण शुनि पुलकित मन।।
सन्दर्शन अभिलाषे कैल आगमन।
अनेक यतने नाहि मिलाये दर्शन।।
छद्मवेशे राजा तवे दीन हीन प्राय।
कुटीर द्वारेते रहे दर्शन आशाय।।२२।।

भावसार- काम्यवन भरतपुर राजा के अधीन था। वह सिद्ध बाबा के गुण सुनकर आये। दर्शन की अभिलाषा थी, बहुत यत्न से भी दर्शन मिले नहीं। तब राजा छद्म वेश में दीन-हीन होकर कुटीर द्वार पर दर्शन की आशा में बैठे रहे।।२२।।

से कालेते ग्रामे बाबा करे भिक्षाटन।
भिक्षा सारि कुटीर पथे करये गमन।।
अर्द्ध पथ होते आज्ञाय करिया दर्शन।
चीत्कार करिया ग्रामे करये भ्रमण।।
पर्ण कुटीरेते मोर अग्नि ये लागिल।
हेन वार्ता ग्रामीजने डाकिया कहिल।।२३।।

भावसार- उस समय बाबा गाँव में मधुकरी भिक्षा करने गये थे। भिक्षा लेकर कुटीर की ओर आये। आधे मार्ग पर ही चीत्कार करने लगे और गाँव में कहा- मेरी कुटिया में अग्नि लग गयी है। यह सुनकर गाँव वासी गये।।२३।।

अग्नि निवाइते सबे करये गमन।
सिद्ध बाबा ग्राम माझे करे विचरण।।
ग्रामवासी कुटीर पार्श्वे करये दर्शन।
छद्मवेशे महाराज करे उपवेशन।।

हेरिया चकित हैल ग्रामवासी गण।
विनय सम्भ्रमे सबे वलये तखन।।२४।।

भावसार– अग्नि बुझाने के लिये सबने गमन किया। सिद्ध बाबा गाँव में ही विचरण करते रहे। गाँव वासियों ने देखा कि कुटिया के पास राजा छद्मवेश में बैठे हैं। यह देखकर सब चकित हुये। तब सब विनयपूर्वक वचन कहे।।२४।।

शुन महाराज एवे मोदेर निवेदन।
राजहठ होते योगी हठ ये विषम।।
तव राजस्थाने सब वारता कहिल।
भीत हञा विषन्न मने राजा ये चलिल।।
पाछे सिद्ध बाबा तथा करि आगमन।
गोमय जले स्थान लेपि करये भजन।।२५।।

भावसार– सुनो महाराज! हमारा निवेदन यह है कि राजहठ से भी बड़ा विषम योगी हठ हैं। तब राजस्थान में सब वार्ता कही। भीत होकर राजा चले गये। तत्पश्चात् सिद्ध बाबा ने आगमन किया। गोमय व जल से स्थान लीपकर भजन प्रारम्भ किया।।२५।।

पूर्वे प्रतापरुद्रे गौर करिल येमन।
एवे देखि सिद्ध बाबा तदनुकरण।।
वैष्णव सेवि महाराज सकलि बूझिल।
सिद्ध बाबार कृतकार्ये रुष्ट न हइल।।
दैन्य निर्वेद उदय हैल राज मन।
परोक्ष बाबार कृपा पाइल राजन।।२६।।

भावसार– पूर्व में जैसे श्रीगौरांग महाप्रभु ने राजा प्रतापरुद्र के साथ किया था, वैसा ही अनुकरण सिद्ध बाबा ने किया। (तात्पर्य यह है कि विरक्त निष्काम वैष्णव राजा व

धनवान लोगों के संग व दान से बचकर विशुद्ध त्याग–वैराग्य युक्त भजन करने को ही श्रेष्ठ रीति मानते हैं ऐसा संग व दान रजोगुण व कामना ही उत्पन्न करेंगे; जिससे भजन में विघ्न होगा) वैष्णव सेवी राजा सब समझ गये और सिद्ध बाबा के इस कार्य से रुष्ट नहीं हुये। राजा में दैन्य उत्पन्न हुआ और परोक्ष रूप से कृपा प्राप्त की।।२६।।

हेनमते सिद्ध बाबा करये भजन।
तारपर या घटल शुनह एखन।।
परम आनन्दे बाबा करये भजन।
सदाइ विरजा करे गोप शिशुगण।।
भजन विघ्ने अन्यत्र चलिते हैल मन।
जानि कुटीर बान्धि दिल ग्रामवासीगण।।२७।।

भावसार– इसप्रकार सिद्ध बाबा ने भजन किया। तत्पश्चात् जो घटित हुआ, उसे सुनिये। परम आनन्दपूर्वक बाबा भजन करते। गोप बालक सदा ही ऊधम–खेल करते जिससे भजन विघ्न जानकर बाबा का अन्यत्र चले जाने का मन हुआ। गाँव वासियों ने कुटीर का निर्माण कर दिया।।२७।।

कुटीर थाकिया बाबा भजने मगन।
मधुकरीर संध्याकाले वाहिरे आगमन।।
विमलाकुण्ड स्नान सारि ग्रामेते गमन।
माधुकुरी करि शीघ्र करे आगमन।।
निरवधि महानन्दे करये स्मरण।
एकदा घटिल एक विचित्र घटन।।२८।।

भावसार– कुटीर में रहकर बाबा भजन करने लगे। केवल संध्याकाल में ही मधुकरी के लिये कुटीर के बाहर निकलते थे। विमलाकुण्ड में स्नानकर गाँव में जाते। फिर मधुकरी कर शीघ्र लौट आते थे। निरन्तर आनन्द में लीला

स्मरण करते। एकबार एक विचित्र घटना घटी।।२८।।

एकदा मध्यान्ह करे मानस स्मरण।
अन्तरंग सेवा करे करिया यतन।।
क्षण मध्ये हैल ताँर लीला विपर्यय।
अभीष्ट विच्छेदे हैल कातर हृदय।।
विरह व्याकुल हैल सदा उद्विग्न मन।
सेकाले आसिल गोप शिशु अगनन।।२९।।

भावसार– एकबार मध्यान्ह के समय मानसी लीला चिन्तन कर रहे थे उसी क्षण लीला विपर्यय हो गया। अभीष्ट का विच्छेद होने पर कातर हो गये। विरह व्याकुलता में मन उद्विग्न हो गया। उसी समय कुछ गोपबालक आये।।२९।।

गोधन लइया सबे करि आगमन।
विमलाकुण्डेर चतुपार्श्वे करे विचरण।।
चीत्कार करिया सबे वलये वचन।
कोथा बाबा वारि मोदेर करह अर्पण।।
पिपासाय कातर हञा कैल आगमन।
शीघ्र जलदान करि राखह जीवन।।३०।।

भावसार– गाय–बछड़ा को लेकर सब आ गये और विमलाकुण्ड के चारों ओर विचरण करने लगे। चीत्कार कर सबने कहा– बाबा! हमको जल पिलाओ। पिपासा में यहाँ आगमन किया है। शीघ्र जलदान कर जीवन रखो।।३०।।

पूर्व होते रुष्ट बाबा गोप शिशु प्रति।
निःशब्दे भीतरे प्रेमाकुल मति।।
बाबार सादा ना पाइया गोप शिशुगण।
बहुत उत्पात करि वलये वचन।।
कि भजन कर तुमि जानि तव मन।
शीघ्र करि आनि मोदेर करह अर्पण।।३१।।

भावसार- पूर्व से बाबा गोप बालक के प्रति रुष्ट थे, निशब्द होकर प्रेममति हो गये। बाबा का उत्तर न पाकर गोपगण उत्पात करने लगे। क्या भजन करते हो? शीघ्र हमें जल पिलाओ।।३१।।

तवे बाबा रुष्ट हञा षष्टि निल हाते।
साक्षाते आसिया हेरि हैल चमकिते।।
असंख्य अद्‌भुत गो गोप शिशुगण।
माधुरी हेरिया षष्ठि खसिल तखन।।
क्रोध दूरे गेल हेल सविस्मय मन।
परम कारुण्ये सेवा जिज्ञासे वचन।।३२।।

भावसार- तब बाबा रुष्ट होकर छड़ी हाथ में लेकर आये। सम्मुख आकर चमत्कृत हुये। हजारों गाय-बछड़ा-ग्वालों की माधुरी की देखकार हाथ से छड़ी गिर पड़ी। क्रोध दूर होने पर विस्मित हुये। परम करूणता से सेवा पूछने लगे।।३२।।

किवा नाम कोथा होते करह आगमन।
संगेते बालक ए हय कोने जन।।
शिशु कहे नन्दग्राम होते आगमन।
कानाई आमार नाम वलाइ ओ जन।।
परिचय कर पाछे धरह वचन।
शीघ्र जल आनि कर पिपासा मोचन।।३३।।

भावसार- तुम्हारा क्या नाम है? कहाँ से आये हो? संग में जो बालक है यह कौन है? बालक ने कहा- नन्दगाँव से आये हैं, कन्हाई मेरा नाम है उसका नाम बलाई है। परिचय प्राप्त देकर कहा जल लाकर उनको पिलाओ।।३३।।

तवे सिद्ध बाबा हञा स्नेह परवश।
करोयार जले तृषा मिटाइल सब।।
सिद्ध बाबाय गोप शिशु वलये तखन।

बहु दूर होते मोरा करि आगमन।।
किछु जल आर बाल्य भोग आयोजन।
करिया राखिह नित्य करिव मिलन।।३४।।

भावसार– तब सिद्ध बाबा स्नेह के परवश हो गये और करूआ से जल लाकर सबकी पिपासा मिटाई। बहुत दूर से हम आते हैं। कुछ जल व बाल्य–भोग का आयोजन करो। हम नित्य मिलेंगे।।३४।।

बाबा कहे शुनिलाम सबार वचन।
नित्य आसि उपादि हेथा ना कर एमन।।
एत कहि विदाय दिया कुटीरे ढुकिल।
तवेत हृदय मारे चिन्तिते लागिल।।
एतादृश गोधन आर गोप शिशु गण।
एत चिन्ति वाहिरेते कैल आगमन।।३५।।

भावसार– बाबा बोले– नित्य आकर ऐसा उत्पात और नहीं करना। ऐसा कहकर उनको विदा किया। तत्पश्चात् हृदय में सोचने लगे ऐसे गाय व ग्वाला हैं। सोचकर बाहर निकले।।३५।।

उत्कण्ठित हञा तेंह करे निरीक्षण।
कोथाओ ना हेरे सेई गोप शिशुगण।।
अन्तर्धान हैल हेरि अनुतप्त मन।
आपन दुर्भाग्य चिन्ति करये क्रन्दन।।
विरह विक्षपे तेंह आविष्ट हइल।
कृपामय कृष्णचन्द्र दरशन दिल।।३६।।

भावसार– उत्कण्ठित होकर निरीक्षण किया फिर कहीं भी गोप–बालकों को नहीं पाया। उनके अन्तर्धान होने पर मन अनुतप्त हुआ अपने दुर्भाग्य को सोच क्रन्दन करने लगे। विरह अवस्था ऐसे आविष्ट हुये तब श्रीकृष्ण ने दर्शन

दिये।।३६।।

सन्तवरा करिवा कहे उठह एखन।
शोक त्यजि धर एवे आमार वचन।।
कला तोमा पाशे मोरा करिव आगमन।
शुनि धैर्य धरि बाबा उठिल तखन।।
परदिवस वृद्धा एक ब्रजमायी एल।
श्रीगोपाल मूर्ति दिया कहिते लागिल।।३७।।

भावसार– उन्होंने कहा– सन्तवर! शोक त्यागकर मेरे वचन सुनो। कल तुम्हारे पास मैंने ही आगमन किया था। सुनकर तब बाबा ने धैर्य रखा। दूसरे दिन एक ब्रजवासी माता आयी और श्रीगोपाल की मूर्ति देकर कहने लगी।।३७।।

मोर द्वारे गोपाल सेवाना हय एखन।
गोपालेरे लञा तुमि करह सेवन।।
बाबा कहे सेवा द्रव्य कोथाय पाइव।
ब्रजमायी कहे आमि सब मिलाइव।।
गोपाल माधुरी हेरि बाबा सुखमन।
परम यतने लञा करये सेवन।।३८।।

भावसार– मेरे घर पर गोपालजी की सेवा हो नहीं पाती है। तुम गोपाल की सेवा करो। बाबा ने कहा– सेवा के लिये धन कहाँ से लाऊँगा? ब्रजवासी माता ने कहा– मैं ला दूँगी। गोपाल की माधुरी देख बाबा के मन में सुख हुआ। वे परम यत्नपूर्वक सेवा करने लगे।।३८।।

सेई रात्रे स्वप्न दिया सब जानाइल।
ब्रजमायी रूपे स्वयं वृन्दाजी आइल।।
वृन्दाजी करिया कृपा गोपाले अर्पिल।
निज प्रियजन जानि प्रेम सेवा दिल।।
सेवा पाञा सिद्ध बाबा पुलकित मन।

ब्रजभाव अनुरागे सेवाते मगन।।३६।।

भावसार– उसी रात्रि में स्वप्न देकर सब बताया कि वह ब्रजमायी स्वयं श्रीवृन्दादेवी थीं। वे कृपा कर गोपाल को अर्पित कर गयी हैं। निज प्रिय दास जान सेवा प्रदान की है। सेवा पाकर सिद्ध बाबा का मन पुलकित हो गया। ब्रज भाव व सेवा अनुराग में मग्न हो गये।।३६।।

हेनमते कतकाल करिया यापन।
चैत्री शुक्ला द्वादशीते अप्रकट हन।।
प्राप्ति काले दिव्य भाव प्रकाश करिल।
कोथा काँचुली घाघरी ओढ़ना कहिल।।
अभिषारिका भावे अभिलाष प्रकाशिल।
दिव्यभाव प्रकाशिया अन्तर्धान कैल।।४०।।

भावसार– इसप्रकार बहुत समय व्यतीत किया। चैत्र शुक्ल द्वादशी में अप्रकट हुये। अन्तिम समय में दिव्य भाव प्रकाशित हुआ और कहने लगे थे कि मेरी चुनरी ओढ़नी, घाघरा कहाँ है? अभिसारिका भाव अभिलाषा प्रकट हुई थी। यह दिव्य भाव प्रकट कर नित्यलीला में मञ्जरी गोपी देह से चले गये।।४०।।

भाव अनुगति सेवाय करिल प्रवेश।
विलसये नित्यलीलाय धरि गोपीवेश।।
जयकृष्ण सिद्ध बाबा गुण अपूर्व कथन।
किञ्चित वर्णिया करि आपना शोधन।।४१।।

भावसार– भाव अनुगत सेवा से प्रवेश किया। नित्यलीला में गोपीवेश धरकर गये। सिद्ध श्रीजयकृष्णदास बाबा के गुण अपूर्व हैं किञ्चित् वर्णन कर अपना शोधन किया है।।४१।।

जय जय सिद्ध बाबा करूणा पाथार।
अनुगत ज्ञाने कर कृपार संचार।।

कायमने तव पद लइनु स्मरण।
ब्रज आनुगत्य भाव कराह स्फुरण।।४२।।

भावसार– हे करूणामय सिद्ध बाबा! आपकी जय हो! जय हो! अपना अनुगत जानकर कृपा का संचार कीजिये। कायमन से आपके चरणों का स्मरण करता हूँ ब्रज आनुगत्य भाव का स्फुरण कराइये।।४२।।

२८. सिद्ध श्रील कृष्णदास बाबाजी महाराज

जय जय पतित पावन गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द प्रेमदान कारी।।
जय जय श्रीअद्वैत सीतार जीवन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
अनन्त गौरांग गण अचिन्त्य महिमा।
ता सवार प्रेमगुणके पाइवे सीमा।।१।।

भावसार– पतितपावन श्रीगौरहरि की जय हो! प्रेम प्रदाता श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! सीताप्राणनाथ श्रीअद्वैतप्रभु की जय हो! श्रीगदाधर–श्रीवासादि की जय हो! श्रीगौरांग के अनन्त पार्षद हैं उनकी अचिन्त्य महिमा है। उनके प्रेमगुण की कौन महिमा गा सकता है?।।१।।

आपनि आसिया कैल निज प्रेमदान।
ब्रजेर निगूढ़ तत्त्वेर जानाल संधान।।
पारिषद द्वारे भक्ति तत्त्व निरूपिल।
आस्वादिया निज प्रेम वितरण कैल।।
पुनः श्रीनिवास नरोत्तम श्यामानन्द द्वारे।
जानाल आपन तत्त्व अवनी माझारे।।२।।

भावसार– आकर आपने प्रेमदान किया है। ब्रज के

निगूढ़ तत्त्व जानकर भक्तों को भक्तितत्त्व निरूपित किया। भगवत्प्रेम का आस्वादन व वितरण किया। पुनः श्रीनिवासाचार्य, श्रीनरोत्तम, श्रीश्यामानन्द के ग्रंथों से जानकर पृथ्वी पर प्रचार किया।।२।।

भक्ति ग्रंथ रत्न तिन द्वारे प्रचारिल।
शुद्ध गौर प्रेमतत्त्व जगत बूझिल।।
पतित पावनकारी प्रभु गौरहरि।
नानारंगे जीवन त्राण करे कृपा करि।।
कभु स्वयं अंश कभु पाठाइ निजजन।
हेनमते करे सदा पतित पावन।।३।।

भावसार- भक्ति ग्रंथों का तीन द्वारों से प्रचार किया। शुद्ध गौर प्रेमतत्त्व जगत को समझाया। पतित पावनकारी प्रभु श्रीगौरहरि हैं विविध प्रकार से जीवों पर कृपा करते हैं। कभी स्वयं आते हैं कभी निज पार्षदों को भेजते हैं। इसप्रकार वे पतितों को पावन करते हैं।।३।।

विशुद्ध भजन पुनः कराते शिक्षण।
भवेते पाठाल तवे निजजन परिजन।।
गुटिका रचिया येवा सुकीर्ति राखिल।
ब्रजेर भजन यार द्वाराय जानिल।।
गोवर्द्धनवासी तेंह बाबा कृष्णदास।
अचिन्त्य महिमा ताँर भुवने प्रकाश।।४।।

भावसार- विशुद्ध भजन करने का शिक्षण देते थे। जगत में निज पार्षदों को भेजते हैं। श्रीगौरगोविन्दलीलामृत गुटिका रचकर सुकीर्ति रखी है। इस ग्रंथ से ब्रज की रागानुगा भजन जाना जाता है। गोवर्द्धनवासी बाबा कृष्णदास की अचिन्त्य महिमा का भुवन में प्रकाश है।।४।।

श्रीललिता सनातन गोसाँई देखा दिल।

आज्ञा अनुरूप तेंह गुटिका सृजिल।।
गोस्वामीर अभिमत्त वैराग्य भजन।
आपनि आचरि जीवे कराल शिक्षण।।
एइ भजनेर उत्स्य काम्यवन हैते।
अंकुरित हैल जय कृष्ण बाबा होते।।५।।

भावसार– श्रीललिता सखी श्रीसनातन गोस्वामी ने आपको दर्शन दिये। उनकी आज्ञा के अनुसार गुटिका ग्रंथ की रचना की। गोस्वामी का अभिमत वैराग्यमय भजन है। आपने ऐसा ही आचरण जीवों को शिक्षा प्रदान की है। इस भजन पद्धति का उत्स काम्यवन के श्रीजयकृष्णदास बाबा से अंकुरित हुआ है।।५।।

कृष्णदास बाबा होते वृक्ष रूप हैल।
शाखा उपशाखा क्रमे जगते व्यापिल।।
उत्कल देशेर मध्ये एक पुण्य स्थान।
याहाते जन्मिल बाबा सर्वगुण धाम।।
सनातन काननगो पिता ख्यात सर्वजन।
मंगराज कन्या जयी ताँर माता हन।।६।।

भावसार– श्रीकृष्णदास बाबा से वृक्ष रूप में हुआ है और शाखा–उपशाखा के रूप में जगत में व्यापित हुआ है। उड़ीशा प्रदेश में एक पुण्य स्थान है जहाँ सर्वगुण सम्पन्न बाबा ने जन्म लिया। पिता श्रीसनातन काननगो विख्यात थे। माता मंगराज की कन्या जयी थीं।।६।।

रामचन्द्र प्रसादी ज्येष्ठ भ्राता दुइजन।
कनिष्ठ वट कृष्ण नामे विदित भुवन।।
करण कुलेते आसि लभिल जनम।
शैशवे आशीय पेल गौरांग भजन।।
पितृ अन्तर्धान काले माता सती हैल।
शिरोपा बान्धिया शिरे हेन आज्ञा दिल।।७।।

भावसार– रामचन्द्र प्रसाद ज्येष्ठ भ्राता थे। कनिष्ठ वटकृष्ण ही भुवन विदित हुये। करण कुल में जन्म लिया। शैशवास्था से ही श्रीगौरांग का भजन करते थे। पिता के अन्तर्धान के पश्चात् माता सती हो गईं। सिर पर शिरोपा बाँधकर यह आज्ञा दी।।७।।

ब्रजे गिया वैष्णव होते कैल आज्ञा दान।
से काले द्वादश वर्ष वयस ताहान।।
उड्र भाषाय छात्रवृत्ति करिल पठन।
मातृ आज्ञा हृदे स्मरि करये यापन।।
षोडश वत्सरे गृह त्यजि ब्रजे गेल।
दुइ वर्ष काल तथा पाठाभ्यास कैल।।८।।

भावसार– ब्रज में जाकर वैष्णव बन जाने की आज्ञा दी। तब वे बारह वर्ष के थे। उड़ीया भाषा में विद्याध्ययन किया था। माता की आज्ञा हृदय में रखकर सोलह वर्ष अवस्था में गृह त्यागकर ब्रज आ गये। दो वर्ष तक पाठ अभ्यास किया।।८।।

नरोत्तम परिवारे करिल आश्रय।
वृन्दावने ब्रह्मकुण्डे वसति करय।।
से कालेते वेशे तथा श्रीवैष्णवदास।
'पदकल्पतरु' ग्रंथ याहार प्रकाश।।
अन्तरे जानिल तेंह ताहार आशय।
ताँहारे समीपे रया भजन सिखय।।९।।

भावसार– श्रीनरोत्तम ठाकुर परिवार में आश्रय किया। वृन्दावन में ब्रह्मकुण्ड पर रहे। उसी समय श्रीवैष्णवदासजी महाराज से वेश लिया। जिन्होंने पदकल्पतरु ग्रंथ का प्रकाशन किया था। श्रीकृष्णदास का हृदय भाव समझकर उनको भजन पद्धति सिखाई।।९।।

ताँर अन्तर्धाने तेंह उचाटन मन।
गोविन्द सेविते ताँर ख्यात सर्वजन।।
श्रीगोविन्द देव एवे जयपुरे रय।
हेन वार्ता शुनि तथा गमन करय।।
गोविन्द माधुरी हेरि पुलकित मन।
सेवा अभिलाष राजाय करिल ज्ञापन।।१०।।

भावसार– उनके अन्तर्धान से श्रीकृष्णदास का मन उच्चाटित हो गया फिर जयपुर में जाकर श्रीगोविन्ददेव के दर्शन को लगे। श्रीगोविन्द की माधुरी निरखकर मन पुलकित हो गया। सेवा अभिलाषा राजा को बतायी।।१०।।

तुष्ट हञा राजा तारा सेवा समर्पिल।
द्वारे सेवकादि कार्ये नियुक्त हइल।।
प्रेमयोग अष्टकाल करये सेवन।
हेनमते कतकाल करिल यापन।।
राजान्न भक्षणे चित्ते विकार जन्मिल।
निवारणे उपाय चिन्ति ब्रजधामे एल।।११।।

भावसार– सन्तुष्ट होकर राजा ने उनको सेवा समर्पित की। द्वार में सेवक नियुक्त हुये प्रेमपूर्वक अष्टप्रहर सेवा करते रहे। इसप्रकार कुछ समय व्यतीत किया। राजा के अन्न ग्रहण से चित्त में विकार उत्पन्न हुआ। उसका निवारण का उपाय सोचने के लिये ब्रजधाम में चले आये।।११।।

श्रील प्राणकृष्णदास बाबाजी का सूचक कीर्तन

त्रिपुरा जेलाते नाम, ताहे भवानीपुर ग्राम,
पुण्यभूमि विधि निरमल।
देवशर्मा महावंश, माने गुणे घुये यश,

सेइ वंशे प्रभु जनमिल।।
दीनानाथेर नन्दन, रेवतीर प्राणधन,
प्रभु मोर परानेर परान।
शुभ राशि शुभ लगन, चारिदिक धन्य धन्य,
कैल सेइ काले आगमन।।
शुभ वैशाखी धर्ममास, ताहे पूर्णिमा प्रकाश,
आनन्द सर्व देहे प्रकाशिल।
वैशाखी पूर्णिमा तिथि, सबे धर्मी कर्मी व्रती,
प्रभु मोर परकाश हैल।।
हेरि पुत्र चाँद मुख, पिता माता महासुख,
सदा येन नयनेर मनि।
बाल्य खेला परिपाटी, नाहि मने कुटिनाटी,
शान्त दान्त शक्तिवन्त गणि।।
क्रमे क्रमे वयः क्रम, करे विद्या अध्ययन,
हेरि सुखी सर्व देशवासी।
एइ रूपे काल याय, दशदिक सुखीताय,
देवे माता हैल स्वर्ग वासी।।
होये मातृधन हारा, ताहे पितृ आँखि तारा,
भ्राता भग्नी सहित विलास।
दैवे ब्रजमायीर आगमन, गिरिधारी दरशन,
हैल गुप्तभाव परकास।।
सदा उचाटन मन, केमने पाइ दरशन,
सेइ भावे मग्न अनुक्षण।
सदा गौर गुणगान, आन द्रव्य नाहि मन,
सदा करे इष्ट पद ध्यान।।
कि करिव कोथा याव, कारे दुःख जानाइव,
केवा मिलाइवे प्राणधन।

सदा उदासीन मन, त्यजि आत्म परिजन,
नवद्वीपे कैला आगमन।।
विधि बड कृपावन, मिलाइल गुरुधन,
प्रभुपाद हेन महाजन।
प्रभुपादे करे स्नान, प्रभु परपारे यान,
दूर हैते पान दरशन।।
ताँरे करि दरशन, सुस्थ हैल प्राणमन,
एइ बूझि मोर हाराधन।
याँहारे आश्रय कैले, पारे याइ अवहैले,
काण्डारीर एवे दरशन।।
तीरे करि पदार्पण, करिलेन विलम्बन,
प्रभुपाद यावत ना आसे।
स्नान करि समापन, करिलेन आगमन,
प्रभु पडिलेन पद पाशे।।
अपरूप अंगकान्ति, अंगे तेजमय दीप्ति,
हेरि ताँरे पूछे धीरे धीरे।
किवा तव प्रयोजन, कोथा हैते आगमन,
परिचय पूछे वरे वारे।।
कहि आत्म परिचय, शेषे मन मत कय,
शुनि प्रभुपाद हृष्ट मन।
तवे ताँरे लये संगे, आसि निज गृहे रंगे,
माता पाशे करिला अर्पण।।
बड़ माता ताँरे देखि, सदा मने मने सुखी,
मन्त्र दाना देश प्रदानिल।
कहे हेन गुणनिधि, तोरे मिलाइल विधि,
ये करिवे तव मुखोज्ज्वल।।
महाजन चिन्ह युक्त, सदा अनुराग युक्त,

तेजमयी दीप्तिर प्रकाश।
सदा सेवा अभिलाष, नाहि भोगे कभु आश,
सदा आर्त्ति भावेर विकास।।
मातृ कृपादेश पेये, प्रभुपाद हृष्ट होये,
राधाकृष्ण मन्त्र दीक्षा दिल।
प्रभु दीक्षा मन्त्र पेये, बाह्यज्ञान शून्य होये,
काय मने आत्म समर्पिल।।
रहे प्रभुपाद पाशे, सदा सेवा अभिलाषे,
क्रमे नाना भावे प्रकाशय।
सेवा करे सर्वभावे, कभु द्विधा नाहि भावे,
सदा सेवा कार्ये व्रती रय।।
बड़ माता ताहा हेरि, मने द्विधा नाहि करि,
काय मने शक्ति समर्पय।
हेरि ताँर निष्ठाभक्ति, प्रभु पाद सर्वशक्ति,
महानन्दे तव समर्पय।।
नृत्य वाद्य गीत शिक्षा, बहुत भजन शिक्षा,
करिलेन प्रभुपाद स्थाने।
भक्तिशास्त्र अध्ययन, कैला पाण्डित्य अर्जन,
सदा वैसे आनन्दित मने।।
एइ रूप काल याय, अनुराग वृद्धि ताय,
निवेदये प्रभुपाद पाशे।
प्रभु अनुभूति मते, नवद्वीप धाम हैते,
भ्रमिलेन नाना तीर्थ देशे।।
भ्रमिते भ्रमिते शेष, गेला कृष्णलीला देशे,
उपनीत राधाकुण्ड तीरे।
गौरकिशोर महाराज, नित्यसिद्ध प्रेमराज,
वैसे सदा सेइ कुण्ड तीरे।।

सदा प्रेमानन्द मति, निगूढ़ भजने रति,
सदा महा विरक्ते उदार।
शिष्य कभु नाहि करे, गुप्त भावे वास करे,
सदा निष्ठा भक्तिर आधार।।
शुनि ताँर गुण सीमा, प्रभु दृढ़ प्राण मना,
उपनीत हैला तार पाशे।
ताँरे दरशन करि, काकुति मिनति करि,
निवेदये आपन अभिलाषे।।
महाराज नहे मति, प्रभुर अनन्य रति,
सदा ताँर सेवा व्रती रय।
सेवानन्दे सुखी रहे, महाराज सुखी ताहे,
सदा ताँर प्रेम निरखय।।
वारि झरे दुनयने, सुख दुःख नाहि गने,
सदा करे गौर गुणगान।
हेरि ताँर अनुराग, गौरकिशोर महाभाग,
शेषे वेष करिल प्रदान।।
प्रभु मोर वेष पेये, ना जानि कि धन पेये,
कभु हासे कभु नाचे गाय।
महाराजेर सेवा करे, कृपाशक्ति लाभ करे,
किछु काल तथा विहरय।।
पाछे ताँर मत लये, महा उदासीन होये,
करे पद व्रजे पर्यटन।
चारि धाम आदि तीर्थ, भ्रमे इह चरितार्थ,
सुख दुःख सम करि ज्ञान।।
कटितटे वर्हिवास, वैराग्येर परकास,
सदा प्रेमे टलमल प्राय।
कभु नृत्य गीत करे, कभु वा हुंकार करे,

कभु धीरे कभु द्रुत धाय।।
परिधाने छिन्न वास, सदा याँहा ताँहा वास,
कभु भक्षण कभु अनाहार।
कोरंग कौपीन लोये, छेडा काँथा गाये दिये,
करे मना नन्देते विहार।।
चले सदा भावावेशे, भ्रमि नाना तीर्थ देशे,
चलिलेन द्वारकार पथे।
कत नद नदी पाहाड़, बहुत जनपद पार,
पथ भुलि चलिल विपथे।।
एक संगे चारिजन, करि तीर्थ पर्यटन,
मरुभूमि देशेते पौंछिल।
क्लान्त देह परिश्रमे, मरुभूमि देशे भ्रमे,
तथा एक सिन्ध प्राप्ति हैल।।
दुइजन फिरि आसे, प्रभु चले प्रेमावेशे,
करे दुर्लन्ख्य पथेते गमन।
अति कष्टे पथ धाय, तृष्णाय आकुल प्राय,
पयाहि पाय कोन स्थान।।
सदा चारिभिते चाय, दैवेवृक्ष देखेताय,
विश्राम करिला ताँर मूले।
हेरये किञ्चित दूरे, रहे भाटपत्र पड़े,
गिया प्रभु सेई पत्र भुले।।
आच्छादने भाटपत्र, पय पूर्ण कुण्डतत्र,
चारिदिक बाँधा प्रस्तुरेते।
पाइ सुशीतल वारि, प्रभु स्नान पान करि,
देह क्लान्ति जुड़ाइल ताते।।
अपरान्ह तथा हैते, चलिलेन आनन्देते,
सदा मुखे गौर गुणगान।

तिन दिन अनाहार, सेइ स्थान हञा पार,
प्रवेशिला एक महावन।।
शरीर दुर्बल अति, सदा मृदु मन्द गति,
वन पथे करये गमन।
हेरये अनति दूरे, वसि एक योगीवरे,
करे वटवृक्ष मूले ध्यान।।
अपरुप अंग कान्ति, बिपिन झलक अति,
दरशने हरे मनप्राण।
अति दीर्घ जटा ताय, वृक्षमूल लग्न प्राय,
रहे दिवानिशि एकासन।।
हेरिया आश्चर्य प्राय, स्तुति नति करि ताय,
कर योडे रहे दाँड़ाइया।
ध्यान मग्न क्षण पड़े, प्रभु हेरि सुधीवरे,
मिष्ट भाष कहे सम्भाषिया।।
द्वादश वछरहेथा, मनुष्य ना हेरि कोथा,
कि रूपेते तुमि हेथा एले।
प्रभु कहे मिष्टभाषे, भ्रमि नाना तीर्थ देशे,
हलाम उपनीत ए स्थले।।
एवे क्लान्त तुमि अति, कूपे याओ दूत गति,
स्नान करि करह भोजन।
एत बलि योगीवर, ध्यान हैल तत्पर,
धेनु एक कैल आगमन।।
कामधेनु दाँड़ाइल, साधु पात्र पाति दिल,
दुग्धे पात्र हइल पूरण।
साधु कहे कर पान, मुंइ ना करिव पान,
सायान्हेते करिव ग्रहण।।
साधु अनुमति मते, दुग्ध पिये आनन्देते,

विश्राम करिल सेइ स्थले।
दुग्धपान करि प्रभु, क्लान्ति देहे नाहि कभु,
सर्व दुःख गेल दूरे चोले।।
अंग प्रफुल्लित अति, सदाई आनन्द मति,
जागे सदा सात्विक विकार।
कृष्णकथा आलापन, रजनी करि यापन,
तथा हैते हइला वाहिर।।
साधु पथ देखाइया, कहे एइ पथे धाया,
एवे तुमि करह गमन।
साधु उपदेश पेये, चले सेइ पथ धेये,
चिदानन्दे मग्न अनुक्षण।।
किछु दूर करि गमन, पश्चाते करे दरशन,
नाहि हेरे सेइ साधुजन।
कोथा सेइ वृक्षवर, कोथा सेइ योगीवर,
क्षण मध्ये हैला अन्तर्धान।।
अतीव आश्चर्य होये, चले वन पथे धेये,
पथे हेरे एक वाघ्रवर।
अति बड दीर्घकाय, महा भयंकर ताय,
विराजिछे पथेर ऊपर।।
सहसा हेरिया ताय, प्रभु चमकित काय,
निताई वलि करये हुंकार।
निताई नामेर ध्वनि, शुनिया प्रमाद गणि,
ऊर्ध्व श्वासे धाय व्याघ्रवर।।
नामेर महिमा हेरि, प्रभु चिदानन्दे पुरी,
निर्विघ्नेते वन पथे धाय।
वन पथ क्षणकाले, पार हइ अवहेले,
दूर होते हेरे लोकालय।।

हेरि दीर्घ माठ खानि, मनेते आनन्द गनि,
ग्राम पथे गमन करय।
कियत वसति ताहा, एक साधु वैसे याहा,
ताँर सर्वलोके गुण गाय।।
ग्रामेर आनति दूरे, वैसे सदा प्रेमभरे,
उपनीत हैल सेइ खाने।
सारा दिन धामे वसि, सायान्ह वाहिरे आसि,
प्रवेशिल गहन कानने।।
प्रभु दण्डवत कैल, साधु किछु ना कहिल,
उपनीत क्षणकाल परे।
बहुत मिनति करि, प्रभु कहे दैन्य करि,
कृपादृष्टि करह आमारे।।
साधु कहे कृपा चाओ, एइ कूपे झाँप दाओ,
शुनि प्रभु झाँपाइया पडिल।
कूपेते पड़िला प्रभु, शून्य मार्गे सेइ वपु,
साधुवर तुलिया आनिल।।
तारपर साधुवर, याइ गुहार भितर,
प्रभुसह तथाइ वसिल।
वन होते आनिल याहा, से कन्द वानाइल ताँहा,
प्रभुके खाइते तवे दिल।।
प्रभु सेइ कन्द खेये, सदा रहे मत्त प्राये,
क्षुधा तृष्णा नाहि सप्तदिन।
कृष्णकथा आलापन, रजनी करि यापन,
प्रातःकाले करिला गमन।।
साधु कहे किछु दूरे, श्रीमन्दिर विराज करे,
एइ पथे करह गमन।
प्रभु सेइ पथ धरि, चलि याय धीरे धीरे,

पथे एक विप्रेर मिलन।।
विनये पूँछये तारे, श्रीमन्दिर कत दूरे,
शुनि विप्र कहे प्रीति भरे।
हेर श्रीमन्दिर ऐ, नाडु प्रसाद लाओ ए,
पूजा करि मुंइ श्रीमन्दिरे।।
प्रभुर प्रसाद पाइ, प्रभु आनन्दित हइ,
भक्ति भरे करिला ग्रहण।
प्रसादेरर सुगन्धेते, मन प्राण हेर ताते,
नाना भाव स्फुरे अनुक्षण।।
किछु दुर करि गमन, पश्चाते करे दरशन,
विप्रवरे देखिते ना पाय।
श्रीमन्दिरे करि गमन, प्रभुर करि दरशन,
विप्रवरे खूँजि नाहि पाय।।
सविस्मय हैलमन, चित्ते भावे अनुक्षण,
पेये धन हारान मायाय।
ए रूप कृष्ण कृपादान, प्रभु पाइ स्थानास्थान,
महानन्दे तीर्थ पर्यटय।।
आस्वादये प्रेमरस, नहे आन रस वस,
उपनीत पुनः कुण्ड देशे।
राधाकुण्ड तटे गिये, निर्जन कुटीर पेये,
सुखे किछुदिन ताँहा वेशे।।
सर्वभक्ष्य त्याग करि, पत्रादि भक्षण करि,
पंच बछर करेन भजन।
अष्टकाल लीला स्मरे, सदा नाम जप करे,
भजनानन्दे मग्न अनुक्षण।।
तथा हैते उठि शेषे, सदा प्रेमोन्मत्त वेशे,
कुञ्जे कुञ्जे विहार करय।

चिन्मय वृन्दावन धाम, नित्य कृष्णलीलाग्राम,
एके एके सब विहरय।।
याँहा याँहा विहरय, ताँहा आर्त्त स्वरे कय,
कोथा प्रभु दाओ दरशन।
प्रकटे करेछे लीला, आजिओ करिछ खेला,
सेई लीला कराओ दर्शन।।
सदा ताँर प्रेम चेष्टा, महा दैन्य पराकाष्ठा,
दिवानिशि झुरे दुनयन।
भ्रमिते भ्रमिते आसि, वृन्दावने माझे वसि,
कृपासिन्धु सहित मिलन।।
कृपासिन्धु महाराज, परम रसिक राज,
एवं रसिक रसिके मिलन।
रसिके रसिके पेये, प्रेमरस आस्वादये,
दुहुँ प्रेमरसे निगमन।।
एइ प्रेम लीला कथा, शुनि प्रभुपाद तथा,
अविलम्ब उपमीत छैल।
प्रभुपाद तथा आसि, ताँरे योग्यपात्र वासि,
निभृते किछु उपदेश कैल।।
मने द्विधा नाहि कर, मोर आज्ञा शिरे धर,
त्वरिते चलह बंगदेश।
रंगदेश माछे गिया, नामप्रेम विलाइया,
उद्धार करह सर्वदेश।।
धन करि उपार्जन, नाहि देय दीनजन,
त्राहा हय कृपणेर कर्म।
नित्य प्रेमञ्चल खाओ, आनजने नाहि दाओ,
इहा तव नहे भाल कर्म।।
येवा हय सुधीजन, अन्ये कराइ भोजन,

भोजन करये मन सुखे।
केह वा करे आचार, केह वा करे प्रचार,
आचरि प्रचार तुमि सुखे।।
आदेशिला गौरहरि, विलाओ प्रेम जगभरि,
निजे खाओ दाओ सर्वजने।
सेई प्रेम धने धनि, तुमि सर्व गुणमनि,
जीवे प्रेम विलाओ सर्वक्षणे।।
मम कृपाशीष वले, आचरिया प्रचारिले,
अवहेले तारिवे सर्वदेश।
गुरु आज्ञा शिरे धरि, मनप्राण दृढ़ करि,
तवे चलिलेन बंगदेश।।
तवे प्रभुपाद संगे, विहारिया नाना रंगे,
संकीर्तन प्रचार करिया।
पाषण्डी तार्किक गणे, माताइया गौर गुणे,
भक्तगृहे भ्रमण करिया।।
भागवत व्याख्या करि, भक्तगणे मुग्धकरि,
हरिला सवार प्राण मन।
आपने कान्दिया भावे, काँदाइया जगजीवे,
महानन्दे सदा निगमन।।
माया मुग्ध जीवगण, नहे भक्तिपथे मन,
विपथेते धाय सर्वक्षणे।
केह वा करे याजन, करे नाना भ्रष्टाचरण,
भक्ति पथेर संधान ना जाने।।
प्रभु निज शक्ति बले, भक्ति पथे लञा धूले,
करार शुद्ध भक्तिर शिक्षण।
भ्रष्टाचार कारीगणे, भक्ति कराइ आचरणे,
प्रेमनीरे करेन क्षेपण।।

पुनः आसि वृन्दावने, लोकनाथ प्रभु स्थाने,
रहिलेन कतेक दिवस।
श्रीराधाविनोद देखि, सदाये जुडाय आँखि,
हइलेन तवे ताँर वश।।
गोकुलानन्द घेरा याइ, भेटनामा घर लइ,
नीलू भक्तादि सहित विहरे।
किछु दिन करे वास, सदा स्फुरे नानाभाव,
सुखे भासे गौर प्रेमनीरे।।
तवे उठि तथा हैते, गोपेश्वर मौहल्लाते,
भक्तिकुञ्ज करिला प्रकाश।
कभु वैसे वृन्दावने, कभु भ्रमे नानास्थाने,
सदा करे कीर्तन विलास।।
सदा करे पाठगान, भ्रमे सुखे नानास्थान,
अयाचित करे प्रेमदान।
स्त्री शूद्र आर ब्राह्मणादि, उच्च नीच वर्ण आदि,
समभावे सबाय करे दान।।
यशोहर खुलनादि, नोयाखालि त्रिपुरादि,
ढ़ाका चट्टग्राम आदि स्थान।
पश्चिम बंग स्थानास्थान, करिलेन प्रेमदान,
सबे प्रेमनीरे भासमान।।
पाठ गाने माताइया, नामप्रेम प्रचारिया,
प्रेमानन्दे सदाइ विहरे।
निताई गौर गुणगान, सदा ताहो भासमान,
निताई बलि हुंकार ये करे।।
अकातर करे दान, गुरु वले वलीयान,
पुनः वृन्दावन विहरय।
पाथरपुरा माझे गिये, भक्ति मन्दिर प्रकाशिये,

मदन गोपाल सेवा प्रकाशय।।
प्रति वछर श्रीमन्दिरे, महा महोत्सव करे,
झूलन यात्रा समाधाने।
चौषट्टि महान्त भोग, आनि नाना उपभोग,
करिया वैष्णव आमन्त्रणे।।
महोत्सव समाधाने, विनोद वसाइ सिंहासने,
चक्रवेदी परिक्रमा करे।
तदग्रे नृत्य वाद्यगीत, कैलेन याहा प्रेमरीत,
प्रेमसुखे विहार ये करे।।
आसये वैष्णवगण, करे नाम संकीर्तन,
भोजन करये मन सुखे।
वैष्णवे करिया सेवा, दैन्य वाक्ये तुषि सेवा,
प्रभु मोर भासे प्रेमसुखे।।
तथा हैते गौड़देशे, भ्रमे सदा भावावेशे,
कुमार हट्टे हैला उपनीत।
ताहा एक पुण्यधाम, गौरांगेर गुरुधाम,
चैतन्यडोवा नामेते विदित।।
ईश्वर पुरीर स्थान, मम जीवन धन प्राण,
बलि यारे गौर स्तुति कैल।
लुप्त सेइ तीर्थ स्थान, शुनि व्याकुलित प्राण,
तथा आसि दरशन कैल।।
अरण्ये आवृत स्थान, हेरि चिन्तान्वित प्राण,
केमने करि तीर्थ पुनरोद्धार।
स्थाने संकीर्तन काले, गौरेर निर्देश पेले,
ताहे दृढ़हैल मन ताँर।।
स्थानेर संस्कार तरे, कैला नाना समाहारे,
आप्राण प्रचेष्टा करिला।

उक्त स्थान क्रय करि, जंगलादि दूर करि,
श्रीमन्दिर स्थापन करिला।।
श्रीराधाविनोद सह, निताईगौर विग्रह,
स्थापन करिला श्रीमन्दिरे।
प्रेमसेवा प्रकाशिया, भक्त शिष्य संगेलया,
उत्सवादि करिला विस्तरे।।
सेवा परिपाटी देखि, सदाई जुड़ायि आँखि,
सदाई वैष्णव रति मति।
महोत्सव आयोजन, करि वैष्णव आमन्त्रण,
सेवये सदाई शुद्ध मति।।
फाल्गुन मासेर शेषे, कृष्णा तृतीया आसे,
सेई काले गौर आगन।
सेई शुभ तिथि योगे, महोत्सव आरम्भये,
परिज्ञात ताहे सर्वजन।।
किवा से कीर्तन लीला, शुनिया गलये शिला,
आबाल वृद्ध कान्दे सर्वजन।
किवा उद्दण्ड नृत्यगीत, शास्त्र पाठे नाना रीत,
शुनि द्रव सर्व प्राण मन।।
येवा शुनेछे कीर्तन, करेछे पाठ श्रवण,
हेरियाछे सेइ रूप खानि।
आजिओ नाहि भुले, मने जागे अवहेले,
सदा जागे सेइ रूप खानि।।
नृत्य गीत उत्सवेते, प्रभु रहे सदा मेते,
निज माते ऊपरे माताय।
उत्सवादि विलास, कैल यत मने आश,
यार शब्दे भुवन माताय।।
यत यत व्रत तिथि, आर महाजन तिथि,

निष्ठा योगे करेन यापन।
करे व्रत उपवास, सदा भक्त संगे वास,
अगनित उत्सव कीर्तन।।
ताँहार निष्ठार कथा, तुलना नाहिक कोथा,
श्रीगुरु चरणे रति मति।
गुरुदेव एक रोगे, ताहे बहुकाल युगे,
हेरि प्रभु हैला दुःख मति।।
प्रभु अति दैन्य करि, कहे ताँ पद धरि,
रोग मोरे करूण अर्पण।
आपनि हवेन दुःखी, मुंइ दास रोगसुखी,
रहा कभु ना हय शोभन।।
प्रभुपाद नाहि चाहे, प्रभु नाना मत कहे,
परिशेषे करिला अर्पण।
प्रभुपाद हैला मुक्त, प्रभु हैला रोग मुक्त,
आजीवन करिला वहन।।
सदा देहे रोग चिन्ह, किन्तु ताहा मन भिन्न,
सदा पाट गाने मत्त रय।
यवे नाचे संकीर्तने, यवे वैसे व्यासासने,
से कालेते रोग नाहि रय।।
गुरु भक्ति गुने वली, पाषण्डीर महाशूली,
प्रेमजले भाषाय सर्वजन।
भाषये पाषण्डी गण, करे नाम संकीर्तन,
महानन्दे मग्न अनुक्षण।।
नोया खालि माझारेते, हाजिरपुर निकटेते,
विश विद्या परिमित स्थान।
भूमि कर आच्छादन, उत्सवेर आयोजन,
चतुर्दिके करिला घोषण।।

अगणित लोक आसे, सबे महानन्दे भासे,
सदा नृत्य गीत कोलाहल।
असंख्य कीर्तन दल, आसितेछे अविरत,
यत आसे तत हय व्याल।।
यत आसे तत खाय, केह नाहि फिरि याय,
कत खाय के करे गमन।
षड दश शत जन, पाक करे अनुक्षण,
परिवेशे कत शत जन।।
टेहलिया कत शत, ताहा वा वलिय कत,
दिवानिशि करये भक्षण।
कीर्तनेर तीव्र ध्वनि, उठये भेदी भेदिनी,
नृत्य गीते घुलि सर्वस्थान।।
प्रभु देहे सप्तदिन, क्षुधा तृष्णा नाहि चिन,
विलसये रहि सर्वस्थान।
कभु नाचे संकीर्तने, कभु भक्त सम्भाषणे,
कभु पान पाक भोजन स्थान।।
कभु नृत्य गीत करे, हुंकार गर्जन करे,
कभु भूमे गड़ागडि याय।
धूलाय धूसर अंग, सर्वस्थाने करे रंग,
समाधि मगन कभु हय।।
क्षणकाल पडि रय, येन प्राण वहिरय,
लम्फ दिया उठे परक्षण।
नृत्य करे सर्व दले, गौर प्रेमे सबे गले,
सषे प्रेमे काँदे अनुक्षण।।
एइ रूप प्रेमलीला, करियाछे कत खेला,
ताहा कभु ना याय गणन।
आनन्दे मग्न सर्वदेश, प्रभु सदा भावावेश,

एइ रूप भ्रमे सर्वक्षण।।
आर एक लीला कथा, अपूर्व विभूति गाँथा,
ताहे आश्चर्य माने सर्वजन।
सचोक्षे हेरेछि याहा, अकपटे वर्णि ताहा,
ताहे दोष ना कर ग्रहण।।
फेणीर उत्तर दिशे, पाठांगर ग्रामे वैसे,
नवीन भक्त नामे एकजन।
प्रभुरे करि आमन्त्रण, करिलेन आनयन,
समादरे आपन भवन।।
पाठेर करि आयोजन, करिलेन निमन्त्रण,
चारिदिके पड़े गेल वर।
अगणित लोक आसे, पाठेर श्रवण आसे,
महानन्दे भासे आसि सब।।
एकदिन संध्याकाले, लोक आसे दले दले,
प्रभु पाठ करिले आरम्भन।
सहसा हेरये सबे, विद्युत खेलये दिसे,
अभावृत विशाल गगन।।
हेरिया प्रकृति भाव, चमकित हैया सब,
चिन्ते दाय खटिल एखन।
एदिकेते प्रभु मोर, वसि व्यासासन पर,
कृष्ण बाल्यलीला करेन पठन।।
सुमधुर कृष्णलीला, श्रवणे गलये शिला,
ताहे अति मधुर वर्णन।
ताहे मुग्ध प्राण मन, सबे भावे मने मन,
संकटेते ठेकिनु एखन।।
श्रवण त्यजिते नारि, दैवे लीला डर करि,
विघ्न येन ना हय एखन।

एके नाहि आच्छादन, केवलि एक आच्छादन,
व्यासासनोपरि शोभमान।।
भक्तगण मनजानि, प्रभु कहे मिष्ट वाणी,
कोन चिन्ता ना कर एखन।
निज कर्म करे देवे, निज कर्म कर सबे,
कृष्ण सदा करिवे रक्षण।।
इन्द्र निज कर्म करे, सेओ भक्त मान्य करे,
करिवे सब वासना पूरण।
एत वलि प्रभु मोरे, मौन रहि क्षण पर,
महानन्दे करेन पठन।।
प्रभुर निर्देश मते, पाठ शुने एक चिते,
बाह्य स्मृति सब विस्मरण।
एदिकेते मेघराज, वरषिछे धरा माझ,
केवलि छाड़िया सेइ स्थल।।
आर एक धन्य ग्राम, लाल गोला ख्यात नाम,
ताँहा एक कैल महोत्सव।
महोत्सव शेष करि, नगर वाहिर करि,
धन्य कैल ग्रामवासी सब।।
नगर कीर्तन लीला, याहा ताँहा प्रकाशिला,
आजि ताहा भूला नाहि याय।
से लीला देखेछे येइ, केवलि बूझेछे सेई,
वाक्ये ताहा वर्णना ना याय।।
अगणित नरनारी, काँदे बल गौरहरि,
सबे प्रेमे गडागड़ि याय।
पुष्प लाजे पथ पूर्ण, चतुर्दिके धन्य धन्य,
कभु हासे कभु नाचे गाय।।
एइ रूपे विहरर, सदाइ आनन्द मय,

पुनः हल वैराग्य उदय।
धातु पात्र नाहिलय, रज पात्रेते भृञ्जय,
भूमासने शयन करय।।
दिवानिशि जपे नाम, सदा करे पाठ गान,
सर्व जीवे आनन्दे भाषाय।
दैवे विधि विरम्वन, तेरश छिपान्न सन,
प्रभु मने येन किवा भाय।।
आरम्भिल महोत्सव, उठिल आनन्द रव,
सदानन्दे धाय सर्वजन।
आपन असुस्थ देहे, बहुत धृत्य गीत ताहे,
महोत्सव कैल समाधान।।
कुञ्ज भंग गान करि, नगर भ्रमण करि,
प्रभु भोग करि समाधान।
भक्त शिष्य यत जन, सवारे कराइ भोजन,
प्रभु मोर करिला शयन।।
एइ बुझि शेष शय्या, केह ना जाने ए इच्छा,
सवे चिन्ते बूझि किवा हल।
क्षणकाल ध्यान मग्न, उपनीत शुभलग्न,
येन बूझि किवा भाव हल।।
प्रभु बलेन तखन, आनह रेश्मि आसन,
एवे बिछाओ मम वृक्षो पर।
शरीर अवश प्राय, उठिते ना पारि ताय,
आनगुरु चित्रपट मोर।।
चित्रपट आनि यवे, वसाइल पक्षे सवे
पूजा ताँर करिल तखन।
कहेन कातर स्वरे, शेष पूजा संगे मोरे,
आज साथ कर महाजने।।

तखन इंगिते कहे, आन पंचतत्त्व ओहे,
एवे करि शेष पूजार्पण।
पंचतत्त्व बसाल यवे, पूजार्पण कैल तवे,
कैल मरम वेदना ज्ञापन।।
श्रीराधाविनोद शेषे, वासाइया वक्ष देशे,
कहे शेष पूजा लह मोर।
तखन इंगिते कहे, विग्रह सराओ ओहे,
बलि ध्यान मग्न प्रभु मोर।।
विग्रह सरान हैल, प्रभु लीला सम्वरिल,
सर्वादिक हैल अन्धकार।
सबे शोकाकुल मन, हाहुताश घने घन,
सबे डाके कोथा प्रभु मोर।।
आषाढ मासेर अन्ते, शुक्ला चतुर्दशी रात्रे,
चतुर्थ प्रहर उपनीत हैल।
कोथा गेल आनन्द रव, शोकाकुल आजि सब,
आनन्दे विधि चलि गेल।।
प्रभु मोर प्राणकृष्ण, यार गुणे विश्व तृष्ण,
एवे सेइ प्रभु पलाइल।
गुरु वाक्य शिरे धरि, गुरु कार्य पूर्ण करि,
प्रभु मोर अन्तर्हित हैल।।
प्रभु मोर गुरुपद, येंह प्राण सम्पद,
ताँर कृपाय ए तत्त्व स्फुरण।
तेंह मोरे कृपा करे, श्रीमुखे आदेश करे,
ए सकल करिल वर्णन।।
आदेशिया लिखाइल, श्रीमुखे श्रवण कैल,
मार्जित करिल सब कथा।
श्रीगुरु महिमा कत, श्रीमुखे कहिल यत,

ताँर कृपाय लिखि एइ गाँथा।।
'किशोरी' अधममति, नाहि जाने रीति नीति,
श्रीगुरु प्रसादे सब लिखि।
प्राणकृष्ण प्राणधन, कर मोरे निजजन,
गुरुपद संगे येन सेवि।।

श्रील प्राणकृष्णदास बाबाजी– श्रीगुरुपद दास बाबाजी के गुरुदेव और किशोरीदास बाबाजी के परम गुरुदेव हैं।

श्रील गुरुपद दास बाबाजी महाराज सूचक कीर्तन

जय जय श्रीगुरु, प्रेम कल्पतरु,
पतित पावन गुणधाम।
प्रभु मोर गुरुपद, अधीनेर सम्पद,
अयाचके करे प्रेमदान।।
नोयाखाली पुण्य स्थान, ताहारे करियाधाम,
वैशाखी पूर्णिमाय आविर्भूत।
कैशोरेते गृह छाड़ि, गुरु पदाश्रय करि,
श्रीगुरु वैष्णव अनुरत।।
गुरु प्राणकृष्णदास, ताँर पदे सदा आश,
कायमने करिल सेवन।
वृन्दावने कैल वास, गौर पदे सदा आश,
दिवानिशि भजने मगन।।
पाछे पांजावेते गेल, कतदिन तथा रैल,
तवे वृन्दावन आगमन।
शुनि गुरु अन्तर्धान, विरह व्यथित प्राण,

उचाटन हैल प्राणमन।।
जगन्नाथ दर्शन आसे, आसिलेन गौड़ देशे,
गुरु पाट करिल दर्शन।
ईश्वर पुरीर स्थान, गौरांगेर गुरुधाम,
हेरि हैल पुलक मगन।।
गुरुपाटेर दशा हेरि, हइल व्यथित मति,
जगन्नाथ दर्शने गमन।
फिरि कुमार हट्टे एल, सबे तार आकर्षिल,
तवे सेवा करिल ग्रहण।।
बहु घात प्रतिघाते, सेवा करि अविरते,
अत्यद्भुत भक्ति निष्ठा गुण।
भिक्षाइ सम्वल करि, सेवा करे दिवाराति,
आत्मसुख कभु नहे मन।।
श्रीपाट संस्कार लागि, हैल सदा अनुरागी,
कायमने करये यतन।
दीर्घ वत्रिश वर्ष गत, सेवा कैल अविरत,
सदा प्रेमानन्दे निमगन।।
श्रीगुरु चरणे रति, गौरपदे सदा मति,
ब्रजभावे साधन स्मरण।
गौरांग चरित गुणे, झुरे सदा दुनयने,
ताँर गुण नो याय वर्णन।।
तेंह मोर आकर्षिल, श्रीचरणे स्थान दिल,
अयाचित करिल करूणा।
शिखाइल भक्ति तत्त्व, करूणा करिल कत,
एक मुखे ना हय वर्णना।।
भक्तिशास्त्र प्रचारिते, उद्योगी करिल मोते,
उपदेशे करिल प्रादन।

गौरांग पार्शद गुणे, मत्त सदा रात्रिदिने,
आज्ञा दिल कर गुणगान।।
उपदेश कैल कत, सहाय करे अविरत,
करूणार सीमा नाहि ताँर।
सेई प्रभु गुरुपद, महिमा कहिव कत,
किशोरी तारण नाम याँर।।
आश्विनी कृष्णा चतुर्थी, देवे एल सेई तिथि,
विधि सेइ निधि हरिनिल।
भाग्यहीन 'किशोरीदास', सदा करे हाहुताश,
हेन धन पेये हाराइल।।

नोट– श्रील गुरुपद दास बाबाजी, श्रील किशोरीदास बाबाजी के गुरुदेव हैं। श्रीचैतन्यडोवा, हालिशहर।

२९. श्रीहाड़ाई पण्डित

एकचक्रा

जय शचीनन्दन जय विश्वम्भर।
जय जय नित्यानन्द जय महीधर।।
जय जय श्रीअद्वैत जय गदाधर।
जय जय श्रीवासादि गौर परिकर।।
प्रभु नित्यानन्द पिता हाड़ाई पण्डित।
एकचक्रावासी विप्र अद्भुत चरित।।
श्रीमुकुन्द ओझा आर हाड़ाई पण्डित।
एइ दुई नामे तेंह जगते विदित।।१।।

भावसार– श्रीविश्वम्भर शचीनन्दन की जय हो! महीधर श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्रीअद्वैतप्रभु व गदाधर की जय हो! श्रीवास आदि गौरभक्तवृन्द की जय हो!

एकचक्रा धाम वासी श्रीहाड़ाई पण्डित श्रीनित्यानन्द प्रभु के पिता हैं। वे श्रीमुकुन्द ओझा के नाम से भी प्रसिद्ध थे।।१।।

तथाहि– श्रीगौरगणोद्देशदीपिका ४० श्लोक

रोहिणी वसुदेवौ यौ पितरौ रामकृष्णयोः।
पद्मावती मुकुन्दौ तौ सन्तौ जान्तौ द्विजोत्तमौ।
श्रीसुमित्रा दशरथौ तावप्यविशतामभु।।

वसुदेव रोहिणी हाड़ाई पद्मावती।
सुमित्रा दशरथ आसि मिलिलेन तथि।।
दुँहुँ दुँहुँ मिलनेते हाड़ाई पद्मावती।
आर पुत्र नित्यानन्द अगतिर गति।।
राढ़देशे एकचाक्रा नामे पुण्य ग्राम।
ताहें सुन्दरामल ओझा विप्र गुणधाम।।२।।

भावसार– द्वापरयुग में जो श्रीवसुदेवजी व श्रीरोहिणी–जी हैं वे ही कलियुग में श्रीहाड़ाई पण्डित व श्रीपद्मावती देवी के रूप में प्रकट हुये हैं। श्रीदशरथजी व श्रीसुमित्रा भी इनमें मिलित हुये हैं। राढ़देश में एकचक्रा नाम पावन स्थान है, जहाँ श्रीसुन्दरामल ओझा निवास करते हैं।।२।।

अति अर्थवन्त ओझा धार्मिक प्रधान।
पूर्व ऋषि प्राय क्रिया करे अनुष्ठान।।
बहु पुत्र जनमिया परलोके गेल।
शेषे शुभक्षणे एक पुत्र जनमिल।।
हरिष विषादे पुत्रे करि दरशन।
पार्वती शंकर पदे कैल समर्पण।।३।।

भावसार– वे अति धनवान व धार्मिक प्रधान थे। पूर्व ऋषियों की भाँति अनुष्ठान करते थे। कई पुत्रों के जन्म देने के पश्चात् परलोक सिधार गये। अन्त में शुभक्षण में

एक पुत्र का जन्म हुआ। हर्ष-विषाद में पुत्र का दर्शन कर श्रीपार्वती शंकर के चरणों में समर्पित किया।।३।।

पत्नीसह ओझा तवे हञा खोद मन।
पुत्र नाम हाडो राखे करिया चिन्तन।।
परम यतने करे लालन पालन।
सर्व गुणवान पुत्र धार्मिक सुजन।।
पद्मावती नाम कन्या जगत जननी।
विवाह दिलेन पुत्र महाभाग्य मानि।।४।।

भावसार- पत्नी के साथ ओझा के मन में खेद मन हुआ। पुत्र का नाम हाड़ो (हाड़ाई) रखा। परम यत्न से उसका लालन-पालन किया। पुत्र सर्वगुणवान और धार्मिक है। उनका पद्मावती नाम कन्या के साथ विवाह कर दिया।।४।।

पद्मा सह हाड़ो करे धर्म उपार्जन।
काय मने सेवे सदा विष्णुर चरण।।
विष्णु वैष्णवे दोंहार सदा रति मति।
वैष्णव सेवने सदा प्रेमानन्द अति।।
याँहार भक्तिर वश हञा संकर्षण।
पुरुरूपे ताँर गृहे लभिल जनम।।५।।

भावसार- दोनों धर्म उपार्जन करने लगे और श्रीहरि के चरण में काय मन से प्रीति करते। विष्णु-वैष्णव के प्रति रति मति थी और प्रेमानन्द पूर्वक वैष्णवों की सेवा करते। जिनकी भक्ति के वश होकर संकर्षण आकर्षित हुये और पुत्र रूप में जन्म लिया।।५।।

ज्येष्ठे सुत नित्यानन्द नित्यानन्द धाम।
सुते हेरि हाड़ो ओझा नहे बाह्य ज्ञान।।
दिवानिशि निताइ येन नयनेर मणि।

समीपे राखये सदा महाभाग्य मानि।।
हाडो ओझा पुत्र मुख करि निरीक्षण।
आनन्द सागर माझे भासे अनुक्षण।।६।।

भावसार– ज्येष्ठ पुत्र श्रीनित्यानन्द हुये जो नित्य आनन्द के धाम हैं। नित्यानन्द (निताई) माता–पिता के नयनों की मणि हैं। सदा उनको अपने समीप रखकर स्वयं को महाभाग्यशाली मानते। हाड़ाई पण्डित पुत्र का मुख निरखकर आनन्द सागर में अनुक्षण निमग्न रहते।।६।।

कभु शस्य क्षेत्रे कभु यजमाने याय।
निताई चाँदेरे संगे राखये सदाय।।
हाटे घाटे माठे यथा करये गमन।
नयनेर मणि निताई संगे अनुक्षण।।
क्षण पथ चले ओझा करये चुम्बन।
निताईर श्रीमुख हेरि जुड़ाय नयन।।७।।

भावसार– कभी कृषि, कभी यजमान गृह में जाते, वे अपने साथ निताई को ही ले जाते। बाजार, घाट, मठ जहाँ भी जाते अपने नयनों की मणि निताई को अवश्य साथ ले जाते। थोड़ी देर चलकर निताई का मुख चुम्बन करते और उनके मुख निरख कर नयन तृप्त करते।।७।।

हेन भावे विभोर सदा हाडो ओझा मन।
क्षण अदर्शने हन व्याकुलित मन।।
ए हेन वात्सल्य वद्ध प्रभु नित्यानन्द।
हाड़ाई भवने रहे पेये सेवानन्द।।
संसार छाड़िते यद्यपि प्रभुर मन।
पितृ दुःख लागि नारे छाड़िते भवन।।८।।

भावसार– इसप्रकार हाड़ाई पण्डित का मन भाव विभोर होता रहता। एकक्षण भी निताई ओझल होते तो

व्याकुल हो जाते। ऐसा उनका वात्सल्य प्रेम था। श्रीनिताईचाँद ऐसा सेवानन्द व प्रेम प्राप्त कर रहे थे। निताईचाँद गृहत्याग करना चाहते थे किन्तु पिता के दुःख के कारण घर नहीं छोड़ा।।८।।

पतितेर त्राण लागि याँर आगमन।
से प्रभु रहिते नारे उचाटन मन।।
दैवे संन्यासीर एक हैल मन।
ईश्वरपुरी नाम ताँर ख्यात सर्वजन।।
इंगित पाइया हृदे कैल आगमन।
न्यासीरे हेरिया ओझा कैल सम्भाषण।।९।।

भावसार- पतितों के उद्धार के लिये जिनका आगमन हुआ है। उन्हीं प्रभु का मन उच्चाटन हो रहा है। दैवयोग से एक विख्यात संन्यासी श्रीईश्वरपुरी का आगमन हुआ। उनके साथ श्रीहाड़ाई ओझा का सम्भाषण हुआ।।९।।

परम यतने करे न्यासीर सेवन।
ताहार सेवाय तुष्ट संन्यासीर मन।।
सारानिशि कृष्णकथा रंगे काटाइल।
प्राते हाड़ो ओझा प्रति कहिते लागिल।।
न्यासी कहे एक भिक्षा आछये आमार।
ओझा कहे आज्ञा कर ये इच्छा तोमार।।१०।।

भावसार- परम यत्नपूर्वक संन्यासी की सेवा की। उनकी सेवा से संन्यासी सन्तुष्ट हुये। सम्पूर्ण रात्रि कृष्ण कथा चर्चा में व्यतीत की। प्रातः होते ही श्रीहाड़ाई पण्डित से कहने लगे। मैं एक भिक्षा चाहता हूँ। ओझा ने कहा- जो तुम्हारी इच्छा है, आज्ञा करो।।१०।।

न्यासी कहे करि मुंइ तीर्थ पर्यटन।
संहति नाहिक मोर सुयोग्य ब्राह्मण।।

तव ज्येष्ठ सुते मोर करह अर्पण।
प्राण सम करि संगे राखिव अनुक्षण।।
न्यासी मुखे हेन वाक्य करिया श्रवण।
ओझा शिरे वज्र येन हइल पतन।।११।।

भावसार- संन्यासी ने कहा- मैं तीर्थ पर्यटन करना चाहता हूँ। मुझे अपने साथ एक सुयोग्य ब्राह्मण चाहिये। अपने ज्येष्ठ पुत्र को मुझे अर्पण कीजिये। मैं उसे प्राण सम मानकर रखूँगा। संन्यासी के मुख से वाक्य सुनकर ओझा के सिर पर वज्रपात हो गया।।११।।

प्राण सम हय मोर ज्येष्ठ नन्दन।
न्यासी करे कोन मते करिव अर्पण।।
विह्वल हइया ओझा करये चिन्तन।
सर्वनाश हय यदि ना करि अर्पण।।१२।।

भावसार- मेरा ज्येष्ठ पुत्र मुझे प्राणों के समान प्रिय है। मैं किस प्रकार उसे समर्पित करूँ? विह्वल होकर ओझा सोचने लगे- यदि अर्पण नहीं करूँगा तो सर्वनाश हो जायेगा।।१२।।

तथाहि-

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात् प्रति निवर्त्तते।
स तस्मै दुष्कृतं दत्वा पुण्य मादाय गच्छति।।

अतिथि विमुख हय याहार भवन।
दुष्कृति अर्पिया करे सुकृति ग्रहण।।
पूर्वे महापुरुषगण भिक्षुकेर स्थाने।
प्राणदान दियाछेन करिया यतने।।
पूर्वे विश्वामित्र वाक्ये दशरथ राजन।
प्राणसम रामचन्द्र करिल अर्पण।।१३।।

भावसार– जिसके घर से अतिथि विमुख हो जाता है। दुष्कृति अर्पित कर सुकृति ग्रहण कर लेता है। पूर्व महापुरुषों ने अतिथि को प्राणदान तक दे दिये हैं। पूर्व में श्रीदशरथजी ने श्रीविश्वामित्रजी को अपने प्राणसम राम को अर्पित कर दिया था।।१३।।

अतिथि सेवन लागि कर्ण महामति।
कराते छेदिल पुत्रे हञा हर्ष मति।।
ए हेन दुर्दैव मोर भग्येते घटिल।
संकटे रक्षह कृष्ण स्मरण लइल।।
एतेक चिन्तिया ओझा पत्नी पाशे एल।
निदारूण वाक्य सब कहिते लागिल।।१४।।

भावसार– अतिथि सेवा के लिये महाविद्वान् कर्ण ने हर्षपूर्वक पुत्र छेदन कर दिया था। यह दुर्दैव मेरे भाग्य में घटा है। संकट रक्षक कृष्ण का स्मरण करूँ। यह सोचकर हाड़ाई पत्नी के पास गये और सब प्रसंग सुनाया।।१४।।

ना जानि विधि किवा कैल विडम्बन।
नित्यानन्दे न्यासीवर करिल प्रार्थन।।
अमूल्य रतने विधि करिया अर्पण।
न्यासी द्वारे शेषे मोरे करिल वञ्चन।।
विरह विक्षेपे ओझा कहे पत्नी स्थाने।
शुनि पद्मावती कहे विनय वचने।।१५।।

भावसार– न जाने विधाता ने क्या विडम्बना की है। संन्यासी ने नित्यानन्द को ले जाने की प्रार्थना की है। अमूल्य रत्न धन को संन्यासी को अर्पण करूँ। यह सुनकर पद्मावती बोलीं।।१५।।

तव इच्छा अनुरूप मोर मति हय।
असंकोचे कर मोहा उचित या हय।।

एतेक कहिल यदि पद्मा जगन्माता।
न्यासी स्थाने चलिलेन ओझा जगत्पिता।।
ज्येष्ठ पुत्र नित्यानन्दे करिया धारण।
सविनये न्यासी करे करिल अर्पण।।१६।।

भावसार– तुम्हारी इच के अनुरूप ही मेरी इच्छा है मोह उचित नहीं है। ऐसा कहकर पद्मावती माता व हाड़ाई पण्डित संन्यासी के पास आये। तत्पश्चात् विनयपूर्वक निताईचाँद संन्यासी को अर्पण किये।।१६।।

हेनमते नित्यानन्द छाड़िलेन घर।
भूमिते पडिया ओझा कातर अन्तर।।
हाडाई पद्मावती कान्दे निताई वलिया।
पिता माता वलि वाप डाकह आसिया।।
निताई निताई बलि छाड़े धन श्वास।
निताई अदर्शने सदा करे हा हुताश।।१७।।

भावसार– इसी प्रकार नित्यानन्दजी ने गृह त्याग किया। भूमि पर लुण्ठित होकर ओझा कातरपूर्वक माता–पिता रोने लगे। निताई–निताई कहकर आर्त्तनादर करने लगे और निताई के अदर्शन से व्याकुल हो गये।।१७।।

दोंहार क्रन्दने नाहि कान्दे कोन जन।
काष्ट औ पाषाण द्रवे शुनिया क्रन्दन।।
दशरथ दशा यैछे श्रीराम गमने।
तैछे हाड़ाइर दशा हेरे सर्वजने।।
आहार त्यजिया दोंहे हइल विमन।
निताई विच्छेदे हैल पागल येमन।।१८।।

भावसार– दोंनो के क्रन्दन से काष्ठ व पाषाण भी द्रवित हो जाते हैं। जैसी रामजी के वियोग में दशरथजी की दशा हो गई। वैसी ही हाड़ाई पण्डित की दशा हो गई।

आहार त्याग दिया और निताई के वियोग में पागल हो गये।।१८।।

भावेर आवेशे ओझा नाना कथा कय।
किवा वायु हैल वलि बाह्य पाञा कय।।
कभु वा पत्नीरे डाकि बलये वचन।
निताई आइल घरे करह दर्शन।।
दयार सागर न्यासी करिल प्रेरण।
एमत प्रलाप ओझा करे अनुक्षण।।१९।।

भावसार- भावके आवेग में ओझा नाना बात कहने लगे। बाहर के लोग वायुरोग कहने लगे। कभी पद्मावती देवी से कहने लगे- "निताई घर आ गया है, देखो। दयासागर निताई संन्यासी ने प्रेरणा की है।" इसप्रकार प्रलाप करते हैं।।१९।।

तिनमास अनाहारे रहे दुँहु जन।
चैतन्य प्रभावे मात्र रहये जीवन।।
बहुत प्रबोधेर लोके प्रबोध ना माने।
पागल हइल ओझा सर्वलोके गणे।।
श्रीकृष्ण विरहे येछे नन्द यशोमती।
हाड़ाई पद्मावती एवे हइल तेमति।।२०।।

भावसार- दोनों जन तीन मास तक आहार त्यागकर रहे। केवल चैतन्यदेव के प्रभाव से यह जीवन बचा रहा। लोग बहुत समझाते लेकिन उन धैर्य ही नहीं होता। सब बोले- हाड़ाई पण्डित पागल हो गये हैं। श्रीकृष्ण विरह में श्रीनन्द-यशोदा की जो दशा हुई वैसी ही दशा हाड़ाई-पद्मावती की हो गयी है।।२०।।

हाटे माठे यजमाने ओझा यवे याय।
भावये निताई मोर संगेते बेडाय।।

उलटि चाहये यवे ना करे दर्शन।
भूमिते पड़िया प्रेमे करये क्रन्दन।।
वात्सल्य प्रेमेर वशे ओझा महामति।
निताई विरहे रहे सदा दुःखमति।।२१।।

भावसार– बाजार, मठ, यजमान में जब यजमान जाते थे, तब सोचते कि निताई मेरे संग में ही हैं। फिर पीछे मुड़कर देखने पर उन्हें नहीं देख पाते। तब भूमि पर गिरकर प्रेम में विह्वल हो क्रन्दन करने लग जाते। ओझा वात्सल्य प्रेम के वश में हो गये। निताई विरह में दुःखी रहते।।२१।।

ओझा सम भाग्यवान् के आछे संसारे।
ब्रह्मार वन्दित निताई सदा यार घरे।।
युगे युगे यारे करि पितृरूप ज्ञान।
महानन्दे पुराय यत ताँर मनस्काम।।
भक्तवत्सलर निताई भक्तगण प्राण।
भक्तवाञ्छा अनुरूप करे कृपादान।।२२।।

भावसार– ओझा के समान भाग्यवान कौन होगा? जिनके घर में ब्रह्मा के भी वन्दित श्रीनिताई का जन्म हुआ। युग-युग में जो पिता बने हैं महा आनन्द में उनकी मनोकामना पूर्ण हुई है। भक्तवत्सल निताई भक्तगण के प्राण हैं। भक्तवाञ्छा के अनुरूप वे कृपा करते हैं।।२२।।

भक्तवाञ्छा पुराइते प्रेम अवतार।
ओझार पुराय वाञ्छा धरि पुत्राकार।।
निताई विरहे यत ओझार क्रन्दन।
दुःख नहे वात्सल्य प्रेम आस्वादन।।
भक्त विरह दुःख सर्वश्रेष्ठ धन।
दिवानिशि वाञ्छा याहा करे सुधीजन।।२३।।

भावसार– भक्तवाञ्छा को पूर्ण करने के लिये ही उनका

अवतार हुआ है। ओझा की वाञ्छा को पुत्र बनकर पूर्ण किया है। निताई के विरह में ओझा का जो क्रन्दन है। वह दुःख नहीं है बल्कि वात्सल्य प्रेम का आस्वादन है। भक्त को विरह दुःख सर्वश्रेष्ठ धन के समान है, जिसे सुधीजन निरन्तर वाञ्छा करते हैं।।२३।।

परम रसिकराज हाड़ाई पण्डित।
अद्‌भुत महिमा ताँर जगते विदित।।
आत्मशुद्धि लागि किञ्चित् करिल कीर्तन।
अपराध क्षमा कर यत सुधीजन।।
नित्यानन्द पिता हाड़ो ओझा महामति।
याँहार स्मरणे घुचे अशेष दुर्गति।।२४।।

भावसार– श्रीहाड़ाई पण्डित परम रसिक राज हैं। उनकी अद्‌भुत महिमा जगत में विदित है। आत्मशुद्धि के लिये थोड़ा वर्णन किया है। सुधीजन अपराध क्षमा कीजिये। हाड़ाई पण्डित के स्मरण अशेष दुर्गति का निस्तार हो जाता है।।२४।।

याहार प्रेमेर वश प्रभु नित्यानन्द।
ताँहार करूणा बिना नहे प्रेमानन्द।।
ओहे हाडो ओझा कृपा करह आमारे।
तव सुत नित्यानन्देर दास कर मोरे।।
निताई प्रेम सेवा दिया करह करूणा।
'किशोरी'रे कृपा कर ना कर वञ्छना।।२५।।

भावसार– जिनके प्रेम के वश में प्रभु नित्यानन्द हैं। उनकी करूणा के बिना प्रेम आनन्द नहीं मिलता है। हे हाड़ाई पण्डित! मुझ पर कृपा कीजिये और मुझे अपने पुत्र नित्यानन्द का दास कीजिये। करूणा कर श्रीनिताई की प्रेम सेवा प्रदान कीजिये। 'किशोरीदास' पर कृपा कीजिये, वञ्चना मत कीजिये।।२५।।

३०. श्रीपद्मावती देवी

एकचक्रा

जय जय श्रीचैतन्य जय नित्यानन्द।
जय जय श्रीअद्वैत प्रेमानन्द कन्द।।
जय जय गदाधर माधव नन्दन।
जय जय श्रीवासादि गौरांगेर गण।।
जगद्गुरु नित्यानन्द नित्यानन्द राम।
ताँर माता पद्मावती ख्यात सर्वस्थान।।१।।

भावसार- श्रीश्रीनित्यानन्द-चैतन्यदेव की जय हो! प्रेमानन्दकन्द श्रीअद्वैतप्रभु की जय हो! माधवनन्दन श्रीगदाधर पण्डित की जय हो! श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द की जय हो! जगद्गुरु नित्यानन्द नित्य आनन्द स्वरूप हैं जिनकी माता जग विख्यात श्रीपद्मावती देवी हैं।।१।।

ब्रजे नन्दालये येवा वसति करिल।
रामकृष्णेर प्रेमलीला नयने हेरिल।।
वसुदेव वणिता तेंह ख्यात सर्वजन।
कंस भये नन्दघरे रहे अनुक्षण।।
परम वात्सल्ये रामकृष्णेरे सेविल।
सेइ रोहिणी ऐवे अवनी आसिल।।२।।

भावसार- पूर्व में ब्रजलीला में श्रीनंद के गृह में विराजमाना थीं। श्रीकृष्ण-बलराम की लीला को नयनों से निहारा था, जो वसुदेवजी की पत्नी कंस भय से श्रीनन्दजी के गृह में रहती थीं और कृष्ण-बलराम का लालन-पालन करती थीं वे ही रोहिणीदेवी पृथ्वी पर पद्मावती देवी के रूप में आई हैं।।२।।

पूर्वभाव अनुरागे कैल आगमन।

कलि गोरा अवतारे जानि प्रयोजन।।
ब्रजेर रोहिणी ऐवे देवी पद्मावती।
बलराम माता बलि याँर पूर्व ख्याति।।
तवे सेइ बलराम प्रभु नित्यानन्द।
ताँर माता पद्मावती सदा प्रेमानन्द।।३।।

भावसार– पूर्व अनुराग से उनका आगमन हुआ है। कलियुग में कृष्ण गौर अवतार लिया है। तब श्रीबलरामजी की माता रोहिणी पद्मावती देवी के रूप में आयी। बलराम नित्यानन्द प्रभु के रूप में आये। उनकी माता पद्मावती सदा आनन्द मग्न रहतीं।।३।।

दशरथ वणिता श्रीलक्ष्मणेर माता।
सुमित्रा नामेते तेंह जगत विख्याता।।
रोहिणी सहित तेंह हइया मिलन।
पद्मावती नामे धराय लभिल जनम।।
हाडो ओझा सह ताँर विवाह हइल।
कतदिने नित्यानन्द पुत्ररूपे एल।।४।।

भावसार– दशरथजी की पत्नी सुमित्राजी लक्ष्मणजी की माता हैं। वे भी रोहिणीजी के साथ मिलित हुयीं और पद्मावती नाम से जन्म लिया। हाड़ाई पण्डित के साथ विवाह हुआ और नित्यानन्द के रूप में पुत्ररत्न की प्राप्ति की।।४।।

प्रभु नित्यानन्द यवे लभिल जनम।
हेरि पुत्र चाँद मुख प्रेमेते मगन।।
पूर्वभावे प्रेमे करे लालन पालन।
मायेर महिमा बूझे आछे कोन जन।।
याँर पुत्र नित्यानन्द नित्यानन्दमय।
ताँहार महिमा चारि वेदेते घोषय।।५।।

भावसार- प्रभु नित्यानन्द ने जब जन्म लिया। तब पुत्र मुख का दर्शन कर आनन्दमग्न हो गयीं। पूर्व भाव में लालन-पालन करने लगीं। माता की महिमा कौन कह सकता है, जिनके पुत्र साक्षात् नित्यानन्द हों। उनकी महिमा तो चार वेद उद्घोषणा करते हैं।।५।।

ब्रह्मा आदि देव यार वन्दये चरण।
सेई प्रभु ताँर गर्भे लभिल जनम।।
पूर्व भाव अनुरूपे प्रभु नित्यानन्द।
मातृकोले विहरयेर पेये सेवानन्द।।
बाल्यलीला छले बहु विभूति देखाय।
मोहिते नारये प्रेमे बद्ध सर्वदाय।।६।।

भावसार- ब्रह्मा आदि देव जिनकी चरण वन्दना करते हैं उन्हीं प्रभु ने उनके गर्भ से जन्म लिया। पूर्व भाव के अनुरूप निताईचाँद ने माता की गोद में आनन्द प्राप्त किया। बाल्यलीला के बहाने बहुत विभूति दिखाई किन्तु प्रेम में आबद्ध होकर वे उस ऐश्वर्य लीला से मोहित नहीं होती थीं।।६।।

पूर्वभाव उद्दीपने खेले रसखेला।
हेरि पद्मावती सदा रहये विभोला।।
सर्व अवतार लीला करिया स्मरण।
सेई भाव उद्दीपने खेले अनुक्षण।।
हेरि माता पद्मावती पुलकित मन।
परम वात्सल्ये करे लालन पालन।।७।।

भावसार- पूर्व भाव के उद्दीपन में रसखेल खेलते रहते थे। उन्हें निहारकर माता भाव विह्वल हो जाती। सर्व अवतारों की लीला का स्मरण कर उसी भाव में अनुक्षण रहते। माता यह देखकर पुलकित होतीं और परम वात्सल्य से लालन-पालन करतीं।।७।।

नयनेर मणि सदा प्रभु नित्यानन्द।
क्षण अदर्शने चित्ते घटे निरानन्द।।
ए हेन प्रेमेते बद्ध प्रभु नित्यानन्द।
मा बलि डाकिया सदा देय महानन्द।।
संसार त्यजिते निताई हइल चिन्तित।
हेरिया जीवेर दशा भावये विहित।।८।।

भावसार– नयन मणि प्रभु नित्यानन्द क्षणभर को भी यदि ओझल हो जाते तो माता का चित्त निरानन्द हो जाता। ऐसे प्रेम से आबद्ध थे निताईचाँद। जीवों की दशा विचारकर निताई चिन्तित हुये और गृह त्याग चाहा।।८।।

दैवेते संन्यासीर एक करि आगमन।
ओझा पाशे नित्यानन्दे करिल प्रार्थन।।
संन्यासीर वाञ्छा शुनि हाड़ाई पण्डित।
पत्नी पाशे चलिलेन चिन्तिया विहित।।
परम धार्मिक विप्र बड़ई उदार।
अतिथिर तुष्टि लागि चिन्तये अपार।।९।।

भावसार– दैवयोग से एक संन्यासी का आगमन हुआ और हाड़ाई पण्डित के पास प्रार्थना करने लगा। संन्यासी की अभिलाषा सुनकर हाड़ाई पण्डित पत्नी के पास चिन्ता मग्न होकर आये। परम धार्मिक विप्र बड़े ही उदार हैं। अतिथि की सन्तुष्टि के लिये सोचने लगे।।९।।

सकरूण वाक्ये गिया बलये वचन।
न्यासी द्वारे वाक्य बद्ध हइल एखन।।
ज्येष्ठ पुत्र नित्यानन्दे करिल प्रार्थन।
निदारुण शेले बद्ध हैल प्राणमन।।
हेन वार्ता पद्मावती करिया श्रवण।
सर्वदिक अन्धकार करे निरीक्षण।।१०।।

भावसार– सकरूण वाक्य से बोले– संन्यासी से वचन बद्ध हो गया हूँ। ज्येष्ठ पुत्र नित्यानन्द की प्रार्थना किये हैं। मेरा मन प्राण शैलबद्ध हो गया है। यह सुनकर पद्मावती अन्धकार अनुभव करने लगीं।।१०।।

अञ्चलेर निधि निताई हृदयेर धन।
केमने संन्यासी करे करिव अर्पण।।
विह्वल हइया माता करये क्रन्दन।
उत्तरे नाहिक स्फुरे झुरे दुनयन।।
निताई विच्छेद स्मरि व्याकुलित मन।
कतक्षणे स्थिर हञा वलेन वचन।।११।।

भावसार– अंचलनिधि निताई तो हृदय के धन हैं, कैसे संन्यासी को अर्पण करें? विह्वल होकर माता क्रन्दन करने लगीं। उत्तर नहीं निकलता है और नेत्रों से अश्रुधार बह रही है। निताई वियोग में मन व्याकुल है। थोड़ी देर स्थिर होकर बोलीं।।११।।

एमत विहित नाथ करूण निरूपण।
कोन मते अतिथि ना हय रुष्ट मन।।
तव इच्छा व्यतिक्रम नहे मोर मति।
असंकोचे कर एवे या हय विहिति।।
इंगिते कहिये माता निज अभिप्राय।
विपत्ति चिन्तिया चित्ते करे हाय हाय।।१२।।

भावसार– हे नाथ! किस प्रकार अतिथि रुष्ट न हों। आपकी इच्छा का व्यतिक्रम की भी मेरी मति नहीं है। संकोचहीन हो विहितकार्य करो। माता ने निज अभिप्राय इंगित से कह दिया। विपत्ति सोचकर चित्त में अति दुःखी हुईं।।१२।।

चिन्ति ओझा न्यासी करे नित्यानन्दे दिल।

भूमिते पडिया माता कान्दिते लागिल।।
निताई निताई बलि डाके घन घन।
एकबार वाञ्छा आसि दाओ दरशन।।
माता बलि डाकि मोर जुडाओ हृदय।
तोमार विहीने मोर प्राण नाहि रय।।१३।।

भावसार– हाड़ाई पण्डित ने नित्यानन्द को संन्यासी के हाथ में समर्पित कर दिया। माता ने भूमि में गिरकर क्रन्दन करने लगीं। क्षण–क्षण में निताई–निताई कहने लगीं। माता बोलीं– निताई बेटा! तेरे बिना मेरे प्राण नहीं रहेंगे।।१३।।

तव चाँदमुख नाहि करि दरशन।
केमने गोआव दिव बलह एखन।।
विधि मोरे वाम हञा घटाल गमन।
मोर सम भाग्यहीना नाहि कोनजन।।
नानामते विलापिया करये क्रन्दन।
से क्रन्दन हेरि नाहि कान्दे कोनजन।।१४।।

भावसार– तेरे चाँदमुख का दर्शन नहीं कर पाऊँगी। कैसे छोड़ दूँ बता। विधाता मेरे वाम हो गया है। मेरे समान भाग्यहीना कोई नहीं है इस विलाप करती हुई रो रही हैं। ऐसा कौन जन है जो उस क्रन्दन को देखकर रो नहीं रहा हो?।।१४।।

परम वात्सल्यमयी पद्मा जगन्माता।
निताई विरहे सदा बहे उनमता।।
भावेर आवेगे कभु बलये वचन।
एस वाञ्छा कोले वसि करह भोजन।।
विष्णुर नैवेद्य एवे करह ग्रहण।
संगी गण सह खेल हञा सुखमन।।१५।।

भावसार– माता परम वात्सल्यमयी हैं। निताई पुत्र के

विरह में पागल हो रही हैं भाव के आवेग में कभी बोलती हैं कि बेटा आओ! गोद में बैठकर भोजन करो। श्रीहरि का प्रसाद पाओ। संगीगण बालकों के साथ खेलकर सुखी होओ।।१५।।

हेर तव संगीगण शोकाकुल मन।
तोमार विहीने तारा क्षीण प्राणमन।।
वत्स्यहीन गाभीर दशा यैछे उपजय।
तैछे त आमार दशा हइल उदय।।
तोमार विहनेर मुंइ रहिवारे नारि।
मा बलिया एस वाञ्छा एवे कोले करि।।१६।।

भावसार– अपने संगी मित्रगण को देखो ये शोकाकुल हो रहे हैं। तुम्हारे बिना उनके मन प्राण क्षीण हो रहे हैं। वत्स हीन गाय के समान दशा होती है वैसी ही मेरी दशा हो रही है। पुत्र मैं तेरे बिना नहीं रह सकती। माँ कहकर मेरी गोद में आजा और वाञ्छा पूर्ण कर।।१६।।

कृष्णेर विहीने पूर्वे यैछे यशोमती।
तैछे पद्मावती एवे शोकाकुल मति।।
तिनमास अनाहारे करये यापन।
चैतन्य प्रभावे मात्र रहये जीवन।।
निताई गमने मातार ये भाव हइल।
अनन्त वर्णिते ताँर अन्त ना पाइल।।१७।।

भावसार– कृष्ण वियोग में जैसे यशोदा माँ की स्थिति थी वैसी ही पद्मावती माता की हो रही है। तीन मास बिना आहार के व्यतीत कर दिये। श्रीगौरांग महाप्रभु की कृपा से ही जीवन बचा हुआ है। निताई के जाने से माता की यह अवस्था हुई है। शेषजी भी उसका वर्णन नहीं कर सकते।।१७।।

परम वात्सल्यमयी देवी पद्मावती।
याँहार स्मरणे घुचे अशेष दुर्गति।।
सुनिर्मल प्रेमोदय चित्त माझे हय।
एतेक महिमा मायेर सर्वत्र घोषय।।
याहार प्रेमेर वश प्रभु नित्यानन्द।
ताँर कृपा विहीनते सब निरानन्द।।१८।।

भावसार– पद्मावती देवी परम वात्सल्यमयी हैं, जिनके स्मरण से दुर्गति नष्ट होती है। सुनिर्मल प्रेम चित्त में उदय होता है, ऐसा माता की महिमा है। जिनके प्रेम के वश में नित्यानन्द हैं, उनकी कृपा बिना सब निरानन्द है।।१८।।

ओहे माता पद्मावती जगत जननी।
मो अधमे कर कृपा दीन हीन जानि।।
द्वारेर कुकुर करि राखह आमारे।
तव पुत्र नित्यानन्दे देखाओ कृपा कोरे।।
तव पुत्र नित्यानन्द अगतिर गति।
ताँर पदे हय येन मोर गाढ़रति।।१९।।

भावसार– हे जगत जननी माता पद्मावती! मुझ दीन-हीन अधम पर कृपा कीजिये। मुझे अपने द्वार का कुक्कुर बना लीजिये। अपने पुत्र नित्यानन्द को कृपा करके दिखा दीजिये। आपके पुत्र अगति की गति हैं, उनके चरणों में मेरी गाढ़ प्रीति हो जाये।।१९।।

सर्वकाल भजि येन ताँहार चरण।
अनन्य चित्तते सेवि युगल चरण।।
दुराशार आशा तुमि पतित पावनी।
'किशोरी'रे कर कृपा अनुगत जानि।।२०।।

भावसार– सर्वकाल उनके चरणों को भजूँ। अनन्य चित्त से युगल चरण सेवा करूँ। हे माता! तुम निराशा

में आशा हो। 'किशोरीदास' को अनुगत जान कर कृपा कीजिये।।२०।।

३१. श्रीजाह्नवा माता ठाकुरानी

जय जय प्रेममय जय गौरहरि।
जय जय नित्यानन्द प्रेमदानकारी।।
जयाद्वैत चन्द्र जय माधव नन्दन।
जय जय श्रीवासादि गौरांगेर गण।।
वसुधा जाह्नवा नाम दुइ ठाकुराणी।
गौरप्रेम आस्वादिते हेन नाहि गणि।।१।।

भावसार– प्रेमावतार श्रीगौरहरि की जय हो! प्रेमदानकारी श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्रीअद्वैतचन्द्र की जय हो! श्रीमाधवनन्दन श्रीगदाधर पण्डित की जय हो! श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द की जय हो! श्रीवसुधा ठाकुरानी व श्रीजाह्नवा ठाकुरानी जैसा कोई गौरप्रेम आस्वादन नहीं करता है।।१।।

जगद्गुरु नित्यानन्द नित्यानन्द राम।
ताँहार धरणी दोंहे परमानन्द धाम।।
ब्रजे कुञ्ज सेवा परा अनंग मञ्जरी।
श्रीजाह्नवा देवी एवे सर्व यूथेश्वरी।।
निताई जाह्नवा दोंहे हय एकरूप।
गौर पादपद्म सेवे धरि बहुरूप।।२।।

भावसार– जगद्गुरु श्रीनित्यानन्द प्रभु नित्य आनन्दमय हैं इनकी ये दोनों पत्नियाँ परमानन्द की धाम हैं। ब्रज में श्रीअनंग मञ्जरी कुञ्ज सेवा करती हैं। श्रीजाह्नवा देवी सर्व यूथेश्वरी हैं, श्रीनित्यानन्द व श्रीजाह्नवा दोनों एक ही रूप हैं। श्रीगौरांग पादपद्म की बहु रूप धर सेवा करते हैं।।२।।

ब्रजे वृषभानु कन्या राधार भगिनी।
अनंग मञ्जरी नाम सर्व गुण मणि।।
श्रीमतीर केश विन्यास नित्य सेवा याँर।
निकुञ्जेर गुह्य सेवा करे अनिवार।।३।।

भावसार– श्रीअनंग मञ्जरी श्रीवृषभानु राजा की कन्या हैं और श्रीराधा की बहन हैं। वे श्रीकिशोरीजी के केश विन्यास की सेवा करती हैं और निकुञ्ज की गुह्य सेवा करती हैं।।३।।

निभृत निकुंजे यत रसेर विलास।
अनंग मञ्जरी बिना ना हय प्रकाश।।
से अनंग मञ्जरी एवे जाह्नवा ईश्वरी।
गौरप्रेम लीला सेवे पूर्वभाव स्मरि।।४।।

भावसार– निभृत निकुञ्ज में जितना रस का विलास होता है, अनंग मञ्जरी के बिना उसका प्रकाश नहीं होता है। वे ही अनंग मञ्जरी ही जाह्नवा ठाकुरानी के रूप में आई हैं और गौरलीला का प्रेमपूर्वक स्मरण करती हैं।।४।।

तथाहि– (श्रीगौरगणोद्देशदीपिका–६५)

श्रीवारूणी रेवत वंश सम्भवे तस्य,
प्रिये द्वे वसुधा च जाह्नवा।

तथाहि– (श्रीवृन्दावनदास कृत श्रीवैष्णव वन्दना)

अनंग मञ्जरी येंह, जाह्नवा गोसाईं,
तेंह वारूणी ताँहार पूर्व नाम।।
रेवत वंश सम्भूत श्रीककुदमी राजन।
वारूणी ताँहार कन्या ख्यात सर्वजन।।
श्रीकृष्णेर ज्येष्ठ भ्राता बलदेव नाम।
रेवती वारूणी दोहे धरणी ताहान।।
रेवती वारूणी एवे वसुधा जाह्नवा।
विह्वल हइया करे गौरप्रेम सेवा।।५।।

भावसार- अनंग मञ्जरी ही श्रीजाह्नवा ठाकुरानी हैं, उनका पूर्व नाम वारूणी देवी है। रेवत वंश की कुकुद्मी राजा के यहाँ श्रीवारूणी का जन्म हुआ है। श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता श्रीबलरामजी हैं उनकी श्रीरेवती व श्रीवारूणी दो पत्नियाँ हैं। ब्रजलीला की रेवती व वारूणी ही नवद्वीप लीला में वसुधा जाह्नवा के रूप में प्रकटी हैं और विह्वल होकर श्रीगौर सेवा आस्वादन करती हैं।।५।।

श्रीजाह्नवा देवी हन अनंग मञ्जरी।
वारूणी मिलये ताहे लीला अनुसारी।।
सूर्यदास पण्डित नाम विप्र महाजन।
याँर घरे जनमिल जानि प्रयोजन।।
कतकाले नित्यानन्दे पात्रा दरशन।
महागृहे कन्याद्वये कैल समर्पण।।६।।

भावसार- श्रीजाह्नवा देवी श्रीअनंग मञ्जरी हैं। लीला के अनुसार श्रीवारूणी देवी के साथ मिलती हैं। श्रीसूर्यदास पण्डित नाम विप्र हैं। जिनके गृह में उनका जन्म हुआ है। पण्डितजी नित्यानन्द प्रभु के उनका विवाह सम्पन्न हुआ है।।६।।

जाह्नवा मिलन तत्त्व शुन सर्वजन।
नित्यानन्द चरिते कहे दास वृन्दावन।।७।।

भावसार- जाह्नवा मिलन तत्त्व सभी जन सुनिये। श्रीवृन्दावन दास ठाकुर ने उनका चरित्र गाया है।।७।।

तथाहि- (श्रीनित्यानन्द चरितामृत, अन्त्य-खण्ड अध्याय-१२)

एइमत आनन्दे कतक दिन याय।
एकदिन गृहे वसि नित्यानन्द राय।।
कृष्णेर प्रसाद अन्न करेन भोजन।
वारे वारे श्रीजाह्नवा दिच्छेन व्यंजन।।

इसप्रकार आनन्द में दिन व्यतीत होते हैं। एकदिन श्रीनित्यानन्द प्रभु आनन्दपूर्वक भोजन कर रहे थे और श्रीजाह्नवा ठाकुरानी व्यञ्जन परोस रही थीं।

सूर्यदासेर कन्या हन वसु कनिष्ठा।
बाल्य कालावधि नित्यानन्दे ताँर निष्ठा।।
पारसिते मस्तकेर वसन खसिला।
आर दुइ भुजे वास संभ्रम करिला।।
इहा देखि नित्यानन्द करे आकर्षिया।
वसाइल जाह्नवारे दक्षिणे आनिया।।८।।

भावसार– श्रीसूर्यदास पण्डित की कन्या वसुधा कनिष्ठा पुत्री हैं। बाल्यावस्था से श्रीनित्यानन्द में उनकी निष्ठा थी। यह देखकर नित्यानन्द प्रभु को आकर्षित किया और श्रीजाह्नवा के दक्षिण भाग में बैठाया।।८।।

सूर्यदास पण्डितेरे कहिल एइ कथा।
यौतुके लइलाम कनिष्ठा ए दुहिता।।
शुनिया पण्डित गोसाईं कैला स्वीकार।
तोमारे किवा अदेय आछये आमार।।९।।

भावसार– सूर्यदास पण्डित को यह बात कही। कनिष्ठा देवी को लेना चाहता हूँ। पण्डित ने कहा तुमको देने के लिये क्या अदेय है।।९।।

हेनमते जाह्नवारे कैल अंगीकार।
पाइल जाह्नवा देवी पति आपनार।।
नित्यानन्दे हेरि पूर्वभाव उपजिल।
लीलारंग प्रकाशिते खड़दहे एल।।
खड़दहे रहि करे जीवेर मोचन।
जाह्नवा महिमा बूझे आछे कोनजन।।१०।।

भावसार– इसप्रकार जाह्नवा देवी को अंगीकार

किया है। नित्यानन्द प्रभु का पूर्वभाग उत्पन्न हुआ। लीलारंग प्रकाशित करने को खड़दह ग्राम में आ गये और वहाँ ही रहकर जीवों का उद्धार किया। जाह्नवा माता की महिमा समझने वाला कौन हो सकता है।।१०।।

नित्यानन्द अदर्शने जाह्नवा ईश्वरी।
नित्यानन्द गुण गाय दिवस शर्वरी।।
दैवेते जाह्नवा चिते वाञ्छा उपजिल।
वृन्दावने यात्रा लागि प्रस्तुत हइल।।
अकस्मात दैववाणी करिव श्रवण।
शुनिचमकित हैल ईश्वरीर मन।।११।।

भावसार- श्रीनिताईचाँद के जाह्नवा ठाकुरानी दैवयोग से जाह्नवा ठाकुरानी के चित्त वाञ्छा उत्पन्न हुई और वे श्रीब्रज-वृन्दावन जाने को प्रस्तुत हुईं। अकस्मात् दैववाणी हुई जिसे श्रवणकर श्रीजाह्नवा माता चमत्कृत हुईं।।११।।

प्रथमे जाह्नवा यवे वृन्दावने गेल।
हेरि कृष्ण लीला स्थली प्रेमेते भ्रमिल।।
गोस्वामीर गणेर सह रंगेते मिलिल।
गौड़ यात्राकालेर सवा विदाय मागिल।
मदनमोहन श्रीमन्दिरेर करिले गमन।
खसिया पडिल माला जाह्नवा कारण।।१२।।

भावसार- माता जब वृन्दावन गयीं, कृष्णलीला स्थल देखकर प्रेम में विह्वल हो गईं। गोस्वामिगण के साथ मिलीं। गौड़ (बंगाल) यात्रा के समय विदा माँगी। श्रीमदनमोहन मन्दिर में गमन किया; तब ठाकुरजी के कण्ठ से माला गिर पड़ी।।१२।।

सेई माला पुजारी जाह्नवाय अर्पिल।
आज्ञा माला पाञा प्रेमे जाह्नवा चलिल।।

रूप सनातन प्रेमे वलिल वचन।
श्रीनिवास नरोत्तम करिवे प्रेरण।।१३।।

भावसार- पुजारी ने वह माला माता को अर्पित की। जाह्नवा ठाकुरानी माला पाकर प्रेम विह्वल हो गयीं। श्रीरूप सनातन प्रेम में वचन बोले- श्रीनिवास नरोत्तम को प्रेरणा करो।।१३।।

दोंहार गुणतत्त्व जाह्नवाय कहिल।
शुनिया जाह्नवा प्रेमे गौड़ेते चलिल।।
पुनः यदि वृन्दावने करये गमन।
हेनमते दैववाणी हइल तखन।।१४।।

भावसार- दोनों को गुणतत्त्व जाह्नवा ने कहा। सुनकर जाह्नवा माता बंगाल चल आयीं। पुनः यदि वृन्दावन में गमन करोगी तो इसी प्रकार दैववाणी तब होगी।।१४।।

तथाहि- (श्रीनरोत्तमविलास-६)

परम गभीर नादे कहे बार बार।
श्रीनिवास नरोत्तम प्रिय ये आमार।।
निज जन सहु भक्ति दानेते प्रधान।
निरन्तर आमि ये दोंहार प्रेमाधीन।।
खेतुरि ग्रामेते गणसहु संकीर्तने।
करिव नर्तन देखिवेक सर्वजने।।

परम गम्भीर नाद से बार-बार कहा- श्रीनिवास नरोत्तम मेरे प्रिय स्नेह भाजन हैं। निज जन के सहित भक्तिदान में प्रधान है। मैं उनके श्रद्धा प्रेम के अधीन हूँ। खेतुरी गाँव में गण के साथ संकीर्तन नृत्य करेंगे, सर्वजन दर्शन करेंगे।

मोर प्रेम प्रभावे मातिवे सर्व लोक।
ना रहिवे काहार कोनई दुःख शोक।।
सर्व सिद्धि हैव तथा आमार गमने।

सवे चाहि आछ्ये तोमार पथ पाने।।
खेतुरि हइते तुमि यावे वृन्दावन।
तथा हइते आसि वितरिवे भक्तिधन।।१५।।

भावसार– मेरे प्रेम प्रभाव से सर्व लोग मत्त होंगे, किसी का कोई भी दुःख शोक नहीं रहेगा। मेरे वहाँ जाने से सबकी सिद्धि होगी। खेतुरी से तुम वृन्दावन जाना। वहाँ से आकर भक्तिधन वितरित करना।।१५।।

एतेक वारता शुनि जाह्नवा ईश्वरी।
विह्वल प्रेमे आपना पाशरी।।
आँखि नीरे तितिलेक सर्व कलेवर।
निताई गौरांगे स्मरि चलेन सत्वर।।
वसुधा देवीरे तवे डाकिया आपने।
निभृते कहिला किछु केह नाहि जाने।।१६।।

भावसार– इतनी वार्ता सुनकर जाह्नवा ईश्वरी प्रेम विह्वल हो गईं। नेत्रों से अश्रुपात होने लगा और कलेवर अश्रुजल में सिक्त हो गया। निताई गौरांग का स्मरण कर तत्क्षण चलीं। वसुधा देवी ने तब बुलाया और एकान्त में कुछ कहा, जिसे कोई नहीं जानता है।।१६।।

गंगा वीरचन्द्रे स्थिर करिया यतने।
सपार्षदे नौका योगे करये गमन।।
सप्तग्राम अम्बिका नवद्वीप हइया।
चलये जाह्नवा देवी प्रेमयुक्त हञा।।
नवद्वीपे गौरलीला करिया स्मरण।
कान्दये ईश्वरी प्रेमे हञा अचेतन।।१७।।

भावसार– गंगादेवी व वीरचन्द्र प्रभु ने यत्नपूर्वक स्थिर किया। सपार्षद नौका द्वारा चले। सप्तग्राम नौका द्वारा चले। सप्तग्राम, अम्बिका कालना, नवद्वीप होते हुए जाह्नवा माता

प्रेम विह्वला हो चल रही हैं। नवद्वीप में गौरलीला का स्मरण किया। ईश्वरी प्रेम में क्रन्दन कर अचेत हो गईं।।१७।।

तिनदिन नवद्वीप धामे करि वास।
काञ्चन नगरे चले करिहा हुताश।।
निताई गौरांग लीला करिया स्मरण।
भूमे गड़ागड़ि दिया करये क्रन्दन।।
यथा तथा श्रीईश्वरी करये गमन।
हेरिया पतित जीव प्रेमेते मगन।।१८।।

भावसार- तीन दिन नवद्वीप धाम में वास किया। फिर काञ्चन नगर चलीं। निताई गौरांग की लीला स्मरण कर भू-लुण्ठित हो क्रन्दन करने लगीं। पतित जीवों के उद्धार के लिये जहाँ-तहाँ गमन करने लगीं।।१८।।

कतदिने उत्तरिला खेतुरि ग्रामेते।
श्रीनिवास नरोत्तमे विलये यत्नेते।।
खेतुरि ग्रामेते लीला करिल विस्तर।
हेरिल कीर्तन माझे गौरांग सुन्दर।।
सपार्षदे गौरचन्द्र करये नर्तन।
हेरिया ईश्वरी प्रेमे हैल अचेतन।।१९।।

भावसार- कितने दिन बाद खेतुरी गाँव में आयीं। श्रीनिवास नरोत्तम से मिलीं। खेतुरी धाम में लीला का विस्तार किया। कीर्तन के मध्य श्रीगौरांग के दर्शन किये। श्रीगौरांग अपने पार्षदों के साथ नृत्य कर रहे हैं। ऐसा दिव्य दर्शन कर जाह्नवा ठाकुरानी प्रेम विह्वल हो अचेत हो गईं।।१९।।

तथा हैते वृन्दावने करिल गमन।
पथेते तारिल कत पतित दुर्जन।।
एक ग्रामे रहिलेन जाह्नवा ईश्वरी।
निन्दये पाषण्डीगण आस्फालन करि।।

चण्डी मन्दिरेते गिया बलये वचन।
संहार करह माता आछे यत जन।।२०।।

भावसार– वहाँ से वृन्दावन में गमन किया। पथ में कितने पतितों का उद्धार किया। माता एक गाँव में ठहरीं, पाखण्डी जन निन्दा करने लगे। चण्डी मन्दिर में जाकर यह वचन कहा– माता! जितने भी जन हैं, संहार कीजिये।।२०।।

तोमारे लंघिया करे मनुष्य प्रणाम।
तादेर उचित शास्ति करह विधान।।
तादेर चरण यदि करये पूजन।
स्मरण लइले तवे करिवे मोचन।।
एतेक कहिया सवे निद्रागत हैल।
स्वप्ने क्रोधे चण्डीमाता सबारे भर्त्सिल।।२१।।

भावसार– तुम्हारा लंघन कर मनुष्य प्रणाम करता है उसके लिये दण्ड विधान उचित है। उनके चरण यदि पूजन करता है तो स्मरण करने से वह पाप मोचन हो जाता है। इतना कहकर सब निद्रागत हो गये। स्वप्न में क्रोध कर चण्डीमाता ने सबकी भर्त्सना की।।२१।।

क्रोधेते गर्जिया देवी बलेन वचन।
जाह्नवा हेलने सबा करिव छेदन।।
जाह्नवा देवीरे कर क्षुद्र नवज्ञान।
मोर शिरोधार्य तेंह पूर्व पूज्यमान।।
महिमा नाहिक जानि करिछ निन्दन।
निज हित वाञ्छा यदि करह गमन।।२२।।

भावसार– क्रोध में गरजकर देवी बोलीं जाह्नवा देवी के उपेक्षा से मैं सबका छेदन करूँगी। तुमने उन्हें क्षुद्र कर माना है। वे मेरी शिरोधार्य और पूज्यमान हैं। तुमने महिमा न जानकर निन्दा की है। यदि अपना हित चाहते हो तो

वहाँ गमन करो।।२२।।

निज कृत अपराध करिया ज्ञापन।
स्मरण लइया पदे करिवे स्तवन।।
चण्डीकृपा वाक्य शुनि पाषण्डीर गण।
जाह्नवार पदाम्बुजे लइल स्मरण।।
परम करूणामयी जाह्नवा ईश्वरी।
दस्युगणे उद्धारिल कृपादृष्टि करि।।२३।।

भावसार– और अपने अपराध को बताओ। उनके चरणों में स्तुति करो। चण्डी के कृपायुक्त वाक्य सुनकर पाखण्डी जन जाह्नवा माता के चरणों की शरण ली। परम करूणामयी जाह्नवा माता ने कृपादृष्टि कर दस्युओं का उद्धार किया।।२३।।

तथा हैते चलिलेन जाह्नवा ईश्वरी।
नदीतीरे एकग्रामे रहे कृपा करि।।
तथा दुइ यवन दस्यु करिल उद्धार।
ईश्वरी महिमा हय अनन्त अपार।।
हेनमते उद्धारिया पतित दुर्जन।
मथुरा पुरीते आसि दिल दरसन।।२४।।

भावसार– वहाँ से श्रीजाह्नवा माता चलीं और एक गाँव में कृपा कर रहीं। वहाँ दो यवन दस्युओं का उद्धार किया। ईश्वरी की महिमा अनन्त व अपार है। इसप्रकार पतित दुर्जन का उद्धार कर मथुरापुरी में आयीं।।२४।।

विप्र गृहे रहि विश्राम घाटेते स्नान।
कृष्णलीला भूमि हेरि नाहि बाह्यज्ञान।।
ईश्वरीर आगमने महान्तेर गण।
हेरिया जाह्नवा पद पुलकित मन।।
वृन्दावन वन भ्रमे जाह्नवा ईश्वरी।

पूर्व लीलाभूमि हेरे आपना पासरि।।२५।।

भावसार– विप्र घर में रहीं, फिर विश्राम घाट पर स्नान किया। श्रीकृष्ण की लीलाभूमि को देखकर बाह्यज्ञान नहीं रहा। ईश्वर के आगमन चरण दर्शन से महान्तगण के मन पुलकित हो गये। माता ने वृन्दावन में भ्रमण किया और पूर्वलीला भूमि का दर्शन कर विह्वल हो गयीं।।२५।।

दिन तिन चारि राधाकुण्डे करि वास।
ब्रजवासी वैष्णवेरे भुञ्जाय प्रसाद।।
एकदा मध्यान्ह काले करये श्रवण।
कुण्डतीरे वंशीनाद भुवन मोहन।।
कदम्ब तलेते श्याम मुरली बाजाय।
राधा ललितादि चारिदिके शोभा पाय।।२६।।

भावसार– तीन–चार दिन राधाकुण्ड में वास किया। ब्रजवासी–वैष्णवों को प्रसाद सेवा की। एकदिन मध्याह्न में राधाकुण्ड के तट पर वंशी की भुवनमोहन ध्वनि सुनी। कदम्ब वृक्ष के नीचे श्यामसुन्दर वंशी बजा रहे हैं। श्रीराधा के साथ ललिता आदि अन्यान्य सखियों चारों ओर शोभित हैं।।२६।।

अपरूप हेरि प्रेमे मूर्च्छित हइल।
ए गूढ़ रहस्य सब गोपने राखिल।।
तथा हइते वृन्दावने करिल गमन।
वृन्दावनेश्वरे हेरि जुडाल नयन।।
श्रीगोविन्द गोपीनाथ मदन मोहन।
राधागोविन्द दामोदर श्रीराधारमण।।२७।।

भावसार– अद्वितीय रूप देखकर प्रेम में मूर्च्छित हो गईं। यह गूढ़ रहस्य सबसे गोपन रखा। वहाँ से वृन्दावन गईं। श्रीगोविन्दजी, श्रीगोपीनाथजी, श्रीमदनमोहनजी,

श्रीदामोदरजी, व श्रीराधारमणजी के दर्शन किये।।२७।।

जाह्नवा ईश्वरी प्रेमे करि दरशन।
स्वहस्ते रन्धन करि कराल भोजन।।
शुनिते गोस्वामी ग्रंथ उत्कण्ठित मन।
श्रीजीव गोस्वामी स्थाने करिल श्रवण।।
प्रेमावेशे द्वादश वन करिया भ्रमण।
गोवर्द्धन तटे एल होये सुख मन।।२८।।

भावसार– सबने श्रीजाह्नवा माता के दिव्य प्रेम के दर्शन किये। स्वहस्त से रन्धन कर भोजन कराया। उनका गोस्वामी ग्रंथ श्रवण का मन किया और श्रीजीवगोस्वामी से ग्रंथ श्रवण किये। प्रेमावेश में ब्रज के बारह वन भ्रमण किये। गोवर्द्धन तलहटी में आकर अति सुखी हुईं।।२८।।

बसन्त विहार स्थान करिया दर्शन।
हेरिया बसन्तकाल पुलके मगन।।
अकस्मात श्रीजाह्नवा करे दरशन।
बसन्त विहार करे रोहिणी नन्दन।।
रसेर आलाप हन यशोदा नन्दन।
प्रिया सह फागु खेले आनन्दे मगन।।२९।।

भावसार– बसन्त विहार स्थान दर्शन कर पुलकित मन हुआ। अकस्मात् श्रीजाह्नवा देवी का दर्शन कर रोहिण ी नन्दन बसन्त विहार करने लगे। यशोदानन्दन रस आलाप हुये, प्रिया सहित फागलीला में आनन्द मग्न हुये।।२९।।

हेरिया जाह्नवा देवी मूर्च्छित हइल।
अपना सम्वरि राम घाटेते आसिल।।
प्राणनाथेर रासक्रीड़ा सहसा हेरिया।
विह्वल हइल प्रेमे शोभा निरखिया।।
भावावेशे तथा हैते करिल गमन।

एक ग्रामे हेरे एक दुःखित ब्राह्मण।।३०।।

भावसार– यह देखकर माता ठाकुरानी मूर्च्छित हो गईं। स्वंय को सम्हाल कर रामघाट पर आयीं। प्राणनाथ की रासक्रीड़ा निरखकर प्रेम विह्वल हो गईं। भावावेश में वहाँ से गमन किया। एक गाँव में एक दुःखी ब्राह्मण को देखा।।३०।।

वार्धक्य वयसे एक जन्मिल कुमार।
पौगण्ड वयसे मृत्यु हइल ताहार।।
ब्रजवासी दुःख हरि जाह्नवा ईश्वरी।
मृत पुत्र जियाइल शुभ दृष्टि करि।।
मृत पुत्र शिरे हस्त करिल अर्पण।
अमनि उठिल पुत्र पाइया चेतन।।३१।।

भावसार– वृद्धावस्था में एक बालक का जन्म हुआ। पौगण्ड अवस्था में उस बालक की मृत्यु हो गई। जाह्नवा ठाकुरानी ब्रजवासी के दुःख को देखकर उसके मृत पुत्र को जीवित कर दिया। अपनी शुभ दृष्टि उस पर डालकर उसके मस्तक पर अपना करकमल रखा और वह बालक चेतना युक्त हो उठ खड़ा हुआ।।३१।।

पुत्र पेये विप्रवर आनन्दे मगन।
ईश्वरी महिमा हेरि वन्दये चरण।।
प्रभु आज्ञा श्रीजाह्नवा करिया स्मरण।
खड़दहे चलिवारे उत्कण्ठित मन।।
राधा गोपीनाथे हेरि रहि वृन्दावन।
एकदा माधुरी हेरि करे विचरण।।३२।।

भावसार– पुत्रको प्राप्तकर विप्र बहुत प्रसन्न हुआ। ईश्वरी की महिमा जानकर श्रीचरण वन्दना करने लगा। प्रभु की आज्ञा से माता का खड़दह में जाने के लिये उत्कण्ठित

मन हुआ। एकबार वृन्दावन में श्रीराधा गोपीनाथ की माधुरी निरख विचरण कर रही थीं।।३२।।

श्रीमती राधिका दि किछु उच्च हैत।
गोपीनाथ वामे परम शोभन हइत।।
एतेक चिन्तिया वासाय करिल शयन।
स्वप्ने आसि गोपीनाथ दिल दरशन।।
जाह्नवार प्रति कहे मधुर वचन।
हृदये चिन्तिले तुमि सुयोग्य वचन।।३३।।

भावसार– श्रीराधाजी श्रीगोपीनाथजी के वामभाग में शोभा पा रही थीं। यह स्मरण कर जाह्नवा ठाकुरानी ने शयन किया। स्वप्न में श्रीगोपीनाथजी ने दर्शन दिये और मधुर वचन कहे– हृदय में तुमने सुयोग्य वचन विचारे हैं।।३३।।

प्रिया प्रकाशिया गौड़ हते पाठाइवे।
वामेते वसिवे तेंह नयने हेरिवे।।
हासिया श्रीमती तवे बलये वचने।
संकोच नाहिक कर इहा मोर मन।।
निद्रा भंगे ईश्वरीजी हैल हर्ष मन।
नयन भाष्करे आज्ञा कैल समर्पण।।३४।।

भावसार– वामभाग में विराजकर नयनों से निहारना। हँसकर श्रीराधाजी ने तब कहा– "संकोच मत करो, यह मेरी इच्छा है।" निद्रा भंग होने पर ईश्वरी का मन हर्षित हुआ।।३४।।

स्वप्न छले गोपीनाथ एक रंग कैल।
आपन गलार माला जाह्नवाय दिल।।
ए सब गोपन राखि जाह्नवा ईश्वरी।
खड़दह पथे चले प्रभु आज्ञा स्मरि।।

खेतुरि जाजिग्राम हञा एकचक्रा एल।
नित्यानन्द जन्मभूमि नयने हेरिल।।३५।।

भावसार– स्वप्न छल में श्रीगोपीनाथजी ने एक कौतुक किया। अपने कण्ठ की माला श्रीजाह्नवा ठाकुरानी को दी। हय सब गोपन रख ठाकुरानी खड़दह को चलीं। खेतुरी, याजि ग्राम होते हुये एकचक्रा धाम में आयीं। श्रीनित्यानन्द प्रभु की जन्मभूमि को नयनों से निहारा।।३५।।

निशाभागे स्वप्नयोगे करये दर्शन।
श्वशुर शाशुडी दोंहे दिल दरशन।।
अपूर्व निताई लीला नयने हेरिल।
प्रभु निज माला ताँर गलेते अर्पिल।।
तथा हैते खड़दहे कैल आगमन।
पथेते तारिल एक मद्यप ब्राह्मण।।३६।।

भावसार– रात्रि स्वप्न में श्रीहाड़ाई पण्डित व श्रीपद्मावती देवी ने दर्शन दिया। निताईचाँद की अपूर्व लीला निहारी। प्रभु ने निज माला उनके कण्ठ में अर्पित की। वहाँ से खड़दह में आगमन किया। मार्ग में एक मद्यप ब्राह्मण का उद्धार किया।।३६।।

श्रीमूर्ति निर्माण करि करिल प्रेरण।
परमेश्वर दास लञा करिल गमन।।
वस्त्रालंकारादि द्रव्य वीर हाम्वीर दिल।
नौका योगे परमेश्वर ब्रजेते पौंछिल।।
जाह्नवा प्रेरित मूर्ति प्रेमेते वसिल।
महा महोत्सव करि परमेश्वर एल।।३७।।

भावसार– श्रीमूर्त्ति निर्माण की प्रेरणा हुई श्रीपरमेश्वर दास को लेकर गमन किया। वस्त्र आभूषण वीर हाम्वीर ने दिये। नौका के द्वारा परमेश्वर दास ब्रज में पहुँचे। जाह्नवा

प्रेरित श्रीमूर्त्ति के सम्मुख परमेश्वर दास ने महा महोत्सव किया।।३७।।

खड़दहे आसि सब वार्त्ता निवेदिल।
शुनिया सकल लीला देवी मूर्च्छा गेल।।
प्रेमेते पूर्णित तनु गर गर मन।
ना जानि कि चिन्ति चित्ते हइल विमन।।
मन अभिप्राय हृदे राखिया गोपन।
चिन्ते कत दिने वाञ्छा हइवे पूरण।।३८।।

भावसार– खड़दह में आकर सब वार्ता निवेदित की। सुनकर सब लीलादेवी मूर्च्छित हो गईं। प्रेम में पूर्णित तन–मन गर–गर करने लगा। न जाने क्या सोचकर चित्त विमन हो गया। मन का अभिप्राय गोपन रखा। सोचा कि कितने दिन में वाञ्छा पूर्ण होगी।।३८।।

दीक्षा लागि वीरचन्द्र उत्कण्ठित मन।
शान्तिपुर मुखे चले दीक्षार कारण।।
वार्त्ता पाञा देवी ताँरे फिराया आनिल।
ऐश्वर्य प्रकाशि निज तत्त्व बुझाइल।।
ऐश्वर्य दर्शने वीरचन्द्र भ्रान्ति गेल।
माता स्थाने मन्त्र लञा आत्म समर्पिल।।३९।।

भावसार– दीक्षा के लिये श्रीवीरचन्द्र प्रभु के मन उत्कण्ठित हुआ। शान्तिपुर को चले दीक्षा के कारण। संवाद पाकर देवी लौट आयीं। निज तत्त्व समझाकर ऐश्वर्य प्रकाशित किया। ऐश्वर्य दर्शन से वीरचन्द्र प्रभु की भ्रान्ति गई। माता से दीक्षा मन्त्र प्राप्त किया।।३९।।

वीरचन्द्र दीक्षा गिया माता सुख मन।
लीला सम्वरिते ब्रजे करिल गमन।।
सेवा यत्ने प्रबोधिया गमन करिल।

श्रीगोपीवल्लभ यत्ने दोला साजाइल।।
दोला चारि कण्टक नगरे आगमन।
तथा तिनदिन रहि करिल गमन।।४०।।

भावसार– वीरचन्द्र देकर माता का मन सन्तुष्ट हुआ। फिर लीला संवरण करने को ब्रज में गमन किया। सेवा समझाकर ब्रज गईं। श्रीगोपीवल्लभ ने यत्नपूर्वक दोला सजाया। दोला कण्टक नगर में आगमन किया। वहाँ तीन दिन रहकर गमन किया।।४०।।

स्थाने स्थाने प्रेमे महा महोत्सव कैल।
जीवे कृपादृष्टि करि आनन्दे चलिल।।
मंगल कोटे चन्दन मण्डल गृहे गेल।
तथा हैते एकचक्रा ग्रामेते पौंछिल।।
बंकिमदेवेर बहु करिल सेवन।
गोपी वल्लभेरे गृहे करिल प्रेरण।।४१।।

भावसार– स्थान-स्थान पर प्रेमपूर्वक महामहोत्सव हुआ। जीव के प्रति कृपादृष्टि कर आनन्दपूर्वक चले। मंगलकोट में चन्दन मण्डल के गृह में गईं। वहाँ से एकचक्रा धाम में पहुँची। बंकिमदेव की वधू ने सेवा की। गोपीवल्लभ के गृह में प्रेरणा की।।४१।।

प्रेमयोगे देवी वृन्दावन पाने धाय।
रामाई रहिया संगे करये सहाय।।
सावधान हञा अग्रे करये गमन।
सर्वत्र करये तेंह पथ निर्वाहन।।
तिनदिन गया रहि काशीधाम गेल।
तथा तिनदिन रहि प्रयागे चलिल।।४२।।

भावसार– प्रेमपूर्वक माता वृन्दावन को चलीं। रामाई ठाकुर संग रहकर सेवा करने लगीं। तीन दिन गया तीर्थ में

रहकर काशीधाम गईं। वहाँ पर भी तीन दिन निवास कर प्रयाग गयीं।।४२।।

तवेत् जाह्नवा देवी ब्रजेते पौंछिल।
गोस्वामीर गण आसि देवीरे वन्दिल।।
मन्दिरे मन्दिरे देवी करये भ्रमण।
अन्तर्धान लागि चले गोपीनाथ सदन।।
काम्यवने गोपीनाथे कैल दरशन।
अन्तर्धान हैल यैछे करह श्रवण।।४३।।

भावसार– फिर जाह्नवा माता ब्रज में पहुँची। गोस्वामिगण आकर देवी की वन्दना करने लगे। मन्दिर–मन्दिर जाकर देवी ने दर्शन किया। अन्तर्धान के लिये श्रीगोपीनाथ मन्दिर में गई। काम्यवन में श्रीगोपीनाथजी के दर्शन किये। अन्तर्धान।।४३।।

तथाहि– (श्रीनित्यानन्द वंश विस्तार, मध्यलीला, पंचम स्तवक)

गोपीनाथ बलि अति अनुरागे चले।
मन्दिर प्रविष्ट प्रभु हइल एककाले।।
अनिमिखे देखे प्रभु वदन सुन्दर।
कहिते ना पारे किछु काँपये अधर।।
मन्दिरे दुयार लागिल आचम्बिते।
बूझिते ना पारि लीला करे कोनमते।।

गोपीनाथ कहती हुईं अति अनुरागपूर्वक चलीं। मन्दिर में प्रविष्ट हुईं। प्रभु के मुखारविन्द दर्शन कर मुग्ध हो गईं और कुछ कह नहीं पायीं। मन्दिर के द्वार अकस्मात् बन्द हो गये। प्रभु कौन–सी लीला करते हैं कोई समझ नहीं पाता है।

गोपीनाथ जाह्नवार वस्त्र आकर्षिया।
वसाइला आपनार वामपार्श्वे लइया।।
आनन्दितर हइला राधा सुवदनी।

दुइ पार्श्वे दुइ प्रिया कि शोभे ना जानि।।
सवेइ मानिल अतिशय चमत्कार।
मन्दिर सेवक याइ मुक्त कैल द्वार।।४४।।

भावसार– गोपीनाथजी ने जाह्नवा देवी को आकर्षित कर निज वाम पार्श्व में बैठाया। श्रीराधा आनन्दित हुईं। प्रभु के दोनों ओर दोनों प्रिया सुशोभित हो रही हैं। सबने इसे अति चमत्कार माना। गोपीनाथजी के वचन अतिशय आनन्दकारी हैं।।४४।।

सबे देखे काञ्चन प्रतिमा मूर्ति हइया।
विराजये गोपीनाथेर वामेते वसिया।।
चमत्कार हइ सबे करे दरशन।
गोपीनाथेर अतिशय प्रफुल्ल वचन।।४५।।

भावसार–

वामपार्श्वे श्रीजाह्नवा दक्षिणे राधिका।
मध्ये गोपीनाथ इथि कि उपमा अधिका।।
नित्यानन्द गोपीनाथ एक देह हय।
धरणी शेष संवादे इहा फुकाइया कय।।४६।।

भावसार– वामपार्श्व में श्रीजाह्नवा व दक्षिण पार्श्व में श्रीराधा विराजमान हैं और मध्य में श्रीगोपीनाथ हैं। इस शोभा की उपमा और क्या हो सकती है। नित्यानन्द श्रीगोपीनाथ की देह में ही स्थित हैं। धरणी शेष संवाद में यह वर्णित हुआ है।।४६।।

तथाहि– (श्रीमुरलीविलास, परिच्छेद–१८)

एइ रूपे यत सब गोसाईं आश्रमे।
दुइ चारि मास रहि भ्रमि वृन्दावने।।
भाद्रे वनयात्रा देखि संगे निजगण।
परिक्रमा कैल सब बिना काम्यवन।।

विगत कार्तिकी पौर्णमासीर दिवसे।
गोपीनाथ गृहे गेला दर्शन मानसे।।

इसप्रकार सब गोस्वामिगण के आश्रम में भ्रमण करती हुईं वृन्दावन में दो-चार मास रहीं। भाद्रपद में वनयात्रा (ब्रज चौरासी क्रोश यात्रा) देखकर निज भक्तगण के संग में परिक्रमा की। कार्तिक पूर्णिमा के दिन गोपीनाथजी के मन्दिर में दर्शन किये।

नाना उपहार करि भोग लागाइला।
सकल वैष्णवगणे प्रसादादि दिला।।
संध्याते आरति काले प्रभु गोपीनाथ।
निजासने वसाइला धरि ताँर हात।।
कार्तिकी पूर्णिमा दिने आरत्रिक काले।
चलिल जाह्नवा देवी नित्यलीला स्थले।।४७।।

भावसार- नाना उपहार द्वारा भोग लगाया। सकल वैष्णवगण को प्रसाद आदि दिया। संध्या आरतीकाल में श्रीगोपीनाथ ने निज आसन में हाथ पकड़कर बैठाया। कार्तिक पूर्णिमा आरतीकाल में जाह्नवा देवी प्रभु के नित्यलोक में चली गईं।।४७।।

अनंग मञ्जरी रूपे रासे प्रवेशिल।
नित्य लीलाय प्रवेशिया सेवाय मातिल।।
हेनमते श्रीजाह्नवा हैल अन्तर्धान।
शुनिया व्याकुल हैल यत भक्त प्राण।।
अलौकिक लीला स्मरि मोहित हइल।
जाह्नवार गुण गाहि सबे धन्य हैल।।४८।।

भावसार- अनंग मञ्जरी रूप से रास में प्रवेश पा लिया। नित्यलीला में प्रवेश कर सेवा में मग्न हो गईं। इसप्रकार श्रीजाह्नवा देवी अन्तर्धान हो गईं। यह सुनकर

भक्तों के मन-प्राण व्याकुल हो गये। अलौकिक लीला स्मरण कर मोहित हुये, जाह्नवा के गुण गाकर सब धन्य हुये।।४८।।

जाह्नवार महिमा हय अनन्त अपार।
भुवन भरिया याँर गुणेर प्रचार।।
नित्यानन्द सह करे लीलाय विहार।
नित्यानन्द हैते देह भेद नाहि यार।।
नित्यानन्द रसे मत्त जाह्नवा ईश्वरी।
गौर प्रेम आस्वादये प्रेमे जगभरि।।४९।।

भावसार- जाह्नवा माता की महिमा अनन्त अपार है। भुवन में इनके गुण-महिमा का प्रचार कीजिये। नित्यानन्द के साथ लीला विहार किया। नित्यानन्द और उनमें भेद नहीं हैं अभिन्न तनु हैं। ठाकुरानी सदैव नित्यानन्द रस में मत्त रहती हैं और गौर प्रेम आस्वादन कर जगत में प्रेम भरती है।।४९।।

अधम पतित कत करिल निस्तार।
निताई गौरांग प्रेमे भराल संसार।।
जीवेर त्रिताप ज्वाला कैल निर्वारण।
जाह्नवा कृपाय धन्य ए तिन भुवन।।
ओहे श्रीजाह्नवा माता कृपा कर मोरे।
निताई गौरांग सेवा देहे गो आमारे।।५०।।

भावसार- कितने अधम पतितों का आपने उद्धार किया और निताई गौरांग का प्रेम जगत में भर दिया। जीवों की त्रिताप ज्वाला का निवारण किया। जाह्नवा देवी की कृपा से तीनों लोक धन्य हो गये। हे जाह्नवा माता! मुझ पर कृपा कीजिये और श्रीनिताई गौरांग की सेवा मुझे प्रदान कीजिये।।५०।।

कायमने तव पदे लइल शरण।

अनुगत दास करि करह ग्रहण।।
तोमार प्रेमेर वश प्रभु नित्यानन्द।
तव कृपा बिना नाहि पाइ सेवानन्द।।
ये आनन्द पाशे ब्रह्मानन्द तुच्छ तम।
से निताई गौरांग सेवा सर्वश्रेष्ठ तम।।५१।।

भावसार– काय मन से मैंने आपके श्रीचरणों की शरण ली है अनुगत दास बना लीजिये। तुम्हारे प्रेम के वश श्रीनित्यानन्द प्रभु हैं, तुम्हारी कृपा के बिना सेवा का आनन्द नहीं प्राप्त हो सकता। जिस आनन्द के सम्मुख ब्रह्मानन्द का सुख तुच्छ है, वही श्रीनिताई गौरांग सेवा ही सर्वश्रेष्ठ है।।५१।।

तव आनुगत्ये सेवि निताई चरण।
नवद्वीपे लीलास्थले करिव गमन।।
अप्राकृत गौरलीला नयने हेरिव।
तोमार करूणा स्मरि वासना पुराव।।
निरवधि लीलास्थले करिव सेवन।
तोमार करूणा बिना वृथा आस्फालन।।५२।।

भावसार– आपके आनुगत्य मेंरहकर श्रीनित्यानन्द के श्रीचरणों की सेवा करूँगा। नवद्वीप लीलास्थल दर्शन करूँगा। अप्राकृत गौरलीला नयनों से निहारूँगा तुम्हारी करूणा का स्मरण कर कामनाओं को ध्वंस करूँगा। निरवधि लीलास्थल का सेवन करूँगा। तुम्हारी करूणा के बिना सब व्यर्थ है।।५२।।

ओहे प्रेम मूर्तिमती जाह्नवा ईश्वरी।
पड़े आछि धरामाझे तव कृपा स्मरि।।
तव दासानुदास मुंइ हइ तव जन।
तुमि बिना किशोरीरे के करे मोचन।।५३।।

भावसार– हे प्रेममूर्त्तिमती जाह्नवा ठाकुरानी! आपकी कृपा का स्मरण कर धरा पर पड़ा हूँ। आपके दासों का दास बन जाऊँ। 'किशोरीदास' का आपके बिना कौन उद्धार कर सकता है?।।५३।।

।। श्रील किशोरीदासबाबाजी विरचित श्रीगौरभक्तामृत लहरी ग्रंथ चतुर्थ खण्ड में श्रीनित्यानन्द परिकर महिमा वर्णनान्तर्गत श्रीजाह्नवा माता ठाकुराणी महिमा कथनं नाम प्रथम लहरी।।

३२. श्रीवीरचन्द्र प्रभु

जय सर्वमय प्रभु श्रीगौर सुन्दर।
जय जय नित्यानन्द करूणा सागर।।
जय जय श्रीअद्वैत कुबेर नन्दन।
जय जय गदाधर श्रीवासादि गण।।
प्रेमेर ठाकुर मोर नित्यानन्द राय।
याहार प्रसादे जीव गौर गुण गाय।।१।।

भावसार– सर्वमय प्रभु श्रीगौरसुन्दर की जय हो! करूणासागर श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! कुबेरनन्दन श्रीअद्वैतप्रभु की जय हो! गदाधर व श्रीवास आदि भक्तवृन्द की जय हो! नित्यानन्द राय मेरे प्रेम ठाकुर हैं, जिनकी कृपा से जीव गौरांग महाप्रभु के गुणानुवाद गाता है।।१।।

ताँर सुत श्रीवीरभद्र प्रेममूर्ति मन्त।
जगते बलाया गौर कैरिल उन्मत्त।।
गौर प्रेममय मूर्ति अभिन्न कलेवर।
प्रेमरंगे विलसये आनन्द अन्तर।।
अधम पतित जने करे प्रेमदान।
अद्भुत महिमा ताँर शास्त्रेते व्याख्यान।।२।।

भावसार–

तथाहि- (श्रीगौरगणोद्देशदीपिका, श्लोक-६७)

संकर्षणस्य यो व्यूहः पयोब्धिशायि नामकः,
स एव वीरचन्द्रोऽभूच्चैतन्याभिन्न विग्रहः।
संकर्षण व्यूह श्रीपयोब्धि शायी नाम,
गौर प्रेममय मूर्त्ति परमानन्द धाम।।

चैतन्याभिन्न तनु नित्यानन्देर सुत।
वीरचन्द्र नामे एवे हैल अभिहित।।
पूर्वे गौरचन्द्र नित्यानन्द पाठाइल।
आपने आसिबे घरे ताहारे कहिल।।३।।

भावसार- श्रीचैतन्य के अभिन्न तनु श्रीनित्यानन्द के पुत्र हैं- श्रीवीरचन्द्र प्रभु। पूर्व में श्रीगौरचन्द्र ने श्रीनित्यानन्द को भेजा था। आप स्वयं उनके गृह में अवतीर्ण होंगे।।३।।

जीव उद्धारिते चित्ते करिया चिन्तन।
आज्ञा दिया नित्यानन्दे करिल प्रेरण।।
विवाह करिते प्रभु ताँर आज्ञा दिल।
मन अभिलाष कहि प्रेरण करिल।।४।।

भावसार- जीव उद्धार का चित्त में चिन्तन किया। श्रीनित्यानन्द प्रभु को विवाह करने की आज्ञा दी। मन की अभिलाषा कह प्रेरित किया।।४।।

तथहि- (श्रीनित्यानन्द वंश विस्तार, प्रथम परिच्छेद)

पूर्वे गौरचन्द्र नित्यानन्द एकासने।
नीलाचले एइ युक्ति करिला निर्जने।।
तुमि याह गौड़देशे करिते संसार।
तवे एइ सब जीवेर हइवे उद्धार।।

पूर्व में श्रीगौर-नित्यानन्द ने नीलाचल में एक युक्ति की। निताईचाँद को कहा- तुम बंगाल जाओ और विवाह

करो; फिर सब जीवों का उद्धार करना।

पुनः आसिव आमि तोमार मन्दिरे।
स्वरूप स्वभावे तुमि जानिवा आमारे।।
तोमार गृहते हवे मोर अवतार।
भक्ति विलाइये पुनः तारिव संसार।।५।।

भावसार– मैं पुनः तुम्हारे गृह में आऊँगा। स्वरूप स्वभाव से तुम मुझे जानना। तुम्हारे गृह में मेरा अवतार होगा। भक्ति प्रदानकर सबका उद्धार करूँगा।।५।।

एत कहि नित्यानन्दे करिल प्रेरण।
विवाह करिल निताई करि आगमन।।
खड़दह माझे प्रभु गडिल निवास।
कतदिने वीरचन्द्र हइल प्रकाश।।
वसुधा माता गर्भे लभिल जनम।
जाह्नवार कृपापात्र ख्यात सर्वजन।।६।।

भावसार– इतना कहकर नित्यानन्दजी को प्रेरित किया। निताईचाँद ने बंगाल आकर विवाह किया। खड़दह में प्रभु ने निवास किया। कुछ दिन बाद श्रीवीरचन्द्र प्रकट हुये। वसुधा देवी के गर्भ से प्रकट हुये और जाह्नवा माता के कृपा पात्र बने।।६।।

क्रमे क्रमे वसुधार छय पुत्र हैल।
अभिराम प्रणामे सबे नित्यलोके गेल।।
ये मते हइल एइ लीलार घटन।
अभिराम लीलामृते रयेछे वर्णन।।
एकदा गौरांग खानाकुले आगमन।
अभिराम प्रति कहे सुप्रिय वचन।।७।।

भावसार– क्रम से वसुधादेवी के छः पुत्र हुये। अभिराम ठाकुर के प्रणाम से वे नित्यलोक चले गये। जिस प्रकार

यह सब हुआ वह श्रीअभिराम लीलामृत ग्रंथ में वर्णन है। एकबार श्रीगौरांग महाप्रभु का खानाकुल ग्राम में आगमन हुआ और अभिराम के प्रति सुप्रिय वचन कहे।।७।।

शीघ्र अन्तर्धान हञा नित्यानन्द घरे।
जनम लभिव आमि कहिल तोमारे।।
तोमा दण्डवते ताँर हइवे प्रकाश।
शुनि अभिराम कैल आनन्द प्रकाश।।
एकदा अभिराम नित्यानन्द घरे गैल।
हेरि नित्यानन्द सुत दण्डवत् कैल।।८।।

भावसार– मैं शीघ्र ही नित्यानन्द के यहाँ जन्म ग्रहण करूँगा। तुम्हारे दण्डवत् से प्रकाश होगा। यह सुनकर अभिराम ठाकुर प्रसन्न हुये। एकबार अभिराम निताईचाँद के गृह में गये और निताईचाँद के पुत्र को प्रणाम किया।।८।।

ताँर दण्डवते पुत्र हाराइल प्राण।
हेनमते छय पुत्र हैल अन्तर्धान।।
तवे प्रभु वीरचन्द्र लभिल जनम।
नित्यानन्द पुत्रोत्सव कैल आयोजन।।
चतुर्दिके महान्तेर कैल निमन्त्रण।
एकला अभिरामे नाहि हैल निमन्त्रण।।९।।

भावसार– उनके पुत्र को प्रणाम करते ही प्राण चले गये। इसप्रकार उनके छः पुत्र चले गये। तत्पश्चात् श्रीवीरचन्द्र प्रभु ने जन्म लिया। श्रीनित्यानन्द प्रभु ने जन्मोत्सव मनाया। चारों दिशा में वैष्णव महान्त को निमन्त्रण किया। केवल अभिराम ठाकुर को ही निमन्त्रण नहीं दिया।।९।।

नाविक गणेरे डाकि कैल आज्ञादान।
पार ना करिवे यदि आसे अभिराम।।
एदिके वक्रेश्वर अभिराम घरे गेल।

नित्यानन्द पुत्रोत्सव सकलि कहिल।।
तेंह कहे निमन्त्रणे नाहि प्रयोजन।
ब्रजेर गोयाला याव बिना निमन्त्रण।।१०।।

भावसार– नाविकों को बुलाकर आज्ञा दी– यदि अभिराम आये तो नदी पार न करने देना। इधर वक्रेश्वर अभिराम के गृह में गये और नित्यानन्द प्रभु के पुत्रोत्सव का संवाद सुनाया। उन्होंने कहा– निमन्त्रण का प्रयोजन नहीं है, ब्रज का ग्वाला हूँ बिना निमन्त्रण ही जाऊँगा।।१०।।

तवेत मालिनी सह रंगेते चलिल।
खड़दहेर परपारे नदीकुले एल।।
तारे हेरि परिचय पुछे माछिगण।
अभिराम कैल निज परिचय कथन।।
नित्यानन्द आज्ञा कहि यत माझिगण।
नौका लञा पूर्व पारे कैल पलायन।।११।।

भावसार– तब मालिनी देवी के साथ आनन्दपूर्वक चले। खड़दह के दूसरी ओर नदी तट है। उनको देखकर मछुआरार पूछने लगे। अभिराम ने परिचय बताया। मछुआराओं ने श्रीनित्यानन्द की आज्ञा सुना दी और नौका लेकर पूर्व पार में चले गये।।११।।

किनारे डुबाया नौका निताई पाशे एल।
एदिके अभिराम एक उपाय सृजिल।।
वहिर्वास पाति ताहे हैल गंगा पार।
नित्यानन्द पाशे गिया कहे वार वार।।
बहुत क्षुधार्न्त मोरे कर भक्ष्य दान।
वसु जाह्नवा मिष्टान्न जाने ताँर स्थान।।१२।।

भावसार– किनारे रखकर नौका निताई के निकट आ गये। इधर अभिराम ने एक उपाय सोचा। बहिर्वास द्व

ारा गंगा पार हुये। नित्यानन्द के निकट जाकर कहा– बहुत क्षुधार्त्त हूँ, कुछ भोजन दीजिये। वसुधा–जाह्नवा ने उनको मिष्ठान्न दिया।।१२।।

यत देन तत खान फाँपर हइल।
तवे नित्यानन्द सह रसालाप कैल।।
अभ्यन्तरे निताई गिया करे निरीक्षण।
भाण्डारे द्विगुण भक्ष्य हेरि सुख मन।।
महान्त भोजन शेषे बलेन वचन।
नित्यानन्द तव पुत्रे कराह दर्शन।।१३।।

भावसार– भोजन उपरान्त श्रीनित्यानन्द के साथ रसालाप किया। अभ्यन्तर में निताई ने जाकर निरीक्षण किया। भण्डार में दुगुना भोजन देखकर प्रसन्न हुये। महान्त वैष्णवों के भोजन के पश्चात् वचन कहा– प्रभु! अपने पुत्र का दर्शन कराओ।।१३।।

नित्यानन्द कोले आनि पुत्र देखाइल।
अभिराम तिन बार प्रणाम करिल।।
हास्य मुख वीरचन्द्र अपूर्व दर्शन।
कोले तञा अभिराम करये नर्त्तन।।
मोर प्रभु गौरचन्द्र हैल आविर्भाव।
जगत देखिव एवे ताहार प्रभाव।।१४।।

भावसार– नित्यानन्द ने गोद में लेकर पुत्र को दिखाया। अभिराम ने तीन बार प्रणाम किया। वीरचन्द्र के हास्य मुख का दर्शन किया और गोद में लेकर अभिराम ने नृत्य किया। मेरे प्रभु गौरचन्द्र का अवतार हो गया है। जगत् इसके प्रभाव को देखेगा।।१४।।

अभिराम रंगे वीर भद्रेर प्रकाश।
जगत हइल जन्य शुनिया प्रकाश।।

अभिराम वीरचन्द्रे येमत हेरिल।
वृन्दावन दास ताहा यतने गाहिल।।१५।।

भावसार– अभिराम में वीरभद्र का प्रकाश है। जगत यह सुनकर धन्य होगा। अभिराम ने वीरचन्द्र को जैसे निहारा, उसका गायन श्रीवृन्दावनदास ठाकुर ने किया है।।१५।।

तथाहि– (श्रीनित्यानन्द वंश विस्तार, आदिखण्ड, द्वितीय परिच्छेद)

निश्चय शुतियाछे मातार उरूपरे।
अरूण किरण येन गृहेते संचार।।
उन्नत नासिका आर सुन्दर कपोला।
महाभुज दीर्घकाय वक्ष सुविशाला।।
कर पदतले येन माडिल हिंगुले।
महापुरूषेर कृति ताहाव ऊपरे।।

बालक वीरचन्द्र की प्रकाश की अरूण किरण ने गृह में प्रकाश किया। उन्नत नासिका व सुन्दर कपोल हैं। महाभुज दीर्घकाय हैं और वक्ष सुविशाल हैं कर व चरण की अंगुलियों पर महापुरुषों के चिन्ह हैं।

देखि आनन्दित हइलेन अभिराम।
चरणेर तले गिये करिलेन प्रणाम।।
उठि दरशन करे पुनः दण्डवत।
बार बार तिनबार करिल एमत।।
योगनिद्रा हइते प्रभु जागिया हासय।
चरण चालन करि शिशु प्राय हय।।१६।।

भावसार– जिन्हें देखकर अभिराम ठाकुर आनन्दित हुये और चरणों में प्रणाम किया। उठकर पुनः दण्डवत् किया बार–बार ऐसा किया। योगनिद्रा से जगकर प्रभु हँसने लगे। प्रभु चरण चालन करने लगे।।१६।।

चिनिलेन अभिराम एइ प्रभु मोर।
हासि हासि बले भाल ठाकुरालि तोर।।
पूर्वे येछे गौरांगेर लावण्य सुन्दर।
एइमत वीरचन्द्र सर्व कलेवर।।१७।।

भावसार– अभिराम ने पहचान लिया कि ये ही मेरे प्रभु हैं। हँसकर बोले– अच्छी ठकुराई तुम्हारी है। पूर्व में जैसा गौरांग का लावण्यमय सुन्दर रूप है वैसा ही वीरचन्द्र का कलेवर है।।१७।।

मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्थीर पुण्यतिथि।
जनमिल वीरचन्द्र प्रेममय निधि।।
वीरभद्र वीरचन्द्र धरे दुई नाम।
विलाइते गौरप्रेम हैल विद्यमान।।
पञ्चदश मास मातृ गर्भेते विलास।
आविर्भूत धरा माझे अद्‌भुत प्रकाश।।१८।।

भावसार– मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्थी की पावनतिथि पर वीरचन्द्र प्रभु ने जन्म लिया। इनके दो नाम हैं वीरभद्र व वीरचन्द्र। गौरप्रेम प्रदान करने के लिये अवतरित हुये हैं। पन्द्रह मास मातृ गर्भ में विलास किया; फिर आविर्भूत होकर प्रकाश किया।।१८।।

तथाहि– अत्रैव

शरत कृष्ण नवमी बोधन दिवसे।
ईश्वराविर्भाव सब लोकानन्द भासे।।
पञ्चदश मास गर्भेते येरूप रहिला।
मार्गशीर्षा शुक्ला चतुर्थीते प्रसविला।।
तिन लोक जय जय हरिध्वनि हइल।
देवलोक नरलोक आनन्दे भासिल।।

शरद् कृष्ण नवमी दिन ईश्वर आविर्भाव हुआ। पन्द्रह

मास गर्भ में रहे। मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी को जन्म हुआ। तीन लोक में जय-जयकार हरिध्वनि हुई। देवलोक व नरलोक आनन्द में मग्न होने लगे।

धन्य धन्य वसु लक्ष्मी वले सर्वजन।
पुत्र प्रसविल सेइ गौर नारायण।।
हेनमते वीरचन्द्र जनम लभिल।
वार्त्ता पाञा श्रीअद्वैत दर्शने आसिल।।
वीरचन्द्रे हेरि हैल प्रेमेते मगन।
तर्ज्जा द्वारे करे तार महिमा कथन।।१६।।

भावसार- धन्य-धन्य वसुधा लक्ष्मी की सर्वजन बोलने लगे। गौरांग ही वीरचन्द्र के रूप में प्रकट हुये हैं। संवाद सुनकर श्रीअद्वैत प्रभु दर्शन को आये। खड़दह में वीरचन्द्र विचक्षण खेलकर प्रकाश कर रहे हैं और श्रीनित्यानन्द प्रभु को सुखी कर रहे हैं।।१६।।

चोरेर घरेर चोर निति चुरि करे।
ए चोर धरिव मोरा केमन प्रकारे।।
एत कहि श्रीअद्वैत करये गमन।
खड़दहे वीरचन्द्र करे विचक्षण।।
वाला खेला छले करे आपना प्रकाश।
नित्यानन्दे सुख दिया करये विलास।।२०।।

भावसार-

पूर्वे येछे बाल्य लीला नदिया नगरे।
तेछे वीरचन्द्र खेले खड़दह पुरे।।
प्रभु नित्यानन्द यवे कैल अन्तर्धान।
काँदे प्रभु वीरचन्द्रेर हइया अज्ञान।।
जाह्नवार स्नेहाबद्ध रहे अनुक्षण।
जाह्नवा करये तारे सदाई यतन।।२१।।

भावसार- पूर्व में जैसे नदिया नगर में बाल्यलीला की थी वैसे ही वीरचन्द्र प्रभु ने खड़दह में लीला कर रहे हैं। जब श्रीनित्यानन्द प्रभु अन्तर्धान हो गये। उनके विरह में वीरचन्द्र प्रभु क्रन्दन करते हुये अचेत हो गये। जाह्नवा माता के स्नेह बद्ध में अनुक्षण रहे। माता उनको यत्नपूर्वक रखतीं।।२१।।

नित्यानन्द अप्रकट महोत्सव कैल।
गौर सेवा सदाचार जगते शिखाल।।
आपनि आचरि जीवे कराल शिक्षण।
गौरभक्ति शिखाइते ताँर आगमन।।
तिन भाग लागाइया उत्सव करिल।
तिन प्रभुर महिमा यतने करिल।।२२।।

भावसार- श्रीनिताईचाँद के अप्रकट होने पर महोत्सव किया। गौर सेवा सदाचार जगत को सिखाया। स्वयं आचरण करके जीव को शिक्षा प्रदान की है। गौरभक्ति सिखाने को उनका आगमन हुआ है। तीन भोग लगाकर उत्सव किया और उनकी महिमा का प्रचार किया।।२२।।

तथाहि- (श्रीअद्वैतप्रकाश, अध्याय-२२)

सभा मध्ये वीरचन्द्र बाहुतुले वले।
मोर एक कथा शुन वैष्णव सकले।।
येवा केह करिवेक अन्न महोत्सवे।
एछे आगे तिन प्रभुर भोग लागाइवे।।
परे सेइ महाप्रसाद लइया यतने।
समर्पिये साधु द्विज वैष्णवेर गणे।।

सभा के मध्य में वैष्णवगण बाहु उठाकर बोले- मेरी एक बात सभी वैष्णवजन सुनें। जो कोई उत्सव करेगा वह ऐसे ही तीन प्रभु को भोग लगायेगा। इसके बाद महाप्रसाद को लेकर साधु वैष्णव द्विज में समर्पित करेगा।

तिन प्रभु भोजने हय महायज्ञ पूर्ण।
तिन प्रभुर भोजने हय भद्रासन धन्य।।
श्रीचैतन्य नित्यानन्द अद्वैत गोसाईं।
तिने एक एके तिन भिन्न भेद नाई।।
तिने भेद वृद्धि करिवेक येई जन।
कभु सेई ना पाइवे चैतन्य चरण।।२३।।

भावसार– तीन प्रभु के भोजन से महायज्ञ पूर्ण होगा एवं भद्रासन धन्य होगा। श्रीचैतन्य–नित्यानन्द–अद्वैत तीनों में भेद नहीं है। भेदकारी श्रीचैतन्य चरणों को प्राप्त नहीं करता है।।२३।।

गौरकृपा बिनु प्रेमभक्ति ना लभिवे।
ए हेन दुर्लभ जन्म विफले याइवे।।
ये उत्सवे तिन प्रभुर भोग ना लागिवे।
दक्ष यज्ञ सम तार यज्ञ ना पूरिवे।।२४।।

भावसार– गौर कृपा के बिना प्रेमभक्ति प्राप्त होती नहीं है और यह दुर्लभ जन्म विफल हो जाता है। जिस उत्सव में तीन प्रभु का भोग नहीं लगता है वह उत्सव दक्ष यज्ञ के समान पूर्ण नहीं होता है।।२४।।

अन्नदान फललाभ नारिवे करिते।
सर्वनाश हैवे यज्ञ याइवे अधःपाते।।
पर काले हैव तार नरके वसति।
चन्द्र सूर्य थाकिते ना पाइवे अव्यहति।।२५।।

भावसार– अन्नदान फल लाभ नहीं करता है। सर्वनाश होता है और यज्ञ अधःपात हो जाता है। परकाल में नरक प्राप्ति होती है। सूर्यचन्द्र रहने तक निस्तार नहीं होता है।।२५।।

एत कहि वीरचन्द्र प्रसाद वाटिल।

प्रसाद पेये भक्तगण आनन्दे मातिल।।
ए उत्सवे हैल एक विचित्र घटन।
प्रकटाप्रकट भेद बुझे कोन जन।।
अप्रकट दुइ प्रभु गौर नित्यानन्द।
प्रकटे विलास करे श्रीअद्वैतचन्द्र।।२६।।

भावसार– इतना कहकर वीरचन्द्र ने प्रसाद बाँटा और भक्तगण पाकर हर्षित हुये। इस उत्सव में एक विचित्र घटना हुई। प्रकट अप्रकट भेद कौन समझ सकता है? अप्रकट में दोनों प्रभु गौर नित्यानन्द हैं और प्रकट में श्रीअद्वैतचन्द्र विलास कर रहे हैं।।२६।।

तिन प्रभु एकत्रेते करिल भोजन।
करे रसालाप हेरे भाग्यवान जन।।
ए हेन अद्भुत लीला देखाय वीरभद्र।
अचिन्त्य महिमा ताँर प्रताप प्रचण्ड।।
उत्सवान्ते करिलेन श्रीदधिमंगल।
गोकुलिया भावे नाचे वैष्णव सकल।।२७।।

भावसार– तीन प्रभुओं ने एकत्र भोजन किया। वे रसालाप करते हैं और भाग्यवान जन देखते हैं। ऐसी अद्भुत लीला वीरचन्द्र दिखा रहे हैं उनकी महिमा का यह प्रताप प्रचण्ड है। उत्सव के अन्त में श्रीदधिमंगल हुआ। गोकुल के भाव में सब वैष्णव नाच रहे हैं।।२७।।

नवीन हाडिते दधि हरिद्रा मिशाल।
नव आम्रपल्लव आनि ताहाते स्थापिल।।
नवीन वसने ताहा करि आच्छादन।
अद्वैत समीपे लञा करिल स्थापन।।
श्रीअच्युतानन्द सुखे पशार गाहिल।
गोकुलिया भावे सबे नाचिते लागिल।।२८।।

भावसार- नवीन हाड़ी में दधि, हल्दी मिलाया। नव आम्रपल्लव लाकर उसमें स्थापित किया। नवीन वस्त्र से वह आच्छादित की। अद्वैत समीप में लेकर स्थापित की। श्रीअच्युतानन्द सुख। गोकुलिया भाव में सब नाचने लगे।।२८।।

उत्सवान्ते महान्त सब करिल गमन।
खड़दहे वीरचन्द्र करे विचरण।।
हेनमते कतकाल अतीत हइल।
दीक्षार कारणे प्रभु चिन्तित हइल।।
विंशति वत्सर ताँर वयस तखन।
योग्यपात्र विचारिते चिन्ताकुल मन।।२९।।

भावसार- उत्सवान्त में सब महान्त ने विदा ली। खड़दह में वीरचन्द्र विचरण करने लगे। इसप्रकार कितना समय व्यतीत हुआ। दीक्षा के कारण प्रभु चिन्तित हुये। बीस वर्ष की उनकी आयु हुई। योग्य विचारने का उनका चिन्ताकुल मन हुआ।।२९।।

अद्वैतेर स्थाने पत्री करिल प्रेरण।
नौकायोगे शान्तिपुरे करये गमन।।
माता स्थानेर निभृतेते युकति करिल।
वीरचन्द्र अभिप्राय केह ना बूझिल।।
तवे प्रभु वीरचन्द्र कि येन चिन्तिया।
गंगास्नाने चलिलेन त्वरित करिया।।३०।।

भावसार- अद्वैत प्रभु को पत्री भेजी। नौका द्वारा शान्तिपुर में गमन किया। माता के निकट युक्ति की। वीरचन्द्र का अभिप्राय किसी ने नहीं समझा। तब वीरचन्द्र प्रभु क्या सोचकर शीघ्र गंगास्नान को चल दिये।।३०।।

नौका लइया नाविक घाटेते रहिल।

सपार्षद वीरभद्र नौकाय उठिल।।
नौका चडि शान्तिपुर मुखेते गमन।
जाह्नवा अन्तरे बुझे वीरचन्द्र मन।।
एदिकेते श्रीअद्वैत पत्री पाठाइल।
माता स्थाने मन्त्र निते ताहारे कहिल।।३१।।

भावसार– नौका लेकर नाविक घाट पर रहे। वीरचन्द्र सपार्षद नौका पर चढ़े। नौका पर चढ़कर शान्तिपुर गये। जाह्नवा माता के हृदय को वीरचन्द्र के मन ने समझ लिया। इधर अद्वैतप्रभु ने पत्री भेजी, माता से मन्त्र लेने को कहा।।३१।।

जाह्नवार स्थाने पत्र कैल आगमन।
पात्री पाञा वीरचन्द्रे कैल आनयन।।
श्रीचन्द्रशेखरे डाकि बलेन वचन।
त्वरिते चलह तुमि वीरेर सदन।।
अद्वैत स्थाने उपासना लइवारे याय।
छले बले फिराइया आनह ताहाय।।३२।।

भावसार– जाह्नवा माता को पत्र आया। पत्री पाकर वीरचन्द्र आये। श्रीचन्द्रशेखर को बुलाकर वचन कहा– शीघ्र चलकर वीरचन्द्र के भवन चलो। अद्वैत स्थान में उपासना लेने को जाओ और उन्हें ले आओ।।३२।।

शुनिया व्याकुले तेंह त्वरिते चलिल।
पथे रामदास सह मिलन घटिल।।
पण्डित मुखे शुनि तेंह सब विवरण।
प्रकारे वीरेर पथ रोधिल तखन।।
श्रीवंशी छूँडिया नौका दुइखान कैल।
झाँप दिया वीरचन्द्र गंगाय पडिल।।३३।।

भावसार– सुनकर व्याकुल हो तुरन्त चल दिये। मार्ग

में रामदास के साथ मिलन हुआ। पण्डित के मुख से सब विवरण सुना। उन्होंने वीरचन्द्र का पथ रोधिल किया। श्रीवंशी नौका दो की। वीरचन्द्र ने गंगा में छलांग लगा दी।।३३।।

तथाहि- (अत्रैव, आदिखण्ड, तृतीय परिच्छेद)

क्रोध करि रामदास वार्द्धीश फेलिल।
निर्भरे वाजिल नौका दुइखान हइल।।
झाँप दिया पडे प्रभु गंगार मध्ये जले।
काष्ठ पादुका पाये जलेर ऊपरे चले।।
अर्द्ध गंगा गिये पुनः फिरिलेन कुले।
सम्वरण करि तीर पाइल हिल्लोले।।

क्रोध कर रामदास- प्रभु छलांग लगाकर गंगा में कूदे। काष्ठ पादुका जल के ऊपर रहे। आधी गंगा में जाकर पुनः लौट आये। संवरण कर तट पर आये।

हेनमते वीरचन्द्र कुलेते आसिल।
रामदासे संगे लञा खड़दहे ऐल।।
गंगास्नान करि तेंह आसिल भवन।
जाह्नवा स्वरूप हेरि वन्दिल चरण।।
आत्म समर्पण करि मन्त्र दीक्षा निल।
वृन्दावन दास ताहा यतने गाहिल।।३४।।

भावसार- इसप्रकार वीरचन्द्र तट पर आये। रामदास के संग में खड़दह आये। गंगास्नान कर भवन में आये। जाह्नवा दर्शन कर चरण वन्दना की। आत्म समर्पण कर दीक्षा मन्त्र लिया। श्रीवृन्दावनदास ठाकुर ने यत्नपूर्वक गाया।।३४।।

तथाहि- (तत्रैव)

हेनकाले श्रीजाह्नवा माता स्नान करि।
वसिया आछेन वीरचन्द्र पथ हेरि।।

कृष्ण प्रेममयी माता कृष्ण अनुरागी।
कृष्ण प्रेमानन्द रसे अंग डगमगि।।
दुइ कर बद्ध कृष्ण नाम गणने।
ए समये युवा पुत्र देखिला नयने।।

इसप्रकार श्रीजाह्नवा माता ने स्नान किया। वीरचन्द्र पथ निहारकर बैठे हैं। माता कृष्ण प्रेममयी हैं और कृष्ण के प्रेमानन्द में देह डगमग हो रहा है। कृष्णनाम संख्यापूर्वक जप रही हैं। इस समय युवा पुत्र देख रहे हैं।

अपराध हय पाछे नाम भंग क्रमे।
आर दुइ भुजे वस्त्र करिल सम्भ्रमे।।
आर दुइ हस्ते देखि श्रीहल मूषल।
शुभ्र श्वेत कांति षड्भुज कि सुन्दर।।
तखनि देखाइया माता तखनि लुकाइल।
देखि वीरचन्द्र प्रभु चमत्कार पाइल।।३५।।

भावसार- नाम भंग होने से अपराध होता है और दो भुजा से वस्त्र संवरण किये। दो हस्त में श्रीहलमूषल हैं। शुभ्र श्वेत कान्ति व षड्भुज सुन्दर हैं। थोड़ा यह स्वरूप दिखाकर माता ने तत्क्षण छुपा लिया। यह देखकर वीरचन्द्र प्रभु चमत्कृत हुये।।३५।।

इहा देखि वीरचन्द्र पडे पदतले।
अपराध क्षम माता एइ बोल बले।।
मन्त्र दान करि कर आमार उद्धार।
येमते हइ ये भव संसारेर पार।।
तवे श्रीजाह्नवा महामन्त्र कैल दान।
प्रेम उथलिल करे कृष्ण गुणगान।।३६।।

भावसार- यह देखकर वीरचन्द्र चरणकमल में पड़ गये और बोले- माता! अपराध क्षमा करो। दीक्षामन्त्र प्रदान

कर मेरा उद्धार करो; जिससे संसार पार कर सकूँ। तब श्रीजाह्नवा माता ने दीक्षा प्रदान की। प्रेम में उथलिल कर कृष्ण गुणगान किया।।३६।।

धरिते ना पारे केह हइल अस्थिर।
उद्दण्ड नर्तन येन महा मल्लवीर।।
पाइनु पाइनु वलि याय गडागडि।
वैष्णवेर पद धरि करे रडारडि।।
ब्रह्मार वन्दित अंग धूले गडि याय।
कृष्णेर बापरे बलि करे हाय हाय।।३७।।

भावसार– प्रेम में उन्मत्त कोई अस्थिर नहीं कर पा रहा है। उद्दण्ड नृत्य कर रहे हैं जैसे महा मल्लवीर हों। 'पा लिया पा लिया' कहकर लोटपोट करने लगे। वैष्णव की पद–धूलि में लोटपोट हुये। ब्रह्मा वन्दित अंग धूल में अभिसिक्त हैं। 'कृष्ण रे बाप रे' कहकर हाहाकार करने लगे।।३७।।

कोथा कृष्ण कोथा कृष्ण श्रीनन्दन नन्दन।
एकबार देखा दिया राखह जीवन।।
हेनमते दीक्षा पाञा आविष्ट हइल।
जाह्नवार स्तुति नति बहुत करिल।।
कत दिने नित्यानन्द आराधना तिथि।
महा महोत्सव कैल हय यथाविधि।।३८।।

भावसार– कृष्ण कहाँ है? कृष्ण कहाँ है? नन्दनन्दन कहाँ है? एकबार दर्शन देकर मेरी जीवन की रक्षा करो। इसप्रकार दीक्षा पाकर आविष्ट हो गये। जाह्नवा माता की स्तुति विनती बहुत की। कितने बार श्रीनित्यानन्द आराधना तिथि पर यथाविधि महामहोत्सव किया।।३८।।

तवे तीर्थ भ्रमिवारे क्षेत्रेते चलिल।
अभिराम क्षेत्रवासी गणे मिलाइल।।

वीरचन्द्रे पाञा सबे पुलकित मन।
सबे देखे गौर येन विदित भुवन।।
सेइ रूप सेइ बोल सेइत लक्षण।
सेइ नृत्य सेइ प्रेम सेइ संकीर्तन।।३६।।

भावसार– फिर तीर्थ भ्रमण के लिये जगन्नाथपुरी गये। अभिराम ने क्षेत्रवासी गण को मिलाया। वीरचन्द्र को पाकर सब पुलकित मन हो गये। सभी देखे कि भुवन विदित गौर आ गये हैं। वही रूप, वही बोल व वही लक्षण, वही नृत्य वही प्रेम व संकीर्तन है।।३६।।

वीरचन्द्र हेरि नीलाचल वासी गण।
गौरांग दर्शन सुख लभे सर्वजन।।
तवे प्रभु वीरचन्द्र दक्षिणे चलिल।
गौरांगेर प्राय दक्षिण प्रेमे भासाइल।।
दक्षिण भ्रमिया पुनः क्षेत्रे आगमन।
नारायणी देवी सह हइल मिलन।।४०।।

भावसार– वीरचन्द्र को निहारकर नीलाचलवासी गण गौरांग दर्शन का सुख पाये। फिर वीरचन्द्र दक्षिण भारत की ओर चले। गौरांग ने दक्षिण को प्रेम में मग्न कर दिया था। दक्षिण भ्रमण कर पुनः क्षेत्र में आगमन किया। नारायणी देवी के साथ भेंट की।।४०।।

अयोनि सम्भवा कन्या लक्ष्मी स्वरूपिणी।
सुधामय विप्र घरे रहेन आपनि।।
सुधामय घरे वीरचन्द्र आगमन।
नारायणी सह हैल विवाह घटन।।
नारायणी संगे लञा खड़दहे एल।
चक्रदेव क्षेत्रराज सहाय करिल।।४१।।

भावसार– यह कन्या लक्ष्मी स्वरूपिणी है।

सुधामय विप्र के सुधामय विप्र के यहाँ वीरचन्द्र प्रभु का आगमन हुआ। नारायणी देवी के साथ उनका विवाह हुआ। नारायणी को साथ लेकर खड़दह में आये। चक्रदेव क्षेत्रराज ने सहायता की।।४१।।

वधु पात्रा वसुधा जाह्नवा सुख मन।
वीरचन्द्र खड़दहे करे विचरण।।
तवे प्रेम प्रचारिते प्रभुर गमन।
दोला वहि चारि जना करये गमन।।
ज्ञानदास कृष्णदास आर रामदास।
दोलावहि चले रामाई नित्यानन्द दास।।४२।।

भावसार– वधू पाकर वसुधा–जाह्नवा का मन सुखी हुआ। वीरचन्द्र खड़दह में विराजते रहे। फिर भगवत् प्रेम प्रचार के लिये प्रभु ने गमन किया। दोला में बैठ चार जन के साथ गमन किया। ज्ञानदास, कृष्णदास, रामदास, रामाई, नित्यानन्ददास दोला लेकर चले।।४२।।

सपार्षदे वीरचन्द्र करये गमन।
ढ़ाकाय यवन राजे करिल मोचन।।
तथा हइते मालदहे कैल आगमन।
महानन्दा धारे कैल महा संकीर्तन।।
दुर्लभ छत्री महोत्सव आयोजन कैल।
कीर्तन शेषे सेइ स्थान प्रभुके अर्पिल।।४३।।

भावसार– वीरचन्द्र ने सपार्षद गमन किया। ढ़ाका में यवन राज का मोचन किया। वहाँ से मालदह में आगमन किया। महानन्दा धार में महा संकीर्तन की। दुर्लभ छत्री के यहाँ महोत्सव किया। कीर्तन के अन्त में वह स्थान प्रभु को अर्पित किया।।४३।।

तथा हैते एकचक्रा प्रभुर गमन।

बंकिन देवेर कैल प्रेमेते सेवन।।
महा महोत्सव तथा कैल अनुष्ठान।
वीरचन्द्रपुर नाम हैल सेइ स्थान।।४४।।

भावसार- वहाँ से प्रभु एकचक्रा ने किया बाकाँराय का प्रेम से सेवन किया। महामहोत्सव का अनुष्ठान किया। वह स्थान वीरचन्द्रपुर नाम से प्रसिद्ध हुआ।।४४।।

तथाहि- (अत्रैव, अष्टम स्तवक)

एइ मत महोत्सव करिया सम्पूर्ण।
आत्ममार्ग मिलिया पाइल प्रसादान्न।।
सेइ ग्रामे तिनदिन करिला विश्राम।
वीरचन्द्रपुर बलि थूइला तार नाम।।

इसप्रकार महोत्सव सम्पूर्ण किया। प्रसादान्न पाकर आत्म-मार्ग मिला। उस गाँव में तीन दिन विश्राम किया। वीरचन्द्रपुर।

तवे प्रभु कुण्डल तीर्थ दर्शने चलिल।
नित्यानन्द कीर्ति सेई ना हेरिल।।
नित्यानन्द कुण्डले महातीर्थेर सृजन।
हेरि गंगा पथे प्रभु करये गमन।।
श्रीगति गोविन्द सह पथेते मिलन।
करिल विचित्र लीला मुग्ध सर्वजन।।४५।।

भावसार- तब प्रभु कुण्डल तीर्थ दर्शन को चले। श्रीनित्यानन्द कीर्ति वहाँ न देख नित्यानन्द कुण्डल महातीर्थ का सृजन किया। गंगा पथ को निहारकर चले। श्रीगति गोविन्द के साथ पथ में मिलन किया और विचित्र लीलाओं को कर सर्वजन को मुग्ध किया।।४५।।

तार अनुरोधे याजिग्रामे आगमन।
तथा हइते राढ़े करे प्रेम प्रवर्तन।।

संगी गणे विदाय दिया ब्रजेते चलिल।
झारिखण्ड दिया वृन्दावनेते पौढ़िल।।
प्रेमानन्दे वृन्दावन करिया भ्रमण।
खड़दहे वीरचन्द्र दिल दरशन।।४६।।

भावसार– उनके अनुरोध से याजिग्राम में आगमन किया। वहाँ से राढ़ में प्रवर्तन किया। संगीगण को विदाकर ब्रज में चले। झारीखण्ड होते हुये वृन्दावन आये प्रेमानन्दपूर्वक वृन्दावन में भ्रमण किया। खड़दह में वीरचन्द्र ने दर्शन दिया।।४६।।

खड़दहे वीरचन्द्र करये विलास।
भुवन घोषिल ताँर महिमा प्रकाश।।
जाह्नवार प्रिय पात्र प्रभु वीरचन्द्र।
जीवे प्रेमदान करे प्रतापे प्रचण्ड।।
प्रभु नित्यानन्द दिल शिला गोवर्द्धन।
पितृ दत्त धन पाञा सेवाते मगन।।४७।।

भावसार– वीरचन्द्र ने खड़दह में विलास किया। भुवन में उनकी महिमा का प्रकाश हुआ। जाह्नवा के प्रिय पात्र श्रीवीरचन्द्र प्रभु हैं। जीवों को प्रेमदान किया। प्रभु नित्यानन्द ने गोवर्धन शिला दी। पितृ दत्त धन पाकर सेवा में मग्न हुये।।४७।।

प्रेमानन्दे सर्व देश करये भ्रमण।
अधम पतित जीवे दिल प्रेमधन।।
श्रीनिवास नरोत्तम सह प्रेमरंगे।
गौरप्रेम आस्वादये नानारंग भंगे।।
श्रीखण्ड हइल महोत्सव आयोजन।
सेइकाले वीरचन्द्र करिल गमन।।४८।।

भावसार– प्रेमानन्द से सर्व देश में भ्रमण किया। अध

ाम पतित जीवों को प्रेमधन प्रदान किया। श्रीनिवासाचार्य, श्रीनरोत्तम के साथ प्रेमपूर्वक गौरप्रेम आस्वादन किया। श्रीखण्ड में महोत्सव का आयोजन किया। उसी समय वीरचन्द्र प्रभु ने गमन किया।।४८।।

पारिषद सह करे कीर्तन विलास।
याहार दर्शने जीवेर पूर्ण अभिलाष।।
तथा एक चक्षुहीने कैल चक्षुदान।
जगत बूझिल यत महिमा ताहान।।
संकीर्तने वीरचन्द्र करये कीर्तन।
अद्‌भुत नर्त्तन भंगि भुवन मोहन।।४९।।

भावसार– पार्षद के साथ कीर्तन विलास किया। जिनके दर्शन से जीव का अभिलाष पूर्ण होता है। वहाँ एक चक्षुहीन को चक्षुदान किया। जगत ने उनकी महिमा को जाना। संकीर्तन में वीरचन्द्र ने कीर्तन किया। भुवनमोहन अद्‌भुत नर्तन किया।।४९।।

अगणित लोक आसि करे दरशन।
शुनिलेन अन्ध एक प्रभुर नर्त्तन।।
अद्‌भुत महिमा शुनि करये क्रन्दन।
मुंइ भाग्यहीन मोर नाहिक लोचन।।
हेरिते नारिल प्रभुर कीर्तन विलास।
केमने हइवे मोर पूर्ण अभिलाष।।५०।।

भावसार– अगणित लोगों ने दर्शन किये। एक अन्धे ने प्रभु का नृत्य सुना। अद्‌भुत महिमा सुनकर क्रन्दन करने लगा। मैं भाग्यहीन हूँ मेरे लोचन नहीं है। प्रभु का नृत्य विलास नहीं देख सका किस प्रकार मेरी अभिलाषा पूर्ण होगी।।५०।।

आपन धिक्कारि बहु करये क्रन्दन।

अन्तरेते जानिलेन वसुधा नन्दन।।
अन्धेर अभिप्राय बूझि हइल सदय।
अपूर्व महिमा ताँर शास्त्रेते घोषय।।
अन्ध प्रति चाहिलेन कृपादृष्टि करि।
लोचन पाइया अन्ध हेरये माधुरी।।५१।।

भावसार– अपने को धिक्कार कर क्रन्दन करने लगे। वसुधानन्दन वीरचन्द्र हृदय में जान गये। उन्होंने दयापूर्वक कृपादृष्टि की और अन्धे को लोचन प्रदान किये।।५१।।

प्रेमानन्दे हेरिलेन प्रभुर माधुरी।
जय जय वीरचन्द्र करूणावतारी।।
प्रेमावेशे वीरचन्द्र करये भ्रमण।
हेनमते निस्तारये कत दीनजन।।
जाह्नवा आदेश लञा ब्रजेते चलिल।
पथ माझे दुइ दस्यु उद्धार करिल।।५२।।

भावसार– प्रेमानन्दपूर्वक उनकी माधुरी को निहारा। करूणावतार वीरचन्द्र प्रभु की जय हो! प्रेमावेश में वीरचन्द्र भ्रमण कर रहे हैं। इसप्रकार कितने लोग का उद्धार किया। जाह्नवा माता का आदेश लेकर ब्रज में चले और मार्ग में दो दस्युओं का उद्धार किया।।५२।।

भावावेशे ब्रजधाम करिया भ्रमण।
प्रेमरंगे खड़दहे कैल आगमन।।
गौरप्रेम वितरये पुलके मगन।
कँदिरा ग्रामेते तवे कैल आगमन।।
तथा जय गोपाल नाम कायस्थ एकजन।
परम दुर्मति तेंह सदा दम्भ मन।।५३।।

भावसार– भावावेश में ब्रजधाम में भ्रमण किया। प्रेमपूर्वक खड़दह में आगमन किया। पुलकित मन से गौरप्रेम

वितरित कर रहे हैं। कँदिरा गाँव में आगमन किया। वहाँ जयगोपाल नामक एक कायस्थ था। वह परम दुर्मति सदा दाम्भिक मन था।।५३।।

विद्या अहंकारे कैल श्रीगुरु हेलन।
सेई अपराधे कैल प्रसाद लंघन।।
गुरु जिज्ञासिले परमगुरु नाम कय।
परम अयोग्य ज्ञाने ताहारे त्यजय।।
ताँर द्वारे भक्तिधर्म कराल शिक्षण।
ताहारे त्यजिया कैल धर्मेर स्थापन।।५४।।

भावसार– विद्या अहंकार में उसने श्रीगुरु का अवहेलना की। अपराध से प्रसाद लंघन किया। गुरु जिज्ञासा करने पर परम गुरु का नाम लिया। परम अयोग्यता से उनको त्याग दिया। उनके द्वार से भक्तिधर्म का शिक्षण कराया। उसको त्यागकर धर्म का स्थापन किया।।५४।।

हेनमते गौरप्रेम करे शिक्षा दान।
अपूर्व महिमा ताँर व्यक्त सर्वस्थान।।
एइत किञ्चित ताँर महिमा कथन।
श्यामसुन्दर प्रकट वार्त्ता करह श्रवण।।
जीवोद्धारे वीरचन्द्र गौड़देशे गेल।
गौड पातृ शाह द्वारे उपनीत हैल।।५५।।

भावसार– इसप्रकार गौरप्रेम का शिक्षा दान किया। उनकी महिमा सर्वस्थान में व्यक्त है। इतनी उनकी किञ्चित् महिमा कही है। श्यामसुन्दर प्रकट वार्ता श्रवण करो। जीवो-द्धार को गौरचन्द्र गौड़देश गये। गौड़ बादशाह द्वार उपनीत हुये।।५५।।

पातृ शाह हेरि ताँरे कैल समादर।
कहे मोर घरे भोजन कर अतः पर।।

हृदये चिन्तिया वीर वलेन वचन।
तोमादेर खाना मुंइ करिव ग्रहण।।
तवे वावुर्चि द्वारे उत्तम खाना पाठाल।
उत्तम वस्त्रे खाना बान्धि प्रभु पाशे एल।।५६।।

भावसार– बादशाह ने उनको देखकर समादर किया और कहा– मेरे घर भोजन कीजिये। हृदय में विचारकर वीरचन्द्र वचन बोले– तुम्हारा भोजन मैं ग्रहण करूँगा। तब रसोईया द्वारा उत्तम भोजन भेजा। उत्तम वस्त्र, भोजन बाँधकर प्रभु के निकट आये।।५६।।

बन्धन खुलिते गोसाँई ताहारे कहिल।
खोला मात्रे पात्र मध्ये अद्भुत हेरिल।।
याति यूथि मालती आदि यत पुष्पगण।
चन्दने चर्चित गन्धे आसे अलिगण।।
हेनरूप तिनवार हइल घटन।
हेरिया गोसाँई गुण बुझये पवन।।५७।।

भावसार– बन्धन खोलते ही गोसाईं ने उनको कहा और खुला पात्र को देखा। जितनी यूथी मालती आदि पुष्पगण हैं चन्दन चर्चित गन्ध पर भ्रमरगण आते हैं। इसी प्रकार तीन बार घटना हुई देखकर गोसाईं गुण।।५७।।

पातशाह कहे तुमि फकिर प्रधान।
मोर स्थाने एवे तुमि किछु चाह दान।।
प्रभु कहे बहुमूल्य तेलुया पाथर।
मोरे समर्पण कर आनन्द अन्तर।।
शुनि हृष्ट हञा तेंह पाथर रसाल।
प्रभु वीरचन्द्र दिया कृतार्थ हइल।।५८।।

भावसार– बादशाह ने कहा तुम प्रधान फकीर हो, मुझसे तुम कुछ दान चाहो। प्रभु ने कहा– बहुमूल्य तेलुया

पत्थर मुझे समर्पित करो। सुनकर उन्होंने रसाल पत्थर दिया और कृतार्थ हुआ।।५८।।

सेइ पाथर खड़दहे प्रभु आनाइल।
श्रीश्यामसुन्दर मूर्ति ताहे गड़ाइल।।
अवशिष्ट पाथरे दुई विग्रह हइल।
नन्द दुलाल वल्लभजी दुइत हइल।।५९।।

भावसार- उस पत्थर को प्रभु खड़दह में ले आये और उससे श्रीश्यामसुन्दर का श्रीविग्रह बनवाया। अवशिष्ट पत्थर से दो विग्रह बनाये- श्रीनन्द दुलालजी व श्रीवल्लभजी।।५९।।

तथाहि- (श्रीप्रेमविलास-२४)

श्यामसुन्दर गडि अवशिष्ट ये पाथर।
ताहा दिया गडिल दुइ मूर्ति मनोहर।।
श्रीनन्दुदुलाल मूर्ति रहे स्वामी वन।
वल्लभ पुरे वल्लभजी प्रतिष्ठित हन।।
हेनमते तिन विग्रह करिल प्रकाश।
श्यामसुन्दर खड़दहे करये विलास।।

स्वामी वन में श्रीनन्द दुलाल रहे और वल्लभपुर में श्रीवल्लभजी रहे। इसप्रकार तीन विग्रह का प्रकाश किया। श्यामसुन्दर खड़दह में विलास कर रहे हैं।

श्यामसुन्दर सेवानन्दे जीवे प्रेमदान।
वीरचन्द्रेर प्रेमगुण अद्भुत आख्यान।।
वीरचन्द्र रूपे गौर हइया प्रकाश।
गौड़देश जने कैल शुद्ध गौरदास।।
गौरांग भजन रीति सिद्धान्त स्थापन।
वीरचन्द्र प्रसादे पाइ गौरांग भजन।।६०।।

भावसार- श्यामसुन्दर सेवा से जीवों को प्रेमदान कर रहे हैं। वीरचन्द्र के प्रेमगुण का अद्भुत आख्यान है।

वीरचन्द्र रूप में गौर का प्रकाश किया। गौड़देश (बंगाल) में लोगों को शुद्ध गौरदास बनाया। गौरांग भजन रीति सिद्धान्त स्थापन किया। वीरचन्द्र की कृपा प्राप्त कर गौरांग भजन किया।।६०।।

नित्यानन्दात्मज हन प्रभु वीरचन्द्र।
याहार प्रसाद घुचे अन्तर पाषण्ड।।
दयाल प्रभु वीरचन्द्र करूणा निदान।
'किशोरी'र घुचाह एवे अन्तर अज्ञान।।६१।।

भावसार– नित्यानन्दात्मज श्रीवीरचन्द्र प्रभु हैं। जिनके कृपा से हृदय का पाखण्ड नष्ट होता है। दयाल प्रभु वीरचन्द्र करूणा निदान हैं। 'किशोरीदास' का अन्तर का अज्ञान मिटा दीजिये।।६१।।

३३. श्रीअभिराम ठाकुर

जय शचीनन्दन जय श्रीगौरहरि।
जय प्रभु नित्यानन्द पारेर काण्डारी।।
जय श्रीअद्वैतचन्द्र जय गदाधर।
जय श्रीनिवास आदि गौर सहचर।।१।।

भावसार– श्रीशचीनन्दन गौरहरि की जय हो! उद्ध ारकारी श्रीनित्यानन्द की जय हो! श्रीअद्वैत–गदाधर की जय हो! श्रीवासादि गौर भक्तवृन्द की जय हो।।१।।

गौरप्रेम पारिषद ठाकुर अभिराम।
निताई गौरांगे यार प्रेम अनुपाम।।
विशेष निताई सह सवाई विहार।
निताई प्रिय पात्र बलि ख्यात त्रिसंसार।।२।।

भावसार– गौरप्रेम पार्षद श्रीअभिराम ठाकुर हैं। जिनका

श्रीनिताई गौरांग में जिनका अनुपम प्रेम है। श्रीनिताई चाँद के विशेष कृपापात्र हैं, जिन्हें सर्व संसार जानता है।।२।।

तथाहि- (श्रीगौरगणोद्देशदीपिका-१२६)

पुरा श्रीदाम नामासीदभिरामोऽधुना महान्,
द्वात्रिंशत जनैरेव ह्ययं काष्ठ मुवाहरः।
ब्रजे वृषभानुसुत श्रीदाम गोपाल,
एवे अभिराम नामे प्रेमे मातोयाल।।

तथाहि- (श्रीपाटपर्यटन)

अभिराम पूर्वे श्रीदाम खानाकुले स्थिति।
खानाकुल कृष्णनगर ग्राम नाम ख्याति।।

श्रीअभिराम ठाकुर पूर्वलीला में श्रीदाम हैं फिर खानाकुल कृष्णनगर में वास करते हैं।

खानाकुल कृष्णनगर अभिराम स्थान।
भाग्यवान जन ताहा हेरे अविराम।।
अभिरामेर प्रेमलीला अपूर्व कथन।
परम अद्भुत ताहा शुन सर्वजन।।३।।

भावसार- भाग्यवान जन उनको अविराम हेरते हैं। अभिराम की प्रेमलीला अपूर्व कथन है, उसे सर्वजन श्रवण कीजिये।।३।।

द्वापर युगेर सप्त हस्त देह लञा।
गौड़देशे आसिलेन प्रेमयुक्त हञा।।
सेइ सब लीला कथा प्रेम रसपूर।
आस्वादे रसिक भक्त अन्य रहे दूर।।
येनमते गौड़देशे कैल आगमन।
अभिराम लीलामृते रयेछे वर्णन।।४।।

भावसार- द्वापर युग के सप्त हस्त। गौड़देश में आये

प्रेमयुक्त होकर। वह सब लीला प्रेमरस पूर है। रसिक भक्त आस्वादन करते हैं अन्य दूर रहते हैं। इसप्रकार गौड़देश में आगमन हुये। अभिराम लीलामृत ग्रंथ वर्णन है।।४।।

ताहा हइते किञ्चित करिया ग्रहण।
अभिराम गुण गाई शुन गौर गण।।
नवद्वीपे लीला करे प्रभु विश्वम्भर।
द्वादश गोपाल आदि यत सहचर।।
एकला श्रीदाम बिने दुःखित अन्तर।
गोपने निताईये डाकि करेन उत्तर।।५।।

भावसार- वहाँ से किञ्चित् ग्रहण कर अभिराम गुण गाता हूँ। गौर भक्तगण सुनो- नवद्वीप में प्रभु विश्वम्भर लीला करते हैं। द्वादश गोपाल आदि जितने सहचर हैं। एक श्रीदाम के बिना दुःखी हृदय है। गोपन में निताई को बुलाकर कहा।।५।।

शुनह निताई मोर प्राणेर वचन।
श्रीदाम भायेरे आनि राखह जीवन।।
ब्रजेर प्रधान सखा भाई ये श्रीदाम।
संगेते रहिया सुख दित अविराम।।
ताहार विहीने मोर सुस्थ नहे मन।
ताहारे आनह एवे करिया पतन।।६।।

भावसार- निताई! मेरे मन के वचन सुनो। श्रीदाम भइया को लाकर जीवन रक्षण करो। ब्रज के प्रधान सखा श्रीदाम हैं। संग में रहकर अविराम सुख देते हैं। उनके बिना मेरा मन ठीक नहीं है। उनको बुलाकर लाओ।।६।।

सान्त्वना करिया निताई करिल गमन।
यथाय श्रीदाम रहे सेई वृन्दावन।।
खुँजिते खुँजिते तेंह गेल गोवर्द्धन।

श्रीदाम श्रीदाम बलि डाके घन घन।।
नील धडा चूडा परि गुहाते आछिल।
नित्यानन्द डाक शुनि बाहिरे आसिल।।७।।

भावसार– सान्त्वना करके निताई ने गमन किया। जहाँ श्रीदाम रहते हैं वही वृन्दावन है। खोजते–खोजते वे गोवर्द्धन गये। 'श्रीदाम श्रीदाम' बोलते रहे। नीली पगड़ी पहनकर गुफा में आये और जब निताई की पुकार सुनी तब बाहर आये।।७।।

बाहिरे आसिया तेंह बलये वचन।
केवा तुमि कि कारणे डाकह एखन।।
निताई बले मुंइ ब्रजेर बलाई।
तोमा लागि कृष्ण मोरे पाठाल हेथाई।।
तोमारे लइते मोर एथा आगमन।
शुनिया श्रीदाम तवे बलेन वचन।।८।।

भावसार– बाहर आकर उन्होंने कहा– क्यों तुम किस कारण से बुला रहे हो? निताई बोले– मैं ब्रज का बलराम हूँ। तुम्हारे लिये कृष्ण ने मुझे यहाँ भेजा है। तुम्हें लिवा ले जाने के लिये मेरा आगमन हुआ है। सुनकर तब श्रीदाम ने कहा।।८।।

इहा यदि सत्य हय तुमि आमि सम।
कर्मेते बूझिव तोमा देखि आचरण।।
करतालि दिया मुंइ वेगे दौड़ाइव।
धरिते पारिले तवे तोमारे बूझिव।।
एतेक वलिया श्रीदाम ये कार्य करिल।
अभिराम लीलामृते यतने गाहिल।।९।।

भावसार– यह यदि सत्य है तुम मेरे सखा हो तो आचरण देखकर समझूँगा करताली देकर मैं वेग से दौड़ूँगा

और मुझे पकड़ पाओगे तब तुमको समझूँगा। इतना कहकर श्रीदाम ने यह कार्य किया। अभिराम लीलामृत में वर्णन हैं।।९।।

तथाहि- (श्रीअभिराम लीलामृत, प्रथम परिच्छेद)

दौड़िते लागिल तिंहो गोवर्द्धन बेडिया।
चारिवार घोराइया देखेन चाहिया।।
मालशाट मारि श्रीदाम पाछु पाने चाय।
निकटेते बलरामे देखिवारे पाय।।
तखन भाविला मने वटे बलराम।
बड़ दुःख पाइले भाइ करह विश्राम।।

वे गोवर्धन में दौड़ने लगे श्रीदाम जहाँ भागे वहाँ निकट में बलराम को देखा। तब विचार किया कि ये बलराम हैं। बड़ा दुःख पाया भाई विश्राम करो।

हेनमते दुइ भाये हइल मिलन।
श्रीदाम लज्जित हइ बलेन वचन।।
पूर्व रूप ना हेरिया संशय जन्मिल।
से कारणे चारिवार तोमा घुराइल।।
तुमि बिना हेन शक्ति धरे कोनजन।
एवे कह कि कारणे तव आगमन।।१०।।

भावसार- इसप्रकार दोनों भाई का मिलन हुआ। श्रीदाम लज्जित होकर कहे- पूर्व रूप न देखकर संशय जन्मा है। इस कारण तुम बिना कौन ऐसी शक्ति धर सकता है। अब कहो तुम्हारे आगमन का क्या कारण है?।।१०।।

निताई बलेन सखा शुनह वचन।
कृष्ण तोमा ना हेरिया हैल अचेतन।।
श्रीकृष्ण कोथाय यदि श्रीदाम पूछिल।
सकल वृत्तान्त निताई ताहारे कहिल।।

श्रीदाम कहये मुंइ कोथाओ ना याव।
गर्भवास कभु मुंइ करिते नारिव।।११।।

भावसार– निताई बोले– सुनो सखा वचन! कृष्ण तुमको न देखकर अचेतन हो गये हैं। श्रीदाम ने पूछा– श्रीकृष्ण कहा हैं? निताई ने सब वृत्तान्त उनको सुना दिया। श्रीदाम ने कहा– मैं कहीं नहीं जाऊँगा। गर्भवास मैं कर नहीं सकता।।११।।

निताई कहये केन चित्त अकारण।
आगे गिया कर तुमि कृष्ण दरशन।।
पाछे याहा योग्य हय ताहाई हइवे।
एइ रूपे रहि सदा विलास करिवे।।
हासिया श्रीदाम तवे कहये वचन।
दौड़ाइते भारि हइल आमार चरण।।१२।।

भावसार– निताई ने कहा– अकारण क्यों चित्त करते हैं। आगे जाकर श्रीकृष्ण का दर्शन करो। पीछे जो योग्य हो वही होगा। इस रूप में रहकर विलास करना। हँसकर श्रीदाम ने तब कहा– दौड़ने से मेरे चरण भारी हो गये हैं।।१२।।

चलिते नारिव स्कन्धे करह एखन।
शुनिया निताई कहे सरस वचन।।
पूर्वेते कहिले तुमि ये स्वरूप वचन।
से रूप आमार दशा हइल एखन।।
तोमा सब भारि मोर हयेछे चरण।
हेनमते रसालाप कैल कतक्षण।।१३।।

भावसार– चल नहीं सकूँगा स्कन्ध पर चढ़ाओ अभी। सुनकर निताई ने सरस वचन कहे– पूर्व में तुमने जो स्वरूप वचन कहे वह रूप से मेरी यह दशा हो गई है। तुम्हारा

सब भार मेरे चरण में आ गया है। इसप्रकार बहुत देर रसालाप हुआ।।१३।।

प्रेमे दोंहे नदियाते कैल आगमन।
गौरांगे हेरिया श्रीदाम पुलके मगन।।
पूर्वभाव अनुरागे करि आलापन।
गौर अवतार वाक्य जिज्ञासे तखन।।
गौरांग कहये श्रीदाम शुनह वचन।
शिखाते वैराग्य धर्म मोर आगमन।।१४।।

भावसार– प्रेमपूर्वक दोनों ने नदिया में आगमन किया। श्रीगौरांग को देखकर श्रीदाम पुलक मग्न हो गये। पूर्वभाव अनुराग का आलाप किया। गौर अवतार वाक्य तब जिज्ञासा की। गौरांग ने कहा– श्रीदाम! वचन सुनो। वैराग्य धर्म सिखाने को मेरा आगमन हुआ है।।१४।।

तथाहि– (तत्रैव)

श्रीकृष्णचैतन्य नाम तेंइ से आमार।
एवे अभिराम वलि ख्याति ये तोमार।।
नित्यानन्दे डाकि तवे बलेन हासिया।
आजि हैते डाक सबे अभिराम माया।।
एइ नाम राखिलाम करिया निश्चय।
श्रीदाम आमाय कभु भिन्न भेद नय।।
अभिराम चैतन्य एवे एकुइ शरीर।
पश्चाते जानिवे ताहा येइ भक्तधीरा।।

मेरा श्रीकृष्णचैतन्य नाम है। अब अभिराम के रूप में तुम्हारी ख्याति होगी। नित्यानन्द तब हँसकर बोले– आज से अभिराम कहेंगे। यही नाम का निश्चय किया है। श्रीदाम और मुझमें कोई भिन्न भेद नहीं है। अभिराम चैतन्य एक ही शरीर है। धीर भक्त बाद में यह जानेंगे।

एत कहि इंगिते प्रभु बलेन वचन।
एतेक दीर्घता कभु ना हय शोभन।।
इंगिते निताई तवे बलेन तखन।
शुन अभिराम भाया आमार वचन।।
पूर्वे वंशी वटतले खेलिताम येमन।
सेरूप खेलिते वाञ्छा जागे मोर मन।।१५।।

भावसार– इतना कहकर प्रभु ने इंगित से वचन कहे। इतनी दीर्घता कभी शोभित नहीं होती। इंगित से निताई तब वचन बोले– अभिराम भइया! मेरे वचन सुनो। पूर्व में वटवृक्ष के नीचे वंशी से खेलते थे। उसी प्रकार खेलने की वाञ्छा मेरे मन में जगी है।।१५।।

दुई करे दुइ भाई तव कान्दे धरि।
दोलना दोलिव मोरा एइ वाञ्छा करि।।
एत बलि दुइजने काँधेते धरिया।
दोलनाय दोलितेछे आनन्दित हया।।
हेनकाले येइ लीला हइल घटन।
परम अद्भुत ताहा शुन सर्वजन।।१६।।

भावसार– दोनों भाई दोनों के स्कन्ध पर कर रखकर झूला झूलते थे। वही मेरी वाञ्छा है। इतना कहकर दोनें जन कन्धे पर हस्त रखकर झूला झूलने लगे। इसी समय एक अद्भुत लीला घटी जिसे सर्वजन सुनिये।।१६।।

तथाहि– (श्रीअभिरामाष्टक)

गौरहस्त भ्रान्ति नित्यानन्द हस्त स्कन्धकः,
पूर्व जन्म दीर्घ गर्व गौर भाव पोषकः।
अद्भुत आत्मवैभव लोकहर्ष वर्द्धनः,
माम्पु वातु सोहभिराम नाम भक्ति वन्दनः।।

हेनमते द्वापरेर दीर्घाकृति गेल।

युग अनुरूप देह धारण करिल।।
हेरिया भक्तगण चमकित हैल।
प्रभु अभिराम सह ब्रजेते चलिल।।
हेथा नित्यानन्दे दिल संकीर्तन भार।
दुइ भाये ब्रजे लीला करये अपार।।१७।।

भावसार– इसप्रकार द्वापरयुग वाली दीर्घ आकृति चली गयी और अभिराम (श्रीदाम सखा) का युग के अनुसार देह हो गया। यह देखकर सब भक्त चमत्कृत हुये। प्रभु अभिराम के साथ ब्रज में चले। वहाँ नित्यानन्द प्रभु को संकीर्तन भार दिया। दोनों भाई ने ब्रज में अपार लीला की।।१७।।

दोंहाकार पूर्व लीला करिया स्मरण।
कतदिन रंगे दोंहे करिल यापन।।
निज अंग हैते रामदासेरे सृजिया।
गौड़देशे पाठाइल प्रभु संगे दिया।।
तरे अभिराम हृदे करिया चिन्तन।
पुनः अंग हते कन्या करिल सृजन।।१८।।

भावसार– दोनों ने पूर्वलीला स्मरण की। इस प्रकार कितने दिन आनन्द किया। निज अंग से रामदास का सृजन कर प्रभु के संग में गौड़देश में भेजा। अभिराम ने हृदय में चिन्तन किया पुनः कन्या का सृजन किया।।१८।।

वाक्यबद्ध करि कन्या जले भासाइल।
सेइ वाक्य श्रोते भासि खानाकुले एल।।
ब्रज हैते अभिराम हइल बाहिर।
प्रतिज्ञा करिया भ्रमे हइया अस्थिर।।१९।।

भावसार– वाक्यबद्ध कर कन्या जल में बहने लगी। उस वाक्य को सुनकर बहती खानाकुल आयी। ब्रज से अभिराम बाहर हुये। प्रतिज्ञा कर भ्रम में अस्थिर हुये।।१९।।

तथाहि- (तत्रैव, अष्टम परिच्छेद)

भ्रमण करिव सब विग्रह देखिया।
देखि कवा कोनरूपे आछेन वसिया।।
एके एके सबाकार करिव दर्शन।
चैतन्येर मनोवृत्ति बूझिव एखन।।
देखि कार कत शक्ति दियाछे चैतन्य।
दुइ कार्य हेतु आमि हैव अवतीर्ण।।

सब विग्रह देखकर भ्रमण करूँगा। देखूँ कौन से रूप में विराजमान हैं। एक-एक कर सबके दर्शन करूँगा। श्रीचैतन्य की की मनोवृत्ति समझूँगा। देखूँ किसको क्या शक्ति दी है चैतन्यदेव ने? दो कार्य के लिये मैं अवतीर्ण हुआ हूँ।

ब्रजेते श्रीकृष्ण बहु सेवन करिला।
तखन आमाके कृष्ण आपनि कहिला।।
तोमार समान बन्धु नाहि कोनजने।
वश ये हइनु देख तोमार सेवने।।
बलराम आदि करि यत सखागण।
सबार अपेक्षा शक्ति दिलाम एखन।।२०।।

भावसार- ब्रज में श्रीकृष्ण ने का बहुत सेवन किया है। तब श्रीकृष्ण ने मुझसे कहा था कि तुम्हारे समान बन्धु कोई नहीं है। तुम्हारी सेवा के वशीभूत हो गया हूँ। बलराम आदि जितने सखागण हैं सबकी अपेक्षा शक्ति अब दिया हूँ।।२०।।

एमन पीरित सेइ श्रीकृष्ण सहित।
मने ना करिया गेला हइया विस्मृत।।
बुझिव एवे तार प्रिय हय केवा।
काहार प्रेमेर वश पाइलेन सेवा।।
सेवा वश हञा सेइ प्रेमेते चलिला।
अतेव आमारे तिंह विस्मृत हइला।।२१।।

भावसार– ऐसी प्रीति श्रीकृष्ण के साथ है विचार न करने से विस्मृत हो गई। समझूँगा उनका प्रिय कौन है? किसके प्रेम के वश सेवा पायी है। सेवा वश होकर वह प्रेम में चले हैं। इसलिये मेरे वे विस्मृत हो गये हैं।।२१।।

एतेव भाविया मने करेन भ्रमण।
येखाने विग्रह आछे करेन दर्शन।।
दर्शन करिया ताँरे बलेन हासिया।
केवा कोन रूपे आछे देखि कषिया।।२२।।

भावसार– ऐसा सोचकर भ्रमण किया। जहाँ श्रीविग्रह हैं वहाँ दर्शन किया। दर्शन करके उनको हँसकर कहा– कौन किस रूप में है देखूँ।।२२।।

एतेक भाविया मने करये भ्रमण।
येखाने विग्रह आछे करे दरशन।।
प्रणाम करिया तेंह निरखे यखन।
प्रतिमा विदीर्ण हैले करये गमन।।
बुझये हेथाते नाहि रहे कोन जन।
हेनमते देशे देशे करये भ्रमण।।२३।।

भावसार– यह सोचकर भ्रमण करने लगे। जहाँ विग्रह है वहाँ दर्शन किया। जब निहारकर प्रणाम किया; प्रतिमा विदीर्ण हुआ। तत्पश्चात् गमन किया वहाँ का कोई जन समझ नहीं पाया। इसप्रकार प्रत्येक क्षेत्र में भ्रमण किया।।२३।।

क्षण मध्ये बहु मन्दिर करिल भ्रमण।
विग्रह उजाड़ हैले करये चिन्तन।।
लक्ष कोटि विग्रह मुंइ प्रणाम करिल।
स्वयं नाहिक कोथा स्वरूप देखिल।।
एत चिन्ति पथे तेंह करये गमन।
जयदेव सह पथे हइल मिलन।।२४।।

भावसार- कुछ समय में बहुत मन्दिरों में भ्रमण किया और प्रणाम कर कितने विग्रह उजाड़ दिये। लाखों विग्रहों को प्रणाम किया। स्वयं कहीं स्वरूप नहीं देखा। ऐसा विचारकर मार्ग में चले। श्रीजयदेव के साथ मिलन हुआ।।२४।।

परिचय जिज्ञासिले बलेन वचन।
प्रणामे अयोग्य मुंइ विप्रेर नन्दन।।
निज परिचय दिया कहे अभिराम।
आजि तव गृहे मोर हवे अधिष्ठान।।
तव गृहे भिक्षा मुंइ करिव एखन।
शुनि आज्ञा अनुरूप कैल आचरण।।२५।।

भावसार- परिचय पूछने पर वचन कहा- विप्र नन्दन! मैं प्रणाम के अयोग्य हूँ। निज परिचय देकर अभिराम ने कहा- आज तुम्हारे गृह में मेरा अधिष्ठान होगा। अब तुम्हारे गृह में मैं भिक्षा करूँगा। सुनकर आज्ञा अनुरूप आचरण किया।।२५।।

आज्ञा पाञा जयदेव करिल रन्धन।
सुखे अभिराम तथा करिल भोजन।।
जयदेवेर पद्मा प्राप्ति सकलि शुनिल।
तारे आलिंगन दिया सुखेते चलिल।।
पथे मदनमोहन वाक्य करिया श्रवण।
श्रीमन्दिरे गिया कैल निज आचरण।।२६।।

भावसार- आज्ञा पाकर जयदेव ने रन्धन किया। सुख से अभिराम ने भोजन किया। जयदेव पद्मावती प्राप्ति का सकल वार्ता कहा। उनको आलिंगन करके सुख से चले। पथ में श्रीमदनमोहन वाक्य श्रवण किये। श्रीमन्दिर में जाकर निज आचरण किया।।२६।।

तथाहि- (तत्रैव)

लोक संघटने तिंहो दण्डवत् कैला।
मन्दिर निकटे येन भूमिकम्प हैला।।
दण्डवत् दिया पुनः देखेन चाहिया।
मदनमोहन तवु ना याय फाटिया।।
आर दण्डवत् तेंह तखन कहिला।
पुनर्वार उठि ताहा देखिते लागिला।।

लोगों के सामने दण्डवत् किया। मन्दिर के निकट मानों भूकम्प आ गया। दण्डवत् कर पुनः देखा मदनमोहन विग्रह स्थिर ही रहा। फिर दण्डवत् किया और पुनः उठकर देखने लगे।

मदनमोहन तवु आछेन वसिया।
मन्दिरेर द्वारमात्र गियाछे बाँकिया।।
पुनः एक दण्डवत करेन तखन।
घाड बाँका हैल सेई मदनमोहन।।
तखन सदैन्य कहे मदनमोहन।
दण्डवते घाड मोर बाँकाले कि कारण।।२७।।

भावसार- मदनमोहन तब भी बैठे हैं। मन्दिर का केवल द्वार ही विदीर्ण हुआ है। पुनः एक दण्डवत् किया। तब सदैन्यपूर्वक मदनमोहन ने कहा- दण्डवत् से किस कारण से हुआ है।।२७।।

जगते कलंक मोर घुषिवे तखन।
अपराध क्षमि हेथा कर आगमन।।
निज भाव कहि श्रीदाम वलये तखन।
श्रीमन्दिरे एवे नाहि करिव गमन।।
यावत प्रतिज्ञा मोर ना हय पूरण।
यावत मन्दिरे नाहि करिव गमन।।२८।।

भावसार- जगत में कलंक मेरा तभी मिटेगा। अपराध

क्षमा कर आगमन करो। श्रीदाम ने निज भाव कहकर ऐसे वचन कहे। श्रीमन्दिर में अब गमन नहीं करूँगा। जब तक प्रतिज्ञा मेरी पूर्ण नहीं होगी; तब तक मैं मन्दिर में गमन नहीं करूँगा।।२८।।

तवे पुजारीरे कहि मदन मोहन।
मिष्टान्न आनाया दोंहे करिल भोजन।।
अंगने वसि रसालाप करि कतक्षण।
प्रेमे अभिराम तवे बलेन वचन।।
घाडवाकाइया तव महिमा देखल।
विष्णुपुर गुप्त वृन्दावन ख्याति हैल।।२९।।

भावसार- तब पुजारी से मदनमोहनजी ने कहा- मिष्ठान्न लाकर दोनों भोजन कर लो। आंगन में बैठकर कितनी देर रसालाप किया। प्रेमपूर्वक अभिराम ने कहा- घड़ा तब महिमा देखी। विष्णुपुर की गुप्त वृन्दावन के रूप में ख्याति हुई।।२९।।

एत कहि अभिराम करये भ्रमण।
विग्रह दर्शन आर पतित तारण।।
पथे कृष्णराय वाक्य करिया श्रवण।
गिया दण्डवत करि करे निरीक्षण।।
सर्वांग फुटिया रक्त पडिते लागिल।
तवे कृष्णराय अभिरामेरे कहिल।।३०।।

भावसार- इतना कहकर अभिराम भ्रमण करने लगे। श्रीविग्रह दर्शन व पतित उद्धार करने लगे। मार्ग में श्रीकृष्णराय के वाक्य श्रवण किये। जाकर दण्डवत् कर निरीक्षण किया। सर्वांग फूटकर रक्त बहने लगा। तब कृष्णराय अभिराम को बोले।।३०।।

कि कारणे हेन दया करिले आमाय।

शुनि अभिराम तवे कहये ताहाय।।
रक्त नहे तव अंग घाम घुचयाइल।
कृष्णराय नाम एवे प्रकाश हइल।।
पूर्ववत् करि तथा मिष्ठान्न भोजन।
वासुलीर सह पथे हइल मिलन।।३१।।

भावसार– किस कारण से ऐसी दया मुझे की है। सुनकर अभिराम ने कहा– तुम्हारे देह में रक्त नहीं है। कृष्णराय नाम प्रकाश हुआ। पूर्ववत् मिष्ठान्न भोजन किया। वासुली के साथ पथ पथ में मिलन हुआ।।३१।।

देवी कहे वनाश्रमे कतदिन रहिव।
तेंह कहे हेथा रह राज सेवा हव।।
शुनिया वासुली देवी आनन्दित हैल।
विक्रम पुरेते रहि वाञ्छा पुराइल।।
तथा हैते खानाकुले कैल आगमन।
मालिनी देवीर सह तथाय मिलन।।३२।।

भावसार– देवी ने कहा– वन आश्रम में कितने दिन रहोगे? उन्होंने कहा– यहाँ रहो राजसेवा होगी। सुनकर वासुली देवी आनन्दित हुईं। विक्रमपुर में रहकर वाञ्छा पूर्ण हुई। वहाँ से खानाकुल में आगमन किया। मालिनी देवी के साथ वहाँ मिलन हुआ।।३२।।

मालिनी लइया तेंह करये गमन।
काजीगण आसि तारे घिरिल तखन।।
विल्लक ग्रामे नदी हते काष्ठ ये तुलिल।
षोडशांगेर काष्ठ लञा वंशी बाजाइल।।
पूर्वे सबाकार वंशी जले भासाइल।
सेई वंशी लीलाचक्रे तथाय आसिल।।३३।।

भावसार– मालिनी को लेकर गमन किया। काजीगण

के आने पर वे घिर गये। विल्लक गाँव की नदी में काष्ठ से पार हुये। सोलह अंगुल की काष्ठ से वंशी बजायी। पूर्व में सबकी वंशी जल में बहाई, वही वंशी लीला के द्वारा वहाँ आ गई।।३३।।

एइ वंशी द्वारे मालिनीते जानाइल।
पाछे काष्ठ मध्ये तारे गोपन करिल।।
तथा नदी स्नानकाले विचित्र घटन।
नदी करिलेक ताँर कौपीन हरण।।
अभिराम कोपे तारे अभिशाप दिल।
सकातरे नदी तार बहु स्तव कैल।।३४।।

भावसार– यह वंशी द्वारा मालिनी को जनाया। पीछे काष्ठ में गोपन कर रख ली। वहाँ नदी स्नानकाल में विचित्र घटना घटी। नदी ने उनकी कौपीन हरण कर ली। अभिराम ने कोप कर शाप दिया। फिर नदी ने उनकी बहुत स्तुति की।।३४।।

तथाहि– (तत्रैव)

अन्धवत् हञ थाक तिन शत ये वत्सर।
परे एक चक्षु तुमि पावे रत्नाकर।।
द्वारकेश्वर बलि नाम केह वा कहिवे।
कानानदी नामे तोमा सवाई डाकिवे।।
एत कहि नदियाय कैल आगमन।
गौरांग कहिल निज आगमन कारण।।

अन्धी होकर तीन सौ वर्ष रह। पश्चात् एक चक्षु पाओगी। द्वारकेश्वर नाम कोई नहीं कहेगा। कानानदी नाम से तुमको सब पुकारेंगे। इतना कहकर नदिया में आगमन किया। गौरांग को निज आगमन का कारण कहा।

शास्त्र अध्ययन छले तवे दुँहुजन।

गोपनेते नीलाद्रिते करिल गमन।।
कुलिया रेमुणा हञा जगन्नाथे गेल।
प्रेमरंगे कत काल तथाय रहिल।।
तथा हैते गौरे गौड़े करिया प्रेरण।
आपनि विल्लोक ग्रामे कैल आगमन।।३५।।

तब दोनों शास्त्र अध्ययन के बहाने गोपन में नीलाद्री से गमन किया। कुलिया रेमुणा होकर जगन्नाथ गये। प्रेमरंग में कितने समय तक वहाँ रहे। वहाँ से गौर ने गौड़ में प्रेरण किया। आप विल्लोक ग्राम में आगमन किया।।३५।।

मालिनी सहित तथा करिया मिलन।
प्रकटिया कहे यत निज विवरण।।
सेकाले ब्रज हैते दुइ वैष्णव आसिल।
दोंहाकारे कृष्णनगरेते पाठाइल।।
संकीर्तन रंगे दुँहे करये भ्रमण।
पाषण्डीर गण यत करये निन्दन।।३६।।

भावसार– मालिनी साथ वहाँ मिलन किया। प्रकट में सब विवरण कहा। वहाँ ब्रज से दो वैष्णव आये। दोनों को कृष्णनगर में भेजा। संकीर्तन आनन्द में दोनों भ्रमण कर रहे हैं। जितने पाखण्डी हैं सब निन्दा कर रहे हैं।।३६।।

दोंहे आसि अभिरामे सकलि कहिल।
पाषण्डी तारिते अभिराम ये चलिल।।
सेकाले पथेते कान्दे ब्राह्मणी एकजन।
अभिराम गिया पूछे क्रन्दन कारण।।
ब्राह्मणी कहे मोर पुत्र भवानी खाइल।
शुनि अभिराम क्रोधे तथाय चलिल।।३७।।

भावसार– दोनों ने आकर अभिराम ने सब कहा। अभिराम पाखण्डी को तारते हुये चले। वहाँ पथ में एक

ब्राह्मणी रो रही हैं। अभिराम ने जाकर क्रन्दन का कारण पूछा। ब्राह्मणी ने कहा– मेरा पुत्र भवानी ने खा लिया है। सुनकर अभिराम वहाँ से क्रोधपूर्वक चले।।३७।।

ब्राह्मणीरे संगे लञा करिल गमन।
कहिलेन तव पुत्र मिलाव एखन।।
शुनिया ब्राह्मणी मने आश्वस्त हइल।
अभिराम तारे लञा मन्दिरे पौंछिल।।
भवानीरे अभिराम बलेन वचन।
केन वा खाइले तुमि विप्रेर नन्दन।।३८।।

भावसार– ब्राह्मणी को संग लेकर गमन किया और कहा– तेरा पुत्र अभी मिलाऊँगा। सुनकर ब्राह्मणी मन में आश्वस्त हुई। अभिराम उसको लेकर मन्दिर पहुँचे। भवानी से अभिराम ने वचन कहा– तुम विप्र नन्दन को क्यों खाया?।।३८।।

तेंह कहे बहुकाल एमत नियम।
नर मांस बिना मुंइ ना करि भक्षण।।
अभिराम वचने देवी सम्मत ना हइल।
तवे क्रोधे अभिराम हृदये चिन्तिल।।
दम्भेते आमार वाक्य करिल हेलन।
देवीरे उचित शास्ति करिव एखन।।३९।।

भावसार– बहुत काल से ऐसा नियम है नवमांस के बिना मैं भक्षण नहीं करती हूँ। अभिराम के वचनों से देवी सम्मत न हुईं। तब क्रोध में अभिराम चिन्तित हुये। दम्भ में मेरे वाक्य की अवहेलना की। देवी को उचित उत्तर अभी दूँगा।।३९।।

देवी प्रति सम्बोधिया बलेन वचन।
भक्षिले नरेर मांस खसिवे दन्तगण।।

विपत्ति हेरिया देवी करये विनय।
कर पुटे कहे मोरे हइवे सदय।।
सविनये देवी करि ताहार स्तवन।
विप्र सुते दिया कैल आपना मार्जन।।४०।।

भावसार– देवी प्रति सम्बोधन कर अभिराम बोले– नरमांस भक्षण स दन्त गिरेंगे। विपत्ति देखकर देवी ने विनती की और कहा– मेरे प्रति सदय होइये और स्तुति करने लगी। विप्र सुत को देकर अपना मार्जन किया।।४०।।

अभिराम विप्र सुते करिया ग्रहण।
ब्राह्मणीर हस्ते दिया करिल प्रेरण।।
तवे देवी अभिरामे करये विनय।
निज पाशे राख मोरे हइया सदय।।
एक सब चालेर अन्न करिया रन्धन।
स्वहस्ते आमारे तुमि करह अर्पण।।४१।।

भावसार– अभिराम ने विप्र सुत को ग्रहण किया। ब्राह्मणी के हाथ में देकर प्रेरणा की। तब देवी अभिराम से विनती करने लगी। अपने निकट रखकर मेरे प्रति सदय होइये। अन्न रन्धन कर स्वहस्त से मुझे अर्पण करना।।४१।।

तेंह कहे कृष्ण नगरे यवे करि वास।
सेकाले तोमार आमि पुराइव आश।।
तोमारे लइया मुंइ तथा दिव स्थान।
एत बलि विल्लोक ग्रामे करिल प्रस्थान।।४२।।

भावसार– उन्होंने कहा– कृष्णनगर में जब वास करूँगा वहाँ तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण करूँगा। तुमको वहाँ स्थान दूँगा। इतना कहकर विल्लोक गाँव में प्रस्थान किया।।४२।।

मदनमोहन आसि करिल मिलन।
तथा हैते चले करि नृत्य संकीर्तन।।

सहसा करिल एक लीला घटन।
परम विचित्र ताहा शुन सर्वजन।।४३।।

भावसार- मदनमोहनजी में आकर मिलन किया। वहाँ से चलकर नृत्य संकीर्तन किया। सहसा एक लीला घटी। उस परम विचित्र प्रसंग को सुनें।।४३।।

तथाहि- (तत्रैव, सप्तम परिच्छेद)

षोल सांगे येइ काष्ठ तुलिते नारिला।
सेइ काष्ठ लञा तिंह मुरली पुरिला।।
मुरलीर काष्ठ शीघ्र राखिल पूँतिया।
काष्ठके बहुत स्तुति करेन वसिया।।
वकुलेर वृक्ष हये थाकह एखन।
तोमाय करिवे लोक आसिया पूजन।।

सोलह सांग का जो काष्ठ उठ नहीं सकता। उसी को लेकर वंशी बजाते थे। मुरली काष्ठ को रखकर बहुत स्तुति कर थे। वकुल वृक्ष होकर यहाँ रहो तुमको लोग पूजा करेंगे।

वत्सरे वत्सरे पुष्प हइवे तोमार।
पुष्प बिना फल कभु ना हइवे आर।।
बलिते कहिते वृक्ष हइल मञ्जरी।
मदन मोहन एवे कहेन विचारी।।
श्रीकृष्णनगर हैल गुप्त वृन्दावन।
वकुलेर वृक्ष देखि हइल स्मरण।।४४।।

भावसार- वर्ष प्रतिवर्ष तुम्हारे पुष्प होंगे। पुष्प बिना फल कभी नहीं होंगे। बोलते-कहते ही वृक्ष में मञ्जरी आ गये। मदनमोहनजी अब विचारकर कहे- श्रीकृष्णनगर गुप्त वृन्दावन होगा। वकुल वृक्ष देख स्मरण होता है।।४४।।

श्रीब्रजवल्लभ बलेन शुनिया तखने।
वृन्दावन शोभा येन कदम्ब कानने।।

हेनमते बकुल वृक्ष करिया सृजन।
सेवालया आसन पाति वसिल तखन।।४५।।

भावसार– ब्रजवल्लभजी तब सुनकर बोले– वृन्दावन शोभा जैसे कदम्ब वन हो। इसप्रकार वकुल वृक्ष सृजन किया। सेवालया आसन लेकर तब बैठे।।४५।।

प्रेमानन्दे अभिराम करे संकीर्तन।
ग्रामवासी मिष्टान्न आनि कराय भोजन।।
तखन गोपालदास कैल आगमन।
शक्ति संचारिया तारे कैल सेवार्पण।।४६।।

भावसार– प्रेमानन्द में अभिराम ने संकीर्तन किया। ग्रामवासी ने मिष्ठान्न लाकर भोजन कराया। तब गोपालदास ने आगमन किया। शक्ति संचार कर सेवा अर्पित की।।४६।।

दैवे ब्रह्मचारी एक कैल आगमन।
वृक्ष भष्म कैले तेंह जियाय तखन।।
शेषे ब्रह्मचारी ताँर लइल शरण।
शुनिया कुपित हैल यत ग्रामीजन।।
मालिनीर उपलक्ष्ये करये निन्दन।
रंगे अभिराम ताहा करिल खण्डन।।४७।।

भावसार– दैवयोग से एक ब्रह्मचारी ने आगमन किया। वृक्ष को भष्म से जीवित किया। अन्त में ब्रह्मचारी ने उनकी शरण ली। सुनकर ग्रामवासीजन कुपित हुये। मालिनी को उपलक्ष्य कर निन्दा की। अभिराम ने हास्य में ही उनका खण्डन कर दिया।।४७।।

जानिया शुनिया निन्दे यत विप्रगण।
विप्र उद्धारिते तेंह सचिन्तित मन।।
रोंगा नामे मार्जर एक करिया सृजन।
तार द्वारे कृष्णनगर करिल तारण।।

महाप्रभु लञा कैल महामहोत्सव।
मालिनीरे प्रकाशिया बुझाइल सब।।४८।।

भावसार- जानकर-सुनकर जितने विप्रगण ने निन्दा की। उनका विप्रों के उद्धार के लिये मन हुआ। रोंगा नामक मार्जर का सृजन किया। उसके द्वार कृष्णनगर का तारण किया। महाप्रभु को लेकर महामहोत्सव किया। मालिनी के प्रकाश को देखकर सबने समझा।।४८।।

यद्यापि सवार मन पवित्र ना हैल।
रोंगा द्वारे प्रसाद दिया उद्धार करिल।।
शेषे महोत्सवे सवे करिल भोजन।
कृष्णनगरेर विप्र यत वैष्णव गणन।।
महोत्सव काले रामकुण्ड खोदाइल।
गोपीनाथ श्रीविग्रहे तथाइ पाइल।।४९।।

भावसार- यद्यपि सबके मन पवित्र न हुये। रोंगा द्वार में प्रसाद देकर उद्धार किया। अन्त में महोत्सव में सबने भोजन किया। कृष्णनगर के विप्र वैष्णव की गणना की। महोत्सव काल में रामकुण्ड खोदा। श्रीगोपीनाथजी का श्रीविग्रह वहाँ से पाया।।४९।।

प्रेम अनुरागे सेवा करिल स्थापन।
भाग्यवान जन आजि करे निरीक्षण।।
येनमते गोपीनाथ सेवा प्रकटिल।
मनोहर दास ताहा ग्रंथेते वर्णिल।।५०।।

भावसार- प्रेम अनुराग में स्थापित की। भाग्यवान जन आज भी निरीक्षण करते हैं। जिस प्रकार श्रीगोपीनाथजी की सेवा प्रकट की वह श्रीमनोहरदासजी ने अनुरागवल्ली ग्रंथ में वर्णित की है।।५०।।

तथाहि- (श्रीअनुरागवल्ली, तृतीय मञ्जरी)

वाडिरर पूर्वेते रामकुण्ड खोदाइते।
श्रीमूर्तिर छले कृष्ण हइल साक्षाते।।
श्रीगोपीनाथ नाम परम मोहन।
अशेष विशेष रूपे करेन सेवन।।

घर के पूर्व में रामकुण्ड की खुदाई की। श्रीमूर्त्ति के रूप में साक्षात् कृष्ण की प्राप्ति हुई। गोपीनाथ नाम परम मोहनकारी है। अशेष विशेष रूप में सेवा की।

हेनमते गोपीनाथ पेये दरशन।
प्रेमानन्दे सेवे सदा नहे बाह्य मन।।५१।।

भावसार- इसप्रकार गोपीनाथजी के दर्शन पाये। प्रेमानन्दपूर्वक सेवा में मन निविष्ट हो जाता और बाह्य ज्ञान नहीं रहता।।५१।।

तथाहि- (श्रीभक्तिरत्नाकर, चतुर्थ तरंग)
श्रीविग्रह सेविते यवे इच्छा उपजिल।
स्वप्नच्छले गोपीनाथ दरशन दिल।।
एथा मोर स्थितिर कहि स्थान देखाइल।
अभिराम खुदि तथा विग्रह पाइल।।

श्रीविग्रह सेवा की जब इच्छा उत्पन्न हुई। तब स्वप्न में श्रीगोपीनाथ में दरशन दिया। यहाँ मेरी स्थिति है- यह कहकर स्थान दिखाया। अभिराम ठाकुर ने खोदा तो वहाँ श्रीविग्रह को पाया।

महोत्सव काले हेन लीलार घटन।
सजन गौरांग हेरि पुलके मगन।।
रामकुण्ड दिव्यजले करि स्नान पान।
आनन्द विह्वल सबे नहे बाह्य ज्ञान।।
सजन सहित प्रेमे करये सेवन।
अभिराम महिमा बुझे आछे कोनजन।।५२।।

भावसार– महोत्सव काल में लीला घटी। गौरांग हेरकर पुलकित हुये। रामकुण्ड के दिव्य जल में स्नान पान किया। आनन्द विह्वल सब हैं बाह्यज्ञान नहीं है। कौन ऐसा जन है जो अभिराम की महिमा समझ सके।।५२।।

मध्ये मध्ये नित्यानन्द करे आगमन।
सजन सहित अभिरामेर भवन।।
ब्रजेर गोपाल भावे मत्त अभिराम।
नित्यानन्द सह लीला करे अनुपाम।।
अभिराम प्रणामे नित्यानन्द पुत्रगण।
अन्तर्धान करिलेन आश्चर्य घटन।।५३।।

भावसार– मध्य-मध्य में श्रीनित्यानन्द आगमन करते हैं। उनके साथ अभिराम के भवन में गये। अभिराम ब्रज के सखाभाव में मत्त हैं। नित्यानन्द के साथ अनुपम लीला करते हैं। नित्यानन्द प्रभु के पुत्रों ने अभिराम को प्रणाम किया। प्रणाम करते ही वे अन्तर्धान हो गये, यह आश्चर्य घटना है।।५३।।

वीरभद्र गोंसाई आर गंगा माता रैल।
अभिरामेर महिमा भुवने घुषिल।।
श्रीगोपाल गुरु आर श्रीरघुनन्दने।
प्रणाम करिया कीर्ति, राखिल भुवने।।
आर कत लीला कैल के करे वर्णन।
पूर्व लीला अनुरूप ताँर आचरण।।५४।।

भावसार– वीरचन्द्र गोसाईं और श्रीगंगामाता है। अभिराम की महिमा भुवन में प्रकाशित की। श्रीगोपालगुरु व श्रीरघुनन्दन ने प्रणाम कर भुवन में कीर्ति रखी और कितनी लीला का कौन वर्णन कर सकता है? पूर्व लीला के अनुरूप आचरण किया है।।५४।।

श्रीनिवास आचार्य यवे ताँर पाशे एल।
गौरकृपा मूर्त्ति हेरि बहु कृपा कैल।।
जय मंगल चावुक मारि कैल प्रेमदान।
परम विचित्र अभिरामेर आख्यान।।
गौरांगेर अन्तर्धाने व्यथित प्राणमन।
येन मते जीव तारे शुन सर्वजन।।५५।।

भावसार– श्रीनिवासाचार्य जब उनके निकट आये। श्रीगौर कृपा मूर्त्ति निरख बहुत कृपा की। जयमंगल चावुक मार प्रेमदान किया। अभिराम का परम विचित्र आख्यान है। श्रीगौरांग के अन्तर्धान से सबके मन प्राण व्यथित हैं। जिस प्रकार जीव उद्धार किया, सर्वजन श्रवण कीजिये।।५५।।

तथाहि– (अनुरागवल्ली, तृतीय मञ्जरी)

आर तार प्रेमार विवर्त्त तहि गुण।
महाप्रभुर अप्रकट उन्माद लक्षण।।
से रूप ना देखे कोन खाने प्रेमदान।
निरानन्द देखिया सतत दुःख पान।।
घोड़ार चावुक नाम 'श्रीजयमंगल'।
ताहा मारि करे लोके प्रेमाय विह्वल।।

और उनका प्रेमविर्वत गुण है। महाप्रभु का अप्रकट उन्माद लक्षण है। वह रूप न देख कैसे प्रेमदान किया? निरानन्द देखकर सतत दुःख पाये। घोड़ा के चावुक का नाम श्रीजयमंगल है। उसको मारकर लोगों को प्रेम में विह्वल किया।

हेनमते अभिराम करे प्रेमदान।
पतितेर बन्धु तेंह करूणा निधान।।
कृष्णनगर माझे येई लीला प्रकाशिल।
हेरिया भुवनवासी मोहित हइल।।
कृष्णनगर हैल द्वितीय नदिया नगर।

अभिराम कृपाय सबे आनन्द अन्तर।।५६।।

भावसार- इसप्रकार अभिराम ने प्रेमदान किया। वे पतितों के बन्धु और करूणा के निधान हैं। कृष्णनगर में लीला प्रकाशित की, जिसे देखकर भुवनवासी प्रसन्न हुये। कृष्णनगर द्वितीय नदियानगर के समान है। अभिराम की कृपा से सबके हृदय में आनन्द है।।५६।।

श्रीपाट कैयड आर श्रीकृष्णनगरे।
एइ दुइ स्थाने लीला करे निरन्तरे।।
निज परिजन यत ब्रज सखागण।
एके एके सर्वजने कैल आकर्षण।।
सवा शक्ति सञ्चारिया प्रेम सेवा दिल।
स्थान निरूपिया निज सवारे वसाल।।५७।।

भावसार- श्रीपाट कैयड और कृष्णनगर इन दो स्थानों में आपने लीलायें की हैं। निज परिजन आदि जितने ब्रज सखागण थे उनको एक-एक कर आकर्षित किया और सबमें शक्ति संचार कर प्रेम सेवा दी। स्थान निरूप्ण कर सबको बैठाया।।५७।।

महा महोत्सव करि धन्य कैल स्थान।
ताइ अभिराम गुण गाय सर्व स्थान।।
ब्रज प्रेम सेवा सवा कराल शिक्षण।
जानाइ भजन तत्त्व तारिल भुवन।।
सर्व रंगदेश भ्रमि बहु लीला कैल।
शेषे कृष्णनगर माझे अन्तर्धान हैल।।५८।।

भावसार- महामहोत्सव कर स्थान धन्य किया। अतः सभी स्थानों पर अभिराम के गुण गाये जाने लगे। ब्रज प्रेम सेवा का सबको शिक्षण दिया। भजन तत्त्व समझाकर जगत का उद्धार किया। सर्व रंगदेश भ्रमण कर बहुत लीलायें की।

अन्त में कृष्णनगर में अन्तर्धान हुये।।५८।।

श्रीपाटेर सेवा कानु कृष्ण समर्पिल।
निज मूर्ति प्रकाशिया अन्तर्धान कैल।।
एकदा कानु कृष्ण डाकि श्रीकृष्ण नगरे।
निज संगोपन वार्ता कहे धीरे धीरे।।
नाना मते कानु कृष्णे कैल प्रबोधन।
निज संगोपन कैल उपाय सृजन।।५९।।

भावसार- श्रीपाट की सेवा श्रीकानु कृष्ण को समर्पित की। निज मूर्त्ति प्रकाश कर अन्तर्धान हुये। एकबार कानुकृष्ण ने श्रीकृष्णनगर में पुकारा। निज संगोपन वार्ता धीरे-धीरे कही। विविध प्रकार से कानुकृष्ण को प्रबोध किया। निज संगोपन का उपाय सृजन किया।।५९।।

तथाहि- (श्रीअभिराम लीलामृत, बीसवॉ परिच्छेद)

बलिते बलिते गोंसाईं सृजिला उपाय।
दैव भाष्कर एक आइल तथाय।।
तखान कहेन गोंसाईं डाकिया भाष्करे।
मोर प्रतिमूर्ति गडि देह त आमारे।।
आज्ञामात्र भाष्कर से मूर्ति ये गडिला।
गोंसाईं लइया ताहा कानु कृष्ण दिला।।

बोलते-बोलते गोसाईं ने उपाय ढूँढ़ा। दैव भाष्कर वहाँ आये। मेरी प्रतिमूर्त्ति गढ़कर मुझे दे दो। आज्ञा मात्र भाष्कर मूर्त्ति निर्मित की। गोसाईं ने लेकर वह कानुकृष्ण को दी।

संध्या हइले गोंसाई गिया निज घर।
विश्व छिद्र प्रवेशय प्रतिमा भितर।।
एइ मत प्रत्यावधि प्रतिमा भितरे।
कानु कृष्ण देखाइया यातायात करे।।६०।।

भावसार- संध्या होने पर गोसाईं अपने घर गये। छिद्र

से प्रवेश कर प्रतिमा के भीतर गये। इसप्रकार प्रत्यावधि प्रतिमा में रहे। कानुकृष्ण को दिखाकर यातायात किये।।६०।।

चैत्र मासे मधुकृष्ण सप्तमी दिवसे।
प्रतिमा भितरे प्रभु करिला प्रवेशे।।
प्रतिमूर्ति प्रवेशिया गोंसाई रहिल।
अन्य दिन मत आर बाहिर ना हैल।।६१।।

भावसार- चैत्रमास मधु कृष्ण सप्तमी को प्रभु ने प्रतिमा में प्रवेश किया। प्रतिमूर्त्ति प्रवेश कर गोसाईं रहे। अन्य दिन फिर बाहर नहीं हुये।।६१।।

हेनमते अभिराम कैल संगोपन।
प्रतिमा रूपे खानाकुले रहे अनुक्षण।।
भाग्यवान जन आजि करे निरीक्षण।
जय जय अभिराम पतित पावन।।
पतित पावन लागि यार आगमन।
निज शक्ति प्रकाशिया तारिल भुवन।।६२।।

भावसार- इसप्रकार अभिराम ने संगोपन किया। प्रतिमा रूप में खानाकुल कृष्णनगर में रहे। भाग्यवान जन आज भी दर्शन करते हैं। पतित पावन अभिराम ठाकुर की जय हो। पतितों को पावन करने के लिये जिनका आगमन हुआ है। निज शक्ति प्रकाश कर भुवन उद्धार किया है।।६२।।

ब्रज देह लञा तेंह गौड़देशे एल।
विग्रह प्रणामि गौड़े महिमा राखिल।।
ब्रज प्रेम अनुरागे करिल भ्रमण।
गौर परिजन गुण जानाल भुवन।।
ब्रजेर गुप्त शुद्ध प्रेम निल जने जने।
मुंइ से वञ्चित हैल दुर्भाग्य कारणे।।६३।।

भावसार- ब्रज देह लेकर गौड़देश बंगाल में आये।

विग्रह प्रणाम कर गौड़ में महिमा प्रकाशित की। ब्रज प्रेम अनुराग में भ्रमण किया। गौर परिजन गुण भुवन को जनाया। ब्रज की गुप्त शुद्ध प्रेम रीति को जन–जन में वितरित किया। मैं ही दुर्भाग्य से वञ्चित रह गया।।६३।।

सेकाले ना हैल जन्म देवेर घटने।
तांई से पडिया रैल कर्म निबन्धने।।
एबे भाग्ये तार गुण करिल श्रवण।
पतित पावन जानि लोभ हइल मन।।
माजरि सृजिया कैल पाषण्ड तारण।
एहेन दयाल नाहि हेरि त्रिभुवन।।६४।।

भावसार– दैवयो से उस समय मेरा जन्म नहीं हुआ। इसलिये कर्मबन्धन में पड़ गया हूँ। अब भाग्य से उनके गुण श्रवण किया हूँ। पतित पावन जानकर मन में लोभ हुआ है। माजरि सृजन कर पाषण्ड तारण करो। ऐसे दयालु त्रिभुवन में नहीं हैं।।६४।।

ऐहेन अद्‌भुत दया देखि शुनि नाई।
ते कारणे ताँर गुण गाई ये सदाई।।
ओहे गौर प्राण सखा ब्रजेर श्रीदाम।
मो पतिते करि त्राण राख निज स्थान।।
गौर प्रेम सेवा दिया कर निजजन।
तुमि बिना 'किशोरी' दासे के करे मोचन।।६५।।

भावसार– ऐसी अद्‌भुत दया देखी सुनी नहीं है। इसी कारण इनके गुण सदा सर्वदा गाता हूँ। हे गौर के प्राण सखा व ब्रज के श्रीदाम! मुझ पतित का उद्धार कर निज शरण में स्थान दीजिये। गौरप्रेम सेवा देकर निजजन बनाओ। तुम्हारे बिना 'किशोरीदास' का कौन मोचन कर सकता है।।६५।।

३४. श्रील गौरीदास पण्डित

जय जय दयामय श्रीगौरसुन्दर।
जय जय नित्यानन्द प्रेम कलेवर।।
जय जय श्रीअद्वैत जय गदाधर।
जय जय श्रीवासादि गौर प्रेम धर।।
नित्यानन्द कृपापात्र पण्डित गौरीदास।
अचिन्त्य महिमा यार भुवन प्रकाश।।१।।

भावसार- दयामय श्रीगौरसुन्दर की जय हो! प्रेम कलेवर श्रीनित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्रीअद्वैत-गदाधर की जय हो! गौर प्रेमधर श्रीवास आदि की जय हो! नित्यानन्द कृपा पात्र पण्डित श्रीगौरीदास हैं। अचिन्त्य महिमा हैं जिनका भुवन में प्रकाश है।।१।।

तथाहि- (श्रीगौरगणोद्देशदीपिका, श्लोक-१२८)

सुवलो यः प्रिय श्रेष्ठः स गौरीदास पण्डित,
ब्रजेर सुबलं सखा पण्डित गौरीदास,
निताई गौरांग बिना नहे अन्य आश।
याँर प्रेमे बद्ध सदा निताई गौरांग,
प्रेमार्णवे विलसये हञा अन्तरंग।।

ब्रज के सुबल सखा ही श्रीगौरीदास पण्डित के रूप में अवतीर्ण हुये हैं। निताई गौरांग के बिना अन्य कोई आस नहीं है। जिनके प्रेम में बँधकर निताई गौरांग प्रेमवन्या में विलसित होकर अन्तरंग आनन्द में मग्न रहते हैं।

पूर्वभावे भावान्वित पण्डितेर मन।
निताई गौरांग ताँर अन्तरेर धन।।
कृष्ण प्राणसम प्रिय सुबल सुजन।
अन्तरंग प्रेमसेवा करे अनुक्षण।।
सुबलेर प्रेम सेवा अपूर्व कथन।
उज्ज्वल नीलमणि ग्रंथे याहार वर्णन।।२।।

भावसार– पण्डित का मन पूर्वभाव में भाषित है। निताई गौरांग उनके हृदय के धन हैं। श्रीकृष्ण को सुबल प्राणसम प्रिय हैं। अन्तरंग प्रेमसेवा अनुक्षण करते हैं। सुबल की प्रेम सेवा का अपूर्व वर्णन है, उज्ज्वल नीलमणि ग्रंथ वर्णन है।।२।।

तथाहि– (उज्ज्वलनीलमणि, सहाय भेद सप्तम अंक)

प्रत्यावर्त्तयति प्रसाद्य ललनां क्रीड़ा कलिप्रस्थितां,
शय्यां कुञ्जगृहे करोत्यद्द स्वभिद्दः कन्द्दर्पलीलाचितां।
सिञ्चं वीजयति प्रिया हृदि परिस्न्रस्तांग मुर्च्चैरमुं,
कः श्रीमानधिकारितां स सुवलः सेवाविधौ विन्द्दति।।

हेन गुह्य सेवा सदा करये सुबल।
एवे गौर सेवा करे धरि महावल।।
शालिग्राम वासी पण्डित श्रीगौरीदास।
याँर ज्येष्ठ भ्राता सरखेल सूर्यदास।।३।।

भावसार– इसप्रकार सुबल सदा गुप्त रीति से सेवा करते हैं। यहाँ गौरांग की सेवा करते हैं। शालिग्राम वासी श्रीगौरीदास पण्डित हैं जिनके ज्येष्ठ भ्राता श्रीसरखेल सूर्यदास हैं।।३।।

तथाहि– (श्रीसुबलमंगल)

कंसारि मिश्रेर पत्नी नाम ये कमला।
ताँहार गर्भेते छय पुत्र जनमिला।।
द्दामोद्दर बड़ जगन्नाथ तार छोट।
सूर्यद्दास ठाकुर हयेन ताहार कनिष्ठ।।
ताहार कनिष्ठ हय पण्डित गौरीद्दास।
अनुज कृष्णद्दास येई पुरे मन आश।।

श्रीकंसारि मिश्र की पत्नी का नमा श्रीकमला है। उनके गर्भ से छः पुत्र उत्पन्न हुये। दामोदर बड़े हैं और जगन्नाथ

छोटे हैं। सूर्यदास ठाकुर उनसे छोटे हैं, उनसे छोटे गौरीदास पण्डित हैं उनसे छोटे कृष्णदास हैं।

ताहार कनिष्ठ हयेन नृसिंह चैतन्य।
प्रेम वितरण करि विश्व कैल धन्य।।
एइ छय भ्राता मिलि नित्यानन्द सने।
गौरांगेर आज्ञाय रहेन प्रेमदाने।।४।।

भावसार– उनसे भी छोटे नृसिंह चैतन्य हैं। इन्होंने प्रेम वितरण कर विश्व को धन्य किया है। यह छः भ्राता श्रीनित्यानन्द के साथ रहकर गौर आज्ञा से प्रेम प्रदान करते हैं।।४।।

ज्येष्ठ स्थाने आज्ञा लञा पण्डित गौरीदास।
गंगातीरे वास करे प्रेमेते उल्लास।।
अम्बिका नगरे रहे परम निर्जने।
आस्वादये प्रेमरस करिया यतने।।
ताहार प्रेमेर वश निताई गौरांग।
दैवे तार गृहे आसि कैल प्रेमरंग।।५।।

भावसार– ज्येष्ठ भ्राताओं से आज्ञा लेकर गौरीदास पण्डित गंगातट पर प्रेमपूर्वक वास करते हैं। यह स्थान परम निर्जन अम्बिका नगर (कालना) है। प्रेमरस आस्वादन कर यहाँ रहते हैं। उनके प्रेम के वश श्रीनिताई गौरांग हैं और उनके गृह में आकर प्रेम पूर्ण लीला करते हैं।।५।।

नित्यानन्द सह प्रभु श्रीगौरांग राय।
शान्तिपुरे आसि रहे अद्वैत वासाय।।
अद्वैत भवने करे प्रेमेर विलास।
सुबल विहीने नाहि हय पूर्ण आस।।
गौरीदास संग लागि उत्कण्ठित मन।
हेरि नदी ग्रामे नौका करिल साजन।।६।।

भावसार– श्रीगौरांग नित्यानन्द प्रभु के साथ श्रीअद्वैतप्रभु के गृह शान्तिपुर में आकर रहे और प्रेमविलास करते रहे। सुबल के बिना पूर्ण वाञ्छा नहीं हुई और फिर सुबल के अवतार गौरीदास पण्डित के लिये उत्कण्ठित मन हुआ। नदी को देखकर गाँव में नौका सजायी।।६।।

दुई भाई दाँड वाहि अम्बिका आसिल।
प्रेमे दाँड हस्ते करि तटेते उठिल।।
तेतुँलतलाय दोंहे अलसे वसिल।
हेथा गौरीदास प्रेमे विह्वल हइल।।
प्राणेर ठाकुर दुइ कैल आगमन।
अन्तरे जानिया प्रेमे चलिल तखन।।७।।

भावसार– दोनों भाई नौका से अम्बिका में आ गये और तट पर उतरे। तेंतुलतला में दोनों बैठे। वहाँ गौरीदास प्रेम विह्वल हो गये। प्राणों के ठाकुर दोनों ने आगमन किया। अन्तर जानकर प्रेमपूर्वक चले।।७।।

निताई गौरांग चाँदे करिया दर्शन।
पूर्व भावाच्छन्न हैल पण्डितेर मन।।
अन्चलेर निधि येन विधि मिलाइल।
गृहे आनि प्रेमे बहु सेवन करिल।।
दयाल ठाकुर गौर बैठा लञा करे।
पण्डितेर प्रति प्रेमे कहे धीरे धीरे।।८।।

भावसार– निताई गौरांगचाँद का दर्शन किया। पण्डित का मन पूर्व भाव में विभोर हुआ। अञ्चल की निधि मानो विधाता ने मिलाई है। गृह में आकर प्रेमपूर्वक उनकी सेवा की। दयाल ठाकुर गौर को हस्त पकड़कर बैठाया। पण्डित के प्रति प्रेम को धीरे–धीरे कह रहे हैं।।८।।

एक बैठा लञा कर भवनदी पार।

पतित पामर यत करह निस्तार।।
एतेक कहिया प्रभु कैल आलिंगन।
पण्डित गौरांग प्रिय सुसत्य वचन।।
पण्डित लइया प्रभु नवद्वीपे एल।
पूर्व भाव अनुरागे लीलाय मातिल।।९।।

भावसार– जितने पतित पामर हैं उनको भव नदी से पार कीजिये। इतना कहकर प्रभु ने आलिंगन किया। पण्डित के प्रति गौरांग ने सुसत्य वचन कहे। पण्डित को लेकर प्रभु नवद्वीप आये। पूर्व भाव लीला में मत्त हो गये।।९।।

आपनार गीतामृत प्रभु करिल अर्पण।
गृह आनि पण्डित सदा करये पठन।।
प्रभुदत्त गीता बैठा प्रभु मन्दिरे।
आजिओ हेरये गिया भाग्यवान नरे।।१०।।

भावसार– अपनी गीता प्रभु ने अर्पित की। गृह में आकर पण्डित सदा पाठ करते। प्रभु दत्त गीता मन्दिर में विराजमान की। भाग्यवान जन आज भी दर्शन करते हैं।।१०।।

ये तेंतुल तलाय प्रभु कैल उपवेशन।
अद्यपि विराज करि तारये भुवन।।
मन्दिर अदूरे ताहा आजि विराजय।
भाग्यवान जन गिया नयने हेरय।।११।।

भावसार– जहाँ तेंतुलतला में प्रभु बैठे थे आज भी वह विराजमान हैं और भुवन का तार रहा है। मन्दिर से थोड़ी दूर है। भाग्यवान जन जाकर दर्शन करते हैं।।११।।

तथाहि– (श्रीभक्तिरत्नाकर, सप्तम तरंग)

प्रभुर श्रीहस्तेर अक्षर गीताग्रन्थानि।
दर्शने ये सुख ताहा कहिते ना जानि।।

प्रभुदत्त गीता बैठा प्रभु सन्निधाने।
अद्यापिओ अम्बिकाय देखे भाग्यवानो।।

प्रभु के श्रीहस्त लिखित गीता के अक्षर के दर्शन से जो सुख होता है वह कह नहीं सकते। प्रभु प्रदत्त गीता आज भी प्रभु मन्दिर में विराजमान है, भाग्यवान जन दर्शन करते हैं।

तद्वधि नवद्वीपे करये विहार।
निताई गौरांग चन्द्र प्राणधन यार।।
निताई गौरांग सह रहे अनुक्षण।
संसार उदास सदा प्रेमयुक्त मन।।
ताहार सजन यत गौरांगे कहिल।
विवाह करिते गौर तारे आज्ञा दिल।।१२।।

भावसार– तब तक नवद्वीप में विहार किया। जिनके निताई गौरांग प्राण धन हैं और उनके साथ रहे हैं। गृहस्थ से उदास रहकर भगवत् प्रेम युक्त मन है। उनके स्वजन ने गौरांग ने उनको विवाह करने की आज्ञा दी।।१२।।

एकदा एक पुष्पमाला गाँथि गौरीदास।
प्रभु गले पराइया परम उल्लास।।
माला गले परि प्रभु हइल विमन।
पूर्व लीला स्मरि प्रेमे करये नर्तन।।
चम्पक पुष्पे माला गाँथि राधा विनोदिनी।
वृन्दा द्वारे कृष्ण पाशे पाठान आपनि।।१३।।

भावसार– एकबार एक पुष्पमाला गूँथकर गौरीदास पण्डित ने प्रभु के कण्ठ में परम उल्लास के साथ पहनाई। माला पहनकर प्रभु विमन हुये। पूर्वलीला स्मरण कर प्रेम में नर्तन करने लगे। चम्पक पुष्पमाला गाँथकर श्रीराधा विनोदिनी वृन्द द्वारा से श्रीकृष्ण को भेजी।।१३।।

वृन्दा आनि सुबल करे करिल अर्पण।
सुबल कृष्ण गले दिल करिया यतन।।
चम्पकेर माला हेरि नन्देर नन्दन।
चम्पक वरणी राधार हइल स्मरण।।
व्याकुल हइया कृष्ण बलये तखन।
राधारे आनिया सुबल राखह जीवन।।१४।।

भावसार– वृन्दा से लेकर सुबल ने श्रीकृष्ण के कण्ठ में अर्पण की। चम्पक माला को देखकर नन्दनन्दन को चम्पकवर्णी राधा का स्मरण हुआ। तब कृष्ण व्याकुल होकर बोले– सुबल! तुम राधा को लाकर मम जीवन की रक्षा करो।।१४।।

तवे अंग करि सुबल राधा मिलाइल।
सेइ भावे गौर एवे विह्वल हइल।।
हेनभावे कतक्षण करि संकीर्तन।
निभृते वसिया कहे सरस वचन।।१५।।

भावसार– तब सुबल ने कृष्ण को राधा को मिलाया। उस भाव में गौर विह्वल हो गये। इसप्रकार कितने देर संकीर्तन किया। निभृत में बैठकर सरस वचन कहे।।१५।।

शुन गौरीदास एवे आमार वचन।
दार परिग्रह कर याइया भवन।।
प्रभु आज्ञा गौरीदास शिरेते धरिल।
दार परिग्रह करि अम्बिका रहिल।।१६।।

भावसार– सुनो गौरीदास! मेरे वचन सुनो। विवाह कर भवन जाइये। प्रभु आज्ञा को गौरीदास ने सिर पर धारण किया। विवाह कर अम्बिका में रहे।।१६।।

तथाहि– (श्रीसुबलमंगल)
गौरीदासेर पत्नी विमला देवी।

बलरामदास आर रघुनाथ दास।
विमला देवीर गर्भे याहार प्रकाश।।
संन्यास करिया प्रभु नीलाचले गेल।
वृन्दावन यात्रा छले गौड़देशे एल।।

गौरीदास की पत्नी विमलादेवी हैं। बलरामदास व रघुनाथदास का जिनके गर्भ से जन्म हुआ। जब संन्यास ध ारण कर प्रभु नीलाचल गये। तब वृन्दावन यात्रा के बहाने गौड़देश में आये।

सेई काले शान्तिपुरे करि आगमन।
पुनः तार गृहे आसि कैल पदार्पण।।
गौरदास गृहे गौरेर अद्भुत विहार।
याहा दरशने जीव पाइल निस्तार।।
पण्डितेर घरे प्रभु करये नर्तन।
संगेते नाचये यत पारिषद गण।।१७।।

भावसार– उसी समय शान्तिपुर में आगमन किया। पुनः उनके गृह में आकर पदार्पण किया। गौरीदास के गृह में गौर का अद्भुत विहार है जिनके दर्शन से जीव निस्तार पाता है। पण्डित के गृह में प्रभु ने नृत्य किया और संग में सब पार्षद नाच रहे हैं।।१७।।

गौरीदास गृहे प्रभु रहे अनुक्षण।
सयतने वाञ्छा तार करिल पूरण।।
विचित्र विलास हैल पण्डितेर गृहे।
पदकर्ता गीत छले जगतेरे कहे।।१८।।

भावसार– गौरीदास के गृह में प्रभु अनुक्षण रहते हैं। यत्नपूर्वक वाञ्छा पूर्ण करते हैं। पण्डित के गृह में विचित्र विलास है। पदकर्ता गीत के रूप में जगत को बताते हैं।।१८।।

तथाहि- (श्रीपदकल्पतरु २३१३)

ठाकुर पण्डितेर वाड़ी, गोरा नाचे फिरि फिरि,
नित्यानन्द बले हरि हरि।
काँदि गौरीदास बले, पड़ि प्रभुर पद तले,
कभु ना छाड़िवे मोर वाड़ि।।१६।।

भावसार- गौरीदास पण्डित के गृह में गौरांग नाच-नाच कर भ्रमण कर रहे हैं और नित्यानन्द हरि-हरि बोलरहे हैं। क्रन्दन कर गौरीदास प्रभु के चरणकमल पकड़कर कहते हैं- हे प्रभु! मेरा गृह आप कभी मत छोड़ना।।१६।।

आमार वचन राख, अम्बिका नगरे थाक,
एइ निवेदन तुया पाय।
यदि छाड़ि यावे तुमि, निश्चय मरि आमि,
रहिव से निरखिया काय।।२०।।

भावसार- मेरे वचन की रक्षा कर अम्बिका नगर में ही रहो। तुम्हारे चरणों में यही निवेदन है। यदि तुम छोड़कर जाओगे तो मैं निश्चय ही मर जाऊँगा। आपके रूप को देखकर रहूँगा।।२०।।

तोमरा ये दुइ भाई, थाक मोर एइ ठाई,
तवे सभाव हय परित्राण।
पुनः निवेदन करि, ना छाड़िह गौरहरि,
तवे जानि पतित पावन।।२१।।

भावसार- तुम दोनों भाई मेरे इस स्थान पर ही रहो। तब ही परित्राण होगा। पुनः निवेदन करता हूँ- हे गौरहरि! मुझे मत छोड़ना। तुम पतित पावन हो।।२१।।

प्रभु कहे 'गौरीदास', छाड़ह एमत आश,
प्रतिमूर्ति सेवा करि देख।

ताहाते आछिये आमि, निश्चय जानिह तुमि,
सत्य मोर एइ वाक्य राख।।२२।।

भावसार– प्रभु कहते हैं– गौरीदास! यह आशा छोड़ो और प्रतिमूर्त्ति की सेवा करो। उनमें मैं रहूँगा, यह निश्चय जानिये। सत्य में मेरे वाक्य को रखिये।।२२।।

एत शुनि गौरीदास, छाड़ि दीर्घ निःश्वास,
फुकारि फुकारि पुनः कान्दे।
पुनः सेइ दुइ भाई, प्रबोध करये ताय,
तवु हिया स्थिर नाहि बान्धे।।२३।।

भावसार– इतना सुनकर गौरीदास दीर्घ निश्वास छोड़ने लगे और पुकार–पुकार कर रोने लगे। पुनः दोनों भाई ने समझाया। तब भी वे स्थिर नहीं हुये।।२३।।

कहे दीन 'कृष्णदास', चैतन्य चरणे आश,
दुइ भाई रहिला तथाय।
ठाकुर पण्डितेर प्रेमे, बन्दी हैला दुइजने,
भकत वत्सल तेंइ गाय।।२४।।

भावसार– दीन 'कृष्णदास' को श्रीचैतन्यचरण की आशा है। दोनों भाई वहीं रहे। गौरीदास पण्डित के प्रेम में दोनों जन बन्दी हो गये। प्रभु भक्तवत्सल हैं।।२४।।

हेनमते प्रभु भक्ते हैल आलापन।
येमते विग्रह हैल करह श्रवण।।
येई वृक्ष द्वारे हैल विग्रह गडन।
रत्नाकर द्वारे ख्यात हइल भुवन।।२५।।

भावसार– इसप्रकार प्रभु का भक्त के साथ आलापन हुआ। जैसे विग्रह हुये वह श्रवण कीजिये। जिस वृक्ष से श्रीविग्रह का निर्माण हुआ वह भक्तिरत्नाकर ग्रंथ में वर्णित

है।।२५।।

एइ वटवृक्ष तले पुत्र कोले लैया।
षष्ठी पूजे आइ नाना उपहार दिया।।
एथा छिल एक निम्बवृक्ष पुरातन।
फलहीन पुष्पेर सौगन्ध विलक्षण।।
अत्यन्त निविड़ छाया शोभा अतिशय।
वृक्षोपरि कभु कोन पक्षी ना वैसय।।२६।।

भावसार- इस वटवृक्ष के नीचे पुत्र को गोद में लेकर आये और षष्ठी पूजा नाना उपहारों से की। यहाँ एक प्राचीन नीम वृक्ष था। फलहीन वृक्ष की सुगन्ध विलक्षण थी। अत्यन्त निविड़ छाया की शोभा अनुपम थी। वृक्ष के ऊपर कोई पक्षी नहीं बैठता था।।२६।।

यत दिन गृहे रहिलेन विश्वम्भर।
वृक्षतले कैल क्रीड़ा अति मनोहर।।
गौरीदास पण्डितेरे प्रभु आज्ञा कैला।
तेंहो सेइ वृक्षे दुइ मूर्ति प्रकाशिला।।
हइलेन येछे दुइ प्रभुर प्रकाश।
से अति अद्भुत कथा अद्भुत विलास।।२७।।

भावसार- जितने दिन विश्वम्भर गृह में रहे। वृक्ष तल में मनोहर क्रीड़ा की। गौरीदास पण्डित को प्रभु ने आज्ञा की। उन्होंने उस वृक्ष से दो मूर्त्ति प्रकाशित की। उनमें दोनों प्रभुओं का प्रकाश हुआ।।२७।।

तबे प्रभु आज्ञा वशे पण्डित तखन।
प्रेमावेशे नवद्वीपे करिल गमन।।
यद्यपि पण्डितेर ताहाते नाहि मन।
तथापि प्रभुर वाक्य करये पालन।।
प्रभुर इच्छाय विग्रह अपूर्व हइल।

प्रभु कृपा पात्र ताहा निर्माण करिल।।२८।।

भावसार- तब प्रभु की आज्ञा से पण्डित प्रेमावेश में नवद्वीप में गमन किये। यद्यपि पण्डित का मन नहीं है। फिर प्रभु आज्ञा का पालन किया। प्रभु की इच्छा से अपूर्व श्रीविग्रह बने। प्रभु कृपापात्र ने निर्माण किया।।२८।।

अपूर्व विग्रह द्वय करिया दर्शन।
धैर्य धरिते नारे पण्डितेर मन।।
स्वगृहे विग्रह द्वय करिया दर्शन।
धैर्य धरिते नारे पण्डितेर मन।।२९।।

भावसार- अपूर्व दो विग्रह का दर्शन कर पण्डित के मन ने धैर्य धर नहीं पाये। अपने गृह में दो विग्रह का दर्शन कर पण्डित धैर्य खो दिये।।२९।।

स्वगृहे विग्रहद्वय कैल आनयन।
परम अपूर्व मूर्ति भुवन मोहन।।
निताई गौरांग ताहे प्रविष्ट हइल।
लीलारंगे अभिन्नत्त्व तारे देखाइल।।३०।।

भावसार- स्वगृह में दो विग्रह ले आये। परम अपूर्व मूर्त्ति भुवनमोहन है। निताई गौरांग उनमें प्रविष्ट हो गये और लीलारंग का अभिन्नत्व उनको दिखाया।।३०।।

तथाहि- (श्रीपदकल्पतरु-२३१४)

आकुल देखिया तारे, कहे गौर धीरे धीरे,
आमरा थाकिलाम तोर ठाँई।
निश्चय जानिह तुमि, तोमार ए घरे आमि,
रहिलाम एइ दुइ भाई।।
एतेक प्रबोध दिया, दुइ प्रतिमूर्ति लैया,
आइल पण्डित विद्यमान।
चारिजने दाँडाइल, पण्डित विस्मय भेल,

भावे अश्रु बहये नयान।।
पुनः प्रभु कहे तारे, तोर इच्छा हय यारे,
सेइ दुइ राख निज घरे।
तोमार प्रतीति लागि, तोर ठाइ खाव मागि,
सत्य सत्य जानिह अन्तरे।।
शुनिया पण्डित राज, करिल रन्धन काज,
चारि जने भोजन करिला।
पुष्पमाला वस्त्र दिया, ताम्बूलादि समर्पिया,
सर्व अंगे चन्दन लेपिया।।
नानामते परतीत, कराइया फिराल चित,
दोंहारे राखिल निज घरे।
पण्डितेर प्रेम लागि, दुइ भाई खाय मागि,
दोंहे गेला नीलाचल पुरे।।
पण्डित करये सेवा, यखन ये इच्छा येवा,
सेइमत करये विलास।
हेन प्रभु गौरीदास, तार पद करि आश,
कहे दीन हीन 'कृष्णदास'।।३१।।

भावसार- उनको आकुल देखकर गौर ने धीरे-धीरे कहा- मैं तुम्हारे स्थान पर रहूँगा। निश्चय जानना तुम कि मैं तुम्हारे घर में ही हूँ। इतना समझाकर दो मूर्त्ति लेकर पण्डित ने विद्यमान किये। चार जन खड़े हैं पण्डित विल्मय भये। भाव में सोचकर अश्रु बहाने लगे। पुनः प्रभु ने उनको कहा- तुम्हारे इच्छा जो हो वही दो को निज घर में रखो। तुम्हारी प्रतीति के लिये तुम्हारे स्थान पर माँग खाऊँगा। सत्य-सत्य हृदय में विचारो। सुनकर पण्डितराज ने रन्धन किया। चार जन ने भोजन किया। पुष्पमाला, वस्त्र, ताम्बूल समर्पित कर सर्व अंग में चन्दन लेप दिया। नाना प्रकार से

परतीत कराकर चित घुमाकर दो को घर पर रख लिया। पण्डित के प्रेम के लिये दोनों भाई ने माँगकर खाया। दोनों भाई नीलाचल चले गये। पण्डित ने सेवा की। जब जिसकी जो इच्छा है उसी प्रकार विलास किया। हे प्रभु गौरीदास! दीन कृष्णदास को आपके चरणों की आशा है।।३१।।

श्रील किशोरीदास बाबाजी कृत आत्म परिचय

चैतन्यडोबा (हालिशहर)

चौद्दशत सात सने मुद्रण समाप्त।
गुरु कृपा शक्ति बल एइत सामर्थ।।
जन्म मोर मेदिनीपुरे पारुलवाड़ी ग्राम।
तमलूक महकुया थाना नन्दीग्राम।।१।।
पिता योगेन्द्र अधिकारी माता रंगदेवी।
भ्राता श्यामाचरण भग्नि हेन ये कालिन्दी।।
बाल्यकाले पिता मोर परलोके गेल।
भ्राता श्यामचरण मोरे पालन करिल।।२।।
कैशोरे करिनु गुरु चरण आश्रय।
यार कृपा प्रभावेते एइ ग्रंथेर उदय।।
गुरु कृपा शक्ति मोर सकल भरसा।
जय जय गुरुपद निराशार आशा।।३।।
परम गुरु हन श्रीप्राण कृष्णदास।
ईश्वरपुरी पाटे याँर सेवार प्रकाश।।
परमेष्ठी गुरु प्राणगोपाल गोस्वामी।
अचिन्त्य महिमा ताँर कि वर्णिते जानि।।४।।
परात्गुरु सारदा माता गोस्वामिनी।
परम करूणामयी शक्ति प्रदायिनी।।
चैतन्यडोवा महातीर्थ ख्यात् सर्वस्थान।
तथा विराजित कुमार हट्ट श्रीवासांगन।।५।।

।। ग्रंथ संपूर्ण।।

भक्ति की महिमा का कोई भी ग्रंथ हो, वह भगवान् श्रीहरि का ही शब्दमय स्वरूप होता है। भगवान् और भक्ति ग्रंथ में किञ्चित् भी भेद नहीं है। अतः भक्ति ग्रंथों को भगवान् का स्वरूप मानकर अध्ययन, मनन और पूजन करना चाहिये।

भक्ति ग्रंथों का प्रचार-प्रसार करने से भगवान् की महिमा का प्रचार-प्रसार होता है और मनुष्यों में विवेक जागृत होता है। साथ ही भक्ति, मानवता, वैराग्य, त्याग, सद्गुण की भावना का उदय होता है।

वास्तव में उस मनुष्य का जीवन धन्य है जो भक्ति ग्रंथों का प्रचार-प्रसार कर रहा है। भक्ति ग्रंथों का प्रचार-प्रसार करने से श्रीराधामाधव अति प्रसन्न होते हैं और उनकी प्रेममयी सेवा प्राप्ति की उत्कण्ठा भी वर्द्धित होती है।

श्रीगौड़ीय वैष्णवाचार्यों ने ग्रंथ रचना के द्वारा हमें जो रागानुगा भक्तिमार्ग दिखाया है, हमें उसका आचरण करना चाहिये और भक्ति ग्रंथों का सम्पादन, प्रकाशन व वितरण कर प्रचार भी करना चाहिये। रागानुगा मार्ग (श्रीराधाकृष्ण की मंजरी भाव से उपासना) का आचरण व प्रचार दोनों ही आवश्यक हैं।